प्रस्तावना.

सर्वे जैनबंधुउने मालुम थाय जे, आ पंचम कालमां तीर्थंकर प्रभुउ आ भरतक्षेत्रमां विचरता नहीं होवाथी, तथा केवली महाराज पण नहीं होवाथी, आ अपार संसारसमुद्रथी तारवाने "श्री शत्रुंजय महातीर्थ" समर्थ छे, एम तीर्थंकर महाराजो पण कही गएला छे. ते महातीर्थनुं माहात्म्य श्री ऋषभदेव प्रभुना वखतमां पुंडरिकजी गणधर महाराजे सवा लाख श्लोकनी रचना करीने बनाव्युं हतुं; तथा तेमांथी संक्षिप्त करीने श्री वीरप्रभुना समयमां सुधर्मास्वामि गणधर महाराजे चोवीस हजार श्लोकनी रचना करीने बनाव्युं हतुं; तेमांथी पण सार उधरीने वल्लभीपुरना श्री शिलादित्य राजाना आग्रहथी आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिजीए दश हजार श्लोकनी रचना करीने संस्कृत भाषामां बनावेलुं छे; तेमां ते आचार्य महाराजे महाकाव्यनी तुल्य अति उत्तम अने अलंकारोथी भरेली रचना करी छे. वली आ ग्रंथ आपणा जैनीउना अत्यंत प्राचीन ग्रंथ मांहेनो एक ग्रंथ छे; अने ते ग्रंथ बनावीने श्री धनेश्वरसूरिजी महाराजे आपणापर अवर्णनीय उपकार करेलो छे; केम के तेमां आ संसार समुद्रथी तारनारा "श्री शत्रुंजय महातीर्थनुं" माहात्म्य वर्णवेलुं छे, वली आ ग्रंथ मूल संस्कृत भाषामां होवाथी, अमोए तेना आ प्रथम खंडनुं गुजराती भाषांतर जामनगर निवासि पंडित श्रावक हीरालाल वि. हंसराज पासे करावी छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे; आ ग्रंथमां श्री ऋषभदेव प्रभुआदिक केटलाक तीर्थंकरोना पण चरित्रो आवेलां छे; आ ग्रंथना बे खंडो छे; तेमां आ प्रथम खंडमां श्री शत्रुंजय आदिक शिखरोनुं माहात्म्य वर्णवेलुं छे, तथा बीजा खंडमां श्री गिरनारजी आदिक शिखरोनुं वर्णन करेलुं छे. ते बीजा खंडनुं गुजराती भाषांतर पण थोडाज दिवसोमां अमारा तरफथी छपाइ बहार पडवानुं छे. आ ग्रंथमां श्री शत्रुंजय तीर्थाधिराजनो अपूर्व महिमा वर्णवेलो छे, तथा आ ग्रंथ जैनीउने माटे एटलो तो जरुरनो छे के, तेनुं आ जगोए ब्यान नहीं करतां, फक्त आद्यथी ते अंतसुधि ते वांची जवानी अमो अमारा जैनबंधुउने भलामण करीयें छीयें. आ तीर्थाधिराजनुं माहात्म्य वांचवाथी, तथा सांभलवाथी केटलुं पुण्य

उपार्जन थाय छे, तेनुं वर्णन आ ग्रंथज वांचवाथी जणाशे. माटे पोताना बन्ने जावना कल्याण इछनार, एवा दरेक जैनबंधुउं आ अमूल्य ग्रंथनो जरुर लाज लेशे. इत्यलं विस्तरेण.

जीमसिंह माणेक.



अनुक्रमणिका.

सर्ग त्रीजो.

सर्ग चोथो

सर्ग पांचमो.

सर्ग छठो.

सर्ग सातमो.

सर्ग आठमो.

सर्ग नवमो.

श्री जिनाय नमः।

(श्रीधनेश्वर सूरिकृत)

श्रीशत्रुंजय माहात्म्यनुं गुजराती भाषांतर.



प्रथमःसर्गः प्रारभ्यते

ॐनमो विश्वनाथाय, विश्वस्थितिविधायिने ॥
अर्हतेऽव्यक्तरूपाय, युगादीशाय योगिने ॥ १ ॥

अर्थः—जगतना नाथ, तथा जगतनी स्थितिना करनारा, अने अप्रगट छे, रूप जेमनुं एवा, तथा योगी एवा श्री ऋषभदेवजी अरिहंत प्रते नमस्कार थाओ.

अर्हच्चक्रिश्रियःस्वामी, चामीकरसमप्रभः ॥
स्तुत्यःसत्कृत्यलाभाय, श्रीशांतिः शुभतांतिकृत् ॥ २ ॥

अर्थः—अरिहंत तथा चक्रीनी संपदानां स्वामी, तथा सोना सरखी कांति वाला, अने स्तुति करवा लायक एवा श्री शांतिनाथ भगवान मोक्षनां लाभने माटे मंगलनी वृद्धि करनारा थाओ.

हेलांदोलितदैत्यारि, र्जरासिंधप्रतापहृत् ॥
स्मरणीयं स्मरं कुर्वन्; श्रीमान्नेमिः पुनातु वः ॥ ३ ॥

अर्थः—क्रीडाथी हींचोलेल छे श्रीकृष्णने जेणे, तथा जरासिंधनां प्रतापने हरनारा, अने कामदेवने पण संभालवा योग्य करता, एवा श्री नेमिनाथ भगवान तमारुं रक्षण करो ?

यस्यदृष्टिसुधावृष्टि दानादहिरहीश्वरः
जातस्तापत्रयान्मुक्तः, स श्री पार्श्वो मुदेऽस्तुवः ॥ ४ ॥

अर्थः—जेनी दृष्टिरूपी अमृतनी वृष्टिनां दानथी सर्प पण धरणेंद्र तथा अतीत, अनागत, अने वर्तमान काल संबंधि पीडाथी मुक्त थयो, एवा ते श्री पार्श्वनाथ प्रभु तमारा हर्षने माटे थाओ ?

सुराद्रिं सुरनाथस्य, संशयापनयाय यः ॥
अकंपयत्रिधा वीरः, श्री विरः श्रेयसेऽस्तुवः ॥ ५ ॥

अर्थः– इंद्रनी शंकाने दूर करवा माटे जेणे मेरु पर्वतने पण कंपाव्यो छे. तथा त्रण प्रकारे शुरवीर एवा श्री वीरप्रभु तमारा कल्याणने अर्थे थाओ.

आदीश्वर प्रमुख जिनोनुं तथा पुंडरिक प्रमुख मुनिओनुं तथा शासनदेवीनुं ध्यान करीने आ शत्रुंजयमाहात्म्यनुं हुं वर्णन करुं छुं. श्री युगादि जिनेश्वरनी आज्ञाथी पुंडरिक गणधरे सवा लाख श्लोकनां प्रमाणवालुं, तथा नाना प्रकारनां आश्चर्यवालुं, तथा सघला तत्वोथी संपूर्ण, तथा देवोए पण पूजेलु एवुं शत्रुंजयमाहात्म्यनुं वर्णन, जगतनां हित माटे पूर्वे बनाव्युं हतुं. तेमांथी मथन करीने श्रीवीरप्रभुनी आज्ञाथी सुधर्मास्वामीए, लोकोने अल्प आयुष्यवाला जाणीने ते माहात्म्य संक्षेपथी चोविस हजार श्लोकनुं बनाव्युं. तेमांथी पण सारने उधरीने, स्याद्वादवाणीमय एवुं ते माहात्म्य, अष्टांग योगमां निपुण, तथा विषय आदिकमां निस्पृही, तथा नाना प्रकारनी लब्धिवाला, तथा राजगछनां मंडन रूप, तथा उत्तम चारित्रथी पवित्र अंगवाला, अने वैराग्यना समुद्र सरखा, अने, सर्व विद्याओमां निपुण एवा श्री धनेश्वर सूरीए, बौद्धोने मद रहित करतां थकां, शत्रुंजयनो उद्धार करनार, तथा अढार राजाओना स्वामी, तथा सुराष्ट्र देशनां राजा, एवा श्री शीलादित्यनां आग्रहथी वल्लभी नगरमां बनाव्युं; माटे हे लोको! ते माहात्म्य तमो भक्तिपूर्वक सांभलो ?

हे भव्य लोको! तप, जप, दान विगेरेनुं शुं प्रयोजन छे ? पण केवल शत्रुंजयमाहात्म्यज सांभलो ? वली धर्मनी वांछाथी सघली दिशाओमां भमवानुं शुं प्रयोजन छे ? फक्त शत्रुंजय तीर्थनी छायानो तमो स्पर्श करो ? वली आ मनुष्य जन्म पामीने, तथा अनेक शास्त्रो सांभलीने पण, आ शत्रुंजयमाहात्म्य सांभलीने जन्म सफल करो ? वली जो तत्वने जाणवानी इछा होय, अथवा धर्ममां वास्तविक बुद्धि होय, तो बीजुं सघलुं तजीने आ उत्तम गिरिवरनो आश्रय करो ? आ शत्रुंजय ती-

र्थ समान बीजुं कोइ उत्तम तीर्थ नथी, तथा तेना समान बीजो कोइ धर्म नथी, केम के, त्यां जइ जिननुं ध्यान करवुं, ते जगतने सुखनुं कारण छे. अशुभ परिणामथी, मन, वचन, अने कायाथी जे पाप बांध्युं होय, ते भयंकर पाप पण आ शत्रुंजय गिरिनां स्मरणथी नाशने प्राप्त थाय छे. वली आ शत्रुंजय पर्वतनां दर्शनथी सिंह, वाघ, सर्प, भील तथा हिंसक पक्षिउ पण स्वर्गगामी थाय छे. वली जेउए सुर, असुर, अने मनुष्यादि भवोमां पण आ शत्रुंजय पर्वत जोयो नथी, तेउने पशु सरखा जाणवा, अने तेउ मोक्षनां अधिकारी थता नथी. अन्य तीर्थोमां उत्तम ध्यान, शील, दान तथा पूजनथी जे फल मले छे, तेथी पण अधिक फल शत्रुंजयमाहात्म्य सांभल्याथी मले छे. माटे हे लोको! आ गिरिराजनुं माहात्म्य तमो महा भक्तिथी सांभलो? केम के, ते सांभलवा मात्रथीज संपदाउ प्राप्त थाय छे.

एक दहाडो घणां देवोथी वींटाएला एवा श्री महावीर स्वामी, द्रव्य भाव रूप शत्रुने जीतनारा एवा आ शत्रुंजय पर्वत प्रते आव्या. ते वखते जाणे जिनेश्वरोने नमस्कार करवा माटे उतावलज करतां होय नहीं, तेम इंद्रोनां आसनो एकदम कंपवा लाग्यां. त्यारे वीश भवनपतिनां इंद्रो, बत्रीश व्यंतरनां इंद्रो, बे ज्योतिषनां इंद्रो, तथा दश उर्ध्वलोकनां इंद्रो, एम सघला मली चोसठ इंद्रो, देवो सहित, प्रभुथी भूषित थएला ते शत्रुंजय पर्वत प्रते आव्या. आ लोकमां जोवा लायक एवा आ पर्वतने जोइ जोइने, मस्तक धुणावता थका, ते इंद्रादिक देवो, पोताना सेवकोने नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्या.

अहो! आ महान शोभावालो गिरिराज निरुपम किरणोवालां रत्नोयें करीने जाणे चित्रेलो होय नहीं!! तेवो शोभे छे; वली सोनानां शिखरो वडे करीने, जाणे सर्व पर्वतोनो स्वामी होवाथी, मुकुटोथी शोभतो होय नहीं जेम तेम आ पर्वत शोभे छे. वली ते आकाशमां पहोंचतां एवां सोनां, रूपा, अने रत्ननां शिखरोथी एकी वखते पृथ्वी अने स्वर्गने पवित्र करतो थको पापने हरनारो छे; वली आ पर्वत स्वर्णगिरि, ब्रह्मगिरि, उदयगिरि, तथा अर्बुदगिरि आदिक एकसोने आठ शिखरोथी अत्यंत शोभे छे. वली स्वर्गमंदिर सरखां अरिहंत प्रभुनां मंदि-

रोथी, तथा यक्षोनां मंदिरोथी अत्यंत शोभे छे. वली आ शत्रुंजय पर्वत यक्ष, किन्नर, गंधर्व, विद्याधर, तथा देवोनां समूहोथी, तथा अप्सराओथी सेववा लायक थयो थको अत्यंत शोभे छे. वली आ पर्वतमां मोक्षनी इच्छा वाला योगीओ, विद्याधरो तथा भुवनपतिओ पवित्र गुफाओमां रहिने श्री अरिहंत प्रभुनुं ध्यान धरे छे. वली आ शत्रुंजय पर्वत रसकुंपिका, रत्ननी खाणो, तथा दिव्य औषधिओथी संपूर्ण थयो थको सघला पर्वतोनां गर्वने भेदनारो छे. वली आ पर्वत कस्तूरीआं मृगोनां टोलांओथी, मयूरोथी, मदोन्मत्त हाथीओथी, तथा चमरी गायोनां समूहोथी सर्व बाजुएथी शोभे छे. वली आ पर्वत मंदार, पारिजातक, संतान, हरिचंदन, चंपक, अशोक, तथा सालरी आदिक वृक्षोथी भरेलो छे. वली केतकीनां पुष्पोनी सुगंधिथी सुगंध युक्त करेल छे दिशाओनां भागो जेणे, तथा झरता एवा पाणीनां झरणाथी वाचाल थएलो, तथा मालती, गुलाब, कृष्णागुरु, अने आंबा प्रमुखथी हमेशां पुष्प तथा फलवालो, एवो आ पर्वत अत्यंत शोभे छे. वली आ पर्वतपर कल्पवृक्षोनी घाटी छायामां बेठेली किन्नरीओ जिनेश्वर भगवाननां गुणोने गाय छे, अने तेथी पोताना पापोनो क्षय करे छे. वली झरता एवा पाणीना झरणानां बिंदुओथी आ पर्वतरूपी स्वामी, पोतानी मुक्तिरूपी स्त्रीनां हार माटे जाणे मोतीओने झरतो होय नहीं, तेम शोभे छे; वली अहीं एक बाजुपर, झरणामांथी पडता पाणीओनां बिंदुओने वर्षाद पडतो जाणीने, मयूरो प्रभुनी पासे नाच्या करे छे. वली एक बाजुए हजार फणाओथी शोभतो एवो शेषनाग प्रभुनी आगल अहीं दीव्य नाटक करतो थको शोभे छे. वली अहीं एक बाजुए उत्तम वस्त्रोवाली, तथा उत्तम रागवाली एवी खेचरीओ हाथमां वीणाओ लेइने, अरिहंत भगवाननां गुणोने गाती थकी देखाय छे. वली जे प्राणीओने जन्मथी मांडीने पण परस्पर वेर होय छे. एवा प्राणीओ पण पोतपोतानुं वेर तजीने अहीं जिननां मुखने जोता थका रमे छे. वली अहीं एक बाजुए पूर्व समुद्रमां जनारी एवी शत्रुंजयी नदी. भोनार तथा सांभलनाराओनी जाणे पुण्यनी रेखाज होय नहीं, तेम शोभे छे. वली एक बाजुए अहीं तालध्वज (तलाजा) नामनां शिखरनां उत्संगमांथी गमन करनी एवी तालध्वजी नदी शत्रुंजी नदीने

आवीने मळे छे. वळी अहींथी उत्तर दिशामां; स्वछ पाणीथी महा उदयवाळी, इंद्रे बनावेली, तथा विकस्वर कमलोवाळी "ऐंद्री" नामनी नदी वहे छे; तेने तमो जुओ ? वळी दीव्य जलनां मोजांओथी शोभीती थएली, तथा कमलनी अंदर रहेला हंसोवाळी, अने सारसथी सेवाएली एवी आ कपर्दिका नामनी नदीने तमो जुओ ? वळी हे देवो !! पश्चिम भागमां जगतनो उपकार करनारी, तथा वेहेता पाणीथी संपूर्ण, अने पापोनो नाश करनारी एवी आ ब्राह्मी नामनी नदी शोभे छे. वळी हे देवो !! अहीं शेत्रुंजी, ऐंद्री, नागेंद्री, कपिला, यमला, तालध्वजी, यक्षांगा, ब्राह्मी, माहेश्वरी, साभ्रमती, शबला, वरतोया, उज्जयंती, तथा भद्रा नामनी चौद महा नदीओ शोभे छे. वळी हे देवो !! अहीं पूर्व दिशामां अत्यंत शोभावाळुं सूर्योद्यान छे, तथा दक्षिण दिशामां नंदनवन सरखुं स्वर्गोद्यान छे, तथा पश्चिम दिशामां अत्यंत मनोहर चंद्रोद्यान छे, तथा उत्तर दिशामां आ लक्ष्मीलीलाविलास नामनुं उद्यान छे. एवी रीतनां, चार दिशाओमांथी आवती एवी लक्ष्मीनां चोटला सरखा चार उद्यानोथी आ शत्रुंजय पर्वत अत्यंत शोभे छे. वळी अहीं सौधर्मेंद्रनां हुकमथी कुबेरे बनावेलो, तथा पापरूपी मेलने धोनारो एवो इंद्र नामनो कुंड शोभे छे. स्फुरायमान थती एवी चांदनी सरखा पाणीनां मोजांथी शोभतो, अने जाणे भरतनां यशोनो ढगलोज होय नहीं, एवो भारत नामनो कुंड अहीं शोभे छे. वळी अहीं मंद मंद वाता एवा पवनथी चलायमान थता मोजानी पंक्तिथी शोभतो एवो कपर्दीयक्षनो कुंड कोने सुख करनारो नथी ? (अर्थात् सर्वने सुख करनारो छे.) वळी अहीं मुक्ति रूपी स्त्रीनुं मुख जोवा माटे दर्पण सरखो, तथा प्रीति उत्पन्न करनारो एवो हिल्लण मुनिनो कुंड तमो जुओ ? वळी सर्वतीर्थावतार छे नाम जेओनुं, एवा चंद्रकुंड अने सूर्यकुंडने, तथा बीजा पण कुंडोने, हे देवो !! तमो अहीं जुओ ?

वळी हे देवो !! अहीं आ बाजुए उत्तम बुद्धिवान एवो आ मुनि तप तपे छे, तेनां विचित्र चरित्रनी वार्ता तमो कौतुकथी सांभलो ?

पूर्वे यम सरखो, तथा पापीओनो स्वामी एवो, चंद्रपूरनो आ कंडु नामे राजा हतो. ते धनना मद राखीने देव, गुरु, वृद्ध, तथा मातपि-

ताने पण गणकारतो नहीं. (पूर्वनां पुण्यथी पापीउनी संपदा पण वृद्धि पामे ढे, पण पाढलथी ते तणखलानी अग्निनी शिखानी पेठे मूल सहित विनाश पामे ढे.) ते राजा सुतो थको पण परस्त्री, अने परधननी इछा करनारो हतो, तथा धन मेलववानी इछाथी लोकोने हमेशां डुःख देतो हतो; प्रज्ञाते उठीने लोकोने बोलावीने, निर्जय थयो थको तेमनी पासेथी ते धन लेतो. (राजाउ प्रायें करीने पुण्यथी संपूर्ण संपदावाला थाय ढे, अने पढी तेज पुण्यनो द्वेष करे ढे, माटे तेउ डुर्गतिमां जाय ढे.) एवी रीतें चक्रवाक प्रते चंडनी पेठे, लोकोने डुःख देइने, अंते क्षयनां रोगवालो थयो थको मित्रनी पेठे (सूर्यनी पेठे) ते धर्मने स्मरवा लाग्यो. (ज्यांसुधि सर्व बाजुथी सुखथी प्राप्ति होय ढे, त्यांसुधि मूढ माणस अहंकारमांज रहे ढे, पण मृत्यु काल आवते ते धर्मनुं स्मरण करे ढे.) एक दहाडो ते राजा क्रूर सेवकोथी सेवायेलो तथा परना डोहनी चिंताथी दुष्टाशयवालो थयो थको जेवामां सन्नामां बेठेलो ढे, तेवामां आकाशमांथी कल्पवृक्षनां पत्रपर लखेलो एवो कोइके नाखेलो नीचेनो दिव्य श्लोक तेनी पासे आवीने पड्यो.

धर्मादधिगतैश्वर्यो, धर्ममेवनिहंति यः ॥
कथं शुन्नगतिर्जावी, स स्वामिडोहपातकी ॥ १ ॥

अर्थः— धर्मथी मलेलढे, संपदा जेने, एवो जे माणस तेज धर्मनो नाश करे ढे, ते स्वामीडोहनां पापवालो माणस शुन्न गतिवालो शी रीते थाय? (अर्थात् न थाय.)

एवी रीतनां श्लोकने ते राजाए हर्षथी वांच्यो, तथा तेनो अर्थ जाणीने ते मनमां नीचे प्रमाणे चिंतववा लाग्यो. अहो!! में महा मोह अने कपटवाला चित्तथी कष्ट पड्युं त्यांसुधि पण पापकार्य आचार्युं, अने ते हवे मने स्पष्टरीते फल्युं! वली मत्स्य जेम मांसने, तेम में संपदाने मेलवीने मारा आ आत्माने संसाररूपी जालमां फसाव्यो!!! वली जे राजा न्यायनां मार्गमां चाल्यो ढे, ते बन्ने जवमां निर्जय थाय ढे, तथा जे अन्यायने मार्गे चाले ढे, ते प्रजा, कुल अने राज्यनो नाश करनारो थाय ढे. एवी रीते चिंतातुर थइने ते महामूर्ख राजा रात्रियें राज्य न-

जीने झंपापातथी मरवानी इच्छावालो थयो थको चालवा लाग्यो. एवी रीते चालतां थकां जेटलामां ते गामनी बहार आव्यो, तेटलामां तेणे एक सुंदर अंगवाली गायने सामी आवती जोइ; पछी त्यां ते गाये अचानक पुंछडुं उंचुं करीने, क्रोधथी, वैरीनी पेठे तेने शींगडानां अग्र भागथी मार्यो. पछी पूर्वनां अनुभवथी ते राजा पण खड्ग कहाडीने, यम सरखो थयो थको, क्रोधथी तेनां तरफ दोड्यो; त्यारे ते गाय पण क्रोधायमान थइ थकी, तथा अत्यंत फुंफाटा मारती थकी तेनी सामे लडवाने दोडी; एवी रीते क्रोधथी सन्मुख आवती ते गायने राजाये तलवार मारीने तेनां बे टुकडा कर्या, त्यारे तेणीनां कलेवरमांथी एक स्त्री नीकली; भयंकर अंगवाली, तथा अत्यंत लाल आंखोवाली, अने हाथमां कातरने नचावती एवी ते स्त्रीए निष्ठुर अक्षरवाली वाणीथी राजाने रणसंग्राम माटे बोलाव्यो; अने कह्युं के, रेदुष्ट! तें आ शस्त्रविनानी अने गरीबडी गायने मारी! माटे हवे जो तारामां शक्ति होय, तो मारी साथे लडवाने तैयार था? एवी रीतनुं तेनुं हेतुवालुं वचन सांभलीने, ते राजा पण पोतानां खड्गपर दृष्टि राखीने, आवी रीते अपवित्र वाणी बोलवा लाग्यो; अरे! तुं कोइ युवान, अने केलनां पात्रां सरखा कोमल अंगवाली स्त्री छो, अने हुं शस्त्रमां पंडित एवो शूरो क्षत्री छुं; माटे हे मानिनि? तुं कहे आपण बन्नेनुं युद्ध कंइ प्रशंसनीक कहेवाय? केमके, अहंकारी एवो सिंह कंइ हरणीनी साथे युद्ध करवानी याचना करे? (अपितु नज करे.) एवी रीते बोलता एवा ते राजाने ते स्त्री कहेवा लागी के, हे राजा? हुं कंइ तारी पेठे वाचाल नथी, माटे तुं लडवाने तैयार था? ते सांभलीने राजा हाथमां खड्ग लइने तेनी सामे दोड्यो, पण तेटलामां तेणे पोतानां शरीरने तेणीनी कातरथी विंधायेलुं जोयुं, अने तेमांथी रुधिर झरवा लाग्युं. पछी ते स्त्री तेने कहेवा लागी के, हे राजा? तें तारुं पराक्रम हवे जाण्युं? अने हजु पण जो तुं समर्थ होय, तो लडवाने तैयार था? एवी रीतनी तेनी वाणी सांभलीने कंइ राजा मनमां विचारवा लाग्यो के, अहो! मारुं कर्म उलटुं होवाथी आ स्त्रीए पण मने जीत्यो. (माटे ज्यांसुधि पूर्वनुं करेलुं पुण्य क्षय थतुं नथी, त्यांसुधिज माणसनुं बल, तेज, अने कीर्ति अखंडित रहे छे. माटे

प्राणीउंने पुण्यज प्रमाणरूप छे, केमके क्षीण तेजवालो सूर्य पण केट-लोक वखत चलकी शके ?) वली पुण्यथीज प्राणीउंने हमेशां सुख मले छे, अने तेज सुख पुण्यनो नाश थवाथी झेरनी पेठे दुःख आपे छे. वली जे हुं आगल हाथीउंने पण एक चामरनी पेठे आकाशमां उछालतो, ते हुं आजे आ स्त्रीथी जीतायो ! ! एम विचारतां थकां तेने याद आव्युं के, अहो ! में राज्यनो त्याग कर्यो, मने महारोग थयो, अने वली क्रोधथी में गायने मारी ! ! वली हुं मृत्यु माटे तो निकलेलो छुं, त्यारे वली हुं गायथी केम डर्यो ? वली एवी रीतें प्रसंगथी मलतुं मरण मुकीने, कुगतिने देनारुं गौहत्यानुं में पाप आचर्युं. वली पुण्य मेलव्या विना प्राणी दुःखी थाय छे, केमके, मूडी विनां बुद्धिवान माणस पण दुःखी थाय छे, हवे तो हुं आ आपदारूपी समुद्रमां डुब्यो, माटे हवे हुं शुं करुं ? केमके, आग लाग्या पछी कुवो खोदवाथी सुख थतुं नथी. एवी रीतें विचार करता एवा ते राजाने ते देवांगना कहेवा लागी के, अरे ! महापापी मूढ ! हवे दुःखी थयो थको तुं शुं चिंतवे छे ? पेहेलां तो राज्यनां मदथी अंध थइ तें धर्मनो द्रोह कर्यो, अने हवे दुःख वखते तुं धर्मने संभाले छे ! वली धर्मशिवाय बीजो कोइ पण प्रशंसवा लायक पदार्थ नथी, एम बुद्धिवानो माने छे, माटे अंतकाले पण धर्मनुं स्मरण करवाथी ते द्रोहीने पण तारे छे. वली हे मूढ ! तारा चित्तमां धर्मबुद्धि नथी, पण रोगनी पीडाथी तुं पुण्यने याद करे छे, माटे में तारी परीक्षा करी छे; हुं तारी गोत्रदेवी अंबिका छुं, अने तारा सत्वनी परीक्षा माटे हुं गायनुं रूप करीने आवी हती; वली हे राजा ! हजु पण तारुं मन क्रोधातुर छे. पण धर्मने रहेवा लायक, तथा समता रूपी अमृतथी भीं-जाएलुं नथी. माटे हवे तुं देशांतरोमां जइने तीर्थपर्यटन कर ? अने तने धर्माराधननो वखत हुं निश्चयें करीने कहीश; एम कहीने ते देवी अंतर्ध्यान थइ, त्यारे कंडु राजा विचारवा लाग्यो के अहो ! हजु पण मारुं भाग्य जागतुं छे ! केमके गोत्रदेवी मने साक्षात नजरे पडी ! माटे हवे मारा मन रूपी हाथीने वश करवा माटे हुं यत्न करुं, के जेथी मोक्षरूप लक्ष्मी मने प्रत्यक्ष थाय. एम विचारीने धनाले ते कोइक दिशाप्रते चालवा लाग्यो, अने स्वच्छ चित्तवालो होवाथी ते कंइ पण दुःख पाम्यो

नहीं. एवी रीते क्रोध रूपी अग्निने शमावीने पृथ्वीपर ज्ञमतो थको, तथा प्राणीउं प्रते समता सहित चित्तवालो थयो थको कोल्लाक नामनां पर्वत प्रते ते आव्यो. त्यां रात्रिने पाछले पहोरे, तेनो पूर्व ज्ञवनो वैरी यक्ष, द्वेष लावीने तेनी पासे आव्यो; ज्ञयंकर दृष्टिवालो, तथा हाथमां गदावालो, लाल मुखवालो, अने ज्ञृकुटी ज्ञमावतो एवो, ते यक्ष क्रोधथी नीचे प्रमाणे वचन तेने कहेवा लाग्यो के, अरे डुष्ट ! कामांधपणाथी तें मने मारीने मारी स्त्रीने पण तें मारी छे, ते तने याद छे? माटे हवे तुं तारा इष्ट देवनुं स्मरण कर? केमके, मदांध माणस सुखनी इछाथी पापो करे छे, पण तेनुं वखत आव्ये ज्ञयंकर परिणाम निपजे छे, माटे हवे तुं लडवाने तैयार था? एवी रीतनां तेनां वचनो सांज्ञलीने राजा मौन रह्यो, त्यारे ते यक्ष तेने उपाडीने क्षणवारमां आकाशमां चडी गयो; तथा पर्वतनां मध्य ज्ञागमां रहेली गुफामां तेने लेइ जइने, त्यां तेणे तेने क्रोधथी विविध प्रकारना बंधनोथी वांध्यो. त्यां ते पाटुउंथी ताडन पामवा, तथा छपाटोथी पीडावा लाग्यो, ते जाणे पूर्वे करेलां पापोनुं प्रायश्चितज संज्ञालतो होय नहीं, तेम लाग्यो. पर्वतनां अग्र ज्ञागमां, समुद्रमां, कांटावाला वृक्षमां तथा गुफामां तेने फेंकी फेंकीने, ते यक्ष अंतर्ध्यान थयो. ते वखते ते पूर्वनां पुण्यथीज वच्यो, नहीतर तेवा मारथी तो त्रण लोक पण फाटी जाय; पछी ते राजा विचारवा लाग्यो के, अहो! पूर्वनां पापरूपी वृक्षनुं आ तो हजु कुंपलीउं निकल्युं छे, पण नरक आदिकनी गतिरूप तेनां पुष्पो अने फलो तो हजु हवे थवानां छे. मदांध एवा अधम माणसो लीलामात्रथी पापोने वांधे छे, पण पछी रडतां पण तेथी पोतानो आत्मा छोडावी शकातो नथी. एवी रीते पोते करेलां पापोनो पस्तावो करतो थको, तथा तेनां क्षय माटे शुज्ञ ध्यानवालो थयो थको तीर्थने उद्देशीने ते चालवा लाग्यो. वली ते सर्व प्राणीउंने पोतानी पेठे जोतो थको, द्वेष रहित थइने, पुण्य मेलववा माटे ज्यां त्यां ज्ञमवा लाग्यो.

एटलामां तेनी अंवा नामनी शासनदेवी पोतानां वचन प्रमाणे प्रसन्न थइने तेनी पासे आवीने कहेवा लागी के, हे वत्स ! हवे तुं शत्रुंजय पर्वत प्रते जा? अने त्यां तारां हत्यादिक पापो नाश पामशे;

वली तारा पूर्वजोनी भक्तिथी खुशी थइने में तने पहेलां पण शिखामण आपी हती, अने आजे पण हुं तने आ तीर्थ बतावुं छुं. वली मुग्ध एवो संसारी जीव शा माटे बीजां तीर्थोमां भमे छे ? एकवार फक्त शत्रुंजय पर्वतनुं ते शामाटे स्मरण करतो नथी ? केमके, शत्रुंजय पर्वतने सारी रीते पूजवाथी, अथवा तेनुं स्मरण करवाथी, अथवा तेनी स्तुति करवाथी, अथवा तेने जोवाथी पण कर्मनो क्षय थाय छे. पापीओने शल्यरूप, धर्मीओने सर्व सुख आपनार, इच्छावालाओने इच्छित आपनार एवो आ शत्रुंजय गिरि जयवंतो वर्तो ? वली तप दान अने पूजा विना पण शुभ भावथी केवल आ शत्रुंजयनो जे स्पर्श, ते मोक्ष सुखने देनारो छे; वली तारुं आ निबिड कर्म नरकादिक गतिने देनारुं छे, माटे ते शत्रुंजय विना बीजा कशाथी पण क्षय थशे नहीं. वली हे वत्स ! आटलो वखत तुं महामूढ़ी होवाथी में तारी उपेक्षा करी हती, पण हवे तो तुं आ तीर्थाधिराजने योग्य छे, माटे तने हुं कहुं छुं. जगतने पावन करनारी एवी एकवार करेली आ पर्वतनी सेवा पण, लाख भवमां उपार्जन करेलां पापोने दूर करे छे. वली शत्रुंजय समान तीर्थ, आदिनाथ समान प्रभु, अने जीवरक्षा सरखो धर्म आ त्रणे दुनीआमां नथी. वली मुक्तिरूपी स्त्रीनां विवाह माटे वेदिका सरखो, आ अद्भुत शत्रुंजय पर्वत जयवंतो वर्ते छे. संसाररूपी समुद्रमां डुबता एवा माणसोनां समूहने आश्रय भूत बेट समान, तथा मुक्तिरूपी कांतावालो एवो आ पर्वत शोभे छे. पापोने जीततो, धर्मने पुष्ट करतो, सुखने आपतो, तथा सघला लोकोने पवित्र करतो, एवो आ शाश्वतो शत्रुंजय पर्वत जयवंतो वर्ते छे. वली हे राजा ! तुं पण त्यां समता रूपी जलमां स्नान करवाथी पवित्र थइने, तथा आत्मरमणतानुं आलंबन लेइने आ तीर्थनां योगथी मोक्ष प्रते जइश. एवी रीते देवीनां मुखरूपी कमलमांथी निकलता मकरंद सरखा शत्रुंजयनां महिमाने सांभलीने, ते राजा, जाणे अमृतथीज सींचायलो होय नहीं. अथवा दूधथीज जाणे धोवायलो होय नहीं, अथवा चांदनीथीज जाणे नाहेलो होय नहीं तेम उत्तम निर्मलपणाने पाम्यो. पछी ते राजा, जगतनी पण माता एवी ते अंबा देवीने नमस्कार करीने, शंख सरखा उज्ज्वल

मनवालो थयो थको, तथा उत्तम चारित्रनी इच्छावालो थयो थको शत्रुंजयने उद्देशीने चालवा लाग्यो; ते वखते तेणे शत्रुंजयप्रते पहोंचवा सुधि आहारना पच्चरकाण कर्याँ; तथा पर्वतनां गुणोथी तेनुं मन पण हराइ गयुं; पछी एवी रीते चालतां थकां सात दिवसे तेणे शत्रुंजय गिरिनुं शिखर दीठुं; ते वखते तेनां दर्शनमां उत्कंठित एवी पोतानी बन्ने आंखोने ते कंडु राजा नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो के, हे नेत्रो! तमारां पुण्यनां समूहथी आ गिरिराजने में प्रत्यक्ष जोयो, माटे तमो तेने सारी रीते जुओ? एवी रीते अत्यंत हर्षित थयेलो एवो ते कंडु राजा, रस्तामां कोइक महामुनिने जोइने, तेने नमस्कार करीने तथा तेनां मुखसामी दृष्टि करीने तेनी पासे बेठो. ते वखते ज्ञानी, अने दयाथी उज्ज्वल एवा ते मुनि पण, ते राजाने वैराग्य युक्त जाणीने आग्रह सहित देशनाथी नीचे प्रमाणे तेनापर अनुग्रह करवा लाग्या के, हे वत्स! तुं धर्ममां उत्सुक छे, अने वली शत्रुंजय पर्वत प्रते जाय छे, माटे तुं हवे चारित्रनुं लक्षण सांभल?

सर्वज्ञोए कर्मरूपी काष्टने छेदनारुं, तथा पंचमगतिने देनारुं, एवुं पांच प्रकारनुं चारित्र कहेलुं छे, तेमां पेहेलुं सामायिक चारित्र, बीजुं छेदोपस्थापनीय चारित्र, त्रीजुं सूक्ष्मसंपराय चारित्र, चोथुं परिहारविशुद्धि नामनुं चारित्र, तथा पांचमुं यथाख्यात नामनुं चारित्र कहेलुं छे. चारित्रविनां ज्ञान अने दर्शन पांगलानी पेठे वृथा छे, तथा ते चारित्र पण ज्ञान अने दर्शन विना अंधनी पेठे निष्फल छे. वली जेम सुवर्णनां कुंभमां अमृतनुं भरवुं, तथा सोनामां सुगंधि आववी, चंदनने चंदननो लेप करवो, तथा वींटीमां मणि जडवुं, तथा पर्वने दिवसे महादान देवुं, तथा दानमां जेम भाव लाववो, तेम शत्रुंजय पर्वतपर चारित्र सहित जे जिननुं ध्यान धरवुं, ते उत्तम फलने देनारुं जाणवुं. एवी रीते मुनिनी वाणीथी बुझेला एवा ते कंडु राजाए ते मुनिनी पासेथी दीक्षा लीधी, तथा द्रव्य अने भावथी परिग्रहनो त्याग करीने, प्रसन्न दृष्टिवालो थयो थको ते तीर्थप्रते पहोंच्यो; तथा त्यां शीलरूपी बखतरवालो, अने व्रतरूपी हथीयारवालो, तथा दयारूपी ढालवालो थयो थको पर्वतपर चडीने पापरूपी शत्रुने ते वेगथी हणवा ला-

ग्यो; वली त्यां आदीश्वर प्रभुनी प्रतिमाने जोइने तृप्ती नहि पामतो थको, रोमांच सहित ते पोतानां चक्षुने निमेष रहित करवा लग्यो. ते आ मुनि शिखरनां अग्र भागपर रहीने दुष्कर तप तपे छे, तथा हमणाज ते घाती कर्मनो क्षय करीने केवल ज्ञान पामशे. हे देवो! हुं माहाविदेह क्षेत्रमां गयो हतो, त्यांथी आ सघलो व्रतांत में श्री मंदिरस्वामीनां मुखथी सांभल्यो छे, माटे महापापी माणस पण श्रीशत्रुंजयनी सेवाथी आ कंडु राजानी पेठे शुद्ध धर्मने भजनारो थाय छे.

हवे ते वखते बीजा देवताओ पण कांतिथी आकाशने दीपावता थका त्यां जिनेश्वरोने नमस्कार करवा माटे आव्या. वली त्यां सघला इंद्रोए, दुष्कर्मोने नाश करनारी, तथा भूतादिकनां दोषने दूर करनारी एवी रायणने प्रदक्षिणा देइने, श्री वीरप्रभुने नमस्कार कर्यो. वली तेओए त्यां नाना प्रकारनी लब्धिवाला, अष्टांग योगमां निपुण, प्रभावनाना उदयवाला, ध्यानमां मग्न आत्मावाला, मौनधारी, धर्मनुं माहात्म्य कहेनारा, जपमां तत्पर, जपमालानां मणकाओ फेरववामां तत्पर, मांहोमांहे धर्मकथा करनारा, कायोत्सर्ग करनारा, पद्मासन वालीने बेठेला, अनुकंपा वाला, हाथ जोडीने बेठेला, आदीश्वर प्रभुनां मुखरूपी कमलने जोवामां तत्पर, सूर्य सन्मुख राखेल छे दृष्टि जेओए एवा, हाथमां पुस्तकवाला, तप तपता, तीर्थसेवा करता, सघला सिद्धांतनां तत्वनी विद्यामां निपुण, श्वेत वस्त्रने धारण करनारा, परिषहोने सहन करनारा, अंतरंग शत्रुने जीतवामां शूरा, प्राणीओपर उपकार करनारा, चौद उपकरणोनुं पडिलेहण करता, मूर्तिवंत जाणे शांतरसोज होय नहीं एवा, तथा देहधारी जाणे धर्मोज होय नहीं एवा, वीर भगवाननी आसपास रहेला केटलाक मुनिओने पण वांद्या.

हवे अहीं मांहोमांहे स्पर्धा करता थका देवो उत्तम रत्नोथी नीचे प्रमाणे समवसरणनी रचना करवा लाग्या. त्यां वायुकुमारो सुगंधि वायु वींझवा लाग्या; तथा मेघकुमारो अत्यंत सुगंधि जलनी वृष्टि करवा लाग्या. ते वखते पाणीथी सींचायेली शत्रुंजय पर्वत उपरनी भूमि, मंगलरूप फलने उत्पन्न करनारा पुण्यरूपी वृक्षने उगाडवामाटेज जाणे तैयार करेली होय नहीं, तेम शोभवा लागी; वली त्यां देवोने एक

योजनसुधि घुटणपुर, नीचे रहेलां डींटीआंवाली पुष्पनी श्रेणि पाथरी; वली त्यां व्यंतरोये रत्नो साथे बांधीने पचरंगी पुष्पोने विखेर्यां. एवी रीते त्यां पृथ्वीपर विखरायेलां विचित्र पुष्पो, जाणे प्रभुनी पासे कामदेवे पोतानां हाथीयारो छोड्यां होय नहीं, तेम शोभवा लाग्यां. वली त्यां व्यंतरेंद्रोये चारे दिशाउंमां लाल तोरणो बनाव्यां; के जेथी सूर्यथी जेम, तेम दिशाउंनां मुखो रंगयुक्त शोभवा लाग्यां. वली त्यां भुवनपतिनां इंद्रोये बहारनां भागमां रूपानो गढ बनाव्यो, ते जाणे मूर्तिमान एवो प्रभुनां शुभ ध्याननो भंडारज होय नहीं, तेम शोभवा लाग्यो; वली एक योजन सुधि पृथ्वीपर व्यापीने रहेलो, चंद्र सरखी कांतिवालो तथा बत्रीस अंगुल सहित तेंत्रीश धनुषनां प्रमाणवालो उंचाइमां पांचसें धनुषनां मानवालो, कुंडल सरखा आकारवालो, तथा सोनानां कोंगरांथी शोभतो एवो ते गढ पृथ्वीपर शोभतो हतो. ते गढनी अंतरमां पंदरशो धनुष्य जेटली भूमि छोडीने, ज्योतिष देवताउंये उत्तम सोनानो गढ बनाव्यो. उपर कहेला रूपानां गढ सरखाज उंचा अने विस्तारवाला एवा आ गढ उपरे मनोहर रत्नमय कोंगरां शोभतां हतां. ते गढनी वच्चे वैमानिक देवोये विचित्र प्रकारनां रत्नोवालो, उपर जेवडोज रत्नो गढ बनाव्यो. ते गढपर विविध प्रकारनां दिव्य प्रभाववालां रत्नोनां कोंगरांउंनी श्रेणि अत्यंत शोभवा लागी. वली त्यां रहेली रंगबेरंगी पताकाउं, जगतमां भ्रमणथी संतापने प्राप्त थयेला एवा प्राणीउंनां पसीनाने जाणे दूर करवा माटेज होय नहीं, तेम फरकवा लागी. वली ते पर सोनानी घुघरीउंनां अवाजथी वाचाल करेल छे दिशाउंनां मुख जेणे, एवो रत्नमय महाध्वज शोभतो हतो. वली त्यां दरेक गढोमां, उत्तम बारणांवाला चार दरवाजाउं अत्यंत कांतिवाला रत्नोथी शोभता हता; ते जाणे चारे दिशाउंनी लक्ष्मीने प्रवेश करवा माटेज होय नहीं, तेम लागता हता. वली ज्यां इंद्रनीलमणीनां (पानानां) बनावेलां तोरणो, युवान एवा गढोनी जाणे डाढीमुछोज उगेली होय नहीं, तेम देवोने भ्रम उपजावता हता. वली त्यां दरेक बारणापासे, स्फुरायमान थता एवा जे धूपधाणां, तेमांथी निकलता धुंवाडायें करीने व्याप्त करेल छे दिशाउंनां मुखो जेणे, एवा ते महान् गढो, जाणे अंधकारने नसाडताज होय नहीं, तेम शोभता हता. वली

त्यां देवोये दरेक द्वारप्रते सोनेरी कमलोथी शणगारेली, तथा उत्तम पाणीथी भरेली, एवी वावो, अरिहंत प्रभुने नमनाराउने स्नान करवामाटे बनावी. वली त्यां देवोये पेहेला अने बेह्वा गढनी वच्चे, प्रभुने विश्रांति आपनारो, " देवछंद " ईशानसन्मुख बनाव्यो. वली ते रत्नना गढनी अंदर मध्य भागे देवोये मणीनी पीठीकावालुं सत्तावीश धनुष उंचुं चैत्यवृक्ष बनाव्युं. तेनी नीचे उत्तम पादपीठमां जडेला मणिउथी सूर्यनां बिंबनी पेठे सोनानुं सिंहासन शोभतुं हतुं. वली भक्तिथी दीपता एवा देवोये ते सिंहासन पर, त्रण जगतनां प्रभुपणाने जणावनारां त्रण छत्रो धारण कर्यां. वली त्यां एक हजार जोजन उंचो तथा मोक्षमां चडवाने निसरणी सरखो सोनानो धर्मध्वज शोभतो हतो. वली त्यां दरेक गढनां दरेक द्वारप्रते तुंबरु प्रमुख, उत्तम शृंगारवाला पोलीआउ शोभता हता. एवी रीते लक्ष्मीनां स्थानक सरखा समवसरणने करीने, बाकीनुं सघलुं कार्य व्यंतरेंद्रोये संपूर्ण कर्युं. पछी देवोये मुकेलां सुवर्णनां कमलोप्रते स्थापेल छे चरण कमल जेणे एवा, तथा नवतत्वोनां स्वामी, अने नवनिधाननां देनारा, तथा याचकोयें करीने वाक्योथी स्तुति कराता, मनथी चिंतवन कराता, कानथी श्रवण कराता, अने क्रोडो आंखोथी जोवाता, तथा जगतनां जीवित सरखा तथा धर्माउनां सर्वस्व सरखा, एवा श्रीवीरप्रभु पूर्वद्वारथी समवसरणमां दाखल थया. वली धर्मनां चक्रवर्ती एवा ते प्रभुनी अगाडी, सोनेरी कमलपर रहेलुं, तथा पापरूपी अंधकारनो नाश करवामां सूर्यनां मंडलसरखुं एवुं धर्मचक्र रहेतुं हवुं. वली प्रभुनी प्रदक्षिणाने पामीने चैत्यवृक्ष पण क्षण वारमां जाणे अहंकारने पाम्युं होय नहीं तेम नवपल्लव अने पुष्पोवालुं थयुं. पछी धर्मचक्री तथा तत्वने जाणनारा एवा ते प्रभु "तीर्थायनमः" एवी रीतनो उंचेथी उच्चार करीने पूर्व दिशासन्मुख सिंहासनपर बेठा. वली ते वखते व्यंतरोये बीजी दिशाउमां पण प्रभुनां रूपो कर्यां; अने तेउ पण प्रभुनां मुखसरखांज शोभवा लाग्यां; आ सघलो महिमा प्रभुनो जाणवो. पछी त्यां पूर्व तरफनां द्वारथी साधुउ आव्या. तथा रत्ननां गढमां रहेला प्रभुने प्रदक्षिणा देइने, तथा नमस्कार करीने, अने भक्तिथी तेनी स्तुति करीने, अग्निखुणामां प्रभुनी सन्मुख बेठा; तथा पछी त्यां वैमानिक देवांगनाउ आ-

वी, अने तेउंनी पछाडी साधवीउं बेठी. वली त्यां अनुक्रमे ज्जवनपति, ज्यातिषी, अने व्यंतरनी स्त्रीउं दक्षिण द्वारेथी आवीने तथा प्रजुने नमीने नैऋत्य खुणामां बेठी. वली त्यां ज्योतिषी, ज्जवनपति, अने व्यंतर देवताउं, पश्चिम द्वारेथी प्रवेश करीने, तथा प्रजुने नमीने, वायव्य खुणामां बेठा. वली त्यां वैमानिक देवो, पुरुषो, तथा स्त्रीउं उत्तर द्वारथी आवीने, तथा प्रजुने नमीने इशान दिशामां बेठा. हवे बीजा गढमां हरिण, सिंह, पाडा विगेरे, प्रजुना दर्शननां माहात्म्यथी मत्सरनो त्याग करीने बेठा. तथा छेल्ला गढमां देव, असुर अने मनुष्योनां सघलां वाहनो रह्यां, केम के, एवी रीतनो जिनमतनो अनुक्रम छे; वली त्यां बीजा सिद्ध, गंधर्व, किन्नर विगेरे पण यथायोग्य स्थानके, प्रजुनां वचनरूपी अमृतने पीवाने उद्यमवंत थया थका बेठा. वली ते एक योजन प्रमाणवाला समवसरणमां पण क्रोडो गमे मनुष्य, ज्जुवनपति, देव विगेरे माया, ते सघलो प्रज्जाव प्रजुनो जाणवो. हवे त्यां सिंहासनपर बेठेला, तथा त्रण छत्रोथी शोजता, चामरोथी वीजाता, अने सर्व अतिशयोथी शोजता, सौम्य, कांतिनां समूहथी त्रणे जगतने व्याप्त करता, केवलज्ञानथी लोकोने जोनारा, त्रण लोकनां ऐश्वर्यथी सुंदर, सघला प्राणीउंनुं हित करनारा, तथा दीव्य प्रज्जावथी कीर्तिवंत थयेला एवा ते प्रजुने जोइने सघला देवो अवच नीय हर्षने पाम्या. वली ते वखते केटलाको मस्तक धुणाववा लाग्या, केटलाको प्रजुनां लुंछणां उतारवा लाग्या, तथा केटलाको प्रजुनी स्तुति करवा लाग्या. एटलामां सुराष्ट्रदेशनां राजानो पुत्र, यादवकुलवालो, रिपुमल्ल नामे जीर्णदुर्गनो (जुनागढनो) स्वामी त्यां आव्यो. ते वखते हर्षनां अश्रुथी ज्जरेली छे, आंखो जेनी, तथा रोमांचरूपी कुंचुकने धारण करनारो, अने स्फुरायमान थयेल छे, ज्जक्ति जेनी एवो सोधर्मेंद्र नीचे प्रमाणे प्रजुनी स्तुति करवा लाग्यो. हे सामान्य केवलीउंनां स्वामी, तथा जगतनां प्रजु, त्रण जगतमां तिलक समान, तथा संसारथी तारनारा तमो जयवंता वर्तो? वली हे देवाधिदेव, पूजनीक, करुणानां समुद्र, शरणे आवेला संसारीनुं रक्षण करनार, तथा करुणानी खाण समान तमो जयवंता वर्तो? वली हे जंगम कल्पवृक्ष सरखा, अरिहंत, परमेश्वर, परमेष्टी, मृत्युरहित, प्र तथा निरंजन एवा तमो जयवंता वर्तो? वली हे सिद्ध,

स्वयंबुद्ध, तत्वोनां समुद्र सरखा, सर्व सुखोना घर सरखा; तथा महेश्वर एवा तमो जयवंता वर्तो.? वली हे प्रभु ! तमो अनादि, अनंत, अव्यक्त, तथा स्वरूपने धारण करनारा छो, अने सुर, असुर तथा राजाउ तमोनेज नमस्कार करे छे. वली हे जगतनां स्वामी ! आपनाथीज हुं आ जगतने धन्य मानुं छुं, तथा अन्य पाखंडिउनां तर्क अने कुयुक्तिउथी क्षोभ नहीं पामता एवा तमो प्रते नमस्कार थाउ? वली हे प्रभु ! तमारा पासेथी हुं मोक्ष सुखनी इछा राखुं छुं, अने तमारा अतुल्य महिमाने देवो पण जाणी शकता नथी. वली हे देव! तथा सर्व तत्वोनां जाणनार! उत्कृष्ट ज्ञान आपमां रहेलुं छे, केम के, मोक्ष हमेशां आपने आधिन छे, एम ज्ञानीउ कहे छे. वली हे ईश्वर! तमोये जगतनो उद्धार करवा माटे मनुष्यनुं रूप धारण करेलुं छे, नहींतर आ जगत अजगतज कहेवात. वली सर्व देवोने विषे देवपणुं पण तमारा अंशथीज प्राप्त थयेलुं छे, केमके अन्यदर्शनीउ पण वीतरागपणानेज मुक्ति कहे छे. वली हे जगतनां पूज्य, निश्चयें करीने तमोज परमेश्वर छो, केमके, रागद्वेषें करीने सहितने तत्वथी परमेश्वरपणुं घटी शकतुं नथी. वली भाग्यहीन माणसो अन्य देवनी पेठे आपने जोइ शकता नथी, केमके, बीजां रत्नोनी पेठे चिंतामणी रत्न कंइ सुलभ होतुं नथी. वली हे प्रभु ! तमारेविषे प्रभावनी रिद्धि जेवी छे, तेवी अन्य देवोमां नथी, केमके ताराउमां सूर्यनी प्रभा क्यांथी होय? वली हे प्रभु ! ज्यां तमो विहार करो छो, त्यां सो जोजनसुधि कंइ पण उपद्रव थतो नथी, अहो ! मोटाउनो प्रभाव पण मोटोज होय छे ! ! वली हे भगवन्. ज्योतिरूप एवा तमोज योगीउने ध्यान धरवा लायक छो, वली आठ कर्मोनो नाश करवामाटे आपे अष्टांगयोग करेलो छे. वली स्वामीनां पण स्वामी, गुरुनां पण गुरु, अने देवोनां पण देव. एवा तमो प्रते नमस्कार थाउ ? वली जलमां, अग्निमां, वनमां, शत्रुनां संकटमां, तथा सिंह, सर्प अने रोग आदिकनी विपदामां तमोज मारा शरणभूत छो: एवी रीते सुधर्मेंद्र, प्रभुनी स्तुति करीने, भक्तिपूर्वक, जेम तृषातुर जेम पाणीने, तेम प्रभुनां वचननुं पान करवाने बेठो. पछी त्रण जगतनां स्वामी एवा ते प्रभु, जगतनां हर्षमाटे सर्व भाषामां समान अर्थवाली, सर्व प्राणीउनुं हित करनारी, सर्व अतिशयोथी संपूर्ण, सर्व

प्रकारे शोजनिक, तात्विक अर्थथी मनोहर, शांत, तथा एक योजनसुधि संजलाय तेवी वाणी बोलवा लाग्या. जेम कस्तुरी पोतानां सुगंधपणाथी अमूल्यपणाने पामी छे, तेम आ शरीर पण धर्मथी उत्तमपणाने पामे. वली आ शरीरनी अंदर मलीन एवी सात धातुउ रहेली छे, तेम ते वहारथी पण अशुचि छे, माटे ते सर्वथा प्रकारे निरर्थकज छे. एवुं जाणीने पण मूढ एवो प्राणी कर्मने वश थइ, अहंकारयुक्त थयो थको पोताने अजरामर मानीने इछा प्रमाणे संचरे छे. वली आ कायाने आ संसारमां नाना प्रकारनां शस्त्रोथी, अग्निथी, स्थावर अने जंगम जेरथी, शत्रुउथी, तीव्र रोगोथी, अकाल मृत्युथी, टाढ तडकाथी, घडपणथी, इष्टनां वियोगोथी, इत्यादि महादोषोथी, अत्यंत क्लेश थाय छे; माटे एवी रीतनां आ असार देहने पामीने हे लोको! तमो जगतमां सारजूत, तथा पूजनिक एवा धर्मने करो? वली काचनां समूहोथी ज्यारे चिंतामणी रत्न मले, तथा रजथी सुवर्ण मले, पाणीनां बिंदुथी अमृतसमुद्र मले, तथा घर मात्रथी ज्यारे राज्य मले, त्यारे तेवुं कार्य तत्वने विचारनार कयो माणस न करे.? वली धर्मविना, माता, पिता, जाइ, मित्र तथा राजा पण प्राणीनुं आ संसारजालथी रक्षण करी शकता नथी, माटे ते धर्मनेज सेववो. वली ते धर्मप्रवृत्ति, काल आदिक उपायोथी, उचित आचारथी, ज्ञानगर्जित क्रियाथी, तथा मनुष्यजन्मथी बुद्धिवानो प्रते प्रशंसनीक थाय छे. वली धर्मज प्रगट रीते तीर्थंकरनी पदवीने योग्य छे, केमके तेनी अनुज्ञा प्रमाणे चालनारा लोको त्रिजुवननां पण स्वामी थाय छे. वली राजा आदिकनी सेवाथी शामाटे आत्माने दुःखी करवो जोइयें? केमके जे धर्मे तेउ प्रते पण राजापणुं दीधुं, ते धर्मनोज आश्रय करो? वली हे जव्य लोको! तमो विचारो के, धर्मविनां कोइ पण जगोयें कंइ पण मली शकतुं नथी, केमके, आ दुनिआमां केटलाको दुःखी अने केटलाको सुखी देखाय छे. वली हे जव्य लोको! रागादिकोने कोइ वखते पण वश थवुं नहीं, केम के, तेउ जरा सुख आपीने पाछा नरकादिकमां फेंकी दे छे. वली तमो विचारो के, विषयो सरखा आत्मानुं अहित करनारा बीजा कोइ पदार्थो नथी, केमके, तेउ संसारी जीवोने पापकार्योमां प्रवर्तावीने ज्ञानादिकनो नाश करे छे. ज्यांसुधि अ-

त्यंत तेजस्वी धर्मरूपी सूर्य प्रकाशतो नथी, त्यांसुधि ते विषयो अंधकारनी पेठे अटकाव रहित सर्वे जगोये फेलाय छे. वली प्रमादरूप पापोथी अंध थयेल छे ज्ञानवेत्रो जेउनां, एवा कुमार्गीउ, दुःखनां समूहरूपी जंगली प्राणीउथी व्याकुल एवा नरकरूपी वनमां पडे छे; स्वरूपमात्रथी जाणता एवा संसारी जीवो प्रत्यक्ष इष्टनां लोज्ञें करीने उज्ज्वल धर्मनां महिमाने जाणता नथी; वली दिवस, रात्रि, सुख, दुःख, जागरण, तथा निद्रादिकनां दृष्टांतथी पुण्य पापनुं फल प्रत्यक्ष जणाय छे. वली क्षुद्र एवा राक्षस, सिंह, सर्प आदिको पण जे उपद्रव नथी करता, ते सघलुं स्पष्ट रीते धर्मनुं माहात्म्य जाणवुं. वली धर्मनो द्वेष करनार, तथा महाबलवंत एवो प्रमाद सर्वथा तजवो, केम के, जो धर्मनो नाश थाय, तो शरीरमां व्याधि, बंध आदिकनी आपदाउ लागु पडे छे. माटे एवी रीते चित्तथी पुण्यपापनुं प्रगट फल जाणीने, जेथी कल्याणनी सिद्धि थाय छे, ते धर्मने जजवो. एवी रीते धर्मरूपी अमृतने फरनारा प्रजुनां वचनने अत्यंत पीने, लोको अखंड आनंद पाम्या. वली ते वखते सजानां लोको जाणे, अमृतथी तृप्त थया होय नहीं, तथा चांदनीथी जाणे धोवाया होय नहीं, तथा जाणे निधाननी लब्धिने प्राप्त थया होय नहीं, तेवा थया. वली केटलाकोये तो त्यां संयम लीधुं, तथा केटलाको सम्यक्त्व पाम्या, तथा केटलाको त्यां हर्षथी जद्रकजावने पाम्या. वली त्यां शत्रुंजय प्रते प्रजुने आवेला जाणीने सौधर्मेंद्र अत्यंत हर्ष पूर्वक पुण्य कार्यमां जक्तिवंत थयो. वली त्यां त्रणे जगतोनां माणसोथी पूजायेली आदीश्वर प्रजुनी प्रतिमाने, तथा दूधने फरती रायणने, अने तेनी नीचे रहेलां प्रजुनां पगलांने, तथा नदी, तलाव, कुंड, शिखरो, वृक्षो, वनो. अने नगरोने जोइने, तथा प्रजुनां चरणने नमीने, हर्षित थयेलो सुधर्मेंद्र, मस्तकपर हाथ जोडीने, रोमांचित थयो थको, अमृत सरखी. तथा पर्षदाने हर्ष उपजावनारी, तथा उत्तम गुणोथी गर्जित थयेली वाणीयें करीने, जगतनां स्वामी एवा प्रजुने कहेवा लाग्यो के, हे जगतनां आधारजूत एवा जगवन्, तमोज आ जगतमां तीर्थरूप छो, अने आपनाथी अधिष्टित थयेलो आ शत्रुंजय पर्वत विशेष करीने पवित्र थयेलो छे. वली हे प्रजु! आ तीर्थमां शुं तप तपा-

य. ? शुं व्रत ? शुं जप ? तथा अहीं कइ सिद्धिउं बे ? वली शुं फल मले? अहीं शुं ध्यान धरवुं ? अहीं शुं शुन्न कार्य करवुं ? तथा आ पर्वत क्यारे अने शामाटे थयो. ? तथा तेनी केटली स्थिति बे ? तथा आ नवीन प्रासाद कोणे कराव्यो ? तथा आ चांदनी सरखी मनोहर प्रतिमा कोणे करावी ? तथा प्रज्ञुनी पासे तलवारने धारण करीने द्वारमां आ बन्ने देवो कोण उन्ना बे ? तथा डाबी अने जमणी बाजुये कोणनी मूर्ति बे ? अने बीजा देवो पण कोण बे ? तेम आ रायणनुं वृक्ष शुं बे? तथा तेनी नीचे कोना पगलां बे? तथा ए मयूरप्रतिमा कोनी बे ? अने अहीं आ यक्ष कोण उन्नो बे ? वली अहीं कइ देवी क्रीडा करे बे ? अने अहीं आ मुनिउं कोण रहेला बे ? अने आ मोटी नदीउं कइ बे ? तेम आ उत्तम फलोवाला वृक्षो कोण बे ? तथा कया मुनिनुं आ तलाव बे ? तथा हे जगतनां प्रज्ञु ! आ कुंडो कया बे ? तथा रसकुंपिका अने रत्ननी खाण शुं प्रन्नाववाली बे ? तथा कइ कइ गुफाउं बे ? हे स्वामी ! लेपथी बनावेला स्त्री सहित आ पांच माणसो कोण बे ? तथा त्रणे जगतनुं उल्लंघन करे एवा रुषन्न प्रज्ञुनां गुणोने अहीं आ कोण गाय बे ? तथा दक्षिण दिशामां आ कयो पर्वत बे ? अने तेनो शुं प्रन्नाव बे ? वली अहीं शिखरो कया कया बे ? तथा चारे दिशाउंमां कयां कयां नगरो बे ? तथा अहीं समुद्र केम आवेलो बे ? अने अहीं कोण उत्तम पुरुषो थया बे ? वली अहीं केटला वखतसुधि प्राणीउं सिद्धि पामशे, तथा आ पर्वत केटला प्रमाणवालो बे ? तेम हे प्रज्ञु ! अहीं सम्यग्दृष्टिउंनां केटला उद्धारो थशे ? इत्यादि सघलुं व्रतांत, हे प्रज्ञु आपे कृपा करीने कहेवुं; केमके, जगत्पूज्यो आश्रित प्राणीउंप्रते पोतानी मेलेज उपकार करनारा होय बे. एवी रीतनी सुधर्मेंद्रनां मुखरुपी कमलमांथी निकलेली वाणी सांन्नलीने, तीर्थनां प्रन्नावनी वृद्धि माटे, तथा न्नव्य जीवोने वोध थवा माटे, अने सांन्नलनाराउंनां पापोनो नाश थवा माटे न्नगवान श्री वीरप्रज्ञु गंन्नीर वाणीथी, नही अति संक्षिप्त तेम नही अति विस्तारवालुं एवुं श्री शत्रुंजय तीर्थनुं माहात्म्य कहेवा लाग्या के, हे सौधर्मेंद्र ! सर्व तीर्थोमां राजा समान एवा आ शत्रुंजय पर्वतनी कथा कहेनार अने सांन्नलनार बन्नेने पुण्य अर्थे थाय बे, माटे ते तुं प्रगट रीते सांन्नल ?

एक लाख योजननां विस्तारवालो, तथा पूर्णिमानां चंद्र सरखी आकृतिवालो, अने लक्ष्मीथी निरूपम जंबूद्वीप नामे द्वीप छे. जे जंबूद्वीपमां, मारी शाखापर जिननां मंदिरो छे, एवी रीतनां हर्षथीज होय नहीं जेम, तेम जंबूवृक्षनां पल्लवोनो समूह हमेशां नाच्या करे छे. ते जंबूद्वीपमां भरत, हैमवंत, हरिवर्ष, महाविदेह, रम्यक, तथा ऐरण्यवंत एम छ क्षेत्रो छे; तथा तेउमां अनुक्रमे हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नीलवंत, रूप्य, तथा शिखरी नामनां छ पर्वतो पूर्वथी पश्चिम समुद्र सुधि लंबाएला छे, तथा तेउ जिनमंदिरथी शोभी रह्यां छे. महाविदेह क्षेत्रनां मध्य भागमां, लाख शिखरोथी शोभतो, अने पृथ्वीनां मध्य भागमां रहेलो, सुवर्णनो मेरु पर्वत छे; ते पर्वत लाख योजन उंचो, वननी श्रेणिउथी शोभतो, तथा शाश्वता जिनमंदिरोनां शिखरपर रहेलां चलकतां रत्नोनां किरणोथी देदीप्यमान लागे छे. हवे भरत क्षेत्रने अमो पुण्यथी भरेलुं मानीयें छीयें, केम के ते क्षेत्रनां माणसो दुःखमकालमां पण पुण्यशालीउ होय छे. ते भरत क्षेत्रमां नाश थएल छे दुर्नीति तथा उपद्रव जेमांथी, अने प्रीति युक्त छे माणसो ज्यां अने सघला देशोमां मुख्य, एवो आ सुराष्ट्र देश कहेवाय छे. आ देशमां अल्प पाणीथी पण धान्य पाके छे, तथा थोडां पुण्यथी पण उत्तम फल मले छे. अने स्वल्प उपायथी पण कषायोनो नाश थाय छे. वली आ देशनां पाणी निर्दोष छे, तथा पर्वतो पण पवित्र छे, अने अहींनी पृथ्वी पण हमेशां रसाल अने सर्व धातुमय तथा उत्तम छे. वली अहीं पगले पगले सर्व पापोने हरनारां तीर्थो छे, तथा पवित्र पाणीनां समूहवाली नदीउ छे, अने उत्तम प्रभाववाला द्रहो छे; वली अहीं चारे कोरे विकस्वर पामेला सुगंधि कमलोवालां तलावो छे, तथा टाढा अने उना पाणीथी शोभता कुंडो छे. वली अहीं पगले पगले निधानो छे, तथा पर्वते पर्वते रसकूंपीकाउ, महा प्रभाववाली औषधीउ, तथा हमेशां फलतां वृक्षो छे. वली अहीं पूर्वे भाग्य वावेलुं होय नहीं तेम पोतानी मेलेज घणुं धान्य नीपजे छे. तथा ज्यांनी पवित्र माटी तीर्थस्नाननां फलने देनारी छे. वली अहीं श्री ऋषभ प्रभुनी पुजा माटे हीरा, पुखराज, सूर्यकांत मणि, मोती, तथा पानां आदिकनां समूहो पोतानी मेलेज उत्पन्न थाय छे. वली

अहीं स्फुरायमान एवां रत्नोयें करीने, आ देशनां गुणोनेज जाणे प्रगट करतो होय नहीं, तथा प्रभुनी भक्तिमां तत्पर थइने मोजांरूपी हाथोथी नाचतो तथा गर्जना करतो होय नहीं जेम, तेम समुद्र शोभे छे. आ तीर्थनी रक्षामाटे मने अहीं सगर चक्रवर्ती लावेलो छे, एवा हर्षथी जाणे फीणनां समूहनां मिशथी हसतो होय नहीं, तेम ते समुद्र शोभे छे. वली अहीं देवोथी पूजायेला चोवीस तीर्थंकरो, चक्रवर्तिउं, वासुदेवो, तथा बलदेव प्रमुखोये पण विहार कर्यो छे. वली अहीं अनंत मुनिउं सिद्ध थया छे, तथा घणा सिद्ध थशे, तथा अहीं घणा धर्मधुरंधुर संघपतिउं थयेला छे. वली अहीं जरासिंधादिकने मारीने कृष्णादिके जय मेलव्यो छे, तथा बीजा पण नीतिनिपुणो अहीं घणा राजाउं थयेला छे; वली अहीं केटलाक राजाउं प्रजानां प्रतिपालनथी तथा शत्रुनो नाश करवाथी कीर्तिवाला, त्यागी, धर्मकार्यनां आधारभूत तथा सर्व जगोये समदृष्टिवाला थयेला छे- वली अहीं हमेशां सरल स्वभावी, प्रसन्न मुखवाला, विवेकी, संतोषी, हमेशां आनंदी, तथा निंदा अने मात्सर्य विनानां, पोतानीज स्त्रीउंमां संतोषी, परस्त्रीउंथी विरक्त, सत्य बोलनारा, पुण्यशाली, परद्रोहनी बुद्धिविनानां, कदाग्रह अने वैरविनानां, कपट अने लोभविनानां, उदार, निर्दोष आचारवाला, तथा सुखी लोको वसे छे. वली ब्रह्मचर्य गुणें करीने मनोहर, पतिनी सेवामां तत्पर, हसमुखी, रूपाली, परिवारनुं हित करनारी, मातपितानी भक्ति करनारी, भर्तार प्रते प्रीतिवाली, सर्व लोकने वल्लभ, भाग्यथी भासुर, वहु पुत्रोथी शोभती, लज्जायुक्त, कमल सरखां नेत्रोवाली, कौतुकवाली, स्वल्प क्रोधवाली, उत्तम पेहेरवेषवाली, सरल बुद्धिवाली, मीष्ट वचनोवाली, गंभीर, अने गुणो छे प्रिय जेउंने एवी स्त्रीउं अहीं वसे छे. वली अहीं पुत्रो मातपिता प्रते भक्तिवाला, हमेशां मातपितानी आज्ञा पालनारा, कलाउंमां कुशल, शांत अने सुशीलो छे. वली अहीं चाकरो शेठप्रते उत्तम भक्तिवाला, कार्य वखते याचना नहिं करनारा, शूरा, स्वल्पमां पण संतोषी, स्नेही, भलुं करनारा शेठनां अभिप्रायने जाणनारा, सभाने योग्य, उत्तम वचनवाला, अत्यंत प्रीतिवाला, शेठनां वैरी प्रते वेरवाला, तथा शेठनां मीत्र प्रते मित्राइवाला छे. वली अहीं भविउं आस्तिकपणामां तथा उचितपणामां चतु-

र, क्षमा अने डाह्यापणथी मनोहर, ठये दर्शनप्रते समदृष्टिवाला अने पराक्रमी ठे. वली अहीं पुष्ट, तथा बहु दूधवाली गायो ठे, तथा नेंसो पण महा बलवान, शींगडांवाली, बंधनविनानी, तथा कोइ चोरी के हरी न शके एवी ठे. वली अहीं घोडाउं उंचा, तथा चपल गतिवाला ठे, बलदो खांधोयें करीने मनोहर ठे, तथा संग्रामरूपी समुद्रमां बेट सरखा हाथीउं पण अहीं शोने ठे. वली अहीं बीजा तिर्यंचो पण महाबलवान् थया थका परजातिनो मत्सर करनारा नथी, तेम तेउं नयथी उद्विग्न थयेलां नथी. वली अहींना नगरो मोटा अने उंचा किल्लाउंथी शोजितां थएलां ठे, अने त्यां अरिहंत नगवाननां चैत्योपर रहेली धजाउं तो आकाशने स्पर्श करे ठे. वली अहींनां लोको जैन साधुनां मुखरूपी कमलमांथी निकलेला सिद्धांतनां सारथी पाप रहित, पवित्र तथा लक्ष्मीवंत ठे. वली अहीं मनोहर तथा सघली वस्तुउंथी नरपुर, मेहेलो ठे, तथा लान मेलवता एवा त्यां वेपारीउं पण ठे. ते सुराष्ट्र देशने मुकुट समान, तथा स्मरण करवाथीज पापोनो नाश करनारो, आ शत्रुंजय पर्वत ठे. आनुं माहात्म्य केवलज्ञानथी जणाय, पण कही शकाय नहीं, तो पण हे देवेंद्र! तारा पुठवाथी हुं ते तने कहुं ठुं. वली ते माहात्म्य जाणीने, अने शक्ति ठतां पण, जो मौन करवामां आवे, तो मुंगानां रसनां स्वादसरखुं थाय. वली त्रणे लोकनां ऐश्वर्यनां घर सरखा एवा आ तीर्थनां नाममात्रथी पण जेम पार्श्वनाथनां नामथी सर्पनुं झेर जाय, तेम पापोनो नाश थाय. शत्रुंजय, पुंडरिक सिद्धक्षेत्र, महाचल, सुरशैल, विमलाद्रि, पुण्यराशि, श्रीयः पद, पर्वतेंद्र, सुनद्र, दृढशक्ति, अकर्म, मुक्तिगेह, महातीर्थ, शाश्वत, सर्वकामद, पुष्पदंत, महापद्म, पृथ्वीपीठ, प्रभुपद, पातालमूल, कैलास, क्षितिमंडलमंडन, इत्यादि आ पर्वतनां एकसोने आठ नामो ठे, ते सुधर्मास्वामीयें बनावेला सपादलक्ष माहात्म्यथी जाणी लेवां. एवी रीतनां आ महातीर्थनां नामो, जे माणस प्रनातमां नणे ठे, अथवा सांनले ठे, तेने संपदाउं मले ठे, अने तेनी आपदाउं नाश पामे ठे. वली आ शत्रुंजय पर्वत सघला तीर्थोमां उत्तम तीर्थ, सघला पर्वतोमां उत्तम पर्वत, तथा सघलां क्षेत्रोमां उत्तम क्षेत्र ठे. युगनी आदिमां मोक्षने देनारुं आ पहेलुं तीर्थ ठे, अने बीजां तीर्थो तो तेनी पर्या-

नां छे. वळी हे इंद्र! आ त्रणे लोकमां जेटलां पवित्र तीर्थो छे, ते सघळां आ शत्रुंजय तीर्थनां दर्शनथी आवी जाय छे- वळी पंदर कर्मभूमीओमां नाना प्रकारनां तीर्थो छे, पण शत्रुंजय समान बीजुं कोइ पण तीर्थ पापोने हरनारुं नथी. बीजां कृत्रिम एवां तीर्थोमां, नगरोमां, उद्यानमां, तथा पर्वतोमां जप, तप, नियम, दान अने ध्यानथी जे पुण्य उत्पन्न थाय छे, तेथी दशगणुं पुण्य कल्याणिक तीर्थोमां थाय छे, अने जंबु वृक्षमां रहेलां जिनतीर्थोमां तेथी सोगणुं पुण्य थाय छे. वळी शाश्वता एवा धातुकी वृक्षमां तेथी हजारगणुं, तथा पुष्करद्वीपनां चैत्योमां, रुचकगिरिमां, अने अंजनगिरिमां अनुक्रमे तेथी दशगणुं पुण्य थाय छे, तथा नंदीश्वरे, कुंडलाद्रिमां, मानुषोत्तर पर्वतमां, वैभार पर्वतमां, सम्मेत शिखरमां, वैताढ्यमां, मेरुपर्वतमां, रेवताचलमां, अने अष्टापदमां अनुक्रमे तेथी क्रोडगणुं पुण्य थाय छे; अने शत्रुंजय पर्वतनां देखवा मात्रथीज अनंतगणुं पुण्य थाय छे, अने हे इंद्र ! आ तीर्थनी सेवाथी जे पुण्य थाय छे, ते तो वचनथी पण कही शकाय तेम नथी. वळी पेहेला आरामां ते एंसी योजननां विस्तारवालो, बीजा आरामां सित्तेर योजननो, त्रीजामां साठ योजननो, चोथामां पचाश योजननो, तथा आ पांचमा आरामां बार योजननो छे, अने छठा आरामां ते सात हाथनो रहेशे, पण तेनो महिमा घणो थशे. वळी आ अवसर्पिणीमां जेम ते तीर्थनां विस्तारनी अनुक्रमे हानि थाय छे, तथा उत्सर्पिणीमां तेनी वृद्धि थशे, पण तेना महिमानी हानि कोइ पण वखते थशे नहीं. वळी श्रीऋषभदेव प्रभु ज्यारे आ पर्वतपर तप करता हता, ते वखते हे इंद्र! आ पर्वतनां मूलनो विस्तार पचास जोजननो, उपरना भागमां दश योजननो, तथा उंचाइमां आठ योजननो हतो. एवी रीतनो आ पर्वत प्रलयकाले पण नाश पामनारो नथी, अने तेनो आश्रय करीने रहेला लोको मोक्ष सुखने मेलवे छे. वळी आ पर्वतनां शत्रुंजय, रैवतगिरि, सिद्ध क्षेत्र, सुतीर्थराज, ढंक, कपर्द्दी, लोहित्य, तालध्वज, कदंवक, बाहुबलि, मरुदेव, सहस्र, भगीरथ, अष्टोत्तरशतकूट, नागेंद्र, शतपत्रक, सिद्धराज, सहस्रपत्र, पुण्यराशि, सुरप्रिय, अने कामद, एवी रीतनां एकवीश मुख्य शिखरो छे. एवी रीतनां प्रत्येक शिखरोनो महिमा कहेवामां तो अनेक वर्षो चाल्यां

जाय; माटे तेमांथी प्रगट महिमावाला केटलाक शिखरोनो किंचित महिमा अहीं कहुं ढुं. मुख्य शिखर शत्रुंजयनुं तथा सिद्धक्षेत्रनुं बे, के जेपर चड्याथी यत्नविना मोक्षमां जइ शकाय ठे. वली मेरु आदिक पर्वतो करतां पण आ पर्वत गुणोयें करीने वधारे उत्तम बे, एम हुं मानुं बुं, केमके, तेपर चड्याथी माणसो तुरत मोक्षमां जाय बे. वली आ शत्रुंजय पर्वतपर मेरु, सम्मेतशिखर, वैजार, रुचकगिरि तथा अष्टापदादिक सर्व तीर्थोनां अवतारो ठे. वली त्रणे जूवनोमां तीर्थाधिराज सरखा आ पर्वतने सद्भक्तिनी इछाथी इंद्रादिक देवो तथा देवीउ पण सेवे ठे. वली पोताने घेर बेठा पण आ तीर्थनां स्मरणथी प्राणीउ यात्रानुं फल मेलवे ठे, एवा तीर्थनां राजा सरखा, तथा सर्वतीर्थमय आ शत्रुंजय पर्वत प्रते नमस्कार थाउ ? वली क्रोडपूर्व सुधि शुजध्याने करीने शुद्धबुद्धि प्राणी बीजां तीर्थोमां जे शुज कर्म बांधे ठे, तेज शुज कर्म आ तीर्थमां एक मुहुर्तवारमां बांधे ठे. वली जेणे शत्रुंजय पर्वतनुं स्मरण करेलुं बे, तेणे सघलां तीर्थो, पवित्र पर्वो, तप, अने अनेक प्रकारनां दानोनुं आराधन करेलुं जाणवुं. वली हे इंद्र ! त्रणे जगतमां आना सरखुं कोइ उत्तम तीर्थ नथी, केमके, आ तीर्थनुं केवल नाममात्र सांजलवाथी पण पापोनो क्षय थाय ठे. वली आ तीर्थनी आसपासनी पचाश योजननी जूमिनो स्पर्श करवाथी पण मोक्ष मले ठे, अने तेनुं आ मुख्य शिखर तो स्मरण मात्रथीज हत्या आदिकनां पापोनो नाश करे ठे; माटे आ मनुष्य जन्म पामीने, तथा सद्गुरु पासेथी ज्ञान पामीने, जेणे आ तीर्थनी पुजा करी नथी, तेनुं सघलुं कार्य निरर्थक ठे. वली ज्यांसुधि जे माणसे आ शत्रुंजय तीर्थनी सेवा करी नथी, त्यांसुधि तेने गर्जावासमांज रहेलो जाणवो, माटे तेने धर्म तो वेगलोज जाणवो. वली वृषजनुं रूप धरीने श्री आदिनाथ प्रजुनां चरणमां रहेलो धर्म, अहीं आवेला माणसने नावथी सेवे ठे. वली हे मूढ प्राणी! शा माटे तुं "अहीं धर्म ठे, अहीं धर्म ठे" एम कहेतो थको नाच्या करे ठे? फक्त एकज वेला आ शत्रुंजय पर्वतनुं तुं दर्शन कर? वली जे माणसे आ शत्रुंजय पर्वतपर यात्रा करीने आदिनाथ प्रजुने पूज्या नथी, तेने पोतानो सघलो जन्म निरर्थकज गमाव्यो ठे. वली कांइक नरम्या कर्मोथी प्राणीउने निर्मल करवाथी जे

"विमलाद्रि" कहेवाय छे, एवो पापोने हरनारो आ पर्वत कल्याण माटे थाओ? वली अन्य तीर्थोमां सेंकडो यात्राओ करवाथी माणसोने जे पुण्य थाय छे, ते पुण्य आ शत्रुंजय पर्वतनी मात्र एक यात्रा करवाथी थाय छे. वली हे इंद्र! आ पुंडरिकगिरिने तुं जो? तेनुं नाम लीधाथी, तथा सांभलवाथी स्त्री भरतारनां पापोनो नाश थयो छे. वली जे माणस हमेशां उत्तम श्रद्धाथी पुंडरिकगिरिनुं ध्यान धरे, ते माणस संसारनां तापने उखेडीने मोक्षपद मेलवे छे. वली एक पुंडरीकथी (सफेद कमलथी) पण जगत ज्यारे ताप रहित थाय छे, त्यारे पुंडरिक गणधर, अने पुंडरिकगिरि, आ बन्नेथी तो अद्वीतीय सुखनी प्राप्ति थाय, तेमां शुं आश्चर्य छे? वली आ एकज पुंडरिकगिरिने जे माणस एकाग्र चित्तथी सेवे छे, तेने परमानंदमय मोक्षनुं सुख मले छे. वली ज्यारे तलाव, समुद्र, शेषनाग विगेरे एक दिशाने पण हर्ष करवाने समर्थ नथी, त्यारे आ पुंडरिकगिरिनुं एकज शिखर समस्त जगतने हर्ष करनारुं छे. वली जेओ आ पुंडरिकगिरिने (कमलने) आश्रीने रहेला छे, तेओ संसारमां भ्रमण करनारा (भ्रमरो) होता नथी, अने जेओ आने सेवता नथी, तेओने पापोयें करीने मलीन जाणवा. जे प्राणीओ त्रिपदी पामीने आ पुंडरिकगिरिनो आश्रय करीने रहेला छे, तेओ पाणीथी (जडथी) उत्पन्न थयेला, तथा भमराओथी आश्रित थयेला (हिंसादिरूप) पुंडरिकने (कमलने) हसी कहाडे छे. वली आ जगतमां सद्द्रव्य, सुकुलमां जन्म, सिद्धक्षेत्र, समाधि, अने चतुर्विध संघ, ए पांच सकारो दुर्लभ छे; तेम पुंडरिक पर्वत, पात्र, प्रथम तीर्थंकर, परमेष्टी अने पर्युषण, ए पांच पकारो पण दुर्लभ छे; तेम शत्रुंजय, शिवपुर, शत्रुंजयी नदी, शांतिनाथ प्रभु अने शमता, ए पांच शकारो पण दुर्लभ छे. एकवार पण महान पुरुषोयें ज्यां स्पर्श करेलो होय, ते तीर्थ कहेवाय, पण आ तीर्थपर तो अनंता तीर्थंकरो आवेला छे, माटे ते महान् तीर्थ कहेवाय छे. वली हे इंद्र! अहीं अनंत तीर्थंकरो अने सिद्धो आवेला छे, तेम असंख्याता मुनिओ पण अहीं आवेला छे, माटे ते महान तीर्थ छे. वली आ पर्वतपर जे चराचर जीवो हमेशां रहे छे, तेओने धन्य छे!!! वली हे इंद्र! आ पर्वतपर श्री जिनेश्वर प्रभुनां दर्शनथी, मोर, सर्प, तथा सिंहआदिक हिंसक प्राणीओ पण मोक्षे

गयेला छे, मोक्षे जाय छे, तथा मोक्षमां जशे. वली आ शत्रुंजय पर्वतनां स्पर्शथी पण, बालकपणामां, यौवनपणामां, वृद्ध अवस्थामां, तथा तिर्यचना भवमां पण जे पाप बांध्युं होय, तेनो नाश थाय छे. वली एकज शत्रुंजय तीर्थनी जे सेवा करवी, तेज दान, चारित्र, शील, तप, तथा मन वचन अने कायाथी ध्यान छे. वली आ उत्तम क्षेत्रमां लेशमात्र धननुं दान देवाथी महाफल मले छे; तथा तेथी जे पुण्य बंधाय छे, तेने कहेवाने ज्ञानी शिवाय बीजो कोइ समर्थ नथी. वली आ तीर्थमां जिनेश्वर प्रभुनी पूजामां जे माणसो लाखो पैसा खरचे छे, तेउने उत्तम माणसो जाणवां. वली आ तीर्थनी यात्रा, पूजा, संघनी रक्षा, तथा यात्रालुउनो सत्कार जे माणस करे छे, ते माणस पोतानां कुटुंब सहित देवलोकमां पूजाय छे. वली जे माणसो आ तीर्थनां यात्रालुउने दुःख दे छे, तथा तेउनुं धन चोरी ले छे, तेउ पापनां समूहथी कुटुंबसहित भयंकर नरकमां पडे छे. वली पोतानां जन्मनी सफलता इछनार, तथा सुखनां इछनार माणसे आ तीर्थनां यात्रालुउनुं मनथी पण अहित चिंतववुं नहीं. अन्य तीर्थोमां करेलुं पाप तो एकज भवसुधि नडे छे, पण शत्रुंजय तीर्थपर करेलुं पाप भवभवप्रते वृद्धि पामे छे. वली हे इंद्र! देवलोकमां आ पृथ्वीपर. अने पातलमां जेटलां जिनबिंबो छे, तेउनी पूजा करतां पण आ तीर्थमां जिननी पूजा करवाथी अधिक फल थाय छे. वली हाथमां चिंतामणि रत्न होय तो शुं दरिद्रतानो भय थाय? अने सूर्य उग्याथी माणसोने शुं अंधारुं होय? वली वरसाद वरसते छते शुं दावानल वनने बाली शके? अने अग्नि होते छते शुं टाढनी बीक होय? अने पासे सिंह होते छते शुं हरिणनी बीक होय? वली जो पासे गरुड होय, तो सर्पो कंइ पराभव करी शके? अने आंगणामांज जो कल्पवृक्ष उग्युं होय, तो शुं नडकानो भय होय? तेम शत्रुंजय नामनुं महातीर्थ ज्यारे आपणी पासे होय, त्यारे नरकने देनारी एवी पापनी बीक चित्तमां क्यांथीज होय? वली त्यांसुधि "शत्रुंजय" एवुं नाम गुरुनां मुखथी सांभल्युं नथी. त्यांसुधिज हत्या आदिक पापो रहे छे. वली प्रमादी माणसोए पापोथी डरवुं नहीं; फक्त एक वखतज श्री शत्रुंजय तीर्थनुं माहात्म्य सांभलवुं. आ शत्रुंजय पर्वतपर एकज दिवस प्रभुनी सेवा करवी. ते स-

वेथी उत्तम छे, अने बीजा तीर्थोमां जे भ्रमण करवुं, ते तो क्लेशनुं कारण छे. वळी आ शत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करवाने इच्छता एवा माणसोनां क्रोडो भवोमां उपार्जन करेलां पापो पण पगले पगले नाश पामे छे. वळी आ शत्रुंजय पर्वत प्रते एक एक पगले पण, क्रोडो भवोमां करेलां पापोथी प्राणी मुकाय छे. वळी शत्रुंजय तीर्थनो स्पर्श करनाराओने रोग, संताप, दुःख, वियोग, दुर्गति, के शोक थतां नथी. वळी मोक्षने इच्छनार एवा सुबुद्धि माणसे, आ तीर्थनां पाषाण छेदवा नहीं, आ तीर्थनी भूमि खोदवी नहीं, तेम अहीं विष्टा के मूत्र करवां नहीं. वळी आ पर्वतज तीर्थरूप छे, माटे तेनां दर्शन, अने स्पर्शथी ते मुक्तिसुखने देनारो छे, तेथी ते कोनाथी सेवातो नथी? (सर्वेथी सेवाय छे.) वळी आ उत्तम पर्वत श्री ऋषभदेव प्रभुथी विशेषें करीने भूषित थएलो छे, तथा ते, तप जेम दुःकर्मोने, तेम निबिड पापोने नाश करे छे. वळी जो आकरो तप तपाणो होय, तथा उत्तम सुपात्रे दान देवायुं होय, अने जो जिनेश्वर प्रभु प्रसन्न थया होय, तोज आ तीर्थनी सेवानो अवसर मळी शके छे. वळी आ पृथ्वीतलपर रहेला बीजा सर्व तीर्थोनुं माहात्म्य उंचे प्रकारे वचनोथी कही शकाय छे. पण आ तीर्थाधिराजनुं महात्म्य तो केवली पण जाणतां छतां कही शके तेम नथी. वळी आ तीर्थपर रहेला श्री ऋषभदेव प्रभुनां चरण कमलनी सेवाथी समग्र प्राणीओ निष्पापी थया थका जगतने वंदनीक तथा पूजनीक थाय छे. वळी जे प्राणीओ शीतल अने सुगंधी पाणीथी श्री ऋषभदेव प्रभुनुं स्नात्र करे छे, ते प्राणीओ शुभ कर्मोयें करीने निर्मल थाय छे. वळी जेओ आ त्रण जगतनां ईश्वरनुं पंचामृतथी स्नान करे छे, तेओ केवलज्ञान पामीने मोक्ष मेळवे छे. आ जगतमां श्रेष्ट, तथा नाश करेल छे, अंतरंग शत्रुओ जेणे एवा जे माणसो, कस्तुरी, अगर, कुंकुम, तथा चंदनथी आ तीर्थमां तीर्थंकर महाराजनी पूजा करे छे, तेओ अखंड लक्ष्मीना सहायवाळा थया थका कीर्त्तिनां विस्तारने भजनारा थाय छे. वळी हे इंद्र! जे माणसो आ तीर्थमां जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करे छे, तेओ आ जगतमां कीर्त्तिवंत थया थका आ लोक अने परलोकमां पण पापरहित थाय छे. वळी जे माणसो आदर पूर्वक जिनेश्वर भगवानने आ तीर्थमां सुगंधि

पुष्पोथी पूजे ठे, ते माणसो सुगंधियुक्त देहवाला थया थका त्रणे लोकनां प्राणीयोने पूजनीक थाय ठे. वली बीजी पण सुगंधि वस्तुउथी हर्षे करीने जे श्रावको अहीं जिनेश्वर प्रजुनी पूजा करे ठे, तेउ सम्यक्त्व सहित थया थका शुक्ल ध्यानथी मोक्ष मेलवे ठे, वली अहीं प्रजुनी धूपपूजाथी पंदर दिवसनां उपवासनुं फल मले ठे, तथा बरासनी पूजाथी एक मासनां उपवासनुं फल मले ठे. वली हे इंद्र! अहीं जे माणसो वासक्षेपथी तथा वस्त्रोथी जिनेश्वर प्रजुनी पूजा करे ठे, तेउ देवोथी पण पूजाय ठे. वली अहीं अखंड चोखाउथी पूजा करवाथी अखंड सुखनी संपदावाला, तथा उचित काले चडावेला फलोथी इच्छित फलोनां जोगवनारा थाय ठे. वली अहीं प्रजुनी स्तुति करवाथी माणसो स्तवनीय थाय ठे, दीपकपूजाथी कांतियुक्त शरीरवाला, तथा नैवेद्यपूजा करवाथी अत्यंत हर्षवाला थाय ठे. वली अहीं प्रजुनी आरती उतारवाथी माणसोने यश, लक्ष्मी, अने सुखो मले ठे, तथा तेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने तुरत मेलवीने माणसो मानसिक, पीडा पामता नथी. वली जेउ अहीं प्रजुने नमस्कार करे ठे, तेउ त्रण जगतथी नमाय ठे, तथा जेउ गीतपूजा करे ठे, तेउना गुणो गवाय ठे; अर्थात् अहीं जे क्रिया प्रजुप्रते कराय ठे, तेवुं फल प्राणीउने मले ठे. वली अहीं प्रजुनी पासे दीपक कर्याथी माणसोनुं जवसंबंधि अज्ञान नाश पामे ठे, तथा मंगल दीवो करवाथी द्रव्य अने जावमंगलो थाय ठे, वली जे माणसो अहीं प्रजुने अलंकारो पहेरावे ठे, तेउ पवित्र थया थका त्रणे जुवनोनां अलंकाररूप थाय ठे. वली अहीं प्रजुनी रथयात्रा माटे जेउ रथ आपे ठे, तेउने चक्रवर्तिनी लक्ष्मी पोतानी मेले आवीने वरे ठे. वली अहीं प्रजुनी नीराजना (आरती) करवाथी माणसोने निष्पापपणुं प्राप्त थाय ठे, तथा तेउ प्रतापथी शत्रुउनो जय करे ठे. वली आ तीर्थमां घोडानुं दान देवाथी, सर्व जगोएथी लक्ष्मीउ आवीने मले ठे. अने हाथी देवाथी गजगामिनी अने शीलवंत स्त्रीयो मले ठे. वली अहीं प्रजुनां पंचामृत स्नात्र माटे जे गायनुं दान आपे ठे, ते माणस हाथीउ सहित समस्त पृथ्वीनो राजा थाय ठे. वली अहीं जे माणसो चंदरवा, छत्र, सिंहासन, तथा चामरनुं दान आपे ठे, तेउने, जाणे थापणरूप सुखो होय नहीं, तेम ते वस्तुउ म-

ले छे. वली जे माणस अहीं गुरुनी आज्ञाथी महाध्वजनुं दान आपे छे, ते अनुत्तर विमाननुं सुख भोगवीने छेवटे मोक्ष मेलवे छे. वली जे माणस आ तीर्थमां पवित्र वस्त्र आदिकथी प्रभुनी आंगी रचावे छे, ते आखा जगतमां शोभनिक थाय छे. वली जे माणस आ तीर्थमां सोना, रुपा, पीतल विगेरेनां कलशो करावीने आपे छे, तेउने स्वप्नमां पण दुःख थतुं नथी, अने मोक्षपद मले छे. वली जे माणस आ तीर्थमां प्रभुनी सेवा माटे भावसहित भूमिनुं दान करे छे, ते ऋद्धिनो भोक्ता थाय छे, तथा अहीं गाम, बगीचा विगेरेनां दानथी प्राणी ज्ञान सहित चक्रवर्ती थाय छे. वली जे माणस अहीं माला पेहेरीने विधिपूर्वक प्रभुनी आरती करे छे, ते माणस देवोने पण चाकररूप करीने स्वर्गनी संपदा भोगवे छे. वली अहीं प्रभुनी दश पुष्पमालाथी पूजा करवाथी एक उपवासनुं, तथा तेथी दशगणी मालाउथी अनुक्रमे छठ, अठम, तथा पासखमणनुं फल मले छे. वली आ तीर्थमां जिनपूजा करवाथी मासखमणनुं फल मले छे; वली बीजां तीर्थोमां सुवर्ण, भूमि, तथा आभूषणो देवाथी जे पुण्य थाय छे, ते पुण्य आ तीर्थमां फक्त एक उपवास करवाथीज थाय छे. वली अन्य तीर्थमां घणा कालसुधि उग्र तपथी, तथा ब्रह्मचर्य पालवाथी जे फल मले छे, ते फल आ तीर्थमां एक उपवास करवाथी पण मले छे. वली आ तीर्थमां नोकारसी प्रमुख दश प्रकारनां पच्चखाण करीने, पुंडरिक गणधरनुं स्मरण करतां थकां माणस विघ्नरहित सर्व इच्छित अर्थने मेलवे छे. वली अहीं छठनो तप करवाथी मलेलां पुण्यथी प्राणी सर्व संपदाउ मेलवे छे, तथा अठमनो तप करवाथी आठ कर्मोनो क्षय करी मोक्षने मेलवे छे. वली अन्य तीर्थमां सूर्य तरफ दृष्टि राखीने, तथा पृथ्वीपर टचली आंगलीथी स्पर्श करीने रह्याथी, ब्रह्मचर्य पूर्वक एक मासनां उपवासथी जे फल मले छे, ते फल आ शत्रुंजय तीर्थमां एक मुहुर्तवारज सर्व आहारनो त्याग करवाथी मले छे. वली आ तीर्थमां रागरूपथी रहित थइने, आठ उपवासथी जे अरिहंत प्रभुनुं ध्यान धरे छे, ते माणस स्त्रीहत्यानां पापथी मुक्त थाय छे. वली जे माणसो अहीं पासखमणनो तप करे छे, तेउने बालहत्यानुं पाप तो क्यांथीज होय? मासखमणनो तप तरवाथी ब्रह्मचारिनी हत्यानुं पाप नाश पामे छे. वली

लाख आदिकनां करजथी पण, अहीं एक आदि उपवास करवाथी प्राणी मुकाय छे, तथा मोक्षसुखने देनारुं सम्यक्त्व पामे छे. वली अहींनां जिनमंदिरमां प्रमार्जन, विलेपन, तथा मालारोपण करवाथी प्राणी, सो, हजार, अने लाख रुपीआनां दानथी थता फलने पामे छे. वली हे इंद्र! आ तीर्थमां भक्तिपूर्वक गीतगान करवाथी जे पुण्य थाय छे, ते तो कही पण शकाय तेम नथी. वली शत्रुंजयनुं नाम सांभल्याथी जे पुण्य थाय छे, तेथी क्रोडगणुं पुण्य तेनी समीप गयाथी थाय छे, तथा तेथी अनंतुं पुण्य तेने नजरे जोयाथी थाय छे. वली आ तीर्थने जोतां अथवा न जोतां पण जे माणसो त्यां जता संघनी पूजामां तत्पर होय छे, तेओ मोक्षपर्यंत महा पुण्यने मेलवे छे. वली त्रिकरण शुद्धिथी आ तीर्थमां साधुने अन्नादिक आपवाथी कार्तिक मासनां तपनुं उत्तम फल मले छे. वली आ शत्रुंजय तीर्थमां जेओये मुनिओनी पूजा नथी करी, तेओनो जन्म, धन, अने जीवित पण निरर्थक छे. वली आ शत्रुंजयादिक तीर्थोमां यात्रामां, अने जैनपर्वोमां जे माणसो मुनिओने पूजे छे, तेओ त्रणे लोकनां ऐश्वर्यने भजनारा थाय छे. वली मुनि छे ते, पंडितोने पूजनिक, सेवनीक, अने माननीक छे, वली मुनिनां आराधनथीज यात्रा सफल थाय छे, अने मुनिविनानी यात्रा निष्फल जाणवी. वली वीतरागपणामां पण पूर्व भवमां सांभलेली एवी गुरुनी वाणीज कारणरुप छे, माटे देव तत्वथी पण गुरुतत्व मोटुं जाणवुं. वली सुपात्र प्रते जे दान आपवुं, ते हमेशां महापुण्यने अर्थे थाय छे, तेमां पण आ तीर्थमां आवी सुपात्र प्रते जे दान आपवुं, ते तो सुवर्णमां सुगंधि मलवा जेवुं छे. वली आ तीर्थमां जे माणसो मुनिओने, अन्न, पाणी, वस्त्र, स्थानक, आसन, तथा पात्रोथी पूजे, तेओ लक्ष्मीयें करीने देवोने पण जीती जाय छे. वली जे सुज्ञी माणस अन्न अने वस्त्रादिकथी गुरुनुं पूजन करे छे, ते शुद्ध थयो थको त्रीजे भवे मोक्ष पामे छे. वली जे धनथी जगतनां पूजनिक एवा मुनीओ भक्तिपूर्वक पूजाय छे, तेज धन वखाणवा लायक छे, तथा तेज परम तत्व, तथा तेज पुण्यनी वृद्धि छे. वली जे माणसो गुरुने साक्षीरूप करीने, जिनेश्वर प्रभुने पूजे छे, तेओ आ लोक अने परलोकमां चक्री आदिकनी पदवी भोगवीने उत्तम गतिमां जाय छे. वली आ तीर्थमां द-

जारो अने लाखो एवा शुद्ध श्रावकोने जमाडवाथी जे पुण्य उत्पन्न थाय छे, तेथी पण अधिक पुण्य अहीं मुनिने दान देवाथी थाय छे. गमे तेवो पण चारित्रयुक्त मुनि, समकीती डाह्या माणसोये आ तीर्थमां गौतम गणधरनी पेठे पूजवो. कर्मरूपी व्याधिथी पीडायेला माणसोये, शोज्ञाविनानां, मनने क्लेश करनारा, तथा शास्त्रार्थरूपी रस विनानां मुनिने पण, उत्तम औषधनी पेठे आ तीर्थमां सेववो. गुरुनां आराधनथी स्वर्ग मले छे, तथा तेनां विराधनथी नर्क मले छे, एवी रीते बन्ने गतीउ गुरुथी मले छे, माटे पोतानी इछा प्रमाणे प्राणीउये ग्रहण करवी. वली बीजां दानो तो कीर्ति, लक्ष्मी तथा सुख आदिकोने आपे छे, पण अन्नयदाननुं फल तो मुखथी कह्युं जाय तेम नथी. वली दीन आदिको प्रते आ तीर्थमां जे दान आपवुं, ते स्वर्गनां सुखमाटे थाय छे, तथा नव प्रते अखंड लक्ष्मीनां कारणरूप मनुष्य जन्मने ते देनारुं छे; वली ते दानथी आ लोकमां सम्यक्त्व सहित राज्यनां लाज्ञरूप फल थाय छे, तथा ते पुण्यानुबंधि पुण्य आपे छे, अने विशेष प्रकारे मोक्षनां लाज्ञने पण करे छे. वली अन्य स्थानकमां करेलुं पाप, उत्तम ज्ञाववालो प्राणी अहीं त्याग करे छे, पण आ तीर्थमां करेलुं जे कर्म ते तो वज्रलेप सरखुं थाय छे. वली आ तीर्थमां आवीने कोइनी निंदा, तथा परना द्रोहनुं चिंतवन करवुं नहीं, तथा परस्त्रीनी लोलता राखवी नहीं, तेम परद्रव्य हरवानी बुद्धि पण राखवी नहीं; तेम मिथ्यात्विउनो संग करवो नहीं, तेउनां वचनपर श्रद्धा करवी नहीं, तेम तेउनी निंदा पण करवी नहीं, अने तेउनां शास्त्रोनो आदर पण करवो नहीं; वली अहीं वैरी प्रते वैर ज्ञाव राखवो नहीं, तथा कोइने मारी नांखवानी इछा करवी नहीं, तथा घृत आदिक नव विगयोमां आसक्ति राखवी नहीं. कुलेश्यानुं चिंतवन करवुं नही. एवी रीते सघलां पापकार्योने जाणीने, बुद्धिज छे, धन जेउनुं एवा माणसोये, स्तुति करवा लायक एवां पुण्यनी इछाथी अहीं जीवहिंसा करवी नहीं. वली जिनतीर्थादिनो योग होते छते, मिथ्यात्वमिश्रित जे क्रियाउ करे, तेने महापापी जाणवो, माटे तेने पुण्यनी प्राप्ति तो क्यांथीज होय? वली मोक्षसुख मेलववामां उद्यमवंत थयेला माणसोये महातीर्थमां अनर्थ दंडोथी विरति, तत्वचिंतनमां आसक्ति, प्रज्ञु-

मां भक्ति, मुनिमां रक्तपणुं, दानमां हमेशनी वृत्ति, उत्तम आचारनुं चिंतवन, पंच नमस्कारनुं स्मरण, पुण्य भंडारोनुं भरवापणुं, भवरूपी समुद्रथी तरवापणुं, उत्तम ध्यान, देव पूजन, तथा तप आदिक उत्तम कार्यो करवां. वळी अहीं चतुर्विध संघसहित यात्रा करवाथी माणसो तीर्थंकरनी पदवीरूप लोकोत्तर फळ मेळवे छे. आ तीर्थमां यात्राथी उत्पन्न थयेला पसीनाने जेओ लुछे छे, तेओज निष्पापी एवा निर्मल देहने पामे छे. वळी आ तीर्थमां जे माणसो यात्रालु लोकोने, भक्तिपूर्वक अन्न तथा वस्त्रादिकथी पूजे छे, तेओ विस्तीर्ण लक्ष्मीनां सुखने भोगवीने अंते मोक्षने भजनारा थाय छे. वळी आ तीर्थमां जे माणसो जरा पण संकोच राख्याविनां घणुं इच्छित दान आपे छे, तेओ आनंदपूर्वक उंचे प्रकारे सुखी थाय छे. वळी आ तीर्थमां पोतानी शक्ति मुजब जे कंइ पुण्यनां कार्यो उत्तम बुद्धिवालाओ करे छे, तेओ (कार्यो) कुकर्मोनो नाश करी, बन्ने भवोनी शुद्धिने माटे थाय छे. हे इंद्र! एवी रीते संक्षेपथी आ तीर्थमां करेलां दाननो महिमा कह्यो; हवे तीर्थभूत एवुं जे रायणनुं वृक्ष, तेनो महिमा तुं सांभल?

ऋषभदेव प्रभुथी भूषित थयेली, तथा दूधनी धाराने झरती एवी आ शाश्वती रायण अज्ञानरूपी अंधकारनो क्षणमां नाश करो? आ रायणनी नीचे नाभिराजानां पुत्र श्री ऋषभदेवस्वामी समोसर्या हता, तेथी उत्तम तीर्थनी पेठे ते वंदनीक छे. आ रायणनां दरेक फल, दरेक पांदडां, तथा दरेक डालांप्रते देवालयो छे, माटे अजाणतां पण तेनां पत्रादिक छेदवां नहीं. भक्तिसहित चित्तवाला थइने, आनी प्रदक्षिणा करनार संघपतिनां मस्तकपर आ रायण हर्षथी दूधने वर्षे छे; अने तेथी जाणवुं के, ते संघपतिने आगामी कालमां शुभरूप थइने बन्ने भवोमां सुखकारी थशे; अने रीसथी जेनापर ते दूध वर्षतुं नथी, तेने हर्षादिकनी करनारी ते थती नथी. वळी आ रायणनुं जो सुवर्ण, रुपुं, मोती, तथा चंदनादिकथी पूजन करवामां आवे, तो ते स्वप्नमां आवीने, सघळुं शुभाशुभ कही आपे छे. वळी शाकिनी, भूत, वेताल तथा राक्षस आदिकथी उपद्रवित थयेला माणस, त्वरित आ रायणनी पूजा करीने ते दोषोथी मुक्त थाय छे. वळी जे माणस आ रायणनी पूजा करे छे, तेने एकांतरीओ, तरियो

के कालज्वर तथा फेर आदिक तेनां शरीरने पराभव करी शकतां नथी. वली पोतानी मेळे जखरीने पडेलां आ रायणनां डालां, तथा पांदडां दिक लेइने, तेने जीवनी पेठे साचववां, केम के, ते सर्व दुःखोने नाश करनारां छे. वली जे बे मित्रो आ रायणने साक्षीरूप करीने पोतानी मित्राइ बांधे छे, तेओ राज्यादिक सुखोने मेलवीने मोक्ष पदमां जाय छे. आ रायणनां पश्चिम दिशानां भागमां दुर्लभ एवी रसकुंपिका छे, के जेनां रसनां गंधथी लोढुं क्रोड सोनामोहोर जेटलुं थाय छे. वली पूजा, नमस्कार अने भावने भजनारो कोइक माणस अठमनो तप करीने आ रायणनां प्रसादथी ते रसकुंपिकानां रसने मेलवे छे. वली कल्पवृक्षो, दिव्य औषधीओ, अने आठ सिद्धिओनी शी जरूर छे? फक्त एक आ रायणज माणसप्रते प्रसन्न थाओ? वली आ रायणनी नीचे, जग तनां लोकोथी पूजायेलां, तथा महासिद्धि अने सुखने देनारां श्री ऋषभदेव भगवाननां पगलां छे. वली तेनी डाबी अने जमणी बाजुये ऋषभदेव प्रभुनां पेहेला गणधर श्रीपुंडरिकस्वामीनी बन्ने भवोमां सुख करनारी मूर्तिओ छे. वली श्रीमरुदेवानां शिखरपर क्रोडो देवोथी सेवनीक एवा श्रीशांतिनाथ प्रभु संघनी शांतिनेमाटे थाओ? करेलुं छे, मंगल जेओये एवा माणसोज श्री आदिनाथ प्रभुप्रते, पुंडरिक गणधरप्रते, रायणप्रते, पगलांओ प्रते, तथा शांतिनाथ प्रभु प्रते, सूरिमंत्रथी मंत्रेला, तथा शुद्ध पाणी, सुगंध, अने पुष्पोथी भरेला, एकसोने आठ कुंभोथी स्नात्र करे छे. वली ते स्थानकोनी सर्वदा सेवा करवाथी राज्य, बुद्धि, लक्ष्मी, कीर्ति, सर्वेनुं वशपणुं, धननी प्राप्ति, स्त्री, पुत्र, संपत्ति, सौभाग्यपणुं, जय, सर्व इच्छित, आनंद, दोषनो नाश, तथा उत्तम भोगोनी प्राप्ति थाय छे. वली अहिं अष्टोत्तरी स्नात्रपूजा करवाथी शाकिनी, भूत, वेताल, तथा व्यंतर आदिकनां दोषोथी ग्रस्त थएला प्राणीओनां ते दोषोनो नाश थाय छे. वली अहीं स्नात्रपूजा करवाथी ज्येष्ठा, अश्लेषा, मघा, मूल, भरणी अने चित्रा आदिक नक्षत्रोमां थयेल छे, जन्म जेओनां, एवा माणसोनो विकार पण दूर जाय छे. वली आ तीर्थ निर्मल, मोक्ष लक्ष्मीनो संग करावनारुं, भूमिरुपी स्त्रीनां कपालमां तिलक समान, तथा ऋषभप्रभुरुपी उत्तम रत्ने करीने शोभित थयेलुं छे. वली आ तीर्थ, अनंत मुक्तिनां धाम सरखुं, हमेशां स्थिर. निर्म-

ल, बाधाने नाश करनारुं एवुं जे केवल ज्ञान, तेना सरखुं दुरितनां समूहने तथा भवने नाश करनारुं छे, माटे उत्तम बुद्धिवाला माणसोये जगतनां स्वामि श्री ऋषभदेव प्रभुमां चित्त राखीने ते तीर्थने सेववुं. वली आ तीर्थनी पूर्व तरफनी दिशानां भागने भूषित करनारुं, तथा दूषण रहित, अने देवोने पण प्रिय, एवुं सूर्योद्यान नामनुं उद्यान छे; जे उद्यानमां कल्पवृक्षनी श्रेणि, पर्वतरूपी लक्ष्मीनी जाणे वेणीज होय नहीं, तेम जगतनां इच्छितने पूरे छे, तथा जिननी सेवानी स्पर्धा करे छे; वली आ उद्यानमां किन्नरो पोतानी स्त्रीउ सहित जिनमंदिरमां आवीने नृत्यादिकथी गायन करे छे, तथा तेथी विद्याधरोने पण गम्मत उपजावे छे. तमाल, हिंताल, पलाश, तथा तालनां पत्रोनी पंक्ति, झंकार करता भ्रमरनी मालाने प्रेरणा करे छे. वली आ उद्यानमां वसंत ऋतुमां पत्रोनां समूहोथी युक्त थयेली वननी पंक्ति, ते जाणे कामदेवे, सूर्यनां किरणोथी स्पर्श थइ न शके, ते माटे लज्जायुक्त करी होय नहीं, तेम शोभती हती. वली आ वनमां वसंत ऋतुमां आम्रनां वृक्षपर रहेली कोकिल आनंद आपनारा पंचम स्वरथी गाय छे, अने तेथी ते एम जणावे छे के, गुणीनां संगथी निर्गुणी पण गुणयुक्त थाय, एवी वाणी निष्फल छे; वली अहीं रागी माणसोने रंगनां तरंगो उपजावनारी वाणी पक्षिउ बोले छे, के जे वाणीनी मीठाश अमृतनां रसनी धाराने पण दूर करे छे. वली अहीं क्याराउमां वलयाकारने प्राप्त थयेलुं, तथा मार्ग चालती पशुउनी श्रेणिउथी शोभतुं, नीकोमां पाणी वहे छे. वली अहीं मधुपान करवामां लीन थयेला भमराउनी श्रेणिथी मनोहर लागती, तथा उगता सूर्यनी कांतिसरखी लाल, अने धारण करेल छे, पृथ्वी प्रते अग्नि सरखी लाल छाया जेणे, एवी आंबानी कलिका. मदोन्मत्त कुनर्कोउनी श्रेणिनी तुलनाने भजे छे. आंबानी मनोहर मांजर. के जेनापर मनोहर कोकिल मनोहर शब्द करे छे, अने ते कामी वियोगीउनां मनमां आपदा उत्पन्न करे छे. माणसोने पीडनी एवी जे तापनी श्रेणि, तेने दूर करवाने, उत्तम स्त्री जेम चिंतामांथी पवन नाखे छे, तेम आ वन केलनां पांदडांउरूपी वीजणाउथी पवन नाखे छे. वली अहीं सर्व ऋतुउ पण हमेशां एकी साथेज होय छे, त-

था तेथी हसता एवा जे वृक्षोनां समुहो, ते पोतानां पुष्पोनी श्रेणिथी विलासयुक्त थया थका सुखेथुउने अनुपम सुख आपे छे. वली अहीं जिननी दृष्टिरूपी अमृतथी सिंचायेला, तथा विकस्वर थयेलां कमलोनी श्रेणिथी शोजता, तथा विविध प्रकारनां वृक्षोनी रचनाथी देदीप्यमान देवो वनलक्ष्मीनी पेठे शोजे छे. वली अहीं हंसनी पंक्तिउथी सहित छे, श्रेणिउ जेनी, एवां विकस्वर थयेलां कमलोथी मनोहर थयेलुं आ तलाव छे, के जे अढार जातनां कुष्टोनो नाश करे छे. वली हे इंद्र! शत्रुंजय पर्वतनी पासे रहेलुं, तथा त्रणे लोकोनां प्राणीउथी सेवायेलुं, तथा तमारी दिशाने मंडन करनारुं, आ वन कोने आनंदकारक नथी?

एवी रीते आचार्य श्री धनेश्वरसूरिये रचेला, महातीर्थ श्री शत्रुंजयनां माहात्म्यमां पर्वत, कंडुमुनि, प्रजुनुं समवसरण, देशना, अने उद्यानना वर्णनरूप पेहेलो सर्ग समाप्त थयो.

द्वीतीयः सर्गः प्रारज्यते.

देव तथा असुरोनां मस्तकपर रहेलां रत्नोनी कांतिथी रोमांचित थयेल छे चरणो जेमनां तथा जगतनां नाथ, अने कर्मोनो नाश करनारा श्री आदिनाथ प्रजु तमारुं रक्षण करो? एवी रीते श्री जगवाननी वाणीने सांजलीने, सुधर्मेंद्र, प्रणाम करीने, तथा हाथ जोडीने प्रजुने विनती करवा लाग्यो के, हे जगवन्, आपे जे आ तीर्थाधिराजनो महिमा कह्यो, ते मने अत्यंत आनंद उपजावनारो थयो, हवे मने आ सूर्योद्यानमां रहेला तलावनी कथा सांजलवानी इछा छे. त्यारे जगवान पण इंद्रोने जव्य जाणीने तीर्थनां माहात्म्यने वृद्धि करनारी, ते कुंडनी कथा केहेवा लाग्या. आ सूर्यावर्त नामनो उत्तम कुंड जवरूपी खाडाने हरनारो छे, तथा तेनी सेवाथी पण अढारे कुष्टोनो नाश थाय छे. वली आ कुंडनुं पाणी प्रजुनां चरणपर सींचवाथी, तत्वथी जेम मिथ्यात्व, तेम सघला दोषो नाश पामे छे. ते नीचे प्रमाणे.

श्री सुराष्ट्र नामनां देशमां विशाल किल्लाथी शोजितुं, तथा लक्ष्मीने विलास करवानां घररूप एवा घणा लोकोथी विजूषित थयेलुं, वाव, कुवा,

तलाव, तथा मोटां उद्यान आदिकथी घेरायेलुं, दानशालाओथी भरेलुं, इंद्रनी नगरी सरखुं, तथा जिनवचननी श्रेणिरूप मोक्षनी नीसरणीथी मंडित थयेलुं "गिरिदुर्गपुर" नामनुं नगर गिरनार पर्वतनी तलेटीमां रहेलुं छे. ते नगरमां रहेनारा लोको जरा पण निर्धन, चाडीआ, मूर्खा, अविवेकी, दीन के पराधीन नथी. वली त्यांनां लोको देवपूजन करनारा, भक्तिपूर्वक तपस्वीओने दान देनारा, मागणोने दान देनारा, तथा दुःखीओ प्रते दयालु छे; तेम त्यांनां वेपारीओ राजनां मानीता, कविओ सत्कारवाला, तथा चाकरो शेठो तरफथी इनाम मेलवनारा छे. ते नगरमां समुद्रविजय राजानां वंशनो तथा घणां भाग्योथी शोभतो, अने अरिहंत प्रभु तथा मुनिमां भक्तिवालो, सूर्यमल्ल नामे राजा हतो. ते राजाये वेरीरूप अंधकारने हरीने समस्त पृथ्वीने आनंदयुक्त करी. वली यादववंशमां भूषण समान एवा ते राजाये क्रिडामात्रमांज, रणसंग्राममां लाखो वेरीओनां मस्तकपर पग मुक्यो. वली तेनां प्रतापरूपी सूर्यनां तापथी माखणसरखी शत्रुनी कीर्ति गली गइ. सूर्यने विषे जेम कमलीनी, तेम आ राजामां प्रीतिवाली, कमलसरखां मुखवाली, तथा शुभ कार्योमां तत्पर तेनी शशिलेखा नामनी पटराणी हती. सूर्यमल्लनी ते स्त्री हती, छतां सूर्यने ते जोती नहोती, तथा श्री नेमनाथ प्रभुनां चरण कमलने सेवनारी हती. पुण्यमां आदरवाला, शांत, तथा सुखरूपी समुद्रमां काचबानां जोडां सरखा, ते बन्ने स्त्री पुरुषो सुखेथी पोतानो काल निर्गमन करता हता. एक वखते राजा प्रभुनी यात्रा करवामाटे गयो हतो, ते वखते राणीये, पोतानां बालकोने रमाडती एक मयूरीने जोइ. ते वखते ते राणी पोते पुत्रहीन होवाथी, पोतानां आत्माप्रते शोक करवा लागी; त्यां राजाये आवीने, तेणीने धीरज आपीने कह्युं के, ते कार्यमाटे तुं प्रभुनी सेवा कर? पछी जगतनी माता सरखी एवी अंबा देवीनां प्रसादथी तेणीने प्रख्यात देवपाल अने महीपाल नामनां बे पुत्रो थया: तेओ बन्ने कलाओनां समूहवाला, उत्तम पराक्रमवाला, मिष्ट वचनो बोलनारा, सर्व लोकोनी उन्नतिमां प्रीतिवाला तथा सर्वपर समदृष्टि राखनाराओ हता: वली तेओये पोताना हृदयरूपी दर्पणोमां उत्तम आचारोने धारण कर्या हता: वली बुद्धिना भंडाररूप

एवा तेउँये गुरुने तो फक्त शाक्षीरूपज करीने शास्त्राभ्यास, तथा विविध प्रकारनो शस्त्राभ्यास कर्यो. वली तुल्य वयवाला तेउं क्रीडा करता थका, तथा लोकोने खुशी करता थका अनुक्रमे यौवन अवस्थाने पाम्या. पछी मातपिताये घणां हर्षपूर्वक तेउंने घणी राजकुमारीउं परणावी. हवे तेउंमां महीपाल छे ते, मानी, यशस्वी, तेजस्वी, विनयी, तथा नीतीने जाणनारो हतो, तेथी देवपालथी घणां गुणोयें करीने ते जुदो पडतो हतो. एक दिवसें महीपाल पाछली रात्रें निद्रारहित थयो थको, अचानक पोताने, वनपशुउंथी व्याकुल वनमां देखवा लाग्यो. त्यां तेणे कोइ जगोये ज्ञुंडोनां टोलां, तो कोइ जगोये हाथीउंनां टोलां, अने कोइ जगोये तो वली सिंहोनो संचार जोयो. त्यारे ते विचारवा लाग्यो के आ ते शुं विभ्रम छे! के स्वप्न छे! के चित्तनो विपर्यय थयो छे! के इंद्रजाल छे! के आ कोइ देवचरित्र छे!!! वली हुं तो गीतरसोनो स्वाद आपनारी स्त्रीउंनी क्रीडामां मग्न थयो थको चंद्रशालामां सूतो हतो, अने अहीं क्यांथी आव्यो!!! हशे! हुं आ वन तो जोउं! एम विचारि जेटलामां ते चालवा जाय छे, तेटलामां तेणे एवी वाणी सांजली के, हे मित्र! हुं तने अहीं लावेलो बुं, माटे डरीश नहीं. पण ते वाणीनां मार्गने नहीं जोवाथी, ते एक मेहेलमांथी जेम बीजा मेहेलमां तेम वृक्षोप्रते मार्गने शोधतो थको खेद पाम्याविनां ज्ञमवा लाग्यो. एवी रीते वनमां ज्ञमतां थकां तेणे, कोइ जगोये तो चंद्रकांत मणिउंनां किरणोथी शरद ऋतुनां वादलांउंनी शोज्ञाने धारण करतो, तथा इंद्रनील मणिउंनी श्रेणिथी उत्तम वेणीनी शोज्ञाने धारण करतो, पुखराजोथी कमलनां रंगनी देदीप्यमान कांतिने धारण करतो, सुवर्णनां कलशोथी मंगलपणाने धारण करतो, तथा हजारो जरुखाउंथी जाणे हजारो आंखोवालो थयेलो, तथा हीराउंनां किरणोनां समूहथी जय पामता राज्यपणाने धारण करतो, तथा रत्नोथी तापयुक्तपणायें करीने जाणे पताकाउंथी वींजातो होय नहीं, एवा एक मोटा मेहेलने तेणे ते वननां मध्य ज्ञागमां जोयो. जंगली जानवरोथी जरपूर वनमां आ मेहेल क्यांथी!!! एम आश्चर्य पामतो थको ते, ते मेहेल तरफ जोवा लाग्यो. पछी तेणे विचार्युं के, मारी आंखनां विनोद माटे प्रसंगथी मलेलो आ मेहेल हुं जोउं तो खरो! एम

विचारि ते तेनी तरफ चालवा लाग्यो. आ मेहेलमां आ वस्तु वहु रमणीक छे! आ वहु रमणीक छे! एम विचारतो थको, ते तेनां मजलाउपर चडवा लाग्यो. महापराक्रमी एवो ते एवी रीते चालतां थकां, जेवो चंद्रशालाप्रते आव्यो, तेवामां तेणे पद्मासन वारीने बेठेला एक योगीने जोयो. त्यारे तेणे विचार्युं के, संसार सरखा आ अरण्यमां संसारीनी पेठे नमता एवा में, प्रसंगथी जीवतां मुक्त थया सरखा आ योगीने जोया; एम विचारि पृथ्वीपर मस्तक अडाडीने, कल्याण करनारा, तथा दयाने पालनारा ते योगीने समतापूर्वक तेणे नमस्कार कर्यो. पंच महाव्रतो तथा यमोने समतापूर्वक धरनारो, आसनपर बेठेलो, महा प्राणायामने धारण करनारो, नियमोमां आदरयुक्त, पांच इंद्रिउं तथा मन, वचन अने कायानां योगने धरनारो, चार ज्ञानने धरनारो, तथा समाधित्रिकनां अन्नावथी अरिहंत संबंधी तेजनुं स्मरण करनारो, तथा दयालु एवो ते योगी तेने जोइने पोतानुं ध्यान छोडतो हवो; अने तेने कहेवा लाग्यो के, हे वत्स!! तुं सुखी तो छे ने? नले आव्यो! तारा शरीरने तो सुखसाता छेनी? अने तुं अहीं विघ्नरहित आव्यो छेनी? वली हे वत्स! तुं आश्चर्य नहीं पामजे? ताराप्रते विद्या आपीने गुरुपणानुं करज छोडवानी इच्छाथी हुं तने खरेखर अहीं लाव्यो छुं. "तुं नुख्यो होइश" एम कहीने दीव्य शक्तिथी मगावेली आश्चर्यकारक रसोइ, प्रीतिपूर्वक ते योगीये तेने जमाडी. पछी तेणे पण नोजन करीने, पूर्वपुण्यनुं फल जाणतां थकां, विनयपूर्वक ते योगीनी पासेथी खड्गसिद्धि नामनी विद्या मेलवी, पछी ते वखते योगी पण कमलासनपर बेसीने, तथा कांतिथी ते मंडलने पण दीपायमान करतो थको, आकाश नेदीने पोतानां प्राणोने तजतो हवो. एवी रीते ते योगी स्वर्गमां गये छते, सारासारने जाणनारो ते राजकुमार, मेहेल के योगीने न जोवा लाग्यो; पण केवल वनने ज जोवा लाग्यो; अने विचारवा लाग्यो के, अहो! योगनो महिमा केवो छे!!! जेथी जीवतां थकां पण आवी लक्ष्मी मले छे, तथा परनवमां एवी मुक्ति मले छे. सारी रीते योगनो आश्रय करनाराउने पापोनो नाश, मुक्तिनो संग, तथा सर्व सिद्धिउ प्राप्त थाय छे. एम विचारि त्यांथी चालीने ते वनमां नमवा लाग्यो, त्यां तेणे उंचां वृक्षोवालो. तथा अंदर ते

बगलांनुं स्थानक ज्यां, एवो तेणे एक महा कुंड दीठो. पछी जेटलामां ते तेमां स्नान करवानी इच्छा करे छे, तेटलामां ते महाबुद्धिवाने "मा! मा!" एवी रीतनी वाणी सांभली; पण ते वचनना बोलनारने नहीं जोवाथी ते कुंडनां कांठापर गयो, तथा ते अवज्ञानुं वचन त्यां वारंवार सांभलवा लाग्यो. एवी रीते ते माणसरहित वनने जोतो थको जेटलामां आश्चर्य पामे छे, तेटलामां कोइक वांदरो तेनी सन्मुख प्रगट थइने कहेवा लाग्यो के, हे वीर! मने पशु जाणीने मारां वचननी तुं अवगणना करीश नहीं, केम के, वांदरनां वचनथी रामे पण राक्षसोने जीत्या छे. वली आ कुंडमां रहेला राक्षसे अहीं जे प्राणीउने मारी नांख्या छे, ते प्राणीउनां, पर्वतनां शिखरो सरखा हाडकांनां समूहोने तुं जो? अने तुं तो कोइ उत्तम आकृतिवालो तथा डाह्यो राजानो पुत्र जणाय छे, माटे अहींथी तुरत चाल्यो जा? नहींतर ते राक्षस तने मारी नांखशे. ते सांभली महीपाल जरा हसीने कहेवा लाग्यो के, अरे! पशु! तुं खरुं कहे छे, पण मने राक्षसनो भय नथी, केम के सूर्यने अंधकारनो भय होतो नथी. ते सांभलीने वांदरो तेने कहेवा लाग्यो के, जो तारी शक्ति छे, तो तारी इच्छा प्रमाणे कर? अहीं भयंकर, क्रोधी, तथा श्याम कांतिवालो एक राक्षस वसे छे; एम कही ते वांदरो वनमां अदृश्य थयो. पछी ते राजपुत्र उत्तम विद्याथी विभूषित थयेलां खड्गने हाथमां लेइने, वेगथी कुंडप्रते आव्यो. पछी ते कुंडनां पाणीमां पडीने, जेटलामां ते बगलांनां स्थानकप्रते पहोंच्यो, तेटलामां क्रोधथी उंचां करेल छे, नेत्रो जेणे एवो राक्षस क्षणवारमां तेनी तरफ दोड्यो. पछी युद्धमां पारंगामी तथा महाबलवान तेउ बन्ने युद्ध करवा लाग्या, तथा पडता अने पाडता थका पृथ्वीने कंपाववा लाग्या. पछी खड्गविद्यानां प्रभावथी ते राक्षस राजपुत्रथी जीतायो अने तेनी सेवा करवा लाग्यो, केम के, साहसथी शुं कार्य सिद्ध थतुं नथी? पछी ते राक्षसे प्रतिज्ञा करी के, हे राजपुत्र! ज्यारे तुं मारुं स्मरण करीश, त्यारे हुं तने प्रत्युत्तर आपीश, तारा वैरीप्रते हुं वैरी थइश, तथा तारा मित्रप्रते हुं मित्र थइश. पछी ते राक्षसे ते राजकुमारने वेष बदलवानी, तथा घाने साजो करनारी एम बे ओषधीउ आपी; अने तेनी पासेथी तेणे धर्म अंगीकार कर्यो. पछी कुमार तेने रजा आपीने,

तथा क्रीडार्थी ते तलाव उतरीने, अखंड सुखवाली ते वननी शोभाने जोवा लाग्यो. ते कौतुकी राजकुमार जोवानी इछाथी कोइ जगोयेथी पुष्पो, तो कोइ जगोयेथी पल्लवो, तो कोइ जगोयेथी पाकेलां फलो लेवा लाग्यो. पछी त्यांथी ते श्रीनिवास नामनां वनमां गयो, त्यां मनोहर तोरणवालुं श्री नेमनाथ प्रभुनुं मंदिर तेने मल्युं. त्यां हर्षथी नेमनाथ प्रभुने नमीने, तथा तेनी स्तुति करीने ते बेठो, तथा निधाननी पेठे ध्यानने धरवा लाग्यो. त्यां चलायमान थता कुंडलथी घसायेलां छे, कपोलस्थलो जेणीनां, तथा पलाशनी पावडीपर चडेली, सुवर्णदंडने धारण करती, तथा हाथमां मनोहर वृक्षोनां फलोथी भरेलां पात्रने धारण करती, एक योगिनीने तेणे तुरत प्रभुनी पासे दीठी. त्यारे आ राजकुमार पण संभ्रम सहित उठीने तेणीनां चरणोने नम्यो, त्यारे ते योगिनीए पण तेना प्रते "जय, जीव" एवी रीतनी आशिष दीधी. रूप, लावण्य अने आभूषणोथी भूषित थएली ते योगिनीने साक्षात जोइने, खुशी थयो थको, तथा तेणीने देवांगना मानतो थको आदर सहित ते कहेवा लाग्यो के हे देवि! तुं खरेखर मारी गोत्रदेवी छे, केमके, आ वखते आ जंगली पशुओथी भरेला वनमां तुं प्रगट थइ छे. एवी रीतनी अमृतसरिखी तेनी वाणी सांभलीने ते योगिनी कहेवा लागी के, हे वत्स! हुं देवी नथी, पण तपस्या करती मानुषी छुं; वली हे वत्स! आजे पुण्यनां कारणरूप तुं मारो अतिथि तरिके आव्यो छुं, माटे मारी वाणीने तारे व्यर्थ करवी घटशे नहीं. वली हे उत्तम पुरुष! जेने घेरथी अतिथि निराश थइ चाल्यो जाय छे, तेनां पुण्यनो क्षय करी, तथा पापोनो उदय करीने ते जाय छे. पछी ते राजकुमारे ते वात कबुल राखवाथी, ते योगिनी दंडसहित पात्र लेइने जिनमंदिरमांथी निकली. हवे ते कुमार आश्चर्य सहित जोते छते, हाथमां पात्रवाली, तथा योगनां माहात्म्यवाली ते योगिनी वृक्षोने फलोनी याचना करवा लागी; तथा तेणीए नीचे पात्र धर्याथी ते वृक्षो पण फलो देवा लाग्यां, तथा एवी रीते घणुं दान देवाथी ते कल्पवृक्षनी तुलनां करवा लाग्यां. पछी ज्यारे ते पात्र फलोथी भराइ रह्युं, त्यारे योगिनीए ते सघलुं पात्र तेनी सन्मुख मुक्युं, त्यारे तेणे पण तेमांथी पोतानी इच्छा प्रमाणे खाधां, पछी ते प्रभुने नमीने ज्यारे जवानी इच्छा करवा ला-

ग्यो, त्यारे तेणीयेकह्युं के, हे वत्स! तुं हवे क्यां जाय छे? तथा क्यांथी आव्यो छुं? ते कहे? त्यारे तेणे कह्युं के, हे माता! हुं कोइ साथथी भ्रष्ट थइने अहीं आव्यो छुं, तथा हवे नेमनाथ प्रभुने अने तमने नमीने मारां नगरप्रते जइश. त्यारे ते दयालु योगिनी कहेवा लागी के हे वत्स! आ आगल रहेला वनने तुं जो? अहीं महाकाल नामे यक्ष वसे छे, तथा कालनी पेठे ते प्राणीउने हणे छे. वली ते यक्षे अहीं आवेला घणां लोकोने हण्या छे, माटे आ वनने दूर मुकीने तने जेम सुख उपजे तेम तुं जजे. एवी रीते तेउ मांहोमांहें हर्षपूर्वक वात करे छे, तेटलामां अकस्मात, महा तेजस्वी कोइ मुनि आकाशमांथी उतर्या. तप अने शरीरथी पण तेजस्वी एवा ते मुनिने जोइने, संभ्रांत थया थका तेउ बन्ने, पोतानां पुण्यने जेम, तेम तेने नमस्कार करता हवा. त्यारे मुनि पण आनंदयुक्त थया थका, तेउनां विघ्नरूपी हाथीउने नसाडवामां सिंह सरखी धर्मलाभनी आशिष देता हवा. पछी तेउ तेने कहेवा लाग्या के, आजे तमो जे अमारी दृष्टिये पड्या तेथी त्रण जगतनां नाथ एवा श्री नेमिनाथ प्रभुनां चरणनां नमस्कारनुं फल अमारुं परिपक्व थयुं. वली आप तो साक्षात समता रसनां समुद्र, तथा पुण्यनां ढगला समान छो, अने निर्भाग्य लोकोने तो आप सरखानुं दर्शन पण दुर्लभ छे; माटे हे प्रभु! तमारे अमोने धर्म कहेवो योग्य छे, केम के, आपसरखा परोपकारमां रक्त होय छे. एवी रीतनुं तेउनुं अमृतने झरनारुं वचन सांभलीने, मुनि पण पांच दंडके देवोने नमस्कार करीने कहेवा लाग्या के, हे वत्सो! दान, ध्यान, शील अने जीवदयाथी जे पुण्य थाय छे, ते सघलुं जिनपूजाथी थाय छे. जिनपूजाथी माणसोने चक्रवर्तिपणुं, उत्तम बुद्धि, पुण्यनो संग्रह, पापोनो नाश, तथा ग्रहपीडानो पण नाश थाय छे. वली जे माणस त्रिकाल भक्तिथी उत्तम पुष्पोयें करीने, जिनने पूजे छे, तेज माणसने धन्य, पुण्यशाली, तथा गुणवान जाणवो; माटे खेद आपनार प्रमादने तजीने, हमेशां उद्यमवंत थया थकां, पापोने नाश करनारी जिनपूजा त्रिकाल करवी. एवी रीतनां मुनिनां वचनने सांभलीने हर्षयुक्त थयेला एवा तेउ बन्ने महाकाल यक्षनुं चेष्टित पुछवा लाग्या के, हे भगवन्! धर्मथी देवपणुं पामीने, तेज धर्मप्रते शत्रुभूत एवी हिंसा, आ यक्ष स्वार्थनी

पराङ् मुख थयो थको केम करे छे.? वली सघली पुण्यबुद्धिने तजीने आ यक्ष माणसोप्रते द्वेषी केम बनेलो छे.? ते सघलुं हे पूज्य! आप अमो-पर कृपा करीने कहो? एवी रीतनुं तेउनुं वचन सांभलीने मुनि पण, ज्ञा-ननां माहात्म्यथी ते यक्षनुं चरित्र जाणीने, अमृतथी पण अधिक वाणी बोलवा लाग्या. आ वननी अंदर अगाउ कोइक तापस हतो, ते चलक-ता सूर्यप्रते जेम घुवड, तेम जिनशासनप्रते द्वेष धरनारो हतो. ते तापस स्त्री सहित, जटाधारी, तथा कंदमूल अने फलने खानारो हतो, तथा उत्तम वक्कल पेहेरीने एक वनथी बीजा वनमां भमतो हतो. ते तापसथी, कचरामांथी जेम रत्न, तेम अति रूपवाली, पवित्र तथा तेजयुक्त कांति-वाली अने उत्तम लक्षणवाली एक पुत्री थइ. गुणोयें करीने उज्ज्वल ए-वी ते कन्या तेने प्राणथी पण वधारे वहाली हती, तथा तेणीनुं नाम श-कुंतला हतुं, अने तेणीनां वाल मयूरनी कला सरखा हता. वसंत ऋतुने पामीने जेम वननी लक्ष्मी शोभे, तेम ते पण प्रकृतिथीज यौवनने पामी-ने मनोहर आकारवाली थइ थकी शोभवा लागी. एटलामां कामदेव स-रखी आकृतिवाला भीम नामे राजाये क्रीडा माटे वनमां भमतां थकां देवांगनानी पेठे तेणीने जोइ. अत्यंत मनोहर एवी ते स्त्रीने जोइने, ते राजा चोकडुं खेंची घोडाने उभो राखी त्यां स्थिर रह्यो. पछी क्षणवार भ्रम पामीने, ज्यारे ते शुद्धिमां आव्यो, त्यारे तेणीने कन्या जाणीने, योगी जेम शाश्वती शक्तिने पामीने, तेम ते आनंद पाम्यो. पछी ते राजा ते मृगाक्षीनी नजदीक जइने, तेणीने केहेवा लाग्यो के, हे नितंबिनि! तुं परणेली छे के, नहीं? ते कहे? त्यारे कुमारिकाये कह्युं के, हे राजन्! हुं कुमारी छुं; एम केहेतांज ते प्रपंची राजा तेणीने घोडापर चडावी चा-लवा लाग्यो. एवी रीते पुत्रीनां वियोगथी दुःखी थयेलो ते तापस, दु-र्बल शरीरवालो थयो थको, दुःखथी पोतानां दिवसो निर्गमन करवा ला-ग्यो. पछी क्षीण थयेल छे धातु जेनी, दैपालु. मरवानी इच्छावालो, अने चेतना रहित ते थयो; त्यारे तपस्वीउ पुण्यमाटे तेने आ जिनमं-दिरमां लाव्या. ते तापस स्वभावथीज मत्सरवंत होवाथी जिनेश्वर प्रभु-ने नम्यो नहीं, पण जिनना दर्शनथी, आर्तध्यानथी मरीने यक्षपणाने प्राप्त थयो. जेम रोग वधेला माणसोने मृत्युनुंज शरण छे, तेम मिथ्या-

त्वथी मूढ थयेलां मनवालाउंनी गति नरकज ठे; पण आ विचाराने अंतकाले पण जे नेमिनाथ प्रजुनुं दर्शन थयुं, तेथी नरकगति मटीने तेने देवपणुं प्राप्त थयुं; केमके, स्मरण करायेला, दीठेला, स्तवेला, अथवा पूजेला जिनेश्वर प्रजु, स्वर्गादिक उत्तम गति आपे ठे. अहो ! जिनेंद्र प्रजुनुं माहात्म्य केवुं ठे ! ! के जेनां एकवार दर्शनथी पण तापस पापनां समूहने तजीने देवपणाने प्राप्त थयो. हवे ज्यारथी तेनी पुत्रीनुं हरण थयुं ठे, त्यारथी ते मनुष्यप्रते द्वेषवालो थयो ठे, माटे हजु पण ते अन्यासथी माणसोने ते दुःख आपे ठे. एम कहीने ते मुनि, कांतिनां समूहथी आकाश अने पृथ्वीने तेजस्वी करता थका, बीजां चैत्योने नमवामाटे आकाश मार्गे चाल्या गया. पढी दीव्य प्रजावबाली ते योगिनी पण पोताने स्थानके गइ, अने कुमारपण जिनपूजा कर्या बाद कालवनप्रते जवा लाग्यो. ते वखते नाशिकाने फोडी नाखे एवी दुर्गंध, त्यां पडेलां मुडदांउंमांथी निकलवा लागी. हवे उत्तम पराक्रमवालो ते कुमार पण, ते गंधने अनुसारे, हाथमां तलवार नचावतो थको त्यां जवा लाग्यो. ते वखते शस्त्र सहित, तथा जयंकर एवा काल अने कंकालने तेणे जोया, तथा तेउं तेने क्रोधथी मारवा लाग्या. युद्धमां कुशल एवा ते राजकुमारे, मुनि जेम राग अने द्वेषने, तेम ते महाबलवान तथा दुर्गतिमां जनारा यक्षोने जीत्या. पढी एवी रीते जीत करीने, ते कुमार यक्षनां घरप्रते गयो, त्यारे तेणेज तेने मोटी गदाथी रोक्यो; अने ते यक्ष तेने कहेवा लाग्यो के, अरे मनुष्य! तुं कोइ नवीन ठे, अने मारी पासे तारुं बल शुं हीसाबमां ठे? माटे हवे तारा इष्टदेवनुं स्मरण कर? केमके, हमणां तारुं मृत्यु थशे. त्यारे राजकुमार पण जरा हसीने साहसथी कहेवा लाग्यो के, हे यक्ष! वचनमात्रथी मने तुं शामाटे क्षोज पमाडे ठे? वली तुं क्रोध नहीं कर? पण जरा शांत था? अने हृदयमां विचार के, क्रोधने वश थइ तुं शामाटे निरपराधि प्राणीउंने हणे ठे? माटे तुं अमूल्य देवपणुं जोगव? अने मनुष्यवधनो त्याग कर ? केमके क्रोधांध माणसने आ जव अने परजवमां पण सुख नथी; कारणके, क्रोध ठे ते, दयारूपी वेलडीने बालवामां दावानल सरखो, जवरूपी समुद्रने वधारनारो, कुगति आपनारो, तथा धर्मनो घात करनारो ठे. वली क्रोध ठे ते,

अग्निनी पेठे तीव्र तापने करनारो छे, तथा प्रथम पोतानुं स्थानकज वाले छे, अने पछी बीजुं स्थानक तो वाले, अथवा न पण बाले, माटे तेनो तुं त्याग कर? एवी रीतनुं तेनुं दूध सरखुं वाक्य पीने, नवा तावबालानी पेठे, ते यक्षेंद्र क्रोधथी बलवा लाग्यो, तथा हृदयमां रहेला क्रोधनेज जाणे कहाडतो होय नहीं, तेम होठने स्फुरायमान करीने, तथा भ्रुकुटी चडावीने कहेवा लाग्यो के, नथी बीजुं जेना सरखुं शरणुं, एवो जे धर्म, ते तारे विषेज स्फुरायमान थइ रहेलो छे, माटे ते धर्मनुं माहात्म्य मारे जोवुं छे, तेथी तुं मारी साथे युद्ध कर? एम कहीने, हाथमां मुद्गर लेइने ते महाकाल यक्ष कुमारप्रते दोड्यो. ते वखते महा पराक्रमी एवो ते कुमार पण खड्गविद्याथी पवित्र थयो थको, क्रोधथी खड्ग उगामीने युद्ध माटे तेनी तरफ दोड्यो. महामल्ल, महापराक्रमी, तथा महाभुजावाला, एवा तेउ बन्ने युद्ध करता थका वनदेवीउने आश्चर्य करवा लाग्या; महापराक्रमी एवा तेउ बन्ने कोइ वखत आकाशमां फाल देता, तो कोइ वखते पृथ्वीपर रहेता, तो कोइ वखते विचित्र प्रकारे गमन करता; वली तेउ भालां, मुद्गर, तथा तलवारथी एक बीजाउने वारंवार मारता हता. वली तेउ मुष्टीथी मल्लनी पेठे लडता थका, पगनां धबकाराथी पृथ्वीने पण अत्यंत कंपावा लाग्या. हवे यक्षनां मारथी जर्जरित थयेला ते कुमारे, क्रोधथी खड्गविद्यानुं स्मरण कर्युं, तथा ते खड्ग हाथमां लीधुं. ज्वालानी श्रेणिवालुं, तणखाउनी पंक्तिथी युक्त थयेलुं, तथा मारवानी इच्छाथी "त्रटत्रट" शब्द करतुं, तथा प्रत्यक्ष कोपाग्निसरखुं ते खड्ग जोइने, ते यक्ष पण बीकथी अत्यंत क्षोभ पामवा लाग्यो. पछी महीपाले ते यक्षने कह्युं के, अरे यक्ष! मारा क्रोधथी तुं तारा देवपणानो शामाटे त्याग करे छे? माटे मारां चरणकमलनी तुं सेवा कर? तथा हिंसा तजीने दया कर? तथा सर्व जीवो प्रते समता राख? अने तारी संपदा भोगव.? पछी तेनी ते राजकुमारनी शौर्यता, तथा वाक्यनी धीरताने जोइने, मनमां आश्चर्य पामी ते यक्ष कहेवा लाग्यो के, हे वत्स! हुं ताराथी जीतायो. माटे हवे तुं तुरत कंइक वरदान माग? तथा हे उत्तम शौर्यवाला! तारा शिवाय बीजो कोइ पण वीरपुरुष आ पृथ्वीपर नथी. पछी ते कह्युं के, धर्मथी निश्चये करीने जय थाय छे, ते सत्य छे;

हुं तो हिंसक छुं, तथा तुं सर्वने अभयदान देनारो छुं. एवी रीतनुं यक्ष-नुं वचन सांजलीने, विवेकी एवो ते राजकुमार खड्गने मीयानमां नांखी-ने, धर्मनी रुचिवाला एवा ते यक्षने कहेवा लाग्यो के, हे यक्ष! धर्मने विषे तारी रुची हवे स्फुरे छे, एवी हुं तर्क बांधुं छुं; माटे हवे आपणे तारा मेहेलनां अग्र जागप्रते जइयें, अने त्यां आपणे वातो करीशुं. ए-वी रीते महा पराक्रमी एवा ते महीपाल अने महाकाल मेहेलमां जइ ऊरुखामां बेठा. पछी त्यां ते राजकुमार धर्मनां सर्वस्वें करीने मनोहर, गंजीर, तथा महिमाथी अधिक, अने मनने प्रीति करनारी वाणी बोलवा लाग्यो के, धर्मथी राज्य मले छे, देवपणुं प्राप्त थाय छे, तथा मो-क्ष पण मले छे, माटे डाह्या माणसोये धर्म सेववो; वली धर्म उत्कृष्ट मं-गलरूप छे, तथा स्वर्ग अने मोक्षने देनारो, अने संसाररूपी वनने उलं-घवामां मार्ग देखाडनारो छे; वली धर्म मातानी पेठे पोषण करे छे, पि-तानी पेठे रक्षण करे छे, मित्रनी पेठे खुशी करे छे, तथा बंधुनी पेठे स्ने-ह राखे छे. ते धर्मनी माता सरखी दया, सुरासुरोने पण माननीक छे; माटे ते दयानी वैरीरूप हिंसाने डाह्यो माणस अंगीकार करतो नथी. वली जे माणस हिंसानो त्याग करतो नथी, तेनुं दान, तप, देवपू-जा, शील, सत्य, तथा जप, ए सघलुं निष्फल छे. कांटाथी विंधायेलुं आपणुं शरीर पण ज्यारे दुःख पामे छे, त्यारे शस्त्रथी बीजा प्राणीनी हिंसा ते केम कराय? वली जे मूर्खनां सरदारो दया विनां धर्मने इछे छे, ते हीज-डाउं वंध्या स्त्रीथी पुत्रोत्पत्तीनी इछा राखे छे; माटे दयाज उत्कृष्ट धर्म, तथा उत्कृष्ट ज्ञान छे, अने दयाविनानो सघलो धर्म निष्फल थाय छे. वली हे यक्षराज! कृतघ्नपणुं आदरवुं नहीं, पण कृतज्ञपणुं आदरवुं, तारो उप-कार करनारा धर्मप्रते तुं आदर कर? वली जीवदयावाला धर्मने अं-गीकार करीने, पूर्वे कोइ बगलाए स्वर्गसुख मेलव्युं छे, तथा पछी फरी-ने जव न करवा पडे, एवी ते मुक्ति पाम्यो छे. ते कथा नीचे प्रमाणे जाणवी.

श्रीद नामनां वनमां निर्मल पाणीवालुं, तथा कमलोथी शोजतुं एक तलाव छे. ते तलावमां मत्स्योनुं जक्षण करनारो, रोद्रध्यानी, तथा म-हाक्रूर, अने स्वेछाचारी एक बगलो रहेतो हतो; ते बगलो त्यां जल पीवामाटे आवता कागडा आदिक पक्षीउने पण मारी नांखतो. एट-

लामां साक्षात् देहधारी धर्मसरखा, तथा सकल प्राणीउने पोतानी पेठे-ज जोता, कोइक केवली मुनि त्यां आव्या; ते मुनि ते तलावने कांठे समोसर्या, तथा त्यां हरिण, सिंह आदिक पशुउ पण तुरत आव्यां. ते वखते पुष्ट थयेलो ते बगलो पण, केटलाक बगलांउथी वींटायो थको, मुनिनी वाणीरूपी अमृतने पीवानी इछाथी त्यां आव्यो. ते वखते ते मु-नि पण तेउने बोध देवा माटे तेउनीज भाषाथी, दयापूर्वक, धर्मरूपी रा-ज्यने शोभावनारी देशना देवा लाग्या के, आ संसारमां पांचे इंद्रिउनुं पटुपणुं, तथा ज्ञान दुर्लभ छे, तेमां पण विवेक रहित पशुउने तो उत्तम धर्म दुर्लभ छे. जे प्राणीउयें पूर्वे धर्मने विराध्यो छे, तेउने तिर्यंच-गति मले छे, पण जे तिर्यंच गतिमां आवीने पण पाप करे छे, तेउ नर-कमां जाय छे; त्यां तपावेलां लोखंड साथे आलिंगन, तपावेला सीसानुं पान, बंधन, छेदन, भेदन, तथा वज्र अने कांटानुं भोंकावापणुं थाय छे, माटे आर्त अने रौद्र ध्यान ध्याववां नहीं, तथा प्राणीवध करवो नहीं; अने सघला चराचर प्राणीउने पोतानी पेठे जोवां. एवी रीतनां ते मुनिनां वाक्यथी सिंह, वाघ आदिकोये परने पीडा करवानुं तजी दीधुं, तथा ते बगलो पण दयामां तत्पर थयो; तथा ते दिवसथी मांडीने दयामां तत्पर थयो थको ते पोतानो काल निर्गमन करवा लाग्यो, अ-ने धर्मने स्मरतो थको ते देवलोकमां गयो; त्यांथी चवी वेपारीनां कुल-मां उत्पन्न थइ, तथा पोताने हितकारी एवो धर्म करी, एकावतारी थयो थको ते मोक्ष पामशे. माटे हे यक्षराज! तें पण धर्मथीज आ देवपणुं मेलव्युं छे, माटे क्रोधयुक्त थयो थको तुं धर्मनो द्वेष करनारी एवी हिंसा तुं शामाटे करे छे? माटे हवे तुं हिंसाने तज? अने दया कर? तथा हमेशां धर्मने भज? तथा तारा देहथी पण प्राणीओप्रते उपकार कर? उत्तम माणसोये धन, जीवित, विद्या अने बल करीने, आ लोक अने परलोकमां हितकारी परोपकार करवो जोइये. वली आ पूर्व जन्मनां क्रोधनुं फल जोइने, तारे खरेखर, तारा पोतानाज हित माटे कोइप्रते पण वेर करवुं नहीं, वली अंतकाले पण जे तें जिनेश्वर प्रभुनुं द-र्शन कर्युं, तेथी तुं देवपणाने पाम्यो. माटे हवे तुं हमेशां नेमनाथ प्रभुने पूज? एवी रीते ते राजकुमारनां वचनथी खुशी थयेलो ते यक्ष,

चिंतामणि रत्न सरखा उज्ज्वल धर्मने पामीने गुणी एवा ते गुरुने नमतो हवो; अने कहेवा लाग्यो के, हवेथी मने जिन देव, परिग्रह रहित गुरु, तथा दयावालो धर्म थाउ? एवी रीतनो धर्म तेणे अंगीकार कर्यो, तथा गुरुपूजानां बदलामां तेणे राजकुमारने विद्या आपी. पछी ते राजकुमार हर्षथी ते यक्षने रजा आपीने, दया सहित मनवालो थयो थको चालवा लाग्यो; तथा विचारवा लाग्यो के, हवे मारां नगरप्रते जउं; पण नहीं! हुं प्रसंगेथी ज्यारे बहार आव्यो, त्यारे हवे नाना प्रकारना आश्चर्योथी भूषित थयेला विविध प्रकारनां देशोने मारे जोवा, के जेथी पोतानी शक्ति जणाशे, देशाचारनी परीक्षा थशे, उत्तम अधम माणसोनुं जाणपणुं थशे, तथा कलाउनो पण अभ्यास थशे, तेम तेथी नाना प्रकारनां माणसोनो, प्रसंग थशे, तथा विविध प्रकारनां तीर्थो पण जोवाशे; अने तेज हेतुथी डाह्या माणसो देशाटन करे छे. वली पुरुष ज्यां त्यां जइने, परथी तथा स्वजनोथी जे सन्मान मेलवे छे; तेमां पण पूर्वनां पुण्योनुंज कारण छे. एम विचारिने ते राजपुत्र पूर्वदिशा सन्मुख चालवा लाग्यो, तथा केटलाक नगरो अने बगीचा आदिकने उलंघी गयो. एम करतां केटलेक दिवसे ते सुंदर नामनां नगरप्रते पहोंच्यो, अने त्यां वृक्षोनी घटावाला वनमां गयो. त्यां अंबिकानां चैत्यमां जइ एक झरुखामां रह्यो, तथा देवगुरुनुं स्मरण करीने, रात्रिये निर्भय थइ सूतो; एटलामां तेणे, “हे तात! हे माता! हे भाइ! हे दयावंत शूरा लोको! यमनी पेठे निर्दय एवा आ पापीथी मारुं रक्षण करो?” एवी रीतनी कोइ स्त्रीनी दीन वाणी ते महीपाले वारंवार सांभली, अने ततक्षण जागी उठ्यो; तथा ज्यांथी ते शब्द आवतो हतो, ते तरफ निश्चल मनथी हाथमां तलवार लेइ, उतावलथी चालवा लाग्यो. त्यां तेणे पर्वतनी खीणमां ध्यानमां रहेला एक पुरुषने, व्याकुल थयेली एक स्त्रीने, तथा अग्निकुंडने जोयो; त्यारे तेणे विचार्यु के, कोइथी पण ठगायेलो, आ मुग्ध माणस आ स्त्रीने मारवानी इच्छावालो छे, माटे हवे तेणीनुं हुं रक्षण करुं, एम विचारी, ते, ते पुरुषने कहेवा लाग्यो के, अरे दुष्ट! आ तें पापनुं कार्य शुं आरंभ्युं छे? आ बालिकाने छोडी दे? नहींतर हमणा तने यमने घेर पहोंचतो करीश. ते सांभली संभ्रांत थयेलो तथा आक्षेपथी त्रासयुक्त थयेलो ते

विद्याधर बन्ने हाथोथी ते स्त्रीने उपाडीने, पवनथी पण अधिक गतिथी चालवा लाग्यो. त्यारे कुमार पण ते स्त्रीने मुकाववा माटे निश्चययुक्त थयो थको, खड्ग सहित तेनी पाठल दोड्यो. एवी रीते पाठल दोडता एवा ते राजकुमार तरफ दृष्टि राखीने, विद्याधर पण वेगथी पवनने पण जीततो थको चालवा लाग्यो. एवी रीते दोडतां थकां स्त्रीमांज रहेली ठे बुद्धि जेनी, एवा ते विद्याधरे थाकी जवाथी, नरक सरखा जयंकर कुवामां तुरत ऊंपापात कर्यो; त्यारे दयालु, तथा महा पराक्रमी एवा ते राजकुमारे पण, तेने खेंची कहाडवानी इछाथी तेमां ऊंपापात कर्यो. त्यारे ते विद्याधर पण, दीधेलो ठे ताप जेउये, एवा पापोयें करीने जाणे खेंचातो होय नहीं तेम अदृश्य थयो. पठी ते कुमार पण त्यां कुवानो केटलोक जाग उलंगी गयो; त्यां तेणे प्रकाश दीठो, तथा पठी त्यां तेणे वृक्षोनी पंक्ति जोइ. पठी अहीं तहीं जमतां, तथा वनोने जोतां थकां फरीने तेणे ते स्त्रीनां रडवानो शब्द सांजल्यो; त्यारे वृक्षोमां संताइने, तथा धीरे धीरे चालीने अने मौन धरीने खड्ग लेइ तेणीनी पासे ते गयो; त्यां तेणे लाल चंदनथी लीप्त करेलां अंगवाली, लाल वस्त्र तथा लाल माला पेहेरेली, एवी ते स्त्रीने अग्निकुंडनी समीपे जोइ. पठी कुमार पण आकारगोपन करीने,तथा वस्त्रथी खड्गने आछादित करीने, क्रीडापूर्वक फरीने ते तेनी पासे आव्यो; अने तेने कहेवा लाग्यो के, हे महासत्व ! आ तुं शुं करे ठे? वली तुं गुरुनी आज्ञाथी, के पोतानी बुद्धिथी,के कुलक्रमथी आ कार्य करे ठे? त्यारे विद्याधर पण कहेवा लाग्यो के, हे पंथि ! हुं मारी इछा प्रमाणे करुं छुं, तुं तारे चाल्यो जा ? सर्व माणसो पोतपोतामां तत्पर होय ठे, तेमां बीजानी शिखामणनी कंइ पण जरूर होती नथी. ते वखते ते कुमारिका राजकुमारने कहेवा लागी के, हे महा परोपकारी ! मने मारवामां तत्पर एवा आ पापीथी मारुं रक्षण कर ? एवी रीते तेणीनुं दीन अक्षरोवालुं वचन सांजलीने, ते दयालु राजकुमार उत्तम रचनावालुं वचन ते विद्याधरने कहेवा लाग्यो के, हे विद्याधर ! आ बीचारी उत्तम निराधार स्त्री ठे, अने तुं तो शुद्ध वंशमां उत्पन्न थयेल ठे, माटे आवुं कुकर्म करतां तने मनमां पण शुं लज्जा आवती नथी ; वली "स्त्रीनो वधथी त्रिया सन्ताप ते" एवो ज्रम तुं विश-

कुल राखजे मां? केम के पापारंभथी तो शुभ कर्म पण पोतानी मेलेज नाश पामे छे. वली हे मुग्ध! कोइक तारा वैरीये तारी उन्नतिनो नाश करवा माटे, आ उपायथी खरेखर तने ठग्यो छे; माटे हे मुग्ध! मारुं कहुं मान? अने आ स्त्रीने छोडी मेल? केम के स्त्रीहत्याथी माणसने दुर्गति मले छे. एवी रीतनां राजकुमारनां वचनने सांभलीने उलटो ते विद्याधर वधारे कोपायमान थयो; केम के, तपेला तेलमां जल नाखवाथी ते वधारे भडको लेइ उठे छे. पछी ते विद्याधर ते राजकुमारने कहेवा लाग्यो के, तुं विद्याने शामाटे निंदे छे? अने मारा गुरुने पण तुं शामाटे निंदे छे? माटे तुं तारे तारे मार्गे चाल्यो जा? नहींतर क्यांक माथुं पण कपाइ जशे!! एम कहीने हाथमां खड्ग लेइ, ते कुमारप्रते दोड्यो. पराक्रमी कुमार पण लडवाने सज्ज थयो. पछी तेउ बन्ने खड्गथी, तथा दंडथी अत्यंत लडवा लाग्या. पछी महा बलवान एवा ते कुमारे खड्गविद्यानां प्रभावथी ते विद्याधरने जीत्यो, त्यारे विद्याधर कहेवा लाग्यो के, विद्या अने शस्त्रमां पारंगामी देवोथी पण हुं अगाउ जीतायेलो नथी, पण महा पराक्रमी एवा तुंथी हुं जीतायो छुं, माटे हवे तुं कोण छे? ते कहे? वली हुं तो पापमां रक्त थयेलो छुं, अने तुं तो प्राणीउनुं हित करनारो छे, वली धर्मथी जय थाय छे, तथा अधर्मथी भंग थाय छे, तेमां संशय नथी. एम कहीने ते विद्याधर मौन रहेते छते ते राजपुत्र तेने कहेवा लाग्यो के, हवे तुं खेद कर नहीं? पण धर्मप्रते बुद्धि राख? वली स्त्रीवधनां पापथी नरकमां जवाय छे, अने विद्यानां समुद्रसरखो तुं, ते स्त्रीवधथी उत्तम फल मेलववाथी इछा राखे छे!! वली हे महा बुद्धिवान्! हजु पण तुं परनो द्वेष कर नहीं; पण जिनेश्वर प्रभुनुं आराधन करीने सुखी था? एवी रीतनी तेनी वाणी सांभलीने करेल छे नमस्कार, तथा जोडेल छे, हाथ जेणे एवा ते विद्याधरे तेनी पासे आवीने शिष्यनी पेठे शिखामण ग्रहण करवा पछी ते राजकुमारे तेने पुछ्युं के, आ कन्या कोण छे? त्यारे ते विद्याधर कहेवा लाग्यो के, कान्यकुब्ज नामनां देशमां कल्याणकटक नामे एक मोटुं नगर छे, ते नगरमां दीधेल छे, याचकोप्रते सुवर्ण जेणे, तथा मंगलनी श्रेणिथी शोभित थयेलो अने उत्तम बुद्धिवालो कल्याणसुंदर नामे राजा छे. ते राजाने, पतिनी भक्तिथी

पवित्र, तथा शीलरूपी अलंकारने धरनारी कल्याणसुंदरी नामनी राणी छे. तेनी कुक्षीमां रत्ननी पेठे उत्पन्न थयेली गुणसुंदरी नामनी आ कन्या छे; तेणीने में दुर्विनीते मोटी इछाथी अहीं आणी छे. वली हे कुमार! तें आ तारी शक्तिथी, आ कुमारिकाने जीवितदानथी, तथा मने नरकनां उद्धारथी, एम अमो बन्नेने चाकरनी पेठे खरीदी लीधां छे. वली आ कन्यानो स्वयंवर एक मासमां मोहोटो थवानो छे, पण जीतेल छे मुखथी कमल जेणीये, एवी आ कन्याने में तेनां घरथी त्याग करावी. एवी रीते महीपालने कहीने, ते विद्याधर तेनां वचनरूपी ज्योत्स्नाने पीवाने चकोरनी पेठे तेनी सन्मुख जोइने उभो. पछी ते कुमार पण उत्तम रसनां आश्रयवाली वाणी कहेवा लाग्यो के, आ कुमारीकाने तुं हवे तुरत तेनां पिताने घेर पहोंचाड? एवी रीतनी तेनी वाणीथी, ते विद्याधर, विद्यानी शक्तिथी, आकाशमार्गे ते कन्याने तेणीने पोताने स्थानके लेइ गयो. पछी विद्याधरे ते कुमारने शोल वीद्याउ आपी, अने कुमारे तेने जैनधर्म आप्यो. पछी पूर्व दिशामां तिलक समान एवा एक उंचा मेहेलने जोइने, कुमारे तेने पुछ्युं के, आ मेहेल कोनो देखाय छे? त्यारे विद्याधरे कंइंक मनथी विचारिने कह्युं के, हे कृपालु कुमार? तुं मारी कथा आदरसहित सांभल? आ वैताढ्य पर्वत उपर रत्नपुर नामनुं नगर छे, त्यां शत्रुउने जीतनारो मणिचूड नामे राजा हतो. तेने विद्याविलासमां रसिक, तथा पितानी भक्तिथी पवित्र थयेला, एवा रत्नप्रभ तथा रत्नकांति नामनां बे पुत्रो हता. तेउमांथी रत्नप्रभे राज्यनां मदथी, मने रत्नकांतिने बलवान जाणीने, कंइंक मिषथी नगरमांथी कहाडी मेल्यो. पछी मणिचूडे रत्नप्रभने राज्य सोंपी दीक्षा लीधी. तथा सर्व प्राणीउ प्रते समचित्तवालो थयो थको ते वनमां गयो. हवे ते भाइनां रूपथी में आ पातालमां मोहोटा मेहेलोनी श्रेणिथी शोभावालुं नवुं शेहेर वसाव्युं. आ नगरनां नायक समान तथा महाप्रभाविक, एवा श्रीशांतिनाथ प्रभु सिद्धनां धरोथी निर्मायेला आ प्रासादमां रहे छे. ते भाग्य भाइने जीतवामाटे, हे महीपाल! में आ कुविद्यानो उपाय कर्यो हतो, पण सारुं थयुं के, तें मने नरकमां पडतो बचाव्यो. माटे हवे चालो. आपणे जिनपूजामाटे आ चैत्यमां जइयें. एम कही तेउ विधिपूर्वक दर्शन करवा लाग्या. पछी कु-

त्तम विनयवालो ते खेचर कुमारने मार्ग देखाडतो थको, पातालवनमां रहेला मुनिउने देखाडवा लाग्यो. त्यां जाणे पाषाणनी मूर्तिमयज होय नहीं, तेम ध्यानमां बेठेला, तथा जगतमां प्रख्यात एवा सर्वज्ञपुत्रोनी तुलना करता, संयमधारी तथा पवित्र मूर्तिवाला, ते मुनिउने जोइने कुमार अत्यंत आनंद पाम्यो. पछी अत्यंत नक्तिवंत एवो ते राजकुमार विधिपूर्वक तेउने नमीने, तेउनां मुखरूपी चंद्रप्रते दृष्टि राखीने त्यां बेठो. पछी सहज उपकारी एवा गुरुये पण तेउ बन्नेने नव्य जाणीने, चंद्र सरखो उज्ज्वल धर्मोपदेश कहेवा मांड्यो. कल्याणरूपी वेलडीउनां कंद समान, अने आपदारूपी कमलनीनो नाश करवामां हाथी समान, तथा लक्ष्मीनां कुलमंदिर सरखो धर्म आ डुनिआमां जयवंतो वर्ते छे. हवे ते वखते त्यां चारित्रें करीने पवित्र, मनोहर आकृतिवाला, तथा पुण्यरूपी शृंगारवाला, बे साधुउ आव्याः तथा गुरुने नमस्कार करीने त्यां बेठा; त्यारे उत्तम बुद्धिवाला महीपाले तेउने पुछ्युं के, हे नगवन्, तमो बन्ने क्यांथी आव्या ? त्यारे तेउ कहेवा लाग्या के, अमो बन्ने पुंडरिकगिरि, अने गिरनारनी हर्षथी यात्रा करीने, हमणा अहीं आव्या छीयें. त्यारे विद्वानोमां शिरोमणि महीपाल, ते सांनलीने तीर्थनी वार्ताथी पोताने धन्यमां शिरोमणि मानवा लाग्यो. पछी गुरु पण महीपालने धर्ममां अने तीर्थमां आदरयुक्त मानीने, हर्षथी, ते तीर्थनुं माहात्म्य कहेवाने, तेनापर कृपा करता हवा. जेम जिनोमां आदिनाथ, चक्रीउमां नरत, नवोमां मनुष्यनव, अक्षरोमां ॐकार, देशोमां सौराष्ट्र, तथा व्रतोमां शील, मुख्य छे, तेम सघला तीर्थोमां शत्रुंजयतीर्थ मुख्य कहेवाय छे. ज्यां दारिद्र्यने नाश करनारो तथा जयवंतो सिद्धाचल पर्वत छे, त्यां डुःख तथा पापोनो संनवज क्यांथी होय ? वली ते शत्रुंजय पर्वतनुं माहात्म्य तो जिनेश्वर प्रनुज जाणी शके, केम के, समुद्रनी गंनीरता मंदाराचलज जाणी शके छे, बीजो कोइ जाणी शकतो नथी. वली त्रणे नुवनोमां पण आ सिद्धाचल पर्वतज मुख्य तीर्थ छे, केम के तेनां दर्शनमात्रथीज प्राणीउनां पापोनो समूह नाश पामे छे. वली ते शत्रुंजय पर्वतनां शिखरपर, डुःखें करीने वारी शकाय एवो अज्ञानरूपी जे अंधकारनो समूह. तेने दूर करवाने सूर्य समान श्री नानिराजानां पुत्र ऋ-

पद्मदेव प्रभु विराजे छे. एवी रीते त्रणे जगतमां अत्यंत अतिशयवाळा ते बन्ने तीर्थोने जोइने, प्राणी सर्व हत्यादिक पापोथी मुकाय छे. हवे तेनी कथा कहे छे.

भरतक्षेत्रमां श्रावस्ती नामनी नगरीमां त्रिशंकुनो पुत्र त्रिविक्रम नामे राजा हतो. ते राजा एक दहाडो उद्यानमां फरतो थको एक वडनां वृक्षनी नीचे उभो, त्यां तेणे पोतानां मस्तकपर, क्रूर शब्द करता एक पक्षीने जोयो. कडवा शब्द बोलता ते पक्षीने राजाये उडाडवा मांड्यो, पण ते उड्यो नहीं, त्यारे तेणे क्रोधथी बाणे करीने तेने मार्यो. त्यारे ते पक्षी पृथ्वीपर शिथिल थइ तरफडवा लाग्यो, तेने जोइ राजा कंइक पश्चातापयुक्त थयो थको, पाछो वळी नगरप्रते गयो. हवे ते पक्षी पीडाथी मृत्यु पामी कोइक भिल्लनां कुळमां उत्पन्न थयो, त्यां वनने विषे बाळपणाथीज पापरूपी ऋद्धिनी वृद्धि करनारो थयो. हवे एक दहाडो ते त्रिविक्रम राजाये धर्मरुचि नामनां मुनिपासेथी, भावसहित नीचे प्रमाणे दयामय धर्म सांभळ्यो के, दयाज उत्कृष्ट धर्म, परम क्रिया, तथा परम तत्व छे, माटे हे भद्र ! ते दयानेज तमो भजो? वळी जो दया न होय, तो दान, ज्ञान, निर्ग्रंथपणुं तथा योगनी क्रिया पण व्यर्थ छे. कानने अमृततुल्य एवुं मुनिनुं वचन सांभळीने दया उत्पन्न थवाथी राजा पोते मारेला जीवोनुं स्मरण करवा लाग्यो के, अहो ! में अज्ञानतानां वशथी अगाउ बहु दुष्कार्य कर्यां छे, तेथी मारे दुःखें सहन थाय एवा विविध प्रकारनां भवसंबंधि भावोने सहन करवा पडशे; माटे आ जीवीतनुं, तथा राज्यादिकनुं शुं प्रयोजन छे? के जेथी आ लोकमां संताप, अने परलोकमां मने नरकनी गति मळशे: माटे हवे हुं, कादवमांथी जेम पद्मने तथा माटीमांथी जेम सुवर्णने, तेम आ शरीरथी व्रतने ग्रहण करीश. एम विचारि राजाये, मुनिने नमस्कार करी आदरसहित, व्रतनी याचना करी, त्यारे मुनिये पण तेने हर्षथी दीक्षा आपी. पछी तपोबल ने सर्व सिद्धांतोने, तथा नवे तत्वोने धरनारो ते त्रिविक्रम मुनि विधिपूर्वक उत्तम व्रत पाळवा लाग्यो. एक दहाडो ते गुरु महाराजनी रजा लेइने, एकाकी, सूर्य जेम आकाशमां, तेम संसाररूपी वनमां भमवा लाग्यो. उत्कृष्ट संयमवाळा, तथा प्रतिमा धर्मने धरनारा. ते मुनिने, ते भील

जोयो; त्यारे पूर्वनां वैरथी ते क्रोधायमान थयो; तथा लाकडी अने मुठी विगेरेथी, क्रोधें करीने अल्पबुद्धि जेम पोतानां ज्ञाग्यने, तेम ते तेने मारवा लाग्यो; त्यारे शांत मनवालो, तथा जितेंद्रिय, ते मुनि पण ज्ञयंकर मारथी पीडीत थयो थको, अरणिनां काष्टनी पेठे क्रोधथी बलवा लाग्यो; तथा ते ज्ञीलप्रते तेणे तेजोलेश्या मुकी, अने तेथी ते वृक्षनी पेठे बली गयो. एवी रीते ते ज्ञीलनो जीव मरीने ज्ञयंकर अटवीमां केसरी सिंह थयो, अने ते मुनि पण विहार करतो थको ते वनमां आव्यो, त्यारे ते सिंह तेने जोवाथी, आगला ज्ञवनां वैरथी तेने हणवाने दोड्यो; त्यारे मुनि पण धर्मनां साधनरूप देहनुं रक्षण करवामाटे ज्ञाग्यो. त्यारे करेलुं कर्म जेम प्राणीनी पाछल जाय छे, तेम ते सिंह पण तेनी पाछल दोड्यो, एवी रीते अति क्रोधायमान थयेला ते सिंहे मुनिने एटलो खेद पमाड्यो के मुनिये क्रोधायमान थइ, तेनापर तेजोलेश्या मुकी; तेथी मृत्यु पामी ते सिंह ज्ञयंकर वनमां अत्यंत क्रूर दीपडो थयो, अने त्यां पण कर्म योगे ते मुनि आव्यो; तथा जेटलामां ते मुनि स्थिर मनथी प्रतिमा धारीने रहे छे, तेटलामां पूर्व ज्ञवनां वैरथी ते दीपडो तेने मारवानी इच्छाथी त्यां आव्यो. ते वखते मुनि पण, जोके कषायोनुं ज्ञयंकर परिणाम जाणतो हतो, तो पण कर्मनां वशथी कोप पाम्यो. अत्यंत ज्ञाननी संपदावाला तथा मोक्षनी इच्छा राखनारा मुनिउनां चित्तमां पण ज्यारे अत्यंत क्रोध आवे छे, त्यारे बीजाउनी तो वातज शी करवी? पछी ते मुनिये मुकेली तेजोलेश्याथी ते अत्यंत क्रोधी दीपडो मरीने कोइक ज्ञयंकर वनमां जंगली सांढ थयो, घणी रीते आराधेल छे, योगनुं अंग जेणे, तथा दैवयोगे त्यां पण आवेला, ते मुनिने ते सांढे उपद्रव कर्यो. त्यां पण ते मुनिये तेने प्रथमनी पेठेज मारी नांख्यो. त्यारे ते सांढनो जीव अवंति देशमां, उज्जयनी नगरीमां, सिद्धवडनां कोटरमां अत्यंत झेरी आशिविष सर्प थयो. अनुक्रमे ते त्रिविक्रम मुनि पण चालता थका, ते वडनीचे आवीने कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्या; त्यारे तुरत ते सर्पे पण तेने जोयो. पछी अत्यंत मत्सरथी पूर्व ज्ञवनां वेरी एवा ते मुनिने डंखवा माटे, दुष्ट आशयवालो, तथा विस्तारवाली फणावालो ते सर्प त्यां आव्यो. त्यारे मुनिए पण तेने आवतो जोइ, क्रोध लावीने आगलनी पेठेज यमने मं-

हिरे मोकलावी दीधो. त्यां अकामनिर्जरानां योगथी कंइक कर्मोने छेदी-ने, ते सर्पनो जीव, कोइक गाममां एक दरिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे जइ उपनो; एक दहाडो ते मुनि पण विहार करतो थको तेज गाममां आव्यो. त्यां गामनी समीपे ते मुनिने ध्यानमां रहेलो जोइने, ते नीच ब्राह्मण पूर्वनां वैरथी, तेने मारवा दोड्यो; तथा निर्दय थइने, मूष्टी ला-कडी आदिकथी अनेक प्रकारे ते तेने मारवा लाग्यो, त्यारे मुनिए पण क्रोधयुक्त थइ, आगलनी पेठेज तेने मारी नांख्यो. त्यारे अकामनिर्ज-राथी तथा किंचित् शुभनां उदयथी ते ब्राह्मणनो जीव वाराणसी नग-रीमां महाबाहु नामे राजा थयो. त्यां तेणे उत्तम लीला आदिकथी घणो काल व्यतीत कर्यो. एक दहाडो ते मेहेलनां झरुखामां बेठेलो ह-तो, त्यारे मार्गमां एक निष्पापी मुनिने जतो तेणे जोयो; त्यारे ते वि-चारवा लाग्यो के, अहो ! आ कोइक महात्मा बुद्धिवानोने पूजवा यो-ग्य छे; तो पण मारुं मन तेना पर कंइक द्वेषयुक्त थाय छे; वली अगाउ पण आवा कोइक महात्माने में क्यांक पण जोया छे, एवी रीते ते रा-जा घणीवार सुधि विचारवा लाग्यो. एम विचारतां तेने जातिस्मरण ज्ञा-न थयुं, अने तेथी, साधुनां क्रोधरुपी अग्निनी ज्वालामां कवलरूप थए-ल छे जीवित जेमां, एवा पोतानां सात जन्मो तेने सांभर्या. तेथी रा-जाए, नीचे प्रमाणे अरधो श्लोक रच्यो.

॥ विहंगः शबरः सिंहो, द्वीपी शंडः फणी द्विजः ॥

अर्थः— "पक्षी, भील्ल, सिंह, दीपडो, सांढ, सर्प अने ब्राह्मण." पछी तेणे लोकोमां कहेवराव्युं के, जे बुद्धिवान माणस आ समस्या पूरशे, तेने हुं लाख सोनामोहोरो आपीश. पछी गूढ तथा प्रौढ रहस्यवाली ते समस्या धननी इच्छाथी सर्वे लोको बोलवा लाग्या. पछी त्यां चालता ते मुनिये एक गोवालीआनां मुखथी ते समस्या सांभली. त्यारे मुनिये तेनां नीचे प्रमाणे बे पदो पूर्या.

॥ येनामी निहताः कोपा, त्स कथं भविता हहा॥

अर्थः— जे माणसे क्रोधथी तेओने मार्या छे, तेनी अरेरे !! शी गति थशे? पछी तेमनां मुनिनां वाक्यने सत्य मानीने, ते गोवालीये राजापासे

जइ, ते बन्ने पदो संजलाव्यां. त्यारे राजाये विचार्युं के, आ समश्या आ गोवालीउं पुरी शके नहीं, एवुं विचारि राजाये तेने पुछ्युं के, जे माणसे आ समश्या पुरी होय, तेने बताव? पछी राजाये तेने घणो आग्रह करवाथी, ते अक्षरोरूपी रत्नोने उत्पन्न करवामां खाण समान, तथा पापोने खोदवामां कोदाली सरखा वनमां आवेला ते मुनिनुं व्रतांत तेणे कही संजलाव्युं. त्यारे राजा पण अत्यंत उत्कंठित थयो थको वनमां ते मुनिपासे गयो; तथा त्यां जातिस्मरण ज्ञानथी ते मुनिने उंलखी कहाडीने, तेने कहेवा लाग्यो के, हे मुनीश्वर! तमो मारा अपराध क्षमा करो? वली मने धिक्कार छे! के में ते ते जवोमां तमोने पीडा उपजावी छे; वली आप उपकारीनां दर्शनथी हुं आ राज पाम्यो छुं. वली में क्रोधरूपी चांडालने वश थइने, तमारा तपमां विघ्न कर्युं छे, माटे हवे मारा निमित्तनां क्रोधनो तमो त्याग करो? पछी त्यां मुनिये पण तेनां वचनरूपी अंकुशथी, पोतानां मनरूपी हाथीने, तेवी रीतनां व्यापाररूपी वनमांथी खेंची लीधो. अने कहेवा लाग्या के, हे राजन्! मने धिक्कार छे! के, साधु थइने पण, पापी एवा में ते ते जन्मोमां तने हण्यो; माटे अज्ञानयुक्त मारा अपराधोनी तुं पण क्षमा कर? एवी रीते तेउं बन्ने त्यां परस्पर जेटलामां वातो करे छे, तेटलामां तेउंये आकाशमां दुंदुभिनो नाद सांजल्यो. आ शुं हशे!!! एम विचारतां थकां जेटलामां ते आकाशमां नजर करे छे, तेटलामां तेउंये देवनां कहेवाथी वनमां रहेला केवली मुनिने जाण्या; त्यारे तेने जोवानी इछा माटे आदरयुक्त थया थका, तेउं मननां संशयनो नाश करनारा, तथा देवोथी पूजायेला, ते केवली पासे जइने, तेने नमता हवा. त्यां मुनिये पण तेउंनां निष्पापी जावने जाणीने, जीवदयामय धर्मनुं माहात्म्य कहेवा मांड्युं. देवपदवीयें करीने मनोहर एवुं धर्मरूपी पाणी होय छे, पण क्रोधरूपी झेरथी उत्पन्न थता हिंसारूपी मेलथी ते मलीन थाय छे. वली पोतानां आत्मारूपी जीतपर करेली चारित्ररूपी चित्रनी रचना, क्रोधरूपी कूचामां चोंटेला हिंसारूपी काजलथी नाश पामे छे. वली जे माणस अज्ञानथी उत्पन्न थयेला अविवेकें करीने, मुनिने कदर्थना करे छे, तेनां सरखो बीजा कोइने पण पापी जाणवो नहीं. वली जे मूर्ख मुनि तीव्र तप तपतो थको पण क्रोध करे छे, ते चारित्ररूपी वृ-

करने वालीने, तेनी राख पोतानां आत्माप्रते नांखे छे. वली हे राजन्! तें जे पूर्व भवमां मुनीने गुस्सो चडाव्यो, तेथी तने अने मुनिने, बन्नेने कर्मबंध पड्यो. वली हे मुनि! तें पण अजाणतां थकां हिंसा करेली छे; माटे हवे सर्व पापोने नाश करनारा शत्रुंजय पर्वतप्रते तुं जा? अने त्यां तपस्या करतां थकां, तथा अरिहंत प्रभुनुं ध्यान धरतां थकां, केवलज्ञान पामी तुं मोक्षे जइश; वली हे मुनि! निविड एवुं आ तारुं कर्म, शत्रुंजय तीर्थविनां आकरा शीलादिकथी पण दूर थशे नहीं; वली हे राजन्! तुं पण आ मुनिने गुरुरूप मानीने, तथा तेने अगाडी करीने, माणसोनी साथे शत्रुंजय पर्वतप्रते जा? अने त्यां समतापूर्वक यात्रा कर? तथा यात्रा कर्या बाद सर्वविरति तथा स्थिर ब्रह्मचर्यमां तत्पर थइने, ते मुनिनी साथे त्यांज उत्तम तप कर? वली सुवर्ण जेम टंकणखारथी, तथा लुण जेम पाणीथी, तेम शत्रुंजयनां स्मरणथी कर्मरूपी कादव गली जाय छे. वली सूर्यथी जेम अंधकार, तथा पुण्यथी जेम दरिद्रपणुं, तेम शत्रुंजयनां स्मरणथी कुकर्मो नाश पामे छे; वली वज्रथी जेम पर्वत, तथा सिंहथी जेम हरिण नाश पामे छे, तेम शत्रुंजयनां स्मरणथी पूर्वनां कर्मो नाश पामे छे; वली अग्निथी जेम सघली वस्तुओ, तथा लोखंडथी जेम बीजी धातुओ, तेम शत्रुंजयनां स्मरणथी सघलुं अज्ञानरूपी अंधकार नाश पामे छे. एवी रीतनां ज्ञानीनां वचनने तेओ बन्ने हृदयमां धारीने, तथा भक्तिथी तेने नमीने, प्रीतिवाला थया थका, तथा संघप्रते अनुरक्त थया थका, तीहां यात्रा करीने, उत्सवनी रचनाथी रंजित करेल छे, सघलुं जगत जेओये. एवा थया थका, तीव्र तप तपीने, तथा पुण्यने प्रगट करीने, मुक्तिसुख मेलवता हवा. एवी रीते हे महीपाल! शत्रुंजय पर्वतपर सर्व हत्यानां पापो तुरत नाश पामे छे. एवी रीते आदिनाथ प्रभुये कहेला धर्मने गुरुपासेथी मेलवीने, पोताने धन्य मानतो थको, ते विद्याधरसहित त्यांथी उठ्यो. पछी त्यां विद्याधरथी सेवायलो, ते महीपाल, शाश्वता प्रभुनां वंदनथी, तथा साधुओनी सेवाथी केटलोक काल सुखेथी रह्यो. पछी ते महीपाल खेचरनी रजा लेइने, तलवारयुक्त थयो थको तथा मार्गमां कौतुकनो आश्रय लेतो थको कल्याणकटक नगरप्रते चालवा लाग्यो. पछी ते राजकुमार आकाशगामिनी विद्याये करीने आकाशमां चालतो थको

स्वयंवर जोवानी इच्छाथी कल्याणकटक नगरप्रते पहोंच्यो. त्यां जुदा जुदा देशोथी आवेला, तथा जुदी जुदी भाषाओमां निपुण, अने जुदा जुदा वेषने धारण करनारा एवा राजाओने तेणे जोया. त्यां उंचा मांचाओनी श्रेणि, तेवी रीतनां संघट्टथी पसीनावाली जाणे थइ होय नहीं, तेथी पताकाओनी श्रेणिथी वींझाती हती. त्यां आम तेम भमता महीपाले, लष्करथी वींटायेला पोतानां मोटा भाइ देवपालने जोयो. पछी त्यां महीपाले पोतानो वेष बदलावीने, जाणे कंइ वात जाणतो न होय नहीं, तेम तेनी समीप आवीने जोवा लाग्यो. पछी तेणे तेने पूछ्युं के, आ सघलां राजाओनां सैन्यो, आ उंचा मांचा, तथा अहीं तहीं दोडतो माणसोनो समूह, ते आ सघलुं शुं छे? वली हुं तो परदेशी छुं, तेथी हे मित्र! आ व्रतांत हुं जाणतो नथी; माटे ते सघलुं तुं मारी आगल निवेदन कर.? त्यारे देवपाले कह्युं के, हे महासत्व! तुं सघली वार्ता सांभल? आ समृद्धिवालुं कल्याणकटक नामनुं नगर छे. तथा अहीं कल्याणसुंदर नामनो राजा छे, तेने गुणसुंदरी नामनी पुत्री छे, तेनो आश्चर्यकारक स्वयंवर महोत्सव आवती काले थवानो छे. वली ज्वालानी श्रेणिथी आकुल थयेला आ अग्निकुंडने तुं जो? तेनी अंदर घणां डालांओथी वींटायेलो आ अग्निवृक्ष छे; तेनी शिखारूपी शाखामां रहेलां फलोने जे साहसी माणस ग्रहण करशे, तेने आ कन्या स्वयंवरपूर्वक परणशे. एवी रीतनुं तेनुं वचन चित्तमां निश्चय करीने, ते महीपाल पण मांचाओनां एक भागमां जइने बेठो. पछी लग्नने दिवसे घणां आभूषणोथी शणगारेली थइ थकी, तथा विचित्र प्रकारनां रत्नोनी कांतिनां समूहोथी आकाशभागने पूरती, तथा चलायमान थती नेत्रनी कांतिमां परोवेलां छे, कानपरनां कमलो जेनां तथा लटकता कुंडलथी घसायेल छे, कपोलरूपी मणिनां आरिसा जेनां, तथा मनोहर हारनी कांतिरूपी जे चंद्रनी कला, तेथी स्फुरायमान छे किरणोनो समूह जेनो, वलयने धारण करती, तथा चोटलामां रहेला मालतीनां पुष्पोनी सुगंधिथी, मदोन्मत्त थयेला भमराओथी सेवायेली, तथा सेंकडो गमे सखीओये लावेला सुगंधि द्रव्योथी आदरयुक्त थयेली, तथा प्रकाशित थयेला चंद्रसरखी कांतिवाली, श्वेत वस्त्रोने धारण करती, एवी ते राजकुमारी वरमालासहित मनुष्योचे उपा-

डेली पालखीमां बेसीने ते सन्नामां दाखल थइ. ते वखते सघला राजा-
उं, पडता कामदेवनां बाणोथी पीडीत थया थका, ते सुंदरीने जोइने
क्षोन्नायमान थया. पठी जगतने जीतवा माटे जाणे देहधारी कामदेव-
नी शक्तिज होय नहीं, एवी ते बालाने ते कुंडने किनारे लेइ गया. वली
त्यां महापराक्रमी, अने गर्वथी डुर्धर एवा पर्वतोज जाणे होय नहीं, एवा
ते विद्याधर अने राजानां कुंवरो पण आव्या; पण तेउं सघला ते अग्निकुंड-
नी पासे पण जइ शक्या नहीं, त्यारे ते वृक्षनां फलो लेवानी कुशलता तो
दूरज रही. वली करेलो ठे, उपाय जेउंये एवा विद्याधरो पण, मिथ्यात्वि-
उं डुष्प्राप्य मुक्तिने जेम, तेम ते फलो मेलवी शक्या नहीं. एवी
रीते सघला विद्याधरो तथा राजाओ थाकी गये ठते, तथा "हवे शुं
करवुं?" एवा विचारमां जड होते ठते, महिपाल नुजास्फोट करीने
त्यां आव्यो: तथा हाथो उंचा करीने कहेवा लाग्यो के, हे सघला परा-
क्रमी तथा विद्वान राजाओ! तमो सघला सांनलो? तमो अहीं
लाखोनी संख्यामां एकठा थया ठो, पण तमो आ वृक्षनां फलो लेइ
शक्या नहीं; वली तमो तमारां बलने जाण्या विना अहीं शा माटे आ-
व्या? केम के, वगरविचार्युं काम कोइ पण जणोए सुख माटे थतुं न-
थी. वली हजु पण जो तमारी कंइ पुरुषार्थने प्रगट करनारी शक्ति हो-
य, तो ते तमो हमणा प्रगट करो? केम के आजे तेनो अवसर ठे. अ-
ने जो तमारामां शक्ति न होय. तो तमारी समक्ष, बाहारनो आडंबर
राख्याविना, आ गुणसुंदरी सहित फलोनी लुंब हुं लेइश. ते सांनलीने
लज्जाणी सघला राजाउंए नीचुं मुख कर्ये ठते, तथा कौतुकथी लोको पो-
तांनां मस्तको धुणावते ठते, ते राजकुमारे क्रीडा पूर्वक त्यां जइने, न-
रा आकाशगामिनी विद्यानुं स्मरण करीने. फलोनी पंक्ति हाथथी लेइने,
हर्षपूर्वक ते कुमारीकाने आपी. ते वखते ते राजाउंनां मुखरूपी कमलोने
संकोच करना एवा लोकोए जयजयनो शब्द कर्यो. वली ते वखते स्त्रीउं
नाचीउं गाईने राजाउंनी हांसी करवा लागीउं. अने तेथी नरवर्मा-
दिक राजाउंनां मनमां क्षोभ उत्पन्न थयो. पठी तेउंनां चित्तनी अंदर
प्रवेश करवा माटे जाणे तोरणज बांधतो होय नहीं, तेम रोमांच गुच्छ

थइ थकी, गुंजारव करता भमरानां झंकारथी मनोहर बनेली मालाने हाथमां लेइने, प्रेमबंधन पूर्वक तेणीए ते राजकुमारनां कंठमां नांखी. पछी कल्याणसुंदर राजा तेनी पासे आव्यो, तथा तेने कदरुपो जोइने ते विचारवा लाग्यो के, देखावमां आ कदरुपो छे, पण चरित्रथी उत्तम छे, माटे ते, जगतने उद्योत करनारुं छे तेज जेनुं, एवा भस्ममां ढंकाएला उत्तम रत्न सरखो छे. वली हुं एम जाणुं बुं के, गुणोयें करीने जगतने पण वंदन करवा लायक आनो वंश छे; केम के वादलांमां ढंकाएला सूर्यनुं तेज पण कोण धारी शकतुं नथी? वली पूर्ण थइ छे प्रतिज्ञा जेनी, एवी आ कन्याए आ वरने वर्यो, केम के, एवी रीतनो कुलकन्याउनो आचार जगतमां सर्व जगोए वर्ते छे. वली कुल, शील आदिकथी भूषित थएला आ राजाउनां देखतां, अजाण्युं छे कुलशील जेनुं एवा आ कुमार प्रते कन्या देतां थकां मने लज्जा आवे छे. माटे हवे तो मारा मननो खेद दूर करवा माटे आदरथी, तेनी पासे जई, तेनुं कुलादिक हुं पुछुं. एम विचारिने, ते महाबुद्धिवान राजा तेनी पासे जइ, स्नेह युक्त अने गंभीर वाणीथी तेने पुछवा लाग्यो के, हे उत्तम पुरुष! तारा गुण, विनय अने शक्तिथी, तारी उत्तम जाति आदिक सर्व हुं जोके जाणी गयो छुं, तोपण दुनीआ वहारनां भपकाने जुवे छे, केम के, अंदर भींत गमे तेवी होय, तोपण वहारथी रंगेली भपकावंध लागे छे; माटे हे कुमार! तुं कोइ विद्याधर, के देव, के मलेलुं छे वरदान जेने एवो पुरुष, के नागकुमार छे? ते कहीने मारा कान तुं पवित्र कर? राजाये एम कहेते थके, महा प्रभाविक एवा ते महीपाले, कंचुकनी पेठे क्षणवारमांज पोतानो कदरुपो वेष कहाडी नाख्यो. ते वखते वादलांउथी मुकायेला सूर्यनी पेठे, धुंवाडा विनानां अग्निनी पेठे, कादवरहित थयेला मणिनी पेठे, लांछन रहित थयेला चंद्रनी पेठे, छीपमांथी निकलेलां मोतीनी पेठे तथा माटीमांथी कहाडेलां सुवर्णनी पेठे ते महीपाल दीपवा लाग्यो. ते वखते लोकोये चारेकोरेथी जय जय शब्द कर्यो; तथा तेनापर आकाशमांथी पुष्पवृष्टि थइ. वली ते वखते देवपाले, ते महीपालने यथास्थित जोइने, संभ्रमसहित उठीने हर्षथी आलिंगन कर्युं. वली त्यां ते देवपालनां परिवारे पण, आश्चर्यथी विकस्वर लोचनवाला थइने पृथ्वीपर काया नमावीने तेने नम-

स्कार कर्यो. ते वखते त्रणे जातिनां वाजांउ वागवा मांड्यां, तथा लोको हर्षथी नाचवा लाग्या; अने स्त्रीउनां मुखोथी उंचे प्रकारे धवलमंगलनो ध्वनि निकलवा लाग्यो. हवे महीपाले पूर्वे कहेलां वचनोथी थयेल छे क्रोध जेउने, एवा सघला राजाउ एकठा थइने नरवर्मा राजाने कहेवा लाग्या के, आ महीपाले हाथथी जे फलो ग्रहण कर्यां, तेमां कंइ आश्चर्य नथी, केम के, इंद्रजाल विद्याथी शुं असाध्य छे? वली आ महीपाल दुराचारी होवाथी तेना पिताये तेने पहेलांज घरमांथी कहाडी मेल्यो छे, पण क्यांकथी चमत्कार पामीने, तेणे जे आ कार्य कर्युं, तेमां कंइ तेनुं वल नथी; वली स्त्रीउ तो स्वनावथीज नीचगामीनी होय छे, अने तेथी आ मूर्ख कन्याये तेने वर्यो; माटे ते वर तरिके केम थाय? माटे आ अनुचित कार्य आपणे सहन करीशुं नहीं; अने तेटलामाटे दरिद्री पासेथी जेम रत्न, तेम तेनी पासेथी आ कन्याने आपणे ग्रहण करीशुं. एवी रीते वीजा राजाउनां वचनने सांजलीने नरवर्मा जरा विचार करीने, गंजीर वाणीथी कहेवा लाग्यो के, तमो थोडो काल सबुर करो? केम के आ कल्याणसुंदर राजा मारो मित्र छे, माटे हे राजाउ! तमारे क्रोध करवो नहीं. वली हमणा तो आपणे आपणा क्रोधने समावीने, तथा एकमत थइने, उत्कृष्ट प्रीतिपूर्वक आ विवाह महोत्सव गुजारवो. वली मने मालुम छे के, ए सोराष्ट्रनो राजा स्वल्प लश्करनां बलवालो छे, माटे पर्वत जेम पाणीने, तेम आपणे तेनो मार्ग रोकीने वेसीशुं, माटे तेज विचार आपणे राखवो, बीजुं कंइ पण करवुं नहीं; केम के ज्यारे सूर्यनुं बिंब उगे छे, त्यारे शुं अंधकार रही शके छे? एम विचारिने सघला राजाउ गुप्त अदेखाइवाला थया. तथा सूर्यकांत मणिनी पेठे अंदर बलता थका उपरथी मीठाबोला थया.

हवे एटलामां देवपाल महीपाल पासे आवीने, हर्षयुक्त मनवालो थयो थको. स्नेहसहित तेने कहेवा लाग्यो के, हे वत्स! तारो वियोग थया बाद आपणा मातपिता फक्त शरीररूपज रहेलां छे, पण तेउनो जीव तो तारामांज वसेलो छे; वली हुं अहीं स्वयंवर महोत्सव माटे बिलकुल आवेलो नथी. पण तुं अहीं आवीश, एवी शंकाथी हुं अहीं सत्वर आव्यो छुं; माटे हवे तारे आजसुधिनुं सघलुं वृत्तांत मारे कहेवुं जोइये. ए-

वी रीतनी प्रीतिरूपी अमृतथी जरेली पोताना जाइनी वाणी सांजलीने, ते महीपाल पोतानुं सघलुं व्रतांत कहेवा लाग्यो. पछी पोतानां जाइनुं महा आश्चर्यकारी ते व्रतांत सांजलीने देवपाल अत्यंत आनंदित थयो. पछी राजाये वाजिंत्रोनां नादोथी तेउनो अत्यंत मनोहर विवाह महोत्सव संपूर्ण कर्यो. वली त्यां ते महीपाले हस्तमोचनमां हाथी, घोडा, पालखी, तथा रत्न विगेरे राजापासेथी मेलव्युं. हवे ते स्वयंवरमां रत्नप्रज विद्याधर आव्यो हतो, तेनी बंदिलोकोनां मुखथी सूर्यमल्लनां पुत्रे कीर्ति सांजली. त्यारे ते तेने आवासे गयो, त्यां तेणे तेनुं सन्मान कर्युं; अने रत्नकांतनो तथा पोतानो व्रतांत तेने कही संजलाव्यो. पछी पोतानां बुद्धिवलथी तेने जाइनां स्नेहमां रक्त थयेलो जाणीने, तेउनी प्रीति वधारवामाटे तेणे कह्युं के, पूर्वनां पुण्ये करीनेंज पोतानां जाइनो मेलाप थायछे, माटे हमेशां सुखनां इछनाराउये बीजा हाथनी पेठे तेनुं रक्षण करवुं. वली संपदा अने स्त्रीउ तो जगो जगोये मले छे, पण मातानी कुक्षिविनां बीजी जगोये सहोदर मलतो नथी. वली लक्ष्मीनां लवमाटे जे मूर्ख माणसो जाइउपर द्वेष करे छे, ते निर्जाग्य माणसो कुतरानी तुलनाने धारण करे छे. वली जे जाग्यहीन माणसो राज्यादिकने माटे पोतानां जाइउने मारी नांखे छे, तेउ पोतानी मेलेज पोतानां पक्षनो नाश करे छे, एम हुं मानुं छुं. वली जे माणसो ग्रासनां लवथी गर्वित थया थका पोतानां जाइउने उगे छे, तेउ कागडाउथी पण हांसीपात्र थाय छे. इत्यादि अमृतथी जरेली कुमारनी वाणी पीने रत्नप्रज पोतानी आंखोरूपी मणिउमांथी घणा बिंदुउने जरवा लाग्यो. एवी रीते निःश्वाससहित, तथा गलता आंसुउथी रोकाइ गयेल छे कंठ जेनो, एवो ते विद्याधर महीपालपासे जइने गदगद वाणीथी कहेवा लाग्यो के, ते मारो नानो जाइ स्वजावथीज उद्धत हतो, तोपण में तेने कंइं रोषित कर्यो नथी, पण ते पोतेज मनमां कंइंक विकल्प करीने चाल्यो गयो छे, वली तेने मंत्रिउये पण हितकारी नीतिवाक्योथी वार्यो हतो, अने में पण तेने आग्रहसहित अटकाव्यो, पण ते नहीं मानतां चाल्यो गयो. वली हे बांधव! एकांगी सुखदुःखने देनारा मारा आ राज्यपणाने पण, तेना विनां हुं विषमिश्रित अमृत सरखुं मानुं छुं. पछी कुमारे तेने कह्युं के, हवे तुं खेद नहीं कर?

हवे हुं, कर्म जेम जीव अने शरीरनो, तेम तमारा बन्नेनो संगम करावीश. एवी रीतनुं कुमारनुं वचन अंगीकार करीने, जाइने मलवामां उत्सुक थयो थको, स्वछ मनथी ते त्यां रह्यो. हवे त्यां महीपाले, गीत, शास्त्र, तथा इष्ट जनना संगथी, राजपुत्रीनी साथे सुख जोगवतां थकां केटलाक दिवसो गाल्या. हवे अहीं पूर्वे करेलां कर्मोनां परिपाकथी महीपालने तापनी पीडा थइ, तथा अंगोपर फोडलाउं थयां; अने तेथी तेने घणीज व्याधि थवा लागी. वली ते तापने दूर करवा माटे जे जे ठंडा उपायो करवामां आवता, तेथी तो तेनुं कमल सरखुं कोमल शरीर अत्यंत दुःख पामवा लाग्युं; एवी रीते अमृत सरखां औषधोथी तेनो उपाय करवा मांड्यो, तो पण शांत वचनोथी जेम दुर्जन, तेम तेनो व्याधि विशेष दुःखदायक थयो. वली तेनां रोगमाटे जे उपाय न कर्यो, तेवो कोइ पण उपाय के, विद्या के प्रपंच आ दुनिआमां हतोज नहीं, अर्थात् सघला इलाजो कर्या. एवी रीते एक माससुधि घणां वैद्योए विविध प्रकारनां औषधोथी उपायो कर्या, तो पण तेनो रोग मट्यो नहीं. पछी तो मीष्ट वचनोथी राजानी रजा लेइने, तथा पितानी पेठे तेने अने दिलगिर थता लोकोने पण शांत करीने, सेंकडो लश्करथी तथा विद्याधरोथी विंटायो थको, पिताने मलवानी उत्कंठाथी ते महीपाल चालतो थयो. गुणसुंदरी पण वृद्धोनी अनुज्ञा लेइने, तथा मातपितानां चरणोने नमीने पोतानां जर्तारनी साथे चाली. एटलामां पूर्वेनां मत्सरी राजाउए, ते महीपालने मार्गमां रोक्यो; अने तेउ तेने कहेवा लाग्या के. अरे! रंक! अमो राजाउनां देखतां, छलविद्याथी आ कन्यारूपी रत्नने लेइने तुं क्यां जवानो छे? हमणा तने तेनुं फल मलशे. वली जे माणस अति लोजथी पोतानां परिमाणथी पण अधिक कार्य करे छे, तेने तुं जेम कुटी थयो, तेम प्रगट फल जोगववुं पडे छे. वली त्यां तुं जे जेम तेम बक्यो हतो, तेनुं तने हमणा फल मलशे. एम कहीने अत्यंत शोभायमान पहला ते राजाउए एकठा थइने, सघलां लश्करथी ते महीपालने घेरी लीधो. ते [illegible] महीपाले पण रोगनी पीडाने नहीं गणीने, [illegible] तरवार लीधी. ते वखते [illegible]

घोडेस्वारो जालांउथी लडवा लाग्या. एवी रीते बन्ने सैन्यो स्वपरनो विचार कर्या विनां दीनता रहित मांहों मांहें लडवा लाग्यां. ते वखते पोतानां स्वामिनां जक्त एवां बाणो, पण तेमनां यशथी पृथ्वीने व्याप्त थएली जोइने, जेटलामां ते यशनो स्वर्गमां विस्तार करवामाटे आकाशमां जवानो यत्न करे छे, तेटलामां त्यां पण किन्नरोथी गवाता ते यशने सांजलीने, पोतानां स्वामिनी स्तुति नहीं करता एवा वैरीउपर आवीने पडवा लाग्यां. हवे ते वखते, उछलता चपल मोजांउवाला समुद्रोथी जेम कांठो, तेम वैरीउनां समूहोथी महीपालनुं सैन्य उपद्रव पाम्युं. त्यारे महा यशस्वी रत्नप्रज, देवपाल, तथा महीपाल, अने बीजाउ पण तेउनी साथे अत्यंत क्रोधथी लडवा लाग्या. वली तेउए रवैया सरखा थइने शत्रुउनी सेना रूपी दहींने वलोवीने, जगतनां तापने हरवा माटे यशरूपी माखण उधरी कहाड्युं. ते वखते जगतमां सारजूत एवा ते महीपालनां बिंबने सहन करवाने अशक्त थया थका, ते शत्रु राजाउ पोतानां लश्करो सहित दिशा दिशाउमां नाशी गया. ते वखते यादवनां लश्करीउए जयजयनो शब्द कर्यो, तथा तेमना पर देवोनां हाथोमांथी पुष्पोनी श्रेणिउ पडी. वलीमहाबलवानो कदापि पण तृणपर गुस्सो करता नथी, एवुं जाणी नरवर्मादिक राजाउए त्यां मुखने विषे ते तृण लीधुं. वली आ पृथ्वीमां आ महीपाल सहा सुगंधिवाला (कीर्तिवंत) छे, तेथी ते राजाउए तेनी आगल आलोटीने, छलथी पण तेनां रजकणीआउथी पोतानां शरीरपर लेपन कर्युं. वली तेनां चरणोने नमता एवा ते राजाउनी पीठपर महीपाले, स्फुरायमान थती एवी जे लक्ष्मी, तेनां पद्मरूप घरसमान पोतानो हाथ मेल्यो. ते वखते नरवर्मा राजाए देवकन्या सरखी पोतानी वनमाला नामनी कन्या देवपालने आपी. एवी रीते राजाउने जीतीने, तथा देहधारी जयलक्ष्मी सरखी वनमालाने लेइने ते नगरप्रते चाल्यो. पछी तेनां पराक्रमथी आश्चर्य पामेला, ते नरवर्मादिक राजाउ, ते महीपालनी आज्ञा लेइने पोतपोताने स्थानके गया. हवे अहीं वनमां अपायने (दुःखने)करनारो वायु जेम जेम वावा लाग्यो, तेम तेम महीपालनो रोग पण अत्यंत वृद्धि पामवा लाग्यो. वली ते दुष्ट वायुनी पीडाथी अढारे जातिनां कोढ. लक्ष्मीनां घ-

र सरखा तेनां शरीरने अत्यंत कष्ट आपवा लाग्या. ते वखते वननी र-मणिक भूमि तेने नरकनी पृथ्वी सरखी लागवा मांडी, तथा कमलो-वालुं नदीनुं पाणी, तेने भयंकर लागवा मांड्युं; तेम वाजांओनो नाद य-मनां वचन सरखो लागवा मांड्यो, तथा तेनुं वास मारतुं शरीर तेनां परिवारने पण दुःखदायक लागवा मांड्युं. वली तेने भोजन तो झेरस-मान, तथा पाणी तपावेला सीसा सरखुं, अने वरास तो दुःखदायक लागवा मांड्यो; वली तेने गायन दुर्वाक्य सरखुं, तथा नाटिक सर्पनां वींटला सरखुं, अने पुष्पो यमनां बाणो सरखां लागवा मांड्यां. वली न-रकथी पण अधिक दुःख पामता एवा ते महीपालने माणसो वच्चे, ते-म एकांतमां पण चेन पडवा लाग्युं नहीं. एम करतां केटलेक दिवसे ते कुसुमोनां समूहवाला उद्यानमां पहोंच्यो, तथा त्यां तेणे मुकाम कर्यो; अने तेनां दुःखथी सैन्य पण दुःख पामवा लाग्युं. जेम जेम माणसोने पूर्वे करेलुं शुभाशुभ कर्म उदयमां आवतुं जाय छे, तेवी रीते परनां उ-पदेश विनानी तेमनी बुद्धि प्रवर्ते छे. वली कर्मोथी प्रेराएलो आ जीव, कुंभार-नां चक्रनां स्वभावनी तुलनाने धारण करतो थको, सर्व जगोए भम्या करे छे. हवे एक दहाडो पूर्णिमाने दिवसे ते महीपाल कुमार रात्रिए सु-खनी छायाथी अकाश प्रदेशमां सूतो. एटलामां त्यांथी विद्याधरो चैत्री पुनेमने दिवसे सिद्धगिरिपर आदिदेव प्रभुनां चरणकमलनी सेवा माटे जवा लाग्या. त्रणे लोकमां जेटलां तीर्थो छे, अने तेओनी यात्राथी जे फल मले. ते फल आ तीर्थनी एकज यात्रा आपे छे. तेमां पण चैत्री पुनेमने दिवसे, आ पुंडरिक गिरिनी करेली स्तुति, स्वर्ग अने मो-क्षनां सुखने हथेलीमां आपे छे. हवे ते आकाशगामी विद्याधरो, शक्तियें करीने नंदनवनमांथी लावेलां विचित्र पुष्पोथी श्री ऋषभदेव प्रभुनी सेवा करवा लाग्या. तथा नाना प्रकारनां अभिनयोथी भूषित, एवा सं-गीतने, अत्यंत प्रीतियुक्त चित्तवाला थया थका त्यां करवा लाग्या; व-ली विचित्र प्रकारनी भाषावालां, तथा वैराग्य गर्भित स्तवनोयें करीने तेओ त्यां जिनेश्वर प्रभुने आराधवा लाग्या. पछी ते विद्याधरो त्यांथी उ-ठीने पोतानां स्थानकोप्रते चालवा लाग्या. ते वखते चंद्रचूड नामनां विद्याधरने तेनी स्त्री प्रिय वचनोथी कहेवा लागी के, हे नाथ ! आ पण

विनां आ बीजा सघला विद्याधरो नक्षे जाउं? केमके, श्रीऋषनदेव प्रनु मारा चित्तमां एवा तो वसी रह्या ठे के, जेथी स्वर्ग अने मोक्षादिक सुखने पण हुं तेनी आगल तृणसमान लेखुं बुं. माटे हे स्वामी! आठ दिवससुधि आ पुंमरीकगिरिपर आपणे रहीयें, एवी कृपा करो.? के जेथी श्रीऋषनदेव प्रनुने हुं स्तवुं, तथा पूजुं. हवे ते विद्याधर पोते पण ते तीर्थप्रते अत्यंत नक्तिवालो हतो, अने वली तेणीये पण तेनी अत्यंत प्रार्थना करी, माटे ते त्यां रह्यो, केम के, इष्ट कहेलुं इष्ट वचन कोण उपेक्षी मेले? एवी रीते अत्यंत उत्कंठाथी चिरकालसुधी त्यां प्रनुने, पूजीने, अतृप्त थया ठतां पण, तेउं जवाने इछवा लाग्या. पठी तेउं बन्ने अनुपम विमानमां बेसीने मार्गे चालतां थकां, पूर्वदिशामां रहेलां सूर्योद्यानने जोवा लाग्या, एवी रीते दूर करेल ठे (शोनाथी) नंदनवन जेणे तथा अत्यंत पुष्पोवालां ते वनने जोइने, हरिणसरखां नेत्रोवाली ते स्त्री पोतानां स्वामीने कहेवा लागी के, हे नाथ! आ शत्रुंजयनी पासे घाटां वनने तमो जुउं? ते वन पुष्पोयें करीने, दिवसे पण तारासहित आकाशनां न्रमने धारण करे ठे; वली तेनां मध्य नागमां कमलोनां समूहथी शोनतो, तथा निर्मल पाणीरूपी अमृतथी नरेलो, आ मोटो कुंड ठे. वली तेनी आसपास कांठाउंपर चलायमान थता ध्वजनां कपडांउंथी वींफेला ठे, देवोने जेउंये, एवा निर्मल प्रासादोने तमो जुउं? वली हे नाथ! जो तमो कृपा करो तो, शत्रुंजय गिरिनी सीमामां रहेली आ वननी शोना मारी आंखोने क्षणवार सुख आपे. एवी रीते पोतानी स्त्रीनां मुखरूपी कमलमांथी निकलेली, तथा श्रवणने प्रीय लागे एवी, वाणी रूपी सुधाने पीने, ते विद्याधरे ते वनमां पोतानुं विमान उतार्युं; तथा पोतानी स्त्रीने ते कहेवा लाग्यो के, हे हरिणसरखी आंखोवाली! आ सूर्योद्यान नामनुं वन ठे, तथा सर्व कार्योमां उपयोग लागे, एवी दिव्य औषधिउं अहीं थाय ठे. वली रोगोनी पीडाने नाश करनारो सूर्यावर्त नामनो आ कुंड ठे, तेनां पाणीनां बिंडुथी अढारे कोढो नाश पामे ठे. एवी रीते ते कुंडनो तथा वननो प्रनाव तेणीने कहेतो थको, ते विद्याधर तेनी साथे त्यां मनोहर लतागृहमां क्रीडा करवा लाग्यो. वली स्त्रीनां चपल लोचननां ठेडाथी लालित थयो थको, ते

विद्याधर कमलोनां समूहथी भरेलां ते पाणीमां विलास करवा लाग्यो. पछी कमलनां पुष्पो लेइने, तथा पवित्र वस्त्रो पेहेरीने स्त्रीसहित तेणे जिनायतनमां रहेला प्रभुने पूज्या, तथा स्तव्या. पछी अरिहंत प्रभुनां चरणथी पवित्र थयेलुं, ते सूर्यावर्त कुंडनुं पाणी, रोगनां नाश माटे लेइने, तेओ बन्ने विमानमां बेसी त्यांथी चालवा लाग्यां; एटलामां चंद्रनी कांतिथी अत्यंत शुभ्र लागती, एवी महीपालनी सेनाने, तेओ बन्नेये विमानमां रह्यां थकां जोइ; ते वखते चारे बाजुथी अत्यंत घोडा, हाथी, रथ तथा पालाओने जोइने, विमानमां बेठेली ते खेचरी पोतानां स्वामिने कहेवा लागी के, हे नाथ! आ वनमां मनुष्योनी स्थिति केम छे? तथा अहीं ज्यां त्यां हाथी, घोडा विगेरे केम भम्या करे छे? वळी तेमां घणा माणसोथी विंटायेलो आ कोइक रोगी जणाय छे, अने तेनी जे दुर्गंध आवे छे, तेथी तेने हुं कुष्टी जाणुं छुं; वळी हे स्वामी! आपणी पासे रोगने हरनारुं उत्तम पाणी अहीं छे. तो जो आपनी रजा होय, तो हुं तेनां शरीरपर ते छांटुं. पछी पतिये रजा आपवाथी ते दयाळु स्त्रीये विमानमां रहीने तेनांपर ते पाणीनां बिंदुओ रेड्यां; ते पवित्र पाणीनां स्पर्शमात्रथीज महीपाल ते वखते अत्यंत आनंद पाम्यो; वळी ते वखते, ग्रीष्म ऋतुमां सुकाएलुं वृक्ष जेम वर्षा ऋतुमां नवपल्लव थाय छे, तेम महीपाल पण ते पाणीनां सींचावाथी थयो. पछी महीपालना शरीरने दिव्य कांतिवाळुं जोइने, ते विद्याधर, गुणसुंदरी, तथा देवपाल, लश्करीओ सहित आनंद पाम्या. हवे ते महीपालनां शरीरथी कुष्ट निकळीने, आकाशमां रह्या थका तेने कहेवा लाग्या के, हे राजेंद्र! तुं जय पाम! हवे अमोए तने घणी पीडा दीधी छे; वळी अमोए तने सात वर्षो सुधी पीड्यो छे, पण हवे तने सूर्यकुंडनुं पाणी मळ्युं, तेथी अमाराथी रही शकाय तेम नथी; एम कहीने, कोलाहल करता, तथा भयंकर काळा [illegible]. ते सर्वे लोको जोतां छतां नासता गया. पछी अत्यंत सुखदायक [illegible] गुणसुंदरीये, प्रस्थानमां देवपाले अत्यंत हर्षथी महोत्सव [illegible]. त्यां [illegible] पोताना पुत्रना मित्र [illegible] ते[illegible] आशीर्वादथी [illegible] कहेवराव्या. पछी [illegible] विमान-

ना समूह सहित तुरत त्यां आव्यो. ते वखते महीपाल पण, प्रेमाल थ-
यो थको, पोतानां निरोगी अंगोथी, जाणे एकज शरीर करतो होय न-
हीं, तेम अत्यंत तेने भेट्यो. वली आगल वचन आपवा मुजब महीपा-
ले, रत्नप्रभ अने रत्नकांतिने भेला करीने, पोतानी मित्रता त्यां सफल
करी; पछी तेओ बन्ने प्रथक शरीरवाला, पण एक आत्मावालाज होय न-
हीं जाणे, तेम, अथवा एक वैताढ्यनां राजनां जेम मालिक होय, तेम
शोभवा लाग्या. हवे एटलामां मासोपवासने अंते पारणा माटे बे
मुनिओ आकाशगामिनी विद्याथी त्यां आव्या. जाणे धर्म अने सुखनीज
मूर्तिओ होय नहीं, तेवा ते बन्ने मुनिओने जोइने, महीपाल भक्तिथी सं-
भ्रम सहित उठीने तेओने नम्यो; तथा अत्यंत भक्तिथी शुद्ध अन्न, व-
स्त्र, पाणी विगेरेथी तेओने प्रतिलाभीने, तेणे पोतानां रोगनुं सघलुं
व्रतांत पुछ्युं. त्यारे तेओए धर्मलाभ पूर्वक कोमल वाणीथी कह्युं के,
हे राजन्! अमारा ज्ञानी गुरु आ वननी अंदर छे, माटे हे उत्तम आ-
शयवाला! जो तने कंइ संदेह होय, तथा धर्म कार्यमां जो तारी मति
होय, तो अमारा गुरु पासे आवीने तुं हमणा तेमने पुछ? एवी रीते
महीपालने कहीने, तेनाथी वंदाएला ते बन्ने मुनिओए गुरुपासे आ-
वीने सघलो व्रतांत यथास्थित कही बताव्यो. पछी महीपाल, देवपाल,
रत्नप्रभ, रत्नकांति, तथा बीजा पण केटलाक लोको त्यांथी गुरुनी सेवा
करवा गया. त्यां आनंदमय आत्माने उंचे प्रकारे आत्माथीज ध्या-
वता, तथा नादबिंदुनी कला रूपी ज्योतिथी नाश करेल छे अज्ञान रू-
पी अंधकार जेणे, तथा आधाररूप पद्मने आकुंचीने, अने शक्ति-
थी तेने हृदयमां स्थापीने, ब्रह्मस्थानमां रहेला परम ज्योतिने चिंतव-
ता, तथा सर्व भावोमां समताने भजता, अने मुक्तिमां जनारा, एवा ते
गुरुने जोइने, वचनथी न कही शकाय, तेटला आनंदने तेओ पाम्या. प-
छी त्यां ते मुनीश्वरने, मन, वचन अने कायाथी, त्रण प्रदक्षीणा देइने,
ज्ञाननां भंडार सरखा तेने स्वछ आशयवाला थया थका तेओ नमता हु-
वा. पछी ते मुनीश्वर पण समतावाला ते ध्यानने छोडीने, धर्मनां व्या-
पारमां तत्पर थइने, तेओने बोध देवामाटे नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्या
के, माणसोने पुण्य उपार्जन करवामां, आर्यदेश, मनुष्यपणुं, दीर्घ आ-

युष्य, उत्तम कूल, तथा न्यायोपार्जित धन, एटलां साधनो छे. एवी रीते गुरुनां मुखरूपी चंद्रथी निकलेला देशना रूपी अमृतने पीने, पोतानां रोगसंबंधि व्रतांत महीपाले पुछ्यो. त्यारे गुरुए पण समाधिथी तेनां पूर्व भवनो व्रतांत जाणीने कह्युं के, हे महीपाल ! जे रीते तें दुष्कर्म उपार्जन कर्युं हतुं, ते सघलुं तुं सांभल ?

भरतक्षेत्रमां पुर नामनुं नगर छे, त्यां महागुणी श्रीनिवास नामे राजा हतो; ते राजा पितानी पेठे प्रजाने पालतो, तथा यमनी पेठे शत्रुउने हणतो, अने दानथी तो कामधेनु, चिंतामणि रत्न, तथा कल्पवृक्षोने पण दूर करतो. वली ते शीलादिक गुणोयें करीने युक्त हतो, तो पण तेने शिकारनो घणो शोक हतो; अने तेथी ते राजा (कलंक सहित) चंद्रनी तुलनाने धारण करतो. एक दहाडो ते राजा शिकारनो लोलुपी थयो थको, घोडापर बेसीने, तथा हाथमां धनुष्य धारीने, वनभूमिमां गयो. त्यां वेगवाला घोडायें करीने, हरिणनां टोलांने त्रास पमाडतो थको, ते राजा वरसादनी पेठे अविछिन्न रीते बाणोनो वरसाद वरसाववा लाग्यो. एवी रीते शिकारमां तल्लीन थयो थको, जे वस्तुउ दूर हती, तेने नजदीकमां, तथा जे नजदीक हती, तेने दूर करतो थको, ते पोतानां सैन्यथी छुटो पडी गयो. त्यां घाटा वनखंडमां कोइ प्राणीने रहेलां जाणीने, तेने मारवानी इछाथी, तेणे तीक्ष्ण बाणो मुक्यां; एटलामां तेणे "नमोऽर्हद्भ्यः" एवी रीतनी गदगद कंठनी वाणी सांभली; त्यारे तेनी उत्पत्ति जाणवाने ते जेटलामां दृष्टि फेंके छे, तेटलामां तेणे पोतानां बाणथी वींधाएला, तथा कायोत्सर्गमां रहेला, अने पृथ्वीपर पडता एक मुनिने जोया. एवी रीते हणाएला ते मुनिने जोइने, जाणे पोतानुं पुण्यरूपी वृक्ष छेदायुं होय नहीं तेम जाणीने ते खेद पामवा लाग्यो के अरे! आजे में आ शुं निबिड पाप उपार्जन कर्युं? खरेखर में आजे दुष्कर्मरूपी अग्नियें करीने बोधिबीजने बाली नांख्युं!! अरे! मारा जीवितव्यने पण धिक्कार छे!! केम के, एक जीवने हणवाथी पण माणसोने अत्यंत भयंकर नर्क मले छे. वली में दुष्टे मारुं व्यसन एटले सुधि वधार्युं के, जेथी मुनिनी हत्या मारे हाथे थइ. वली जेउए निरपराधी प्राणीउने दुःख देवारूप आ व्यसन मने शीखाव्युं,

तेउने पण धिक्कार छे. वली जेउए राजाउने एम कह्युं छे के, पापरूप ए-वो पण आ शिकार पापमाटे नथी, तेउनी विद्वता, तथा तेउनी तत्व-बुद्धि क्यां पामो? वली अरेरे! पापी अने उद्धत माणसो, आ घास अने पाणीथी तृप्त थएला निरपराधि जीवोने तीक्ष्ण बाणोथी हणे छे!! वली महायोगी, तथा देहधारी पुण्यनां राशिसरखा आ मुनिने में दु-ष्टे हण्यो! हवे हुं क्यां जउं? अने शुं करुं? एम कहीने, खेद पामतां थकां तेणे दुर्गति आपनार, तथा पापोनां मूल समान एवां धनुष्य अने बाणोने जांगी नांख्यां. पछी तुरत घोडापरथी उतरीने ते मुनि-नी पासे आव्यो, तथा जाणे पोतानां पापोनुं प्रायश्चित लेतो होय न-हीं जेम, तेम तेने तेणे नमस्कार कर्यो. वली श्वास लेता ते मुनिनां बन्ने पगो पोतानां हाथमां लेइने, नमेला एवा पोतानां मस्तकपर तेणे मु-कुट रूपे कर्या; तथा पोतानां कुकर्मने निंदतो थको, ते एटलो तो र-ड्यो, के तेणे पडखे रहेला हरिण तथा पक्षि आदिकोने पण रडाव्यां. पछी ते कहेवा लाग्यो के, अरेरे! शिकारनां व्यसनी, तथा दुष्ट ए-वा में बहु दुष्कर्म कर्युं!! माटे हे देव! हवे मारे शुं करवुं? ते कहो? वली हे नाथ! में मारा निर्मल कुलमां कलंक लगाड्युं, तथा महा तेज-स्वी एवा मारा पुण्यरूपी मेहेलमां में मशीनो कुचो फेरव्यो, दुराचारथी हणायेलुं छे, अंतःकरण जेनुं एवो जो कोइ पुत्र कुलमां उत्पन्न थाय, तो जाणवुं के, बापदादाउनां पुण्यरूपी वृक्षमां दावानल लाग्यो. वली क-लंकी तथा तिर्यच अने नरकमां जवा लायक एवा मने, हे जगवन्! हवे आ तमारा चरणोज शरणारूप छे. एवी रीते आंसुथी कलुषित थयेली छे आंखो जेनी, तथा पोताना आत्मानी निंदा करतो, एवो ते राजा वा-रंवार मुनिना चरणोने नमस्कार करवा लाग्यो. ते वखते ते मुनि पण अ-रिहंत प्रजुनुं स्मरण करतो थको, जाणे तेनां वाणोथीज खेंचायां होय नहीं, तेम कर्मोथी खेंचाएलां प्राणोने तजतो हवो. ते वखते ते राजा पण ते मुनिनां वधरूपी तलवारथी छेदायेला हृदयवालो थयो थको, फरीने पोकार करवा लाग्यो, तथा ते मुनिनां गुणोनी पंक्तिने याद करतो थको मूर्छा पाम्यो. एटलामां तेनां सैनिको त्यां आव्या, तथा तेने तेवी हाल-तमां जोइने, न्याययुक्त वचनोथी समजावीने, कंइक दुःखमांथी मुक्त

कर्यो. पछी त्यां राजाये मुनिनां देहनो अग्निसंस्कार कर्यो. तथा मनमां अत्यंत दुःखी थइने, ते पोताने घेर गयो. पछी ते राजाये मुनिहत्यादिक पापनी शांति माटे ते वनमां श्री शांतिनाथ प्रज्ञुनुं चौमुख देरुं कराव्युं; तथा मुनिउने, सर्व पापोने नाश करनारां शुद्ध अन्न, वस्त्र आदिकनुं ज्ञक्ति पूर्वक दान देवा लाग्यो. एवो रीते त्रिकरण शुद्धिथी महाधर्म करतां थकां पण ते राजा, मुनिहत्यादिक पापोथी मुक्त थयो नहीं; अने तेज दुःखरूपी शल्यथी पीडीत थयो थको, ते श्रीनिवास राजा, महारोगथी मृत्यु पामीने सातमी नरके गयो; त्यां बंधन, छेदन आदिक महादुःख सहन करीने, तथा घणो काल त्यां नरकमां रहीने, तिर्यंच ज्ञवमां ते आव्यो. वली त्यां पण टाढ, तडको, महारोग, ताडन, क्षुधा, तृषा आदिक अज्ञानकष्ट सहन करीने, फरीने पण ते नरकमां गयो. एवी रीते नरक अने तीर्यंचमां तेणे अवतार कर्या; पछी छ ज्ञवो सुधि मनुष्यपणामां कुष्टी थइने ते मृत्यु पाम्यो. वली हे महीपाल ! आ ज्ञवमां पण पूर्वे करेली मुनिहत्यानां फलरूप तने कुष्ट थयो; वली हांसीथी पण जो मुनिनी विराधना करवामां आवे, तोपण ते दुःखनो समूह आपे छे, त्यारे जे मत्सरज्ञावथी मुनिने पीडे, तेनी तो वातज शी करवी ? वली मुनिने कोपाववाथी एक ज्ञवमां करेलुं पुण्य जतुं रहे छे, अने मुनिनो घात करवाथी तो सातमी नरके जवुं पडे छे. माटे मुनिनी हत्यारूपी वेलडी आ लोक अने परलोकमां पण, दुःख, दुर्जाग्य, तथा दुर्गति आदिक माठां फलो आपे छे. वली त्रिकरण शुद्धिथी आराधन करायेलो मुनि सर्व प्रकारनां सुखो आपे छे, अने तेनी विराधना करवाथी नरक तथा तिर्यंच संबंधि दुःखो मले छे. वली चारित्री, तथा महा पराक्रमी एवा व्रतधारीउ तो एक बाजु रहो, पण क्रिया रहित अने निर्गुणी मुनिनी पण विराधना कोइ पण वखते करवी नहीं. माटे गमे तेवो पण चारित्रथी ज्ञूषित थएलो मुनि, गृहस्थीये पुण्यनी इछाथी गौतम स्वामीनी पेठे पूजवो. वली मुनिनुं शरीर कंइ वंदनीक नथी, पण तेनो वेष वंदनीक छे, माटे एवा वेषधारी मुनिने पण पुण्यशालीये पूजवो. वली मुनिनुं आचरण वंदनीक छे, पण वेष वंदनीक नथी, माटे मुनिनुं आचरण तपासीने मोक्षनी इछावालाये तेने पूजवो. वली क्रिया

रहित मुनिने पण पूजवाथी, लज्जाथी ते व्रतने धरनारो थाय छे, अने उत्तम क्रियावालो मुनि पण, तेनी अवज्ञा करवामां आवे, तो ते व्रतमां शिथिल थइ जाय छे. वली जे माणसो व्रतधारीने जोइने पण नमता नथी, तेउनुं दान, दया, क्षमा, तथा शक्ति सघलुं अल्प सिद्धिने करनारुं छे, माटे जैनलिंगने धरनारा मुनिउने त्रिकरण शुद्धिथी आराधवा; पण स्वार्थनो नाश करनारी एवी तेउनी निंदा तो सर्वथा प्रकारे नज करवी. तेथी हे महीपाल! तारा कुष्टोनुं तेज प्रगट कारण छे, माटे क्रोधातुर मुनिउने पण तारे कोइ दहाडो विराधवा नहीं. हवे सूर्यावर्त कुंडनां पाणीनी कथा तुं सांभल? शत्रुंजय पर्वतनी नीचे पूर्व दिशामां सूर्यवन नामे मोहोटुं वन छे. ते वनमां सूर्य वैक्रिय शरीरथी साठ हजार वर्षोसुधि, जिननी सेवा माटे रह्यो हतो, तेथी तेनुं नाम सूर्योद्यान कहेवाय छे. ते वनमां ऋषभदेव प्रभुनी दृष्टिरूपी अमृतथी भरेला पाणीथी भरेलो सूर्यावर्त नामनो कुंड छे. महा भक्तिथी जिनस्नात्रमां जोडेलुं तेनुं पाणी हत्यादि दोषोने, तथा सर्व कुष्टोने नाश करनारुं छे. हवे ते वखते मणिचूड नामनो विद्याधर पोतानी स्त्रीसहित, चैत्री पुनेमनां महोत्सवमां विमलाचलपर जिनने नमीने आ सूर्योद्यानमां आव्यो; तथा त्यां पण श्री ऋषभदेव प्रभुनी प्रतिमाने नमीने, तथा ते कुंडनुं पाणी लेइने, ते पोतानां नगर प्रते चाल्यो. ते वखते विमानमां बेठेली तेनी स्त्रीये तने तेवी रीतनो जोयो, तेथी दया लावीने, तथा पतिनी आज्ञा लेइने तेणीये तारापर ते पाणी रेड्युं; अने तेथी ते सघली व्याधिउ तारा शरीरथी दूर गइ, तथा तने ते कहेवा लागीउं के, तारे विषे हवे अमो रहेवाने समर्थ नथी; वली प्रायें करीने सर्व हत्याउ नरकादिक दुःखो देनारी छे, तेमां पण मुनिनी हत्या तो विशेषें करीने भवभ्रमणनां कारणरूप छे. वली दूषण रहितोये वचनथी पण मुनिने कोपित करवो नही; वली परनी निंदा प्रायें करीने महादुःखनां समूहने देनारी छे. वली उत्कृष्ट मुनिउयें, परनिंदा, परद्रोह, तथा परधननी चोरीने. मोटां पापो कहेलां छे. एम कहीने ते मुनि ज्यारे मौन रह्या, त्यारे महीपाल कहेवा लाग्यो के, हे भगवन्! तमो मने जंगम तीर्थ समान आजे मल्या छो; धर्मरूपी नेत्रनो प्रकाश करवाथी, तथा सर्व तीर्थोनां उपदेशथी, तमो अतुल्य तीर्थ

समानज छो; अने तेथी तमोज प्राणीउंने सेवनीक, पूजनीक, तथा ध्यान धरवालायक छो, वली बुद्धिवान पण गुरुविनां धर्मनां तत्वने जाणी शकतो नथी. वली गुरुना उपदेश विनां डाह्या माणसने पण, सुवर्णसीद्धि, कला, विद्या, धर्मतत्व, तथा धनार्जन पण सिद्ध थतां नथी. वली माता, पिता, भाइ आदिकनां अनृणी तो थइ शकीयें, पण धर्म देनारा गुरुनो अनृणी विविध उपायथी पण प्राणी थइ शकतो नथी. वली पिता, माता विगेरे सर्वे संबंधिउं तो भवे भवे मले छे, पण धर्मने देनारा सद्गुरु तो, पुण्यथी क्वचित् जगोएज मले छे. अने तेथी हे भगवन्! आ भवरूपी समुद्रमां भमता, तथा प्रमादी चित्तवाला, एवा मने अमूल्य चिंतामणि रत्न समान तमो मल्या छे; वली तमोए मने आ तीर्थ बताव्युं, तेथी हुं धन्योमां पण धन्य, अने पुण्यवंतोमां पण पुण्यवंत थयो छुं. वली सघली क्रियाउं गुरुनी साक्षीयेज सफल थाय छे, पण बीजी रीते थती नथी, केम के, जो सूर्य न होय, तो आंखोवालो पण वस्तुने जोइ शकतो नथी. एवी रीते गुरुनी प्रार्थना करवाथी गुरुये कह्युं के, मारे पण अहींज रहेवुं छे; ते सांभली आनंदसहित महीपाल त्यांथी उठ्यो; पछी वाजांउंनां नादोथी संभ्रांत करेल छे, दिशाउंनां पण भागो जेणे, तथा महापराक्रमी एवा ते सर्वे सेनासहित गुरुनी साथे चालवा लाग्या. एवी रीते अविछिन्न प्रयाणोथी सूर्यवनमां जइने तेउंये वृक्षोनी छायामां सैन्यनो पडाव नांख्यो; तथा त्यां गुरुये कहेली विधियें करीने, तेउंये कुंडमां तथा चैत्यमां उत्सवपूर्वक अरिहंत प्रभुनी पूजा करी, अने महोदय मेलव्यो. वली त्यां विद्याधरोये विद्यानां बलथी, ध्वजानां समूहोथी शोभतां रत्ननां विमानो बनाव्यां. पछी विमानोनां समूहथी आकाशतलने आछादन करता एवा तेउं, सिद्धिरूपी मेहेलनी अग्रवेदिका सरखा शत्रुंजयप्रते पहोंच्या. त्यां मंदिरोपर, यात्रा करनाराउंनां संपूर्ण पुण्यनां ढगला सरखी सुवर्णनां कलशोनी श्रेणि जोइने तेउं आनंद पाम्या. वली त्यां त्रणे भुवनोमां उत्तम तीर्थ समान एवा ते पर्वतनां अग्र भागने पामीने, तथा मोक्ष सुख देनारा श्री ऋषभदेव प्रभुने जोइने, तेउं पवित्रपणुं पाम्या. त्यां विमानमांथी उतरीने, तथा रायणनां वृक्षने प्रदक्षिणा देइने, तेउंये श्रीऋषभदेव प्रभुनां चरणोने नमस्कार कर्यो. दूषण रहित एवा तेउं, जिननां प्रा-

सादने जोइने आदरपूर्वक, प्रीतिथी संपूर्ण अंगवाला थया थका, हाथो उंचा करीने नाचवा लाग्या; वली आदिदेवनां दर्शनथी तेउ पोतानां आत्मानी स्तुति करवा लाग्या, तथा ते वखते राजाए अवचनीय पुण्य उपार्जन कर्युं; वली तेउए प्रथम उत्तम किरणोवालां रत्नोथी प्रभुने वधाव्या, तथा पुण्यनां समूहथी उछलता थका पृथ्वीपर लोटीने तेउ नमस्कार करवा लाग्या. वली त्यां तेउ शत्रुंजयी नदीमां नाहीने, वहारथी अने अंतरथी शुद्ध थया, अने त्यां तेउए यशथी उज्वल थएलां वस्त्रो पेहेर्यां. वली विद्याधरोए नंदन वनमांथी लावी आपेलां पुष्पोयें करीने, तेउए त्रणे लोकमां तिलक समान एवा प्रभुनी पूजा करी. एवी रीते गुरुनां उपदेशथी, मननां हर्षपूर्वक, तेउए ते तीर्थमां सर्व सुखोने आपनारुं धर्मकार्य कर्युं. वली तेउए त्यां अत्यंत हर्षथी, पवित्र पदो तथा अर्थोवालां स्तवनोथी जिनेश्वर प्रभुनी स्तुति करी. वली त्यां तेउए भक्तिथी शुद्ध उपकरणोयें करीने, गुरुने प्रतिलाभीने, तथा दीनादिकोने दया पूर्वक दान देइने आनंद मेलव्यो. वली जिननी पूजामां जे पुण्य थाय छे, तेथी अनुक्रमे सोगणुं, तथा हजार गणुं पुण्य जिननी प्रतिमा अने प्रासाद बनाववाथी थाय छे. वली अरिहंत प्रभुनी प्रतिमा अने मंदिर बनाववाथी प्राणी पापोथी मुक्त थइने स्वर्गने भजनारो थाय छे, तथा तीर्थनी रक्षाथी अनंतगणुं पुण्य मले छे; एवी रीतनुं गुरुनुं वचन सांभलीने, महीपाले अत्यंत भक्तिथी प्रतिमा सहित उंचुं जिनमंदिर बंधाव्युं. एवी रीते त्यां परम उत्सवथी तेउ अठाइ महोत्सव करीने, गुरुनां वचन पूर्वक विमानो सहित रेवताचल पर्वतप्रते गया. त्यां पण नेमिनाथ प्रभुनां चरणमां तत्पर रहीने, तेउए अठाइ महोत्सव कर्यो. त्यां सूर्यमल्ल राजा, प्राप्त थएल छे महोदय जेउने एवा पोतानां पुत्रोने वहु सहित आवेला जाणीने, तुरत सामो आव्यो. जंगम तीर्थसमान एवा ते पिताने जोइने, आदरवाला, तथा भक्तिवंत एवा तेउ बन्ने पृथ्वीपर लोटीने तेने नमस्कार करवा लाग्या; त्यारे राजाए पण न्याय अने धर्मथी जेम बन्ने पक्षोने तेम, पोताना बन्ने हाथोथी पृथ्वीपर रहेला ते गुणी पुत्रोने उंचक्या. पछी तेउ अरसपरस अत्यंत प्रीतिथी भेट्या; अने ते वखते तेउने जे हर्ष थयो, ते वचनथी पण कही

न शकाय तेटलो हतो. पछी राजा हाथीपर चडीने, तथा पुत्रोने पण हाथीपर चडावीने, मागण लोकोने उंचे प्रकारे धन देतो थको नगरमां दाखल थयो. त्यां उंचा मांचाउ, तथा धजाउनां समूहोने, अने मनोहर तोरणोने, तथा नाटकने जोता थका तेउ राजमंदिर प्रते आव्या. त्यां राजाए ते बन्ने विद्याधरोने सुवर्ण, हाथी, घोडा विगेरेथी सत्कार करीने, परिवार सहित तेउने पोताने स्थानके पहोंचाड्या; तथा तेज दिवसे राजाए महीपालने राज्य आप्युं. गुणोथी मनोहर एवा ते महीपाले राज्यने यत्नपूर्वक पालातां थकां, अखंड यश रूपी जंडारोने जर्या. ते महीपाल राज्य करते बते, अन्याय, रिपुनो जय, डुकाल के रोगोनो संजव पण पृथ्वीपर रह्यो नहीं; वली ते वखते वादलांउ इछित वृष्टि करतां, वायु तापनो नाश करतो, तथा वृक्षो संपूर्ण फलो आपतां. वली ते महीपाल स्त्री सहित आकाशगामिनी विद्याथी कृत्रिम तथा शाश्वतां मंदिरोमां जिनेश्वरोने पूजतो हतो. वली तेणे शत्रुंजय, तथा गिरनार आदिक पर्वतोपर, शेहेरोमां, गामोमां, तथा बगीचाउमां जिननां मंदिरो बनाव्यां. वली ते चोरासी गढ, तथा चोरासी पद, अने एक लाख बत्रीस हजार गामोने जोगवतो हतो. वली ते सात लाख घोडा, सातसो हाथी, तथा सातसो रथोनो स्वामी हतो. एवी रीते चारसो वर्ष राज्य पालीने, अंते पोतानां पुत्र श्रीपालने राज्य सोंपीने, महीपाल संसारथी विरक्त थयो. वली तेणे देवपालनां पुत्रने, जलरूपी किल्लावालो, तथा धान्यनां जंडाररूप सिंधदेश आप्यो. एवी रीते ते महीपाल राजा विवेक सहित पुण्यनो समूह बांधीने, स्त्री सहित श्री शत्रुंजय पर्वतप्रते गयो; तथा त्यां श्रीकीर्ति नामनां मुनिवर पासेथी तेणे दीक्षा लीधी; अने आयुनो क्षय होते बते निर्मल ज्ञानथी जासित थयो थको, ते मोक्ष पाम्यो. तेना वंशमां हे इंद्र! यश अने पुण्यनां संचयवालो, आ रिपुमल्ल राजा थयो बे; वली ते रैवताचलनी पासे रहे बे, माटे ते धन्य बे, अने ते अद्भुत शोजावालो थयो थको त्रण जवे मोक्षे जशे. वली हे इंद्र! स्मरण करवाथीज सर्व इछित फलने देनारुं, आ शास्वतुं तथा आदि तीर्थ बे, अने तेनो महिमा कहेवाने तत्वने जाणनाराउ पण समर्थ नथी. वली हे इंद्र! अहींथी पूर्व दिशामां, विकस्वर थएलां

नाना प्रकारनां वृक्षोवालुं, तथा सिद्ध अने अरिहंत प्रभुनी प्रतिमाने नमस्कार करता, तथा तेनुं स्मरण करता एवा माणसोनां पापोने नाश करनारुं, आ सूर्योद्यान छे, तथा अत्यंत सुगंधिनां समूहथी शोभतुं छे पाणी जेनुं, तथा प्रभावें करीने मनोहर, अने सघला कोढोने नाश करनारो आ सूर्यावर्त कुंड छे.

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिए रचेला, महातीर्थ श्री शत्रुंजयना महात्म्यमां महीपालना चरित्रना वर्णननो बीजो सर्ग संपूर्ण थयो. श्रीरस्तु.

तृतीयः सर्गः प्रारभ्यते.

राज्यने अवसरे दीठेलां छे कमलो जेउए एवा युगलीआंउए प्रभुना चरणोने कमल सरखा जोइने जलरहित कमलो पृथ्वीपर होय छे, एवुं जाणीने, आश्चर्य थइ, जेउए पाणीथी सींच्या नहीं, एवा प्रथम प्रभुना चरणो सर्वथा प्रकारे भवरूपी महा तापने छेदवा माटे थाउ ?

हवे श्री वीर प्रभु इंद्रने कहे छे के, हे इंद्र! एवी रीतें में तीर्थनो आ संक्षेपथी महिमा कह्यो; हवे आ तीर्थनां प्रभावनी विचित्रताने तुं सांभल ? अनंतो काल थशे, तो पण आ तीर्थ नाश पामशे नहीं; हवे आ अवसर्पिणी कालमां तेना संबंधमां जे थयुं छे, तेनी कथा तुं सांभल ? आ जंबूद्वीपनां दक्षिण भरतार्धमां गंगा अने सिंधुना मध्य भागमां युगलीआउ रहेता हता. तेउमां विमल नामनां हाथीपर चडवाथी विमलवाहन नामनो, युग्मी धर्मवालो, अने सुवर्ण सरखी कांतिवालो, पेहेलो कुलकर थयो. तेनो पुत्र चक्षुष्मान् तेनो पुत्र यशस्वी, तेनो पुत्र अभिचंद्र, तथा तेनो पुत्र प्रसेनजित थयो; तेनो पुत्र मरुदेव, तथा तेनो पुत्र न्यायें करीने उज्ज्वल नाभि नामे थयो, तेनी स्त्री मरुदेवी नामे हती, अने ते हमेशां आर्जव गुणोथी उज्ज्वल हती. हवे आ अवसर्पिणीनां त्रीजा आराने छेडे, श्री ऋषभदेव प्रभुनो जीव सर्वार्थसिद्धथी चवीने ते मरुदेवीनी कुक्षिमां आव्यो. असाड वद चोथने दवसे, चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्रमां आवते छते तेणीए रात्रिने छेडे नीचे प्रमाणे चौद स्वप्नो जोयां. वृषभ. हाथी, सिंह, लक्ष्मी, पुष्पमाला. कलश. ध्वजा. अग्नि.

रत्ननो राशि, पद्म सरोवर, विमान, क्षीरसमुद्र, चंद्र अने सूर्य, एवी रीते तेणीये चौद स्वप्नो जोयां. एवी रीते प्रभुनो ज्यारे गर्भमां अवतार थयो त्यारे त्रणे जगतमां उद्योत थयो, तथा नारकीउने पण उंचे प्रकारे सुख थयुं. पछी मरुदेवा माताए जागृत थइने, नाभिराजा पासे आवीने, तेमने मिष्ट वचनोथी ते व्रतांत कह्यो. सरल स्वभावी नाभिराजाये पण विचारिने कह्युं के, हे प्रिया! आ स्वप्ननां प्रभावे करीने, तने अद्भूत पुत्र थशे. एटलामां आसन कंपवाथी इंद्रे त्यां आवीने, तथा मरुदेवा माताने नमस्कार करीने कह्युं के तमोने पुत्रनी उत्पत्ति थशे. पछी मनोहर मुखवाली ते मरुदेवा माता, पृथ्वी जेम उज्ज्वल रत्नने, तेम मनोहर गर्भने धारण करवा लागी. जगतनां आधार, जगतनां सार, तथा जगतनां गुरु एवा प्रभुने धारण करती मरुदेवा माता, जाणे प्राणीउनी दयाथीज होय नहीं, तेम धीरेधीरे चालवा लागी. ते वखते धनद, इंद्रनी आज्ञाथी, जृंभक देवोये तैयार करेली इच्छित वस्तुउथी तेणीनां हर्षने वधारवा लाग्यो. हवे गर्भकाल संपूर्ण थये छते चैत्र वदी आठमने दिवसे, तथा चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्रमां आवते छते, अने बीजा ग्रहो पण उंचा होते छते, निशीथ समये मरुदेवा माताये व्याधि रहित युगलरत्नने जन्म आप्यो. ते वखते वायु सुखेथी वावा लाग्या, तथा नारकीनां जीवो पण आनंदित थया, अने त्रणे जगतमां प्रकाश थयो, तथा देवडुंडुभि वागवा लागी. ते वखते तपावेलां सुवर्णसरखी कांतिवाला, वृषभनां लक्षणवाला, सर्व सुलक्षणें करी संपूर्ण, तथा जाणे देवसंबंधि शरीर सहितज आव्या होय नहीं, तेम प्रभु शोभवा लाग्या. ते वखते आसनो चलायमान थवाथी प्रभुनो जन्म थयेलो जाणीने अत्यंत हर्षयुक्त थइने छपन्न दिक्कुमारीउ त्यां आवी; तथा प्रभुने अने प्रभुनी माताने नमीने, अने भक्तिथी तेनी स्तुति करीने, पोताने धन्य मानती थकी तेउ नृत्य करवा लागी. वली तेउये दर्पण, कलश, पंखा, चामर, रक्षाबंधन आदिक पोतानुं सर्व कार्य संपूर्ण कर्युं. वली आसनो कंपवाथी, अवधिज्ञाने करीने प्रभुनो जन्म जाणीने, सघला देवो विमानोथी आकाशने शोभावता थका त्यां आव्या. ते वखते सुधर्मेंद्र पण भक्तिथी पोतानुं वैक्रियरूप करीने, सूतिकागृहमां जइ, प्रभुने अने मरुदेवा माताने नम-

स्कार कर्यो; तथा माताने अवस्वापिनी निद्रा देइने, तथा तेमनी आज्ञा लेइने, अने प्रभुनुं प्रतिबिंब त्यां रहेवा देइने तेणे प्रभुने पोताना हाथथी लीधा. त्यां इंद्रे अंतरमां भक्तिभाव लावीने पोतानां पांच रुपो कर्यां; एक रूपथी प्रभुने लीधा, एक रूपथी छत्र धर्युं, एक रूपथी वज्र लीधुं, तथा बे रूपथी चामर लीधां. पछी ते सघला देवो, विमानोथी आकाशने चितरता, तथा रत्नोथी चंद्रनी कांतिने उल्लेखता, अने शब्दोथी जगतने पण फोडता थका मेरुपर्वत तरफ चालवा लाग्या. त्यां पांडुक नामनां उद्यानमां अर्धचंद्र सरखा आकारवाली अतिपांडुकंबला नामनी शिलाप्रते इंद्र पहोंच्यो. त्यां इंद्रोए आभियोगिक देवोनी मारफते रूपानां अने रत्नां, सोनानां अने रत्नां, सोनानां, रूपानां, अने माटीनां कलशो बनाव्या. पछी अद्भुत कांतिवालो ते इंद्र दिव्य सिंहासनपर पूर्व सन्मुख प्रभुने खोलामां लेइने बेठो. पछी समुद्र, नदी, कुंड, तलाव तथा द्रहोमांथी पाणी लावीने इंद्रोये प्रभुनो स्नात्रमहोत्सव कर्यो; पछी तेउये मनोहर बरास, लेपन, पुष्प, फल, अक्षत, वस्त्र, आभरण विगेरेथी प्रभुनी पूजा करी. पछी निर्मल भाववाला ते इंद्रोये हर्षथी प्रभुनी आरती उतारीने, नीचे प्रमाणे स्तुति करवा मांडी. हे स्वामी! हे युगादीश! हे जगतनां गुरु! हे अर्हन्! हे ध्यान धरवा लायक! हे निरंजन! तमो जय पामो? वली अढार कोडा कोडी सागरोपम सुधि नाश पामेलो छे धर्म जेउनो, एवा प्राणीउनो उद्धार करनारा, तथा अज्ञानरूपी अंधकारनां समूहनो नाश करवामां सूर्य समान एवा हे प्रभु! तमो जयवंता वर्तो? वली हे कल्याणरूप व्यवहारनां करनारा! तथा सर्व सुखनां स्थानक सरखा तमो जयवंता वर्तो? वली हे स्वामी! आजे जे तमारुं मने दर्शन थयुं, तेथी हुं सघला पुण्यशालीउमां विशेष पुण्यशाली छुं. वली वृक्ष, पत्थर, पर्वत तथा पृथ्वी आदिकने धरी राखवाने तो कोइक पण समर्थ थइ शके, पण हे नाथ! आ भवरूपी समुद्रमां पडता प्राणीउनां समूहने तो तमोज उद्धार करनारा छो. वली राग आदिक शत्रुथी पीडाएला लोकोने तमो निर्भय करनारा छे, वली मुक्तिरूपी स्त्री मेलववामां दूत समान एवा हे धर्मनां राजा! तमो जयवंता वर्तो? वली बाह्य अने अंतरंग शत्रुउनां समूहोथी पीडाता प्राणीउनो जीवद

थानां उपदेशथी तमोज उद्धार करशो. वली हे ईश! पिंडस्थ, पदस्थ तथा रूपस्थ ध्यानथी, योगीउं तमोने ध्यावे छे, अने तेउनां आठ कर्मोनो नाश करीने, तमो तेमने पोताने स्थानके पहोंचाडशो. वली हे जगवन्! आपनां प्रसादथी ज्यांसुधिमां मने मोक्षसुख मले, त्यांसुधि हमेशां मने आपनां चरणनुं शरणुं थाउं? एवी रीते प्रजुनी स्तुति करीने कृतार्थ थएला ते इंद्रे उत्सवपूर्वक प्रजुने लावीने, फरीने तेमनी माता पासे मुक्या. वली त्यां उसीके बे कुंडल, दीव्य वस्त्रो, हार अने मुकुट मुकीने तेणे मातानी अवस्वापिनी निद्रा पाछी खेंची लीधी. वली त्यां इंद्र अप्सराउने धाव तरीके मुकीने, तथा पोते नंदीश्वर द्दीपमां अठाइ महोत्सव करीने देवलोकमां गयो. पछी प्रजाते पुत्रनो ते वृतांत जाणीने नाजि राजाये पण पोतानी ऋद्धिने अनुसारे महोत्सव कर्यो. प्रजुना साथलमां ऋषजनुं चिन्ह हतुं, तथा स्वप्नमां पण पेहेलां माताये ऋषज जोयो हतो, तेथी मातपिताये तेमनुं "ऋषज" नाम पाड्युं. इंद्रे प्रजुनां अंगुठामां मोतीनां सरखुं उज्वल अमृत मुक्युं हतुं, तेथी ते कारणने अनुसरीने प्रजुनां दांतो पण मोती सरखा उज्वल थया. वली इंद्रनील मणिनां बनावेला घुघरा, चरणरूपी कमलोमां लीन थयेला अने गुंजारव करता जमरानी पेठे शोजता हता. बाल्यपणामां प्रजु पांच धावरूप अप्सराउथी सेवाता हता, ते जाणे पांच सुमतिउरूपी धावमाताउथी वृद्धि पमाता संयमधारीज होय नहीं तेम शोजता हता. वली त्यां चार निकायनां देवो इंद्रनी आज्ञाथी वयथी प्रजु जेवडा थइने, (पण गुणोथी प्रजु जेवा नहीं) प्रजुनी साथे क्रीडा करता हता. वली कौतुकथी प्रजु जे जे प्रकारे क्रीडा करवानी इछा करता, ते ते प्रकार देवो प्रजुनी सन्मुख रजु करता. एवी रीते एक वर्ष गया बाद प्रजु ज्यारे पोताना पितानां खोलामां बेठा हता, त्यारे सौधर्मेंद्र तेमनां वंश स्थापनमाटे सेलडीनो सांठो लेइने आव्यो. जाणेलछे इंद्रनी इछा जेणे एवा प्रजुए ते सांठो ते वखते लीधो, अने तेथी प्रजुनां वंशनुं " ईक्ष्वाकु " नाम पाडीने इंद्र गयो. हवे अंगुष्टपाननी अवस्थाने ओलंगी जनारी वयने पामीने प्रजु उत्तरकुरुक्षेत्रमां थतां दिव्य फलोथी संतोष पामवा लाग्या. एम करतां थकां प्रजु अनुक्रमे वृद्धि पामता थका कल्पवृक्षनी पण स्पर्धा

करवा लाग्या, तथा सौभाग्य अने रूपरूपी राजाने रहेवानां भुवन सरखा यौवनने पाम्या, अने ते वखते तपावेल सुवर्ण सरखी कांतिवाला, तथा जन्मनां चार अतिशयोथी उज्वल, अने पांचसो धनुष्यना माननी कायावाला उत्तम लक्षणो सहित शोभवा लाग्या. पछी एक दहाडो इंद्रे प्रभुने कह्युं के, हे करुणानां भंडार! जो के तमारे आ जगतनो व्यवहार प्रकाशवो छे. तेम तमो संगरहित, तथा भवथी उद्विग्न थया छो, अने मोक्षसुखमां रक्त थया छो, तो पण मने तमो आ वखते लग्ननो महोत्सव देखाडो? एवी रीतनां इंद्रनां आग्रहथी प्रभुये ते वात अंगीकार करी. एवी रीते ज्यारथी प्रभुये आ लग्ननो व्यवहार देखाड्यो छे, त्यारथी आजसुधी पण तेज व्यवहार प्रवर्ते छे. एवी रीते छ लाख पूर्व गया बाद प्रभुने सुमंगलाथी भरत अने ब्राह्मीनुं युगल थयुं, वली पछीथी अनुक्रमे तुल्यरूपवालां ते सुमंगलाथी प्रभुने उगणपचास जोडलां थयां, तथा सुनंदाथी प्रभुने सुंदर आकृतिवाला, तथा जगत्नो उद्धार करवामां समर्थ, बाहुबलि अने सुंदरी नामनां अपत्यो थयां. हवे प्रभुनां अतिशय दानथी जाणे लज्जायुक्त थयां होय नहीं जेम, तेम कल्पवृक्षो अनुक्रमे निष्फल थयां थकां अलक्ष्य थयां, त्यारे ते युगलीआंउ मांहोंमांहें कलह करवा लाग्या, तथा एक बीजाउ प्रभुपासे तेनी फर्याद करवा लाग्या, त्यारे प्रभुये तेमने कह्युं के, लोकोपर राजा अमल करे छे, अने ते राजा तो माणसोथी जलें करीने अभिषेक करायेलो होवो जोइयें, माटे मारो अभिषेक करवामाटे तमे यत्न करो? एवी रीतनुं प्रभुनुं वचन सांभलीने ते युगलीआंउ पाणी लेवामाटे तलावे गया, एटलामां आसन कंपवाथी ते अवसर इंद्रोये जाण्यो, अने तेथी तुरत त्यां आवीने, तेउये मोटो मंडप रच्यो, तथा तेमां मणिनी पीठिकापर सिंहासन स्थाप्युं, ते पर प्रभुने बेसाडीने, जन्मस्नात्रनी पेठे हर्षथी विधिपूर्वक तेउये प्रभुनो राज्याभिषेक कर्यो. वली तेउये प्रभुने योग्य स्थानके दरेक अंगोपर आभूषण विगेरे पहेराव्यां, तथा देवोये चंद्रनी कांति सरखां छत्र चामरो पण प्रभुपर धर्यां, तथा सघला इंद्रो, प्रधान, मंडलिलिकादि सर्व व्यापारने धरता थका एकठा थइने, प्रभुनी पासे बेठा. एटलामां ते युगलीयांउ कमलनां पात्रोपां पाणी लेइने तुरत प्रभुपासे

आव्या, त्यां तेउंये प्रभुने ऐश्वर्यथी भूषित थयेला जोया, ते वखते देहथी उत्पन्न थती कांतियें करीने नाश करेल छे, देवोनी पण शोभा जेणे, तथा जंगम प्रतापनी पेठे चर्मदृष्टिथी न जोइ शकाय एवा प्रभु शोभता हता. आभूषण, लेप, वस्त्र अने पुष्पमालाउंथी भूषित थयेला, ते प्रभुने जोइने, ततक्षण उत्पन्न थयेला विवेकथी तेउ विचारवा लाग्या के, जो आपणे प्रभुनां मस्तकपर अभिषेक करीशुं, तो प्रभुनां अंगपरनुं लेपन विगेरे नाश पामशे. एम विचारि तेउंये ते पाणीथी प्रभुना चरणपर अभिषेक कर्यो, अने देवो ते आश्चर्यसहित जोवा लाग्या. पछी सुधर्मेंद्रे, तेउने, प्रभुनां राज्यरूपी मेहेलनां दृढ स्तंभ सरखा अधिकारीउ बनाव्या, तथा अहीं युगलीआंउने स्वयमेव विनय थयो, तेथी इंद्रे त्यां "विनीता" नामनी नगरी वसाववानो धनदने हुकम कर्यो. एवी रीतें प्रभुनां राज्याभिषेक वखते इंद्रना हुकमथी धनदे रत्न अने सुवर्णना समूहोथी नवी नगरी वसावी. ते नगरी बार योजन लांबी नव योजन पोहोली, आठ दरवाजावाली, मोटा किल्लावाली, तथा तोरणोथी मनोहर लागती हती. वली ते नगरीने फरतो बारसें धनुष्य उंचो, आठसें धनुष्यनां पायावालो, तथा एकसो धनुष्य पोहोलो तेणे खाइसहित गढ बनाव्यो. ते सुवर्णनां गढपर रहेली मणिउनां कोंगरांनी श्रेणि, मेरुपर रहेली ताराउनी पंक्ति सरखी शोभती हती. वली ते नगरीमां चोखुणा, त्रिखुणा, गोल, स्वस्तिकनां आकारवाला, सर्वतोभद्र (चारे बाजुउथी सरखा) एक भोंवाला, बे भोंवाला, त्रण भोंवाला, तथा छेक सात भोंवालासुधि राजाना रत्न अने सुवर्णनां क्रोडो मेहेलो हता. वली त्यां इशान दिशामां चोखुणो, तथा सात भूमिवालो, मेहेल, तेणे नाभिराजामाटे बनाव्यो. वली पूर्वदिशामां सातभूमिवालो, सर्व बाजुथी सरखो अने गोल, मेहेल तेणे भरतने माटे बनाव्यो. वली अग्नि खुणामां तेणे बाहुबलिमाटे पण भरतना जेवोज मेहेल बनाव्यो, अने बीजा कुमारोनां मेहेलो तेणे ते बन्नेनी वच्चे बनाव्या, अने तेउनी वच्चे एकवीस भूमिवालो, तथा त्रैलोक्यविभ्रम नामनो मेहेल, तेणे श्री रूषभदेव प्रभु माटे रत्नोनी श्रेणिउंथी बनाव्यो, ते मेहेल सर्व बाजुयेथी सोनानां कलशोथी वींटायेलो, अने चलकती धजाउनां मीशथी जाणे

नाचतोज होय नहीं, तेम शोभतो हतो. वली ते मेहेल एक हजार ने आठ मणिनी जालीउथी, ते जाणे तेटलां मुखोथी प्रभुनो यश बोलतो होय नहीं, तेम शोभतो हतो. वली ते नगरीमां कल्पवृक्षोथी विंटायेली, किल्लावाली, अने पताकाउनी श्रेणिने धारण करनारी, हाथी अने घोडानी शालाउ हती. वली त्यां प्रभुनी कृपाथी मनोहर रत्नमय सुधर्मा सभा सरखी, सर्वप्रभा नामनी सभा थइ. वली त्यां पंच वर्णवाली कांतिथी आकाशने शोभावनारी मणिउनां तोरणोनी श्रेणि चारे दिशाउमां शोभती हती. वली त्यां नगरीनी वच्चे कुबेरे, एक हजार ने आठ मणिनां बिंबोथी शोभतुं चार गाउ उंचुं, मणि रत्न अने सुवर्णमय, नाना प्रकारनी भूमि अने झरुखावालुं श्रीऋषभदेव प्रभुनुं मंदिर बनाव्युं. वली त्यां तेणे सामंत, मंडलिक विगेरेनां नंदावर्तादिक मनोहर मेहेलो बनाव्या. वली त्यां तेणे, ध्वजानां अग्र भागथी खेदित करेल छे, सूर्यनां घोडाउ जेणे, एवां उंचां एक हजारने आठ जिनेश्वर प्रभुनां मंदिरो बनाव्यां; ते मंदिरो चोवटाउमां बांधेलां हतां, तेथी तेपरनां सुवर्ण कलशो अत्यंत शोभता हता. तेणे कौबेरी दिशामां मेरुसरखा उंचा, तथा सुवर्ण अने रत्नमय, अने धजाउवाला वेपारीउनां मेहेलो बनाव्या. दक्षिण दिशामां विविध प्रकारनां क्षत्रिउनां मेहेलो थया, अने जाणे तेमां रहेनाराउनां तेजोज होय नहीं, तेम त्यां शस्त्रशालाउ थइ. तेवीज रीते चारे दिशाउमां देवविमान सरखी उत्तम शोभावाला, नगरनां लोकोनां क्रोडो गमे मेहेलो त्यां शोभवा लाग्या. वली त्यां किल्लानी बहार सामान्य कारिगरोनां चारे दिशाउमां, सर्व धनथी भरपूर क्रोडो घरो थयां. वली दक्षिण अने पश्चिम दिशामां एक भोंयथी मांडीने त्रण भूमिसुधि उंचां कारु लोकोनां घणां घरो थयां. एवी रीते एक रात्रि दिवसमां धनदे ते नगरी बनावी, तथा तेमां सुवर्ण, रत्न, धान्य, वस्त्र अने आभूषणो तेणे बनाव्यां. वली तेज रात्रिदिवसमां तेणे तलावो, वावो, कुवा, देवालयो, तथा बीजुं सघलुं बनाव्युं. वली त्यां तेणे चारे दिशाउमां सिद्धार्थ, श्रीनिवास, पुष्पाकर तथा नंदन अने बीजां पण अनेक वनो बनाव्यां. ते दरेक वन प्रते जिनेश्वर प्रभुनां सुवर्णमय चैत्यो शोभतां हतां, तेउ वृक्षोथी पण, पवनें करीने लावेलां पुष्पोनी पंक्तिथी पूजातां हतां. ते नगरीनी पूर्व दिशाए अष्टापद

नामनो, दक्षिणमां घणोज उंचो महाशैल नामनो, पश्चिममां सूरशैल नामनो, अने उत्तर दिशामां उदयाचल नामनो पर्वत हतो. एवी रीते त्यां कल्पवृक्षोनी श्रेणिउथी शोजता, मणि अने रत्नोनी खाणोवाला, तथा जिनमंदिरोथी पवित्र पर्वतो हता. एवी रीते इंद्रनी आज्ञाथी कुबेरे रत्नमय, तथा जेनुं बीजुं नाम अयोध्या छे, एवी इंद्रनी नगरी सरखी विनीता नगरी बनावी; ते नगरीनां लोको देव, गुरु तथा धर्ममां आदरवाला, स्थिरता आदिक गुणोवाला, तथा सत्य, पवित्रता अने दयावाला, तेमज कलानां समूहोमां कुशल, सत्संगमां रक्त, निर्मल शांत जाववाला, तथा महा उदयवाला हता. ते नगरीमां सुर अने असुरोथी नमस्कार करायेला अने जगतनो व्यवहार करनारा, एवा ऋषजदेव प्रजु जगतने रंजन करता थका राज्य करता हता. वली त्यां अयोध्यानी आसपास चारे बाजुए नगरो हतां, अने तेउ प्रजुए बनावेली शिल्पकलाथी तेमनाज वचनथी बनावेलां हतां. प्रजुए वीस लाख पूर्वो कुमारपणामां गाल्यां, अने पछी त्रण जगतनो उद्धार करवाने तेमणे राज्यस्थिति बांधी. तेमणे राज्यमां सात अंगो बांध्यां, वैरीनो नाश करवामां छ गुणोनी रचना करी, स्थिति माटे पांच करणो कर्यां, लश्करनां चार अंगो कर्यां, फल ग्रहण करवामां त्रण शक्ति करी, बे न्याय कर्या, अने एक छत्र कर्युं. आ प्रजुनी पेहेलां वरसाद, अग्नि, विद्या, कला के कोइ पण व्यवहार नहोतो. वली ते प्रजुनी आज्ञाथी पृथ्वीपर वरसाद वृष्टि करवा लाग्यो, पृथ्वी बीजादिकने धारण करवा लागी, तथा अग्नि तेने पकाववा लाग्यो. वली ते प्रजुए खेतीकारो, चाकरो, कुंजारो, वेपारी, उपरी, क्षत्रीउ, सुतार, कारीगरो, सोनीउ, चितारा‌उ, तथा मणीयार विगेरे बनाव्यां. वली तेमणे मोटा पुत्र जरतने बहोतेर कलाउ शिखवी, तथा जरते बीजा जाइउने शिखावी; वली प्रजुए बाहुबलिने हाथी, घोडा, स्त्री तथा पुरुषनां लक्षणो शिखव्यां, तथा सुंदरीने गणितशास्त्र शिखव्युं; वली तेमणे जमणा हाथथी, ब्राह्मीने ज्योतिरूप तथा जगतने हितकारी अढार लीपीउ शिखावी; एवी रीते तेमणे जगतनी स्थिति बनावीने, सघला लोकोने जुदा जुदा कार्योमां जोड्या. पछी देवोथी स्तुति करायेला ते प्रजु, कोइ वखते अद्भूत बगीचामां, तो कोइ वखते समुद्रने कांठे, तो कोइ वखते क्रि-

डानां पर्वतोमां, तो कोइ वखते चित्रशालामां, तो कोइ वखते स्त्रीउंनी रासलीला जोवामां, तो कोइ कोइ वखते किन्नरीउंनां मनोहर गीतो सांजलवामां, तो कोइ वखते इंद्रे हुकम करेली देवांगनाये करेलां नाटकमां तत्पर थइने पोतानां कर्मोनी निर्जरा करवा लाग्या. एवी रीते पूर्व द्वीपमां, पूर्व क्षेत्रमां, पूर्व दिशामां अने पूर्वनी नगरीमां त्रेसठ लाख पूर्वो सुधि प्रजुए राज्य कर्युं. एक दहाडो प्रजु लज्जासहित होय नहीं जेम तेम आरामक्रीडा करता हता, ते वखते पोतानां कार्यमां तत्पर एवा लोकांतिक देवोये आवीने नमस्कार करी जय जय शब्द करीने प्रजुने कह्युं के, हे जगवन्! मुक्तिनो मार्ग देखाडो? एम कहीने ते देवो गया बाद प्रजुये क्रीडा तजीने, पूर्वनां जिनोनी स्थितिने स्मरण करतां थकां, विरक्त थइने, मोटा पुत्रने न्याय युक्त तथा अमृत सरखां वचनोथी शांत करीने, राज्यपर बेसाड्यो; तथा बाहुबलि प्रमुख बीजा पुत्रोने पण यथोचित पोतपोतानां नामनां देशो वेहेंची आप्या. एवी रीते राज्यनो जार तजीने प्रजु जगतने करज रहित करनारुं वर्षिदान देवा लाग्या. वली इंद्रनी आज्ञाथी धनदे, चोवटा आदिकमां रहेलुं नधणीआतुं धन प्रजुने पुर्युं. एवी रीते प्रजु हमेशां सजामां आवीने, याचकोने सुवर्ण, रत्न तथा धनादिक तेउंनी इछा प्रमाणे आपवा लाग्या; अने तेम करीने दिनोदयथी मांडीने जोजन वखत सुधि प्रजु एक करोडने आठ लाख सोनैयानुं दान देता हता. एवी रीते प्रजुए एक वर्षमां त्रणसो अठ्यासि क्रोड ने एंसी लाख सोनैयानुं दान आप्युं; त्यारथी मांडीने सर्व प्राणीउंने हितकारी दानधर्म चाल्यो; केम के, जेम अरिहंत प्रजु प्रवर्ते छे, तेमज लोको पण प्रवर्ते छे. हवे चैत्रवदी आठमने दिवसे, चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्रप्रते आवते छते, पाछले पहोरे, देवोथी पूजाएला प्रजुये, कछ, महाकछादिक चार हजार राजाउंनी साथे शकटोद्यानमां दीक्षा लीधी. ते वखते संज्ञी प्राणीउंनां मननां पर्यायने सूचवनारुं, प्रजुने चोथुं मनःपर्यव ज्ञान थयुं. जे प्रजु पूर्वे राग, द्वेष, मद, अजिमान आदिक शत्रुउंथी क्लिष्ट थएला हता, तथा तेउंनो नाश करवा माटे ते पृथ्वीतल पर उपाय सहित ज्रमण करता हता, एवा प्रजु नाशिकाना अग्र जागपर बन्ने आंखो राखीने, तथा सघली इंद्रिउंने वश करीने, जाणे मनमां कंइक विचार कर-

ता होय नहीं, तेम ते वखते देखावा लाग्या. पछी सर्व प्राणीउंनी द-याथी ईर्यासमिति पूर्वक, पोतानां शरीरमां पण निरीह थया थका प्रभु पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या.

हवे ज्यां वैरीउं पण उपद्रव नथी करता, एवी अयोध्या नगरीमां पु-ण्यमां रक्त भरत राजा पोतानां पितानुं राज्य चलावता हता. ते भरत राजा सूर्यनी पेठे, तेजनां समूह सरखा, हमेशां उदयमां स्थिर, वैरीरुपी अंधकारने हरनारा, तथा कलावानोने (चंद्रने) धननां (तेजनां) दे-नारा हता; वली ते समुद्रनी पेठे गंभीर, सिंहनी पेठे शूरा, चंद्रनी पेठे कलावान, वरसादनी पेठे जगतनां जीवन तुल्य, कल्पवृक्षनी पेठे दानेश्वरी, कलहंसनी पेठे विवेकी, चैत्यनी पेठे उंचा, तथा कोयलनी पेठे मधुर स्वरवाला हता, वली पवननां मोटां मोजांउंथी जेम मेरु, तेम ते शत्रुउंथी अचल, तथा प्रभातनी पेठे मित्रनां (सूर्यनां) उदयमां तत्पर, अने धनने वधारनारा हता. वली ते शेषनागनी पेठे उत्तम भोगोथी (फणाउंथी) लालित, पृथ्वीनां भारने धरनारा, नंदनवननी पेठे हमेशां पुष्पोनी श्रेणिउं सहित, हारनी पेठे गुणो सहित, (दोरी-सहित) तथा मोतीनी पेठे उत्तम व्रतने (गोलाकारने) धरनारा, अने पृथ्वीमंडलने शोभावनारा हता. जेनो प्रतापरुपी सूर्य जगतने दोषर-हित (रात्रिरहित) करतो थको, लक्ष्मीना क्रीडारुप कलाधरने (चंद्रने) उत्पन्न करतो हतो. वली तेनां प्रतापरुपी सूर्यथी त्रास पामीने सूर्य आकाशगामी थयो, अने ते अभ्यासथी तेने हजुसुधि पण स्थान मलतुं नथी. सूर्यादिकोनो तो " तापज " होय छे, पण भरतनो तो " प्रताप " हतो, केम के ते प्रतापथी बलेला शत्रुरुपी वृक्षो फरीने उ-गतांज नहोतां. वली ते भरत राजा न्यायी, विनयमां आसक्त, मनोहर दृष्टिवालो, विचारवंत, कलावान, अने दोषने नहीं धारण करनारो हतो.

हवे सर्व प्राणी प्रते हीतकारी एवा प्रभु, युगमात्र पृथ्वीपर दृष्टि क-रता थका, कर्मथी प्रेराइने एक देशथी बीजे देश विहार करवा लाग्या. वली ते वखते लोको मुग्ध होवाथी, निरवद्य आहारने जाणता नहोता, अने तेथी प्रभु एक वर्षसुधि आहार विनां रह्या, केमके, लोको मुग्धप-णाथी तेमने रथ, घोडा, हाथी, कन्या, सुवर्ण तथा वस्त्रो देवा लाग्या;

पण समतावान प्रभुए पोतानुं राज्य, सैन्य भंडार विगेरे तज्यां हतां, तेथी तेमणे तेमांथी कंइ पण लीधुं नहीं. एवी रीते आहार रहित एक वर्ष गयाबाद प्रभु राजाउ अने देवोथी वींटाया थका गजपुर नगर प्रते आव्या. त्यां कल्याणनां भंडाररुप बाहुबलिनां पौत्र श्रेयांसे प्रभुने जोइने पोतानां पूर्व जन्मोनी यादगीरी करी. ते वखते जातिस्मरण ज्ञानथी श्रेयांसे प्रभुनो अने पोतानो संबंध जाणीने, अनवद्य आहारनुं दान, अने पात्रनो विचार करवा मांड्यो; तेज वखते निर्मल सेलडीनां रसने आवेलो जाणीने, तथा प्रभुने पात्ररुप जाणीने, ते आपवानी तेणे इच्छा करी, अने तेणे प्रभुने कह्युं के, हे स्वामी ! आ रस निरवद्य छे, माटे कृपा करीने आप ते ग्रहण करो ? एम कहीने तेणे प्रभुनां हाथमां ते रस रेड्यो. प्रभुनां हाथमां रहेलो घणो एवो पण ते रस शिखाने धारण करवा लाग्यो; पण नीचे पड्यो नहीं; केम के जिनने भजनाराउनी नीची गति थती नथी. ते वखते जगतने जाणनारा प्रभुए अमृत रस सरखा ते रसने पीने, तपथी तपेली पोतानी साते धातुउने शांत करी. एवी रीतें प्रभुनां पारणा समये सुगंधि पाणी, पुष्प अने सुवर्णनी वृष्टि, देवडुंडुभि, तथा चेलोत्क्षेप, एवी रीते पांच दीव्यो प्रगट थयां. मांगलिक भक्तिवाला श्रेयांसे, " प्रभुनां पारणानी भूमिने कोइ स्पर्श न करे, " तेटला माटे त्यां रत्ननी पीठीका बनावी. वैसाक सुदी त्रीजने दिवसे प्रभुने आ अक्षयदान मल्युं, त्यारथी अखात्रीजनुं पर्व आजदन सुधि चाले छे. जेम डुनीयामां प्रभुथी जगतव्यवहार चालु थयो, तेम श्रेयांसथी सत्पात्र दान चालु थयुं. एवी रीते श्रेयांसनो उद्धार करीने, जगतनो उद्धार करनारा छद्मस्थ प्रभु, कर्मनां नाश माटे पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या. अहीं भरत राजा पण धर्मानुशासनथी राज्यने पालवा लाग्या, तथा दिवसे दिवसे पोतानां कुलने दीपावता थका, अद्भूत लक्ष्मीवाला थया. वली ते भरत राजा पितानां चरण कमलनी सेवामां रसिक थया थका, पितानी माता मरुदेवाने हमेशां नमस्कार करता. एवी रीते राज्य पालतां थकां एक हजार वर्षो गया बाद, भक्तिथी हमेशां जेनी उपासना करेली छे, एवी मरुदेवा माताने नमस्कार करवा माटे भरत राजा प्रभातमां गया. हमेशां पोतानां पुत्रनां स्मरणथी झरता आंसुउथी आ-

कुल थएलां ते मरुदेवा माताने, तेणे पोतानां नाम पूर्वक ज्ञक्तिथी नमस्कार कर्यो. ते वखते राजाउना स्वामी तथा कमल सरखी आंखोवाला ज्ञरत महाराजे, ज्रमरनी ज्रांतिने धरनारा एवा पोतानां केशोथी तेणीनां चरणकमलोनुं प्रमार्जन कर्युं. ते वखते पोतानां नेत्रोनां आंसुउने जरा लुछीने, तथा मननां खेदने बहार कहाडीने मरुदेवा माता ज्ञरतने कहेवा लाग्यां के, हे वत्स ! तुं जो ? मारो पुत्र, मने, तने अने बीजा पुत्रोने पण तजीने हरिणोनो साथी थएलो छे. वली ते क्षुधा, तृषा, टाढ, अने तडकानी पीडाथी क्षीण शरीरवालो थइने, हमेशां रातदहाडो वायुनी पेठे एक वनमांथी बीजा वनमां ज्रमे छे. वली चंद्र सरखुं शीतल, अने मोती तथा रत्नोथी जडेलुं एवुं तेनुं छत्र क्यां ? अने दावानल सरखुं प्रचंड आ सूर्यमंडल क्यां ? वली किन्नरीउनां गीतोनां झंकारवालुं मनोहर संगीत क्यां ? अने वननी अंदर चालवाथी संज्ञलाता मछरोनां ज्ञणकारा क्यां ? वली गजेंद्रपर चडीने तेमनुं नगरमां चालवुं क्यां ? अने कांकरा तथा पछरोवाला पर्वतोमां तेमनुं ज्रमवुं क्यां ? जेने मृत्यु नथी आवतुं एवी हुं, पुत्रनां आवी रीतनां दुःखनां समूहने सांज्ञलवाथी पण मरती नथी, माटे लोकनिंदित एवा आ मारा जीवतरने धिक्कार छे !! वली राजसुखमां तथा ज्ञोगविलासमां रक्त थयेलो तुं, वनमां ज्रमता मारा पुत्रनी कंइ संज्ञाल पण पुछतो नथी !! एवी रीते दीन वाणीवाली, तथा अश्रु सहित आंखोवाली पोतानी दादीने, जरा हसवाथी स्फुरायमान थएल छे होठ जेनां, एवा ज्ञरत महाराज कहेवा लाग्या के, हे माता ! त्रण लोकनां स्वामी, धीर, अने गंज्ञीर एवा पुत्रने तमो उत्पन्न करनारा छो, माटे एवी रीतनुं कायरपणावालुं वचन तमो फरी फरीने बोलो नहीं. वली हे माता ! ज्ञयंकर एवा आ संसाररुपी समुद्रमां शिला सरखा अमो तातनुं रक्षण करवाने केम समर्थ थइ शकीयें ? तात तो मोक्षनी इछावाला छे, अने ते क्षणिक संसार सुखने दूर करवाने पोते उत्तम तप तपे छे. वली इंद्रादिक देवो पण चाकरोनी पेठे तेमनी पासे हाजर रहे छे, एवा ते प्रज्ञुनुं माराजेवा केम रक्षण करी शके ? वली हे माता ! त्रणे लोकनां अधिपति एवा ते प्रज्ञुनी तमो ज्यारे लक्ष्मी जोशो,त्यारे तमोने तेमनां तपनुं सत्य फल ज-

णाशे. एवी रीते जरत महाराज मरुदेवा माता साथे जेटलामां वात करे ठे, तेटलामां कोइ पोलीउं जक्तिपूर्वक हाथ जोडीने, तथा पृथ्वीपर मस्तक नमावीने तेमने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामि! यमक अने शमक नामनां बे पुरुषो आपने कंइंक कहेवा माटे आव्या ठे, अने तेउ बारणे उन्ना ठे. पठी जरत माहाराजे तेने अज्ञा आपवाथी पोलीआए तेउने त्यां प्रवेश कराव्यो, त्यारे तेउ पण हर्षथी "जय जय" शब्द करता त्यां आव्या, तथा तेउमांथी शमक नमस्कार करीने बोल्यो के, हे देव! हुं वधामणी आपुं बुं के, पिताजीने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं! वली पुरीमताल नामनां नगर पासे शकटानन नामनां वनमां, ते त्रण जगतनां प्रजुनुं इंद्रोए समवसरण बनाव्युं ठे; तथा त्यां सर्व दिशाउमांथी पुरुषो, स्त्रीउं, देवो अने देवीउं, पोतानी रुधिथी स्पर्धा करता थका आव्या ठे. पठी यमक पण नमस्कार करीने, हर्षयुक्त थयो थको उंचे स्वरे कहेवा लाग्यो के हे स्वामि! हुं पण वधामणी आपुं बुं के, स्फुरायमान प्रजाए करीने देदीप्यमान सूर्यना बिंबनी पेठे उज्ज्वल, हजार आरावालुं, तथा स्फुलिंगोनी श्रेणिथी शोजितुं अने देवाधिष्ठित चक्ररत्न आपणी शस्त्रशालामां उत्पन्न थयुं ठे. जरत राजाये ते सांजलीने तेउ बन्नेने उचित दान आपी विसर्जन कर्या, तथा पोते अवचनीय आनंद पाम्या. पठी तेनुं चित्त हिंचोला खावा लाग्युं के, पेहेलां मारे तातनां केवलज्ञाननो महोत्सव करवो, के चक्ररत्ननो महोत्सव करवो? एम विचारतां ठेवटे तेणे निश्चय कर्यो के, अहो! जगतने अजयदान देनारा तात क्यां? अने जगतने जय आपनारूं आ चक्र क्यां? माटे आटलो वखत जे में विचार कर्यो, ते फोकट कर्यो; तेथी हवे मारे प्रथम प्रजुनां केवलज्ञाननी उत्पत्तिनो महोत्सव करवो. एम विचारि तेणे मरुदेवा माताने विनंति करी के, हे माता! तमो जे कहो ठो के, मारो पुत्र हमेशां वनमां जमीने, क्षुधा, तृषा, ताप आदिकथी पीडित थइने डुःख जोगवे ठे; पण हवे सुरअसुरोथी सेवित, एवा तमारा पुत्रनी, त्रणे जगतने आश्चर्य करनारी लक्ष्मीने जोइने तेनी तपस्यानुं फल जुउ? एम कहीने, तेणीनी अनुज्ञापूर्वक ते वाक्यथी हर्षित थएलां मरुदेवा माताने, विद्वानोमां शिरोमणि एवा जरत माहाराजे हाथीपर चडाव्यां;

पढी ते सज्ज करेला घोडा, हाथी, रथ, तथा पायदलसहित त्यांथी चालवा लाग्यो. सुवर्ण, तथा माणिक्यनां उलसायमान थतां किरणोथी विचित्र थयेलुं, अने क्रोडो गमे शस्त्रोथी चलकतुं थएलुं ते लश्कर विजलीनां भ्रमने करावनारुं हतुं. वली विविध प्रकारनां उत्सवोमां उत्साहवाला नगरनां लोकोथी वींटायेलो ते भरत राजा प्रभुने वांदवा माटे उद्यमवंत थयो थको मरुदेवा मातासहित चालवा लाग्यो. ते वखते "हुं पेहेलां प्रभुने वांदुं, हुं पेहेलां प्रभुने वांदुं" एवी रीते केटलाको अगाडी अगाडी जवा लाग्या. वली ते वखते प्रभुपासे जनारा लोकोने अमार्ग पण मार्गरूप थयो; अने एवा भक्तिवंतोने आगल जतां मोक्ष मार्ग पण मलशे. ते वखते पिता पुत्रनी, भाइ भाइनी, शेठ चाकरनी, के चाकर शेठनी राह जोता नहोता. एवी रीते दीनतारहित सैन्योथी तथा वेगयुक्त घोडाउथी जतां थकां भरत माहाराजे अगाडी अरिहंतपणाने सूचवनारो रत्नध्वज जोयो. त्यां त्रण गढोमां रहेलां रत्नोनी चलाचल कांतिनां किरणोथी, तेने धर्मरूपी सूर्यनो उदय करनारा प्रभातनी भ्रांति थइ. पढी त्यां भरत माहाराजे मरुदेवा माताने कह्युं के, हे माता! आ अगाडी रहेला प्रभुनां समवसरणने तमो जुउ? ते समवसरण त्रण लोकोमां रहेनारा देवोये रत्नोनी श्रेणिउथी बनाव्युं छे, अने उछलता किरणोनां समूहोथी ते सूर्योनी श्रेणि सरखुं सुंदर लागे छे. वली आ बाजुए सेवा माटे आवेला देवोनो, सांभलनाराउनां श्रवणोने प्रिय लागतो "जय जय" शब्द संभलाय छे. वली आ बाजुए पांच जातिनां रत्नोनी कांतिरूपी आंगलीउवालो, प्रभुने उलखावनारो, धर्मेज पोतानो हाथ उंचो कर्यो होय नही, तेवो आ रत्नध्वज शोभे छे. वली आ बाजुए जाणे तातना गुणोनेज कहेतो होय नहीं, एवो नवा शब्दोनां रंगवालो अद्भुत देवदुंदुभि संभलाय छे. वली प्रभुनां गुणोथीज होय नहीं, तेम मांजरोथी पिंजर थएलो आ अशोक वृक्ष, पल्लवानां समूहोथी जाणे नाचतो होय नहीं, तेम देखाय छे. ते सांभलीने मरुदेवा मातानां, दुःखाश्रुथी उत्पन्न थएलां आंखोनां पडलो हर्षाश्रुथी दूर थयां. ते वखते आनंदित थएला देवोथी करातो पोतानां पुत्रनी स्तुति जेम जेम ते सांभलतां गयां, तेम तेम ते अत्यंत उलसायमान थयां. सर्व अतिशयोथी संपूर्ण, तथा जिनरूप एवां पोतानां पुत्रने प्रेमथी ध्यावतां

थकां मरुदेवा माता तन्मयपणाने पाम्यां. पछी संसार संबंधि व्यापारने मुकी जइने, प्रभुने चिंतवतां थकां ते क्षणवारमां जिनमय थयां; वली ते वखते हृदयमां, दृष्टिमां, आगल, पडखे, पाछल, वचनमां अने सर्व जगाए मोक्ष सुखना कारणरूप जिननेज ते जोवा लाग्यां पछी कर्मोनो क्षय करनारी क्षपकश्रेणिपर चडीने, नानाश्रुतविचार, एकश्रुत विचार, सूक्ष्मक्रिया, समुछिन्नक्रिया तथा अनुक्रमे ते शुक्ल ध्यानने पाम्यां. पछी अंतकृत केवलीपणाथी कर्मनो क्षय करी केवलोत्पत्ति समयेज मरुदेवा माता मोक्षे गयां. एवी रीते पुण्य कर्याविना पण, जे माणस स्नेहथी अंतकाले अरिहंत प्रभुनुं स्मरण करे छे, ते माणस आ मरुदेवा मातानी पेठे शिवगामी थाय छे. हवे ते वखते इंद्रोये समवसरणमांथी आवीने मरुदेवा मातानां शरीरनो संस्कार करीने, तेने क्षीरसमुद्रमां पधराव्युं; तथा तेओ उंचे स्वरे कहेवा लाग्या के, आ अवसर्पिणी कालमां आ मरुदेवा माता प्रथम केवली थइने मोक्षे गयां (सिद्ध थयां.) एवी रीतनी उद्घोषणा करीने, देवो, आंसुनां जलथी भींजाएला भरतने अगाडी करीने प्रभुपासे लेइ जवा लाग्या. त्यां भरत राजाए प्रभुनी लक्ष्मी जोइने, तथा देवोनां कहेवाथी शोकनो त्याग कर्यो, अने प्रभुने नमवाने उत्सुक थयो. त्यां छत्र, चामर आदिक राजानां उपकरणो तजीने, भरत राजा उतरासंग धारीने प्रभुनी पासे जवा लाग्या. वली त्यां वावमां नाहीने, अने धोएलां वस्त्रो पेहेरीने, भरत महाराज पूर्वद्वारथी समवसरणमां दाखल थया. पछी तेणे विधिपूर्वक प्रभुने प्रदक्षिणा देइने, तथा पृथ्वीपर मस्तक नमावीने नमस्कार कर्यो; पछी भक्तिथी उलसायमान थती रोमराजीथी कंचुकित थएला, तथा प्रफुल्लित लोचनवाला, भरत राजा, हृदयमां नहीं माता हर्षने वाणीनां मिशथी वहार कहाडवा लाग्या के, हे स्वामी ! त्रणे लोकमां तिलक समान, जिनेश्वर, अनंत, अव्यक्त, चिद्रूप, तथा योगीश्वर एवा तमो प्रते नमस्कार थाओ ? वली हे नाथ ! एकांत हितकारी एवा तमोए आ संसारमां अवतार लेइने, वहुरूपवालो जगतनी व्यवस्थानो मार्ग देखाड्यो. वली हे जगत्प्रभु ! अमोनेज आ भवरूपी समुद्रमांथी उद्धारवानी इछाथी, तथा मोक्षमार्ग देखाडवा माटे तमोए संयम लीधुं छे. वली हे प्रभु ! तमोज आ जगतनां ईश्वर, दयालु, अने

शरणुं लेवा लायक छो. वली आप, पोतानी मेलेज अमोने तारवामां तत्पर थया छो, माटे हवे आपनी हुं केटलीक याचना करुं? एवी रीते प्रभुनी स्तुति करीने, भरत राजा, इंद्रने अगाडी करीने प्रभुनी पासे बेठा. पछी तत्वने जाणनारा प्रभु पण एक योजनसुधि गमन करती, सर्व भाषानां स्वरूपवाली, अने गंभीर वाणीथी क्लेशने नाश करनारी देशना देवा लाग्या. (धर्ममां प्रीति करवी, अने पापोथी यत्नपूर्वक विरक्त थवुं; एवी रीतनो जेमां माणसो प्रते उपदेश होय, ते देशना कहेवाय छे.)

जिनपूजा, सुगुरुनी सेवा, स्वाध्याय, निर्मल तप, दान, अने दया, एवी रीतनां छ कार्यो, हमेशां उत्तम गृहस्थीउने करवानां छे. वली माता पिता, ममत्व रहित गुरु, धर्मशास्त्र भणावनार, अभयदान देनार, अन्नपाणी देनार, तथा कला शिखवनार, एटलाउनां चरण कमलोनी सेवाथी पुण्य उपार्जन करवुं. वली प्राणीउं प्रते दया, शुभ पात्र प्रते दान, गरीबोनो उद्धार करवानी बुद्धि, अने यथोचित सर्व जनोप्रते उपकार, एवी रीतनो धर्म संसारथी तारनारो छे. वली ज्ञान, अभय, औषध, स्थान अने वस्त्रनुं दान, अरिहंत प्रभुनी पूजा, समतावंत मुनिउने नमस्कार पोतानीज स्त्रीमां तृप्ति, तथा अन्य स्त्रीउंथी विरक्तपणुं, ए सघलां पुरुषोने अक्षय मंडनरूप छे. वली चाडी, द्वेष, परधननी चोरी, जीवहिंसा, निंदा, रात्रिभोजन, तथा कन्यादिक मोटां जूठ, एटलां वाना वर्जवां, केम के, तेना सरखुं बीजुं पाप नथी. वली पाप, तथा मरकी आदिकने हरनारां त्रण रत्नोने ग्रहण करवां; केम के, तेथी शुद्ध भावयुक्त थया थका संत पुरुषो त्रण भवोमांज सुखेथी मुक्ति सुख पामे छे. एवी रीते, मनोहर मोक्षरूपी फलने उत्पन्न करनारां, वचनरूपी पाणीने, भविकरूपी पृथ्वीमां वरसीने, प्रभुए उत्कृष्ट संपदा माटे त्रण रत्नरूपी (ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी) बीज त्यां वाव्युं. एवी रीतनी प्रभुनी पवित्र देशनाने श्रवणगोचर करीने, भरतनो पुत्र ऋषभसेन प्रभुने विनति करवा लाग्यो के, हे स्वामि! आ भवरूपी अरण्यमां दिङ्मूढ चित्तथी भटकतां थकां अकस्मात सार्थपतिनी पेठे, पुण्योथी मने आपनो आजे मेलाप थयो छे; अने तेथी आप मने तारो? जे राज्यमां आ राग आदिक शत्रुउं मारा पुण्यरूपी भंडारने लुंटी जाय छे, ते राज्यनुं विष-

योथी विरक्त थएला मने हवे शुं प्रयोजन छे? वली धनादिकनी लोलताथी आ भयंकर संसारसमुद्रमां भटकता बुद्धिवानो पण (मछीमारो पण) भाइ, पुत्र आदिकनी जालमां फसाइ पडे छे; माटे हे भगवन्! हवे आप मने शरणारूप छो, अने तेथी चारित्रदान देइ मारुं रक्षण करो? नहींतर आ विषयो फरी मने पोतानां सपाटामां लेशे. त्यारे प्रभुए पण तेने भव्य जाणीने, चारित्र आपी तेनापर उपकार कर्यो; केम के सज्जनो हमेशां परनो उद्धार करनाराज होय छे. पछी तेणे आ भवरूपी तापनी शांतिमाटे प्रभुनां चरणारविंदो मस्तके धर्यां. वली ते समये भरतनां बीजा चारसें पुत्रोए, तथा सातसें पौत्रोए पण चारित्र अंगीकार कर्युं. वली ते वखते क्रोडो देवोथी प्रभुने सेवाता जोइने, भरतनां पुत्र मरीचीए पण दीक्षा लीधी; तथा उज्ज्वल शीलने धरनारी ब्राह्मीए पण भरतनी रजा लेइने ते वखते घणी राजकुमारीउ साथे दीक्षा लीधी. वली ते वखते सुंदरीने पण व्रत ग्रहण करवानी इछा हती, पण भरते विचार्युं के, प्रभुनां चतुर्विध संघमां आ सुंदरी श्राविका थशे, एम विचारि तेणीने तेणे दीक्षा लेती अटकावी. वली ते वखते भरत महाराजे पण प्रभु सन्मुख सम्यक्त्व अंगीकार कर्युं, केम के, समतावंतोने पण भोगावली कर्म तो अवश्य भोगववुंज पडे छे. वली ते समये केटलाक विद्याधरो तथा मनुष्योए चारित्र लीधुं, केटलाकोए श्रावकव्रत अंगीकार कर्यां, तथा केटलाको भद्र परिणामने स्वाधिन थया. वली कछ, महाकछ शिवायनां अगाउ तापस थएला राजाउए पण प्रभुनां चरण समीपे आवीने, आनंदयुक्त व्रत अंगीकार कर्युं. पुंडरिक आदि साधुउ, ब्राह्मी आदिक साधवीउ, श्रेयांस आदिक श्रावको, तथा सुंदरी आदिक श्राविकाउ, एवी रीते प्रभुए चतुर्विध संघनी जे स्थापना करी, ते आजदन सुधि पण मोजुद छे, केम के तेवा महान पुरुषोनी आज्ञानुं उल्लंघन थइ शकतुं नथी. एवी रीते तीर्थंकरोने पण माननीक, पुण्यवानोने पण पूजनीक, अने सुरासुरेंद्रोने पण सेवनीक एवो संघ हमेशां जय पामे छे. हवे प्रभुए जेम चतुर्विध संघनी स्थापना करी, तेम इंद्र, चक्री विगेरेए मलीने ऋषभसेन आदिक चोरासी गणधरोनी प्रभुनी आज्ञा प्रमाणे स्थापना करी. महा बुद्धिवान ते गणधर महाराजोए प्रभु पासेथी

त्रिपदी मेलवीने तुरत द्वादशांगीनी रचना करी; अने प्रभुनी कहेली तेज व्यवस्था आजे पण चाली आवे छे, केम के, अरिहंत प्रभुनी आज्ञानुं विवेकी माणस उल्लंघन करता नथी. पछी देव, गंधर्व, विद्याधर, तथा राजाउं प्रभुने नमस्कार करीने, तेमनी देशनानुं स्मरण करता थका पोतपोताने स्थानके गया. प्रभु पण भविक जीवोने बोध देता थका चोंत्रीश अतिशय सहित पृथ्वीतलपर विहार करवा लाग्या. एकज जगोए स्थिरता करवाथी परनो उपकार नहीं थइ शके, एवा हेतुथीज होय नहीं जेम, तेम प्रभुए एकज जगोए स्थिति करी नहीं. हवे पुण्यशाली, तथा लोकोथी नमाएला भरत राजा पण मनोहर मेहेलोवाली अयोध्या नगरीमां परिवार सहित आव्या; तथा उलसाय मान वैभववाला चक्रने जोवानी इछाथी ते शस्त्रशालामां गया, त्यां तेमणे सूर्यबिंबनी पेठे उछलता किरणोनी श्रेणिथी शोभायुक्त थएलुं, तथा शस्त्रशालाने पण चलकाटयुक्त करतुं चक्ररत्न जोयुं, ते वखतेज तेमणे तेने पंचांग प्रणाम कर्यो, केम के, क्षत्रिउंने शस्त्र उत्कृष्ट देवरूप छे. पछी तेमणे पवित्र जलथी आनंदपूर्वक स्नान करीने, धोयेलां, सुगंधयुक्त करेलां, तथा श्वेत वस्त्रो शरीरपर धारण कर्यां. अने शस्त्रशालामां आवी ते चक्र हाथमां ग्रहण कर्युं, अने जाणे वधारे चलकाटवालुं करता होय नही जेम तेम तेमणे वस्त्र हस्तोथी तेनुं प्रमार्जन कर्युं. पछी तेणे सहस्र आरावालुं ते चक्र सुवर्णनां सिंहासनपर स्थापन कर्युं, अने तेम करीने ते उदयाचलनां शिखरपर रहेला सूर्यबिंबने याद करवा लाग्यो. पछी राजाये पोतानांज हस्तथी निर्मल जलथी ते चक्रने स्नान कराव्युं, त्यारे समुद्रमांथी उछलता वडवानल सरखुं ते शोभवा लाग्युं. पछी तेणे चंदन, अगर, कपुर, कस्तुरी, कुंकुम विगेरेथी तेनुं पूजन कर्युं. वली ते चक्र दशे दिशाउंनुं चक्रिपणुं तेमने आपशे, तेथी तेमणे पंच वर्णनां पुष्पोथी तेनुं पूजन कर्युं वली ते चक्र तेमने मंगल करनारुं छे. तेथी तेमणे तेनी आगल अखंड चोखाथी अष्ट मंगलो चितर्यां; तेम हीरा, वैडुर्य, माणिक, मोती, कर्केतन आदिकथी तेमणे तेनी पासे स्वस्तिक कर्यो, वली तेमणे मंगलदीपकपूर्वक तेनी आरती उतारी. “क्षत्रिउंना गुरुसमान, तथा प्रत्यक्ष देवरूप, एवा तमो प्रते नमस्कार थाउं?” एम कहीने भरत रा-

जाए ते शस्त्राधिपतिने नमस्कार कर्यो. एवी रीते आठ दिवसोसुधि चक्रिये मनोहर नेटोपूर्वक तेनुं पूजन कर्युं. पठी एक हजार यक्षोथी अधिष्ठित, दिव्य शक्तिवालुं, हजार आराउंवालुं, महान् ज्वालाउंनी श्रेणिथी लाक्षित थयेलुं, गोलाकारवालुं, आकाशमां नमण करनारुं अने डुष्ट दैत्य तथा शत्रुउंनो नाश करनारुं, ते चक्र नरतनां प्रतापनी पेठे दीपवा लाग्युं. पठी ते चक्री जयस्नानमाटे मनुष्य अने देवोए बनावेला मणिमय सिंहासनपर पूर्वसन्मुख बेठा, ते वखते कोइक स्त्री, तेनां रूपथी मोहित थइने, मणिनां कुंनमांथी पडता जलने पोतानां कटाक्षोथी बेवडां करीने तेनो अनिषेक करवा लागी, वली कोइक मदोन्मत्त स्त्री तो पोतानां कुंन सरखां स्तनोनी वच्चे, तेवडाज (स्तन जेवडाज) कलशने लेइने अनिषेक करवा लागी. वली ते वखते कोइक स्त्री तो पोतानां हस्तरूपी कमलमां कर्णिकासरखा कलशने लेइने नरत राजापर जल सींचवा लागी. ते वखते धवलध्वनिउंनी साथे वाजिंत्रोनां नादो, ते मंडपने पूरीने दिशाउंनां मूलमां मूर्छा पामवा लाग्या. एवी रीते जय जय शब्द पूर्वक अनिषिक्त थयेला चक्री अधिक कांतिवाला थइने सूर्यबिंबनुं अनुकरण करवा लाग्या. सोनेरी कांतिवाला ते नरत महाराजाये ज्यारे सफेद वस्त्रो पहेर्यां, त्यारे ते मेखलासुधि शरदऋतुनां वादलांउंथी वींटायेला मेरुसरखा शोनवा लाग्या. दरेक अंगप्रते घणां आनूषणोथी नूषित थयेला, तथा पृथ्वीपर चालता ते नरत राजा जंगम कल्पवृक्ष सरखा शोनवा लाग्या. पठी नक्तिथी प्रेराइने तेमणे, पुष्प, अक्षत, स्तुति आदिकथी प्रथम प्रनुनुं आराधन कर्युं. पठी तपस्वीउंने दान देइने, नोजन करीने, अने तांबुल चावीने ते सनामां गया. त्यां चामरोथी वींजाता, तथा ठत्रथी आछादित थएला, ते नरत राजा, वर्षाकालमां जरणोवाला पर्वतसरखा शोनवा लाग्या. वली ते नरत राजा महा पराक्रमी, अने नक्तिवंत सोल हजार यक्षोथी वींटाया थका शोनता हता. हवे ते चक्र आयुधशालामांथी निकलीने, प्रयाणने सूचवतुं थकुं आकाशमां पूर्वसन्मुख रह्युं. पठी प्रनातमां सर्व शुन लक्षणोथी खेंचेली ठे, संपदा जेणे, तथा यश सरखा श्वेत हस्तीरत्नपर राजा चड्या. अत्यंत गर्जना करतो ते हाथी, ते वखते मदनी धाराउंथी बीजा मेघ सरखो देखावा लाग्यो.

आकाशने जाणे नवपल्लव करता होय नही जेम तेम उंचा हाथो करीने, ते वखते बंदिलोकोए जय जय शब्द कर्यो. वली ते वखते प्रयाणसमयनो दुंदुभिनाद थवा लाग्यो, अने तेथी सघली दिशाउ गाजवा लागी. वली ते वखते शोभित करेल छे, भुवननो मध्यभाग जेणे, एवो मांगलिक वाजानो नाद दूतनी पेठे सर्व दिशाउमां रहेलां सैन्यने बोलाववा लाग्यो. पछी झरतो छे मदनो समूह जेउने एवा झरणावाला पर्वतो सरखा हाथीउथी, तथा समुद्रनां मोजां सरखा अने चपल घोडाउथी, तथा जंगम घर सरखा अने झणकार करता मोटा रथोथी, तथा वैरीउने विदारवामां शक्तिवाला पालाउथी, वींटाया थका, तथा इंद्र सरखा पराक्रमवाला भरत राजा, सैन्यनां चालवाथी उडती रजोथी सूर्यने आच्छादित करता थका प्रथम पूर्वदिशा तरफ प्रयाण करवा लाग्या. त्यां अगाडीना भागमां सुषेण नामनां सेनापतिरत्न, अश्वरत्नपर चडीने, तथा हाथमां दंडरत्न लेइने चक्रनी पेठे चालवा लाग्या. विघ्ननां समूहनां नाश माटे देहधारी जाणे शांतिरत्नज होय नहीं, एवा पुरोहित रत्न भक्तिथी प्रभुने पूजीने चालवा लाग्या. वली जंगम दानशाला सरखा, तथा दरेक स्थानकप्रते छावणीमां सैन्य माटे दीव्य अन्न उत्पन्न करनार गृही रत्न पण चालवा लाग्या. वली विश्वकर्मा सरखा, तथा स्कंधावारादिक बनाववामां समर्थ वार्धकीरत्न पण त्यां चालवा लाग्या. वली सुरासुरोथी आश्रित थयेलां चर्मरत्न, खड्गरत्न, मणिरत्न तथा काकिणीरत्न पण चक्रिनी साथे चालवा लाग्यां. एवी रीते पृथ्वीनो स्वामी थइने पण कोइ बीजामां तेणीने उत्कंठीत जाणवानां गुस्साथीज जाणे होय नहीं जेम तेम सैन्यना निर्घातोथी पृथ्वीने चलित करतो, तथा पर्वतोने पण चलायमान करतो थको ते राजा बलयुक्त लश्करसहित चालवा लाग्यो; तथा ते हमेशां चक्रनी पाछल चालीने एक योजननुं प्रयाण करतो, अने शत्रुनां प्राणोने प्रयाण करावतो हतो. वली जे जगोये सैन्य पडाव नाखतुं, त्यां वार्धकी छावणीमांज नगरनी पेठे आवास बनावतो. तेमां अयोध्यानी पेठेज चक्रिनो शिबिर, चोवटा, त्रेवटा, शिल्पशाला, तथा, बजारनी श्रेणिउ थती. वली त्यां मार्गमां राजाउ, हाथी, घोडा विगेरेनी भेटोसहित विनयथी नम्र थया थका, देवोथी सेवायेला

जरतने आवीने नमता हता. एवी रीते सैन्यनां समूहनां मर्दनथी आकाश पातालने क्षोज पमाडता थका जरत राजा मागधतीर्थप्रते आव्या. त्यां तेमणे पूर्व समुद्रने कांठे नव योजन पोहोलो, तथा बार योजन लांबो सैन्यनो पडाव नांख्यो. त्यां वार्धकीये अयोध्यानी पेठे सैन्यने माटे आवासो बनाव्या, अने रत्नोनी श्रेणिउंथी तेणे एक पौषधशाला पण बनावी. पछी राजाउंमां हस्ती समान ते जरत राजा पर्वतपरथी जेम केसरी सिंह, तथा उदयाचलथी जेम सूर्य तेम हाथीपरथी उतर्या; तथा पछी तेणे पोतानां कार्यमाटे पौषधशालामां नवुं दर्जनुं आसन पाथर्युं. तथा आजूषण, माला विगेरेनो त्याग करीने, अने श्वेत वस्त्रो पेहेरीने, तेणे मागध देवना निमित्ते पौषध लीधो. तथा तेणे शुद्ध संथारापर बेसीने, अने सर्व सावद्यने तजीने, मुनिनी पेठे अठम तप कर्यो. पछी पौषध पूर्ण थया बाद शरद रुतुनां वादलांमांथी जेम सूर्य, तेम पौषधशालामांथी ते अधिक कांतिवालो थयो थको निकल्यो. पछी तेणे विधिपूर्वक स्नान करीने, तथा प्रजुने पूजीने क्षुद्र देवोनी प्रीति माटे बलिदान कर्युं. पछी ते उछलती पताकावाला, दिव्य शस्त्रोनी श्रेणिउंथी शस्त्रशाला सरखा, घंटानां रुंकारथी दशे दिशाउंमांथी लक्ष्मीने बोलावता, तथा चोकडांथी खेंचायेल छे मुख जेउंनुं, अने वैरीनां अहंकारनुं जक्षण करनारा, एवा उंचा घोडाउंवाला रथमां ते बेठो. पछी इंद्रनो जेम मातली, सूर्यनो जेम अरुण, तेम राजानां अजिप्रायने जाणनारो तेनो संगर नामे सारथी थयो. पछी फक्त दोरीनां चलावामात्रथीज उछलता घोडाउं वेगथी राजाने पूर्वसमुद्रप्रते लेइ गया. पछी कांठापर रहेलां वृक्षोनां पडतां पांदडांनां अवाजथी जलचर जीवोने त्रास होते छते, ते नाजिसुधि रथ पाणीमां बुडे त्यांसुधि समुद्रमां गयो. घोडानां वायुथी वडवानलनी शंका करावता, एवा समुद्रनां पाणीथी क्षोज पामेलुं, तथा मध्य जागमां धनदे आश्रय करेलुं, अने आठमनां चंद्रसरखुं तेणे धनुष्य चडाव्युं. पछी तेणे शत्रुनां प्राणोनां प्रयाणमाटे पटहध्वनि सरखा, तथा धनुर्वेदनां उँकारसरखा, लवण समुद्रने क्षोज पमाडनार, तटपरनां पर्वतोने फाडनार, तथा जलचरोने त्रास आपनार एवो धनुष्यनो टंकार कर्यो. मंदराचलना ज्रमणथी थता समुद्रनां शब्द सरखा निष्ठुर एवा ते धनुष्यनां टंकारने सांजलीने

त्रणे जगतनां मनो ते वखते क्षोजायमान थयां. वली ते टंकारनां शब्द-थी सूर्यनां घोडाउं पण जडकीने उन्मार्गप्रते जवा लाग्या, तेथी तेनां र-थनुं एक चक्र जांगी गयुं. पढी बिलमांथी जेम जयंकर सर्पने, तेम तेणे सुर अने असुरोने पण क्षोज पमाडनारुं बाण जाथामांथी कहाड्युं. पढी शत्रुनी पंक्तिउंमां जेम दंड, तेम तेणे पोतानां नामवालुं बाण दोरीपर च-डाव्युं. ते वखते बाणनां किरणोयें करीने वैरीरूपी तलावने शोषावता ते जरत राजा रथमां बेठा थका सूर्यनी पेठे शोजवा लाग्या. पढी नखनां किरणोथी उज्ज्वल थयेला ते बाणने तेणे कर्णसुधि खेंच्युं. पढी एक प-गने खेंचीने उजेला, तथा जाथांउंरूपी पांखवाला, अने बाणनां अग्रजा-गरूपी तीक्ष्ण चांचवाला, ते जरत राजा गरुडनी पेठे तर्क करावा लाग्या. ते वखते तेवा जरत राजाने जोइने समुद्रने एवी शंका थइ के, शुं आ मने सुकावी नाखशे ? के मने खेंची लेशे ? पढी पूर्व दिशा, अने पूर्वाच-लने क्षोजावनारुं, तेम नागकुमार, देवो विगेरेथी आश्रित थयेलुं, अने प-र्वतोमां पण नहीं अटकतुं ते बाण चक्रीए ढोड्युं. ते बाणने जोइ लवण समुद्र अत्यंत क्षोजायमान थयो, अने ते अज्यासने आजे पण ते चला-यमान मोजांउंथी याद करे ढे. वली ते वखते जलमां रहेला पर्वतो पण ते बाणने जोइ शंका करवा लाग्या के, शुं क्रोधथी फरीने इंद्रनां हाथमांथी वज्र आवे ढे ! ! ! पढी समुद्रनां जलने उढालतुं, तथा आकाशमां वि-जलीनां सरखुं ते बाण बार योजन उलंगीने, मागधेशनां हृदयमां शल्य-सरखुं, थयुं थकुं तेनी सजामां जइने पड्युं. तेनां पडवाथी थएला संघट्टनथी रत्ननां सिंहासनमांथी चारे बाजुए अग्निनां तणखाउं निकलवा लाग्या; अने तेज तेनां क्रोधरूपी अग्निनां कारणरूप थया, अने तेनां राज्यरूपी वृक्षनां मूलमां अग्निनी तुलना करवा लाग्या. वली ते बाणने जोइने ते क्षणवार तो दिङ्मूढ थयो, अने ते बाणनी पांखनां पवनथी तेनो चित्त-रूपी दीपक वधारे वलवा लाग्यो. पढी नाशिकाने नचावतां थकां तेनी आंखो चणोठी सरखी लाल थइ, अने तेथी तेनुं क्रोधरूपी वृक्ष जाणे नवपल्लव थयुं होय नहीं, तेम देखावा लाग्युं. पढी तेणे त्रण प्रकारनां को-पने सूचवनारी त्रण वलीउं कपालपर धारण करी, अने होठने स्फुराय-मान करीने तेणे म्यानमांथी तलवार खेंची कहाडी. पढी ते पोताना

कोपरूपी अग्निनी ज्वालानी श्रेणि सरखी, अने ऊेर तुल्य वाणी बोलवा लाग्यो के, अग्निने हाथथी पकडवाने, दिग्गजोने पकडवाने, तथा शेषनागनां मस्तकपर रहेला मणिने हरवाने कोण उद्यमवंत थयेलो छे? तेम अणिदार जालांथी पोतानी आंखमां खरज करवाने कोण इछे छे? तथा सिंहनी केशवालीने लेवाने कोण इछे? वली फरती अरघटमालामां पोतानो पग नाखवाने कोण उत्सुक थाय? तेम आ मारी सन्नामां कया कुबुद्धिये बाण फेंक्युं छे? एम कहीने क्रोधयाम थयो थको, डाबा हाथथी वैरीनां कपोलने जेम तेम पोतानां सिंहासनने थाप मारीने, सर्पनी पेठे फुंफाटा मारतो, तथा पोतानां अंगने मरडतो थको ते एकदम सिंहासनपरथी उठ्यो. ते वखते तेनो परिवार पण तेनी पेठेज कोपथी जाज्वल्यमान थइने उठ्यो; केमके किरणोनो समूह सूर्यनुं अनुकरण करेज छे. ते वखते केटलाको तो क्रोधरूपी वृक्षनां पल्लव सरखी तलवारो नचाववा लाग्या, अने केटलाको वैरीनी छातीमां शल्य सरखा जालां उछालवा लाग्या. केटलाको आकाशने फोडता होय नहीं जेम, तेम मुगरो उछालवा लाग्या, तथा केटलाको यमनी भ्रुकुटी सरखा बाणो चडाववा लाग्या. केटलाको क्रोधनां गुछासरखा वज्रो धारण करवा लाग्या, तथा केटलाको आकाशने दांतावालुं करता थका त्रिशूलो धारण करवा लाग्या. केटलाको आकाशपातालने फोडता थका भुजास्फोट करवा लाग्या, तथा केटलाको मेघनादनुं अनुकरण करता थका सिंहनाद करवा लाग्या. वली केटलाको कहेवा लाग्या के, घुवड जेम सूर्यप्रते, तेम आ कोइ दुर्विनीत माणस आपणा स्वामीप्रते करे छे, माटे तेने पकडो अने मारो? एवी रीते प्रलयकालमां क्षोन्नायमान थयेला समुद्रनां नादनुं अनुकरण करनारो सघला परिवारनो एकी वखते कोलाहल थवा लाग्यो. एटलामां तेना प्रधाने ते बाण लेइने, क्रोधरूपी अग्निने शमववाने मंत्रसरखा ते परनां अक्षरो वांच्या के, "हे देवो! जो तमारे राज्य अने जीवितनुं प्रयोजन होय, तो अमोने तमारूं सर्वस्व स्वाधिन करीने तमो अमारी सेवा करो? एवी रीते तमोने सुर, असुर अने मनुष्यनां स्वामी श्री ऋषभदेव प्रभुनां चक्रवर्ती भरतपुत्र आज्ञा करे छे." एवी रीतनां अक्षरोने जोइने, तथा अवधिज्ञानथी ते बाबत जाणीने, ते मंत्री

पोतानां स्वामीने ते बाण देखाडतो थको सर्वने कहेवा लाग्यो के, हे राजन्यो! उतावल करनारा एवा तमोने धिक्कार छे!! केम के, तमो स्वामीनुं हित चिंतवता थका उलटुं अहित करवा लाग्या छो. आ भरत क्षेत्रमां प्रथम तीर्थंकरनां पुत्र, तथा वैरीरूपी चंद्रप्रते राहुसरखा आ भरत चक्री थया छे. वली मेरूने तोली शकाय, पृथ्वीने उपाडी शकाय, अने लवण समुद्रने पण सुकावी शकाय, तोपण चक्रीने जीती शकाय नहीं. हवे ते इंद्र सरखो चंड आज्ञावालो चक्री तमारीपासेथी दंड मागे छे, अने सुरासुरोथी मान्य एवी तेनी आज्ञा, तमोने मनाववानी तेनी इच्छा छे. वली देवोने विषे सर्वज्ञ जेम जिनेश्वर प्रभु छे, तेम आ पण पोतानी शक्तिथी माणसोमां इंद्र सरखो चक्री थयेल छे. माटे न्यायी एवा तमोये आ वखते तेनो विनय करवो लायक छे, अने पोताने काल-रात्रि सरखी लडाइनी तो वातज करवी नहीं. वली सूर्यप्रते जेम पतं-गीउं तेम चक्रीप्रते द्वेष करनार आ लोकोने पण आपे निवारवा. माटे हवे दंड देवानी वस्तुउं एकठी करो? अने ते चक्रीने जइ नमस्कार करो? केम के गर्व छे ते, हृदयने बालतो थको सर्वस्वनो नाश करे छे. एवी रीतनी मंत्रीनी वाणी सांभलीने तथा ते अक्षरो जोइने, परमेष्टीना स्मरणथी जेम पाप, तेम ते मागधेशनो गुस्सो नरम पड्यो. पछी ते भेट तथा ते बाण लेइने मंत्रीनी साथे चक्रीपासे जइ विनती करवा लाग्यो के, हे स्वामि! चातकने जेम वरसादनुं पाणी, तेम घणा कालथी उत्कं-ठित थयेला मने आजे आपनुं दर्शन थयुं, ते अत्यंत श्रेष्ट कार्य थयुं. वली आप अमारा स्वामी थवाथी अमो आजे सनाथ थया, केमके सू-र्योदयथी कमलोनी संपदा वृद्धि पामे छे. वली सूर्यसमान कोइ तेजस्वी नथी, पवन समान कोइ गतिवालो नथी, अने मेरूसमान कोइ पर्वत नथी, तेम आप समान कोइ पराक्रमी नथी. वली हे स्वामी! प्रमादनां वशथी में आपनी तुरत सेवा करी नहीं, ते आप क्षमा करशो, केमके संत पुरूषो नमनारप्रते प्रीतिवाला होय छे. वली हवेथी हे नाथ! हुं आपनां चरणकमलप्रते भ्रमरसमान छुं, तथा जिननी आशिषनी पेठे आपनी आज्ञा हुं मस्तकपर चडावीश. वली हे स्वामी! आ-पनी आज्ञाथी हुं भक्तिवालो थइने, पूर्वदिशानां आ मागध ती-

थैमां जयस्तंभनी पेठे रहीश. वली हे स्वामी ! आ अमो, आ राज्य, खाणो, लक्ष्मी विगेरे आपनांज छे, माटे आपनी इच्छा प्रमाणे सेवकने आज्ञा, फरमावो ? एटलुं कहीने तेणे चक्रीने हार, मुकुट, कुंडल, मागध तीर्थनुं पाणी, अने ते बाण आप्यां. वली तेणे पूर्वे मेलवेलां रत्नो, मोती, मणी, अने बीजी पण दीव्य वस्तुओ आपी. पछी भरते पण तेने इनाम आपीने, तथा पोतानां सेवकोमां गणीने रजा आपी. पछी तेज मार्गे रथ पाछो वालीने, भरत राजा, इंद्र जेम देवलोकमां, तेम पाछा पोतानां सैन्यमां आव्या; तथा त्यां रथथी उतरीने, अने विधिपूर्वक स्नान करीने, परिवार सहित तेमणे अठमनुं पारणुं कर्युं. पछी त्यां मागधेशने जाणे सामी भेटज आपता होय नहीं तेम, तेमणे अठाइ महोत्सव कर्यो. पछी ते चक्ररत्न तेजथी सूर्यनी पेठे चलकतुं थकुं आकाशमां चालवा लाग्युं. पछी उन्नतोने नमावता, नम्रोने स्थापन करता, पर्वतोने दलता, दीनोनो उद्धार करता, भेटो लेता, तथा चक्रनी पाछल हमेशां जोजनसुधि प्रयाण करता, ते चक्री दीव्य शक्ति पूर्वक दक्षिण समुद्र प्रते पहोंच्या. एलची, लविंग, चारोली, कंकोल, तथा सोपारीवाला ते दक्षिणसमुद्रना कांठापरनां वनमां तेणे लश्करनो पडाव नाख्यो. त्यां पण अगाउनी पेठे वार्धकीए लश्करमाटे आवासो तथा उत्तम पोषधशाला बनावी. त्यां वरदाम देवने मनमां धारीने, अर्थ साधनार, पौषध सहित अठमनो तप चक्रीए कर्यो; तथा पछी वलिनो विधि करीने सुवर्णनां रथपर चडी, धनुष्य लेइने ते समुद्रने कांठे गयो. त्यां रथथी नाभिसुधिनां पाणीमां जइने, तेणे धनुष्य खेंची दीव्य बाण छोड्युं. पछी सोनेरी अक्षरोवालुं ते बाण दिशाओनां भागने उज्ज्वल करतुं थकुं, बार जोजन जइने तेनी सभामां पड्युं. एवी रीते अकस्मात बाणनां पडवाथी चंडघातथी जेम सर्प, तेम ते वरदाम गुस्से थयो, तथा समुद्रनी पेठे गाजवा लाग्यो; अने मत्सर लावीने परिवार सहित हथीयारो एकठां करवा लाग्यो. पण पछी ते बाणनां अक्षरो जोइने, तथा चक्रीने आवेलो जाणीने, भेटो तथा ते बाण लेइने ते भरत पासे गयो; पछी तेनां विनयथी भरत राजा संतोष पाम्या, केम के, मोटाओनो गुस्सो प्रणिपातसुधिज होय छे. पछी त्यां तेने पर्वतनी पेठे स्थापीने, चक्री, सिं-

हनी पेठे संपूर्ण मानवाला थया थका तेज मार्गे पाछा वळ्या; तथा सैन्यमां आवीने अठमनुं पारणुं करी पूर्वनी पेठेज तेमणे चक्ररत्ननो त्यां अष्टाइमहोत्सव कर्यो. पछी वायु जेम फोतरांउने, तेम शत्रुनां समूहोने उडावता, तथा सर्वज्ञनी पेठे सुरासुरथी नमाता, मेघनी पेठे जगतने जीवितदान देनारा, ते चक्री चक्रनी पाछल चालता थका अनुक्रमे पश्चिम समुद्रने तीरे आव्या. त्यां पण पूर्वनी पेठेज तपपूर्वक रथमां बेसी तेमणे बाण छोड्युं, अने ते प्रज्ञासेशनी सज्ञामां पड्युं. त्यां बाणनां अक्षरोथी क्रोधने समावीने, ज्ञेट सहित ज्ञरत पासे आवी, नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! मने अनाथने आजे पुण्यथीज आपनुं दर्शन थयुं छे, अने तेथी हवे आपना हुकमथी हुं अहीं आपनो सामंत थइने रहीश. एम कहीने तेणे ते बाण मुकुट, कडां तथा कंदोरो ज्ञरतने आप्यां. पछी तेना हाथमां रहेला सुवर्णकुंज्ञमां रहेलुं पाणी जोइने राजाए कह्युं के, हे प्रज्ञासेश! आ जीवनी पेठे तें सांचवेलुं शुं छे? त्यारे प्रज्ञासेश कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! तेनी कथा तमो सांज्ञलो? आ सुराष्ट्र देशमां शत्रुंजय नामनुं तीर्थ छे; ते तीर्थ अनंत महिमावालुं, अनंत पुण्योनुं स्थानक, नाना प्रकारनां रत्न, औषधि, कुंड अने रसकुंपिकानी ऋद्धिवालुं, तथा दर्शनथी, श्रवणथी, स्पर्शनथी अने कीर्तनथी पण पापोने हरनारुं छे, अने ते क्षणवारमांज प्राणीउने स्वर्ग अने मोक्षनुं सुख आपे छे. वली तीर्थरूप एवां नगर, वगीचा, पर्वत, देश, ज्ञूमि विगेरेमां शत्रुंजय समान त्रण लोकने पवित्र करनारुं तीर्थ नथी. वली अन्य तीर्थोमां सेंकडो यात्राउथी माणसोने जे पुण्य थाय छे, ते पुण्य आ शत्रुंजयपर एक यात्राथीज थाय छे. ते तीर्थथी दक्षिण दिशामां, प्रज्ञाविक जलथी ज्ञरेली, अने जिनचैत्योथी मंडित थएली शत्रुंजयी नामनी नदी छे. विशेष प्रकारे तीर्थोथी संगत थएली आ पवित्र शत्रुंजयी नदी, गंगा, सिंधु आदिकनां पाणीथी पण अधिक फलने देनारी छे. पवित्र तीर्थनी वेणी समान, तथा कमलोनां समूहथी शोज्ञती आ शत्रुंजयी नदी स्नान करनाराउनां सर्व पापोने जलनां स्पर्शथी नाश करे छे. वली ते गंगानी पेठे अपूर्व पुण्यने उत्पन्न करती थकी, घणां द्रहोनां प्रज्ञाववाली तथा आश्चर्य करावनारी छे. वली तेनां शत्रुंजयी, जाह्नवी, पुं-

डरिकीणी, पापंकषा, तीर्थभूमि, हंसी विगेरे नामो छे. कदंब तथा पुंडरिक गिरिनी वच्चे, आ नदीमां महा प्रभाविक कमल नामनो ह्रद छे. आ ह्रदनी माटीनो, तेनांज जलथी पिंड करीने आंखे बांधवाथी अंधपणुं, पडल विगेरे रोगो नाश पामे छे. वली हे स्वामी! तेनुं पाणी कांति, कीर्ति अने (शुभ) गतिने देनारुं छे, तथा शाकिनी, भूत, वेताल, वायु, पित्त विगेरेनां दोषोने हरनारुं छे. वली तेथी थता उपसर्गोने ते पाणी स्पर्शमात्रथीज नाश करे छे; अने ते पाणीमां जीवनी उत्पत्ति थती नथी. वली हुं ते पुंडरीक तीर्थप्रते हमेशां नमस्कार करवाने जउं छुं, अने अहीं मारा घरमां रहेला जिनेश्वर प्रभुना स्नात्र माटे ते ह्रदमांथी जल लावुं छुं. वली आ पाणी सघला शत्रुउनां नाश माटे में राखेलुं छे, अने ते मने बहु प्रीय छे, माटे ते आपने आपवामाटे हुं लावेलो छुं; माटे तेने आप यत्नथी राखजो, केम के, ते आ दिग्यात्रामां सर्व दोषोने हरनारुं छे. एवी रीतनुं तेनुं वचन सांभलीने स्पृहावाला थया थका भरत राजा, तेणेज बनावेला विमानमां बेसीने शत्रुंजय पर्वते गया. त्यां शत्रुंजयी नदीमां स्नान करीने, तथा ते उत्तम तीर्थनो स्पर्श करीने, फरीथी वेगवाला विमानथी पोतानां आवासप्रते आव्या. पछी तेमणे प्रीतीथी ते प्रभासेशने, ते स्थानकमां वृक्षनी पेठे फरीने स्थाप्यो. वली तेज वखते गृहीरत्ने, दीव्य रसवतीथी भरत महाराजने अठमनुं पारणुं कराव्युं. त्यां ते प्रभासेशने निमित्ते अठाइ महोत्सव करीने, सूर्यनी पाछल जेम तेज, तेम ते चक्रनी पाछल चालवा लाग्यो. पछी ते चक्रीए महासिंधुनां दक्षिण कांठापर जइने, पूर्व सन्मुख लश्करनो पडाव नाख्यो. पछी चक्रीये त्यां ते सिंधु देवीनुं मनमां ध्यान धरीने अठमनो तप कर्यो, अने तेथी चलायमान थता पवनथी जेम मोजां तेम तेणीनुं आसन कंपवा लाग्युं. पछी अवधिज्ञानथी तेणीए चक्रीने आवेला जाणीने, भेटो लेइने ते तेने पूजवा माटे गइ. त्यां चक्रीने आशिष देइने, तथा जय जय शब्द करीने आकाशमां रही थकी कहेवा लागी के, हुं आपनी दासी छुं अने मारे शुं करवुं? तेनो आप हुकम फरमावो? एम कहीने महा तेजथी तिरस्कार करेल छे अंधकारनो समूह जेउए, एवा एक हजार ने आठ रत्ननां घडाउ तेणीए चक्रीने आप्या. वली तेणीए तेमने मनोहर रत्ननां सिंहासन,

मुकुट, बाजुबंध, कडां, हार, अने कोमल वस्त्रो पण आप्यां. पछी चक्रीए पण ते सघलुं लेइने तेणीने विसर्जन करी, तथा अठमनुं पारणुं कर्युं. पछी त्यां पण तेणे सिंधुदेवीने निमित्ते अठाइमहोत्सव कर्यो; अने पछी ते चक्ररत्ने देखाडेला मार्गप्रते जवा लाग्या. एवी रीते उत्तरपूर्व दिशातरफ जतां थकां अनुक्रमे ते चक्री वैताढ्य पर्वत प्रते पहोंच्या. त्यां तेणे पचीश जोजन उंचो, तथा पचाश जोजननां विस्तारवालो रूपानो वैताढ्य पर्वत जोयो. ते पर्वत जिनेश्वर प्रभुनां चैत्योथी, मोटां वनोथी, विद्याधर अने देवोनां स्थानकोथी, तलावोथी तथा लाखो गामोथी शोभतो हतो. त्यां दक्षिण बाजुए सैन्यनो पडाव नांखी, तेनां स्वामीने मनमां धरी तेणे अठमनो तप कर्यो. त्यारे वैताढ्याद्रिकुमारनुं आसन कंपवा लाग्युं, अने पछी तेणे अवधिज्ञानथी चक्रीने त्यां आवेला जाण्या. त्यारे ते चक्री पासे आवीने आकाशमां रही कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! आप जय पामो? हुं आपनो किंकर छुं, माटे मने आज्ञा आपो? एम कहीने तेणे भक्तिथी चक्रीने मणि, रत्ननां आभूषणो, सिंहासनो तथा देवदूष्य वस्त्रो आप्यां, त्यारे ते सघलां लेइने तेणे तेने त्यां स्थाप्यो. पछी तेणे अठमनुं पारणुं करीने, ते देवने निमित्ते त्यां अठाइमहोत्सव कर्यो. पछी त्यांथी चक्रनी पछाडी चालता थका चक्री तमिस्रा गुफाप्रते पहोंच्या, अने त्यां सैन्यनो पडाव नांख्यो. त्यां कृतमालने मनमां धारीने तेणे अठमनो तप कर्यो, त्यारे तेनुं आसन कंपवा लाग्युं, अने तेथी तेणे त्यां चक्रीने आवेला जाण्या. पछी तेनी सेवा करवामाटे ते त्यां आव्यो, अने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! हुं आ गुफानां द्वारप्रते तमारा द्वारपालनी पेठे रह्यो छुं. एम कहीने तेणे चक्रीने दीव्य आभूषणोनो समूह तथा स्त्रीने योग्य चौद अनोपम रत्नो, तेने योग्य पुष्पो, तथा दीव्य वस्त्रो आप्यां. पछी चक्रीए तेने त्यां स्थाप्या बाद ते पोताने स्थानके गयो, अने तेणे पण राजाओ सहित त्यां अठमनुं पारणुं कर्युं. पछी चक्रीए पोतानां सेनापतिने हुकम कर्यो के, हवे तमो सिंधुसागर, वैताढ्यनी सीमा, तथा सिंधुनां निष्कुटने साधो? पछी सुषेणे पण अर्ध सैन्यसहित चर्मरत्नथी सिंधु नदी उतरीने, लीलामात्रमांज बर्बर, भिल्ल, सिंहल, टंकण, यवन, कालमुख, म्लेछ, योनक विगेरेने जीत्या. पछी तेणे चक्री पासे आवीने तेने रत्नोनां समूहो, घोडा,

रथ तथा हाथी विगेरे सोंपी आप्यां. त्यां केटलाक दिवसो रहीने राजाए सेनापतिने कह्युं के, आ तमिस्रा गुफानां बन्ने द्वारो उघाडो? पछी तेमनी आज्ञाथी सुषेण सैन्यसहित त्यां गयो; तथा त्यां तप करीने, अने सुखथी स्नान करीने, तेणे श्वेत वस्त्रो पहेर्यां. पछी सोनानुं धूपधाणुं लेइने ते गुफापासे गयो, अने तेने देखतांज तेणे नमस्कार कर्यो. त्यां अट्ठाइ महोत्सव करीने, तथा चोखाथी अष्टमंगल चीतरीने, तेणे हाथमां दंडरत्न लीधुं. पछी सात आठ पगलां पाछां हठीने, तेणे वेगथी त्रण वार ते दंडरत्नथी कपाटप्रते ताडना करी. ते दंडघातथी ते कमाडो तडतड अवाज करता थकां उघडी गयां. पछी सेनापतिए विनंति करवाथी चक्री हस्तीरत्नपर चडीने ते गुफासमीप आव्या. पछी तेणे विचार्युं के, अहीं घात, आर्ति, अंधकार, भूत आदिकनां उपसर्गो आपणने थशे, एम विचारि तेणे चार अंगुलनुं मणिरत्न साथे लीधुं. पछी तेणे ते हाथीनां कुंभस्थलपर राख्युं; अने पछी ते चतुरंगी सेनासहित चक्रनी पाछल चालता थका गुफामां दाखल थया. त्यां तेणे आठ सोनैयानां प्रमाणवालुं, आठ कर्णिकावालुं, तथा बार योजन सुधि अंधकारनो नाश करनारूं काकिणीरत्न पण साथे लीधुं. यक्षोनां समूहथी आश्रित थएलां ते काकिणी रत्नथी, योजन योजनप्रते, ते गुफानी बन्ने बाजुउमां मांडलां करता थका ते चक्री जवा लाग्या. एवी रीते तेना उद्योतथी जता थका चक्री आज्ञालेख सरखी निम्नगा अने उन्निम्नगा नामनी गंभीर नदीप्रते पहोंच्या, तेउमांथी एक नदीमां तुंबडानी पेठे पथ्थरनी शिला पण तरती हती, अने बीजीमां शीलानी पेठे तुंबडुं पण बुडी जतुं हतुं. ते नदीउपर वार्धकीए करेला पुलपरथी ते उतर्या, अने एवी रीते ते गुफानां उत्तरद्वार प्रते पहोंच्या. पेहेला द्वारनां उघाडवानां भयथीज होय नहीं जेम, तेम ते उत्तरनां द्वारो पण पोतानी मेलेज उघडी गयां, अने तेथी चक्री ते द्वारे बहार निकल्या. एवी रीते पचाश योजननां विस्तारवाली ते गुफाने उलंगीने चक्री उत्तर भरतार्धने जीतवामाटे चाल्या. ते वखते त्यां वसता म्लेछोनां उत्पातो थवा लाग्या. ते म्लेछोनां कालवक्त्र, कालदंष्ट्र, कराल, कालदारूण, वडवामुख, सिंहमुख विगेरे उपरीउ हता. तेने दरेकनी पासे पांच करोड घोडा, दश करोड रथो, एक करोड

हाथीउं अने पचास करोड पायदल हतुं, अने तेउं एवा बलवान हता के, रणसंग्राममां देवो पण तेउंनां पराक्रमने सहन करी शकता न होता. मदोन्मत्त थएला ते म्लेछो पोतानां सैन्यो एकठां करीने चक्रीप्रते पोकार करवा लाग्या. वली तेउं क्रोधांध थइने जगतने तृणसमान गणता थका बख्तर अने हथीयारबंध थइने आमतेम दोडवा लाग्या. तेउं प्रलयकालनां वरसादनी पेठे बाणोनी श्रेणीउंने वरसावता थका चक्रीनां अग्रसैन्यनी साथे लडवा लाग्या. तेउं उछलता थका, गर्जना करता थका, तथा भुजपीडन करता थका रणांगणमां प्रगट रीते नटनी पेठे शोभवा लाग्या. वली क्रोधथी भयंकर आंखोवाला थया थका साक्षात क्षत्रिय संबंधि तेजतुल्य शोभवा लाग्या. ते वखते घोडाउंना हेषारवोथी, हाथीउंनी गर्जनाउंथी; रथोनां चित्कारोथी तथा सुभटोनां सिंहनादोथी जगत भयथी क्षोभ पामवा लाग्युं. ते वखते योधाउं पोतपोताना जयमां उत्सुक थया थका पर्वतोनां शिखरोथी वृक्षोथी तथा लोखंडनां हथीयारोथी लडवा लाग्या. केटलाको भयंकर दंडोथी, तो केटलाको मुद्गरोथी तो केटलाको बाणोथी, फरसीथी, तथा खड्गोथी शत्रुउंनी साथे लडवा लाग्या. ते वखते प्रचंड वायुथी जेम वन, तथा दुर्जनथी जेम सज्जन, तेम ते क्रूर म्लेछोथी चक्रीनां सैन्यने उपद्रव थयो. वली त्यारे ते म्लेछोनां शस्त्रोथी चक्रीनो परिवार नाशवा, भ्रष्ट थवा, पडवा, मुर्छा खावा, तथा जोवा लाग्यो. ते वखते पोतानां हाथीउंने नाशता, रथोने भांगता, तथा घोडाउंने त्रास पामता जोइने सेनापतिने कोप चड्यो. पछी ते सुषेण सेनापति ज्यारे रणसंग्राम करवा लाग्यो, त्यारे म्लेछनां लश्करीउं त्रास पामवा लाग्या, तथा दिशाउंने जोवाने पण समर्थ थया नहीं. पछी तेउं कागडाउंनी पेठे एकठा थइने, पीडीतो जेम माताप्रते तेम विचारमाटे सिंधु नदी प्रते गया. त्यां वस्त्रो तजीने, वेलुपर रहीने, तपस्याथी पोतानां मेघमाली आदिक देवोने प्रसन्न करवा लाग्या. ते वखते तेउंनां आसन कंपवाथी, तेउं पोतानां भक्त म्लेछो पासे आवीने आकाशमां रही कहेवा लाग्या के, तमोए अमोने शामाटे आराध्या छे? त्यारे तेउं कहेवा लाग्या के, आ अमारा देशने अगाउ कोइए पण पराभव कर्यो नथी, अने आ कोइ नवीन राजा आजे पराभव करवा आवेल छे, अने तेणे

अमोने नग्न कर्या. ते सांभलीने ते आग्रही म्लेछोने ते मेघकुमारो कहेवा लाग्या के, आ श्री युगादिदेवनां महा पराक्रमी पुत्र छे; वली ते भरतेश्वर नामनां आ भरतखंडनां पेहेला चक्री छे, तथा ते मंत्र, यंत्र, विष, शस्त्र, अग्नि तथा विद्यादिकथी पण जीती शकाय तेम नथी. तो पण तमारा उपरोधथी अमो तेने उपसर्ग करीशुं, एम कही तेउ अंतर्ध्यान थया. पछी आकाशमां श्याम रंगनां मेघो फेलावा लाग्या, तथा भयंकर गर्जना अने वीजलीनां कडाकाउ थवा लाग्या. पछी तेउ अंधकारनां परमाणुनी पेठे मूसलधाराथी समस्त पृथ्वीने व्याप्त करवा लाग्या. ते वखते वृक्षोनां मूलोने खोदी नाखता, तथा पर्वतनां शिखरोने पाडता थका मेघो जलना प्रवाहोथी खाडादिकोने पूरवा लाग्या. पछी, दुष्ट राजाप्रते जेम अन्यायो, रात्रिप्रते अंधकारो, तथा कलिकालमां जेम चोरो, तेम मेघनां समूहो पृथ्वीमां व्यापवा लाग्या. ते वखते चक्रीए करस्पर्शथी चर्मरत्न विस्तार्युं, अने जिनेश्वरे जेम भुवनने, तेम तेणे तेमां ते सैन्यने उधर्युं. वली तेनी पेठेज तेमणे छत्र रत्नने विस्तार्युं, अने ते पारानां बिंदुउनी पेठे चर्मरत्ननी साथे मली गयुं. पछी समुद्रमां जेम वाहाण, तेम ते चर्मरत्न पाणीमां तरवा लाग्युं, अने छत्ररत्न उपर पडता मेघने रोकवा लाग्युं. एवी रीते नूतनसृष्टि सरखा ते लश्करनुं चक्रीए पितानी पेठे रक्षण कर्युं, अने त्यारथी ब्रह्मांडनी कल्पना थइ. वली त्यां काकिणी, मणि अने, चक्ररत्नथी अंधकारनो समूह नाश होते छते, तत्काल उत्पन्न थएला धान्योथी ते सैन्य सुखे रहेवा लाग्युं. एवी रीते ते मेघकुमारोए कल्पांतकालनी पेठे सात रात्रि दिवसो सुधि पाणी वरसाव्युं. “ आ कोण पापीउ उद्वेग करवा लाग्या छे ? ” एवी रीतनां भरतनां भावने जाणीने, तेनां सोल हजार अंगरक्षक यक्षो कोप पामीने, तथा तुणीरो (भाथां) बांधीने मेघकुमारोने कहेवा लाग्या के, अरे रांकडाउ ! तमो आ चक्रीने क्रोध चडाववाने उद्यमवंत थएला कोण छो ? वली तमो मूर्खो आ भरतेश्वर चक्रीने जाणता नथी ! ! माटे हवे तमो तुरत आवीने आ चक्रीने पगे पडो ? अने तमो शरणे आव्याथी ते तमारो अपराध क्षमा करशे. अने जो तमो तेम नहीं करशो, तो तेनां चाकर एवा अमो तमोने हणथी मारशुं; ते सांभलीने मेघकुमारोए आ-

काशमांथी वादळांउनो समूह खेंची लीधो. पछी ते मेघकुमारो यक्षोनी साथे चक्रीपासे आवीने नमस्कार करवा लाग्या, तथा पोतानां अपराधोनुं प्रायश्चित करवा लाग्या. पछी चक्रीए पण तेमनुं सन्मान करीने, तेउने छोडी मेल्या, त्यारे तेउ म्लेछोपासे आवी कहेवा लाग्या के, आ चक्री अमाराथी पण जीताय तेम नथी, माटे तमो तुरत तेमने जइ नमस्कार करो? एवी रीते शरणाभूत मेघकुमारोए तेमने तेम कह्याथी, ते म्लेछो मुखमां तरणां लेइने लोटता थका चक्रीने नमवा लाग्या. तथा पछी तेउए रत्नोनां समूहो, घोडा, हाथीउ, अने मेरु सरखा सोनानां ढगला चक्रीनां चरणपासे मेल्या; तथा बहु भक्ति पूर्वक तेउ मिष्ट वचनो बोलवा लाग्या. पछी चक्रीए पण तेमने रजा आप्याथी तेउ पोताने स्थानके गया. एवी रीते सन्मानित करेला पण म्लेछोए, मनमां मत्सर लावीने, क्षुद्र मंत्रोथी चक्रीनां सैन्यमां अनेक रोगो फेलाव्या. ते वखते सुबुद्धि मंत्री नमस्कार करीने, तथा मुकुटपर बन्ने हाथो जोडीने चक्रीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! आपणा सैन्यमां हाथी, घोडा अने माणसोने अद्भूत रोगनी पीडा थइ छे, अने ते दीव्य शक्ति तथा औषधोथी पण मटती नथी, माटे ते कोइ दुष्मने अभिचारादिकथी उत्पन्न करेली लागे छे. एवी रीते ते मंत्री जेटलामां चक्री साथे वात करे छे. तेटलामां आकाशतलने उद्योतवाळुं करता थका महा तेजस्वी बे विद्याधरो त्यां आकाशमांथी उतर्या. ते वखते आदरथी उंचां मुखोवाला सैन्यनां लोकोथी जोवाता ते विद्याधरो चक्रीने नमीने तेमनी पासे बेठा. त्यारे चक्रीए पण उत्तम आकृतिवाला, तथा महा तेजस्वी एवा तेउ बन्नेने जोइने बहुमान पूर्वक पुछ्युं के, तमो कोण छो? त्यारे चक्रीनी मूर्ति अने वाणीथी खुशी थएला ते विद्याधरो पण प्रसन्न मुखवाला थया थका, नमीने चक्रीने कहेवा लाग्या के, हे स्वामि! अमो बन्ने वायुसरखी गतिवाला विद्याधरो छीयें, तथा आजे आपनां तातने वांदवाने गया हता. त्यां ते युगादीश प्रभुनां मुखथी शत्रुंजयनी कथा सांभळीने, अमो बन्नेए त्यां जइ, ते उत्तम तीर्थने स्पर्श कर्यो. त्यां आनंदपूर्वक अठाइमहोत्सव करीने, वृषभेश प्रभुनां पुत्र आपने अमो जोवाने अहीं आव्या छीये. वळी स्वामिनां पुत्रप्रते पण स्वामिनी पेठेज वर्तवुं, एवो क्रम होवाथी आप पण अमोने

युगादीश प्रभुनी पेठेज सेववालायक छो. वली हे स्वामि! आपनुं आ सैन्य मंद तेजवालुं केम जणाय छे? केमके, सूर्य अने पाणी छतां कमलोनो संकोच केम संभवे? त्यारे चक्रीये कह्युं के, मंत्र अने औषधिउथी पण असाध्य रोग अकस्मात आ सैन्यमां फाटी निकल्यो छे, तेथी प्राणीउने ग्लानि थएली छे. ते सांभली ते विद्याधरो चक्रीशने कहेवा लाग्या के, हे राजन्! शत्रुंजय पर्वतपर शाश्वतुं रायणनुं वृक्ष छे. तेनो प्रभाव शाकिनी, भूत, वेताल, तथा दुष्ट देवादिकनां दोषने हरनारो छे, एम अमोए बहु वखत युगादीश प्रभुनां मुखथी सांभल्युं छे. अने ते वृक्षनी छाल, माटी, शाखा, पत्र आदिक अमारी पासे छे, तेनुं पाणी करी, ते सेववाथी तमारुं सैन्य भले निरोगी थाय. पछी चक्रीए तेम करवानी आज्ञा आपवाथी तेउए सैन्यने निरोगी कर्युं; पछी चक्रीए तेमने सन्मान आप्याबाद तेउ पण पोताने स्थानके गया. पछी पोतानां सैन्यने निरोगी जोइने हर्षित चित्तवाला थइ, चक्री पोतानुं मस्तक धुणाववा लाग्या. पछी ते हर्षनेज जाणे बहार कहाडता होय नहीं, तेम ते कहेवा लाग्या के, अहो! आ उत्तम तीर्थनो महिमा तो वचनातीत छे; वली हुं एम मानुं छुं के, आ शिवाय कोइ उत्तम तीर्थ त्रणे जगतमां पण नथी, वली तेनां चिंतनमात्रथी पण बन्ने लोकनुं सुख मले छे. वली अगाउ पण में आ तीर्थनो अतिशय महिमा प्रभास देवनां मुखथी सांभल्यो हतो; वली आ दिग्जय कर्या बाद संघ सहित ज्यारे हुं आ तीर्थनी यात्रा करीश, त्यारेज आ मनुष्य जन्मने हुं सफल मानीश. एवी रीतनी अमृत सरखी वाणी बोलता ते चक्री, सर्व सभासदोने परम प्रीतिनां हेतुरुप थया. पछी चक्रीए फरीने क्रोधयुक्त थइने म्लेच्छो प्रते चक्र मेल्युं; त्यारे तेनां अधिष्टायक देवो तेउने तुरत बांधीने लाव्या. त्यारे चक्रीए तेमने दीन मुखवाला, तथा दीन वाक्योवाला जोइने, शिक्षा माटे तेउनां हाथी रत्नादिक लेइने, तेउने जता मेल्या. पछी सुषेण पण गिरि अने सागरनी मर्यादावाला सिंधुनां उत्तर निष्कुटने चक्रीनी आज्ञाथी जीतीने त्यां आव्यो. त्यां विविध प्रकारनां भोगोने भोगवता थका चक्री घणो काल रह्या; पछी एक दहाडो चक्ररत्न आयुधशालामांथी निकलीने बहार चाल्युं. पछी ते मार्गे अनुक्रमे चालता थका

चक्री क्षुद्रहिमाद्रिनां दक्षिण प्रदेश प्रते आव्या. त्यां सैन्यनो पडाव नाखीने, अठ्ठम तप करीने, रथमां चडी चक्री तुरत क्षुद्रहिमाद्रिपर गया. त्यां रथनां शीर्षपर त्रणवार ताडन करीने, पोतानां नामनुं बाण तेनां अधिष्टायक देवप्रते तेणे मेल्युं. त्यारे ते बाण बहोतेर जोजन वेग- थी आकाशमार्गे जइने पड्युं, अने तेथी हिमवंत् कुमारने गुस्सो चड्यो, पण तेपरनां अक्षरो वांचवाथी तेनो गुस्सो उतरी गयो, तथा हाथमां भेट लेइने ते चक्री पासे आवी नमस्कार करवा लाग्यो. एवी रीते चक्री- नुं आराधन करीने, तेमनी रजा लेइ ते पोताने स्थानके गयो, अने चक्री पण पोतानी सेनाप्रते आव्या. पछी ऋषभकूट पर्वत प्रते जइने तेणे त्रणवार रथपर ताडना करी, तथा काकीणी रत्नथी त्यां लख्युं के, "आ अवसर्प्पिणीमां त्रीजा आराने छेडे, श्री युगादीश प्रभुनो पुत्र, तथा लक्ष्मीथी इंद्र सरखो, हुं भरत नामे चक्रवर्ती थयो छुं." पछी त्यांथी ते चक्री लश्कर सहित तेज मार्गे जता थका भरतार्ध प्रते रहे- ला वैताढ्य पर्वत पासे गया. हवे पेहेलां ज्यारे आदिदेव प्रभु राज्य करता हता, त्यारे कछ महाकछनां नमि अने विनमि नामनां पुत्रोने प्रभुए कंइक कार्य माटे क्यांक मोकल्या हता; अने ज्यारे तेउ ते कार्य करीने पाछा आव्या, त्यारे तो तेमणे प्रभुने संयमसहित जोया. एवी रीते निर्मम प्रभुने नहीं जाणीने "हे तात! हे तात!" एम कहेता थका पुत्रनी पेठे तेउ प्रभु पासे राज्य याचवा लाग्या. पछी तेउ "भर- तने तो सेवशुं नहीं," एम प्रतिज्ञा करीने, तलवार लेइ प्रभुनी सेवा करवा लाग्या. एक दहाडो पातालेंद्र प्रभुने वांदवा आव्यो, त्यारे तेणे तेमने प्रभुनी अत्यंत भक्ति करता जोया; अने तेथी तेणे तेमने हर्षथी सोल हजार विद्याउ, तथा वैताढ्यनी दक्षिण अने उत्तर श्रेणिनुं राज्य आप्युं. त्यां ते नमि अने विनमि सूर्य चंद्रनी पेठे आनंद पूर्वक राज्य करता हता. हवे भरत चक्री पण रथपर बेसी त्यां आव्या, अने पोतानां नामनुं बाण तेणे तेउप्रते फेंक्युं. ते बाणने जोइ तेउ बन्ने परस्पर विचारवा लाग्या के, जंबूद्वीपनां भरत क्षेत्रमां आ भरत प्रथम चक्री थया छे. अने ते पोतानां भुजाबलथी गर्वित थइने आपणीपा- सेथी पण दंडनी याचना करे छे; पण तेनी पासे कंइ विद्यामंत्र नथी; एम

विचारि क्रोधथी लालचोल थइ तेउं लडवाने तैयार थया. हवे तेउंनी आज्ञाथी बीजा विद्याधरो पण महा सैन्योथी वींटाया थका त्यां आव्या. केटलाको तो पोतानां विमानोथी आकाशने सेंकडो सूर्यवालुं करता थका, तथा केटलाको रथोथी आकाशने गरुडमय करता थका, केटलाको मदझरता हाथीउंथी आकाशने जंगम पर्वतमय करता थका, केटलाको घणा पालाउंथी आकाशने बाणमय करता थका, अने केटलाको गर्जना करता दुंदुभिनां अवाजोथी पर्वतोने पण गजावता थका, तथा हाथमां हथियारो लेइने त्यां आव्या. हवे दिवसे पण विमानोथी आकाशने ज्योतिष्चक्रवालुं करता थका ते विद्याधरो रणसंग्राम करवा लाग्या. हवे चक्रीनुं सैन्य पण कोइ वखते यक्षोयें रचेलां विमानोथी, तो कोइ वखते रथ, हाथी अने घोडाउंथी.पण ते विद्याधरोनी साथे लडवा लाग्युं. ते वखते विमानो विमानोनी साथे, घोडा घोडाउंनी साथे, हाथी हाथीउंनी साथे, पाला पालाउंनी साथे तथा रथो रथोनी साथे, धनुषधारीउं धनुषधारीउंनी साथे, तथा तलवारवालाउं तलवारवालाउंनी साथे, एम बन्ने सैन्यो लडवा लाग्यां. हवे अहीं विद्याधरोए पोतानी विद्याउंथी जे जे लश्करमां बनाव्युं, ते ते सघलुं चक्रीनां अंगरक्षक यक्षोए दूर कर्युं. एवी रीते बार वर्षोसुधि लड्याबाद चक्रीए तेउंने जीत्या, त्यारे तेउं हाथ जोडीने, तथा नमस्कार करीने जरत महाराजने कहेवा लाग्या के हे स्वामि! मेरुउपरांत बीजो पर्वत कयो छे? वायु उपरांत कोण वेगवालो छे? वज्रसमान शुं तीक्ष्ण छे? तेम तमाराथी बीजो कोण शूरो छे? वली हे स्वामी! आजे तमोने जोवाथी तो अमोए साक्षात प्रजुनेज जोया छे, माटे श्री युगादिदेवनी पेठेज तेनां पुत्र एवा तमोने अमो सेवशुं. वली आपनी आज्ञाथी अमो आ वैताढ्यपर दुर्गपालोनी पेठे रहीशुं. एम कही विनयना आधारजूत एवा विनमि राजाए सर्व अंगे आवेला तारुण्यथी मनोहर अंगवाली, तथा नेत्र, मुख, हाथ, हृदय अने पगरूपी कमलोए करीने कामदेव रूपी राजाने क्रीडा करवाने तलाव सरखी, तथा चलकती कांतिरूपी अमृतनां समूहथी जरेली, सर्व रोगोने शांत करनारी, अने इच्छा प्रमाणे दीव्य जलनी पेठे शीतोष्णनां स्पर्शवाली. सर्व शुजलक्षणोथी संपूर्ण, तथा सर्व अवयवोथी सुंदर, एवी पोतानी सुजद्रा नामनी कन्या

चक्रीने आपी. पछी चक्रीए तेमने रजा आपवाथी, तेउए पोतानां पुत्रोने राज्य सोंपी संसारथी विरक्त थइ, श्री रुषन्नदेव प्रन्नुनी पासे व्रत लीधुं. पछी चक्री चक्रनी पाछल चालता थका गंगाने किनारे पहोंच्या, अने त्यां तेमणे नहीं अति दूर, तेम नहीं अति नजदीक लश्करनो पडाव नाख्यो. त्यां पण सुषेण सेनापति चक्रीनी आज्ञाथी सिंधुनी पेठे गंगा नदी उतरीने; तथा उत्तर निष्कुट साधीने पाछो आव्यो. त्यां अठम तपथी सिद्ध थएली गंगा देवीए चक्रीने बे सुवर्णनां सिंहासनो, एक हजार ने आठ रत्नोनां कुंन्नो, हार, बाजुबंध, मुकुट, रत्नशय्या, दीव्य वस्त्रो तथा दीव्य पुष्पो आप्यां. पछी लावण्यनां मनोहर सुंदरपणाथी चाकररूप करेल छे कामदेवने जेणे, एवा ते चक्रीने जोइने, तेनी साथे विलास करवानी इछाथी ते मनमां चिंतववा लागी के, शुं आ इंद्र छे? के चंद्र छे? के कुबेर छे? के सूर्य छे? अथवा देवोनुं ते आवुं रूप क्यांथी होय? आ तो जगतनां स्वामी श्री युगादिप्रन्नुनां पुत्र न्नरत छे, केम के, रत्नाकर विनां आवुं रत्न बीजी जगोए कंइ उत्पन्न थतुं नथी. एवी रीते कामदेवनां बाणथी व्यग्र थइने ते कटाक्षो मारवा लागी, तथा न्नरतनी प्रार्थना करवा लागी, तेथी न्नरते तेणीने रतिवेश्ममां दाखल करी. पछी त्यां तेणीनी साथे विविध प्रकारनां न्नोगो न्नोगवतां थकां चक्रीए एक दिवसनी पेठे एक हजार वर्षो निर्गमन कर्यां. हवे एक दहाडो इंद्र जेम देवो सहित सुधर्मा सन्नाने, तेम न्नरत राजा राजाउ सहित पोतानी सन्नाने शोन्नावता हता. एटलामां मूर्तिवंत चंद्रसूर्य सरखा सौम्य कांतिवाला बे चारणमुनिउ आकाशमांथी उतर्या. ते वखते न्नरत चक्रीए संन्रम सहित उठीने न्नक्ति पूर्वक साक्षात विवेक अने विनय सरखा ते मुनिउने नमस्कार कर्यो. पछी तेमने सिंहासनपर बेसाडीने, चक्री हाथ जोडीने तेनी सन्मुख बेठा. पछी श्री युगादीश प्रन्नुना पुत्रने ते न्नवमां मोक्षगामी जाणीने ते मुनि गंन्नीर वाणीथी तेने कहेवा लाग्या के, मैत्रीचतुष्क, अष्टांग योगनो अन्न्यास, उपसर्गोनुं सहनपणुं, आर्जवता, कषाय, विषय अने आरंन्नोनो परिहार, अप्रमादीपणुं, प्रसन्नपणुं, कोमलता, तथा समता एटला मोक्षनां मार्गो छे. पछी ते देशनाने अंते रा-

जाए मुनिने नमस्कार करी पूछ्युं के, परोपकारमां रक्त एवा आप अहीं क्यांथी आवो छो ? वली मने एम जणाय छे के, रागद्वेषथी मुक्त थएला तथा पोतानां शरीरमां पण ममता विनाना एवा तमो केवल मने पवित्र करवा माटेज अहीं पधारेला लागो छो. त्यारे तेओमांथी एक मुनिए राजाने कह्युं के, हे राजन् ! अमो श्री युगादि प्रभुने वांदवा माटे गया हता. त्यां तेमनां मुखथी श्री पुंडरिक गिरिनुं उज्ज्वल माहात्म्य सांभलीने तेनो स्पर्श करवा माटे अमो आकाशमार्गे जवा लाग्या. त्यां देवो सहित ईशानेंद्रे अमोने जोइ आनंदित मनवाला थइने मस्तक धुणावी कह्युं के, हे भगवन् ! आ पर्वतनुं आश्चर्यकारक माहात्म्य तमो जुओ ? आ हुं नरकगामी हतो, त्यांथी हुं आ इंद्र थयो छुं. हुं महाविदेह क्षेत्रनां पशुग्राममां सुशर्मा नामे ब्राह्मण हतो, ते दुःख अने दारिद्रनो तो एक मुख्य स्थानकरूप हतो. एक दहाडो ते आखा गाममां भिक्षा माटे भम्यो, पण त्यां तेने कंइ पण नहीं मलवाथी, ते केवल खाली हाथे पाछो पोताने घेर आव्यो. एवी रीते खाली हाथे तेने आवेलो जोइ, तेनी स्त्री क्रोधथी हाथमां सांबेलुं लेइ तेने मारवा दोडी. सुशर्मा दरिद्रताथी पेहेलेथीज पीडित थयो हतो, अने स्त्रीना आ आक्रोशथी तो ते वधारे क्रोधातुर थयो. पछी तेणे स्त्रीने वारी तो पण ते क्रोधथी शांत थइ नहीं, त्यारे तेणे तेणीने जोरथी पाणो मार्यो. ते पाणो मर्मस्थानमां लागवाथी ते मुर्छित थइने पडी, अने तुरत मृत्यु पामी. ते जोइ तेनो पुत्र क्रोधायमान थइ कहेवा लाग्यो के, अरे कुलचंडाल ! आ तें शुं अकार्य कर्युं ? ते वचनथी क्रोधायमान थइ ते ब्राह्मणे, पूर्वनां तापथी तप्त थइने, तेने तथा रडती एवी पुत्रीने पण मारी नांखी. पछी भयभीत थएलो तथा क्षोभ पामेल छे सघली इंद्रिओ जेनी एवो थयो थको, ते जवा लाग्यो, एटलामां कोइ गाय साथे अथडावाथी तेणे तेणीने पण मारी नांखी. पछी तेने पकडवा माटे कोटवालो तेनी पाछल दोड्या, त्यारे भयभ्रांत थइ, अंध तुल्य थयो थको ते पोतानां पापथी नरक सरखा कुवामां पड्यो. धिक्कार छे क्रोधने ! ! ! के जेने वश थइ मूढ लोको कृत्याकृत्यनो विचार करता नथी, अने नरकना खाडामां पडे छे. ! ! ! हवे ते कुवामां पडतां थकां ते ब्राह्मणनां टुकडे टुकडा थइ

गया, अने ते पीडाथी ते मृत्यु पामी ज्ञयंकर दुःखदायक सातमी नरके गयो. त्यां बंधन, छेदन, ताप, ताडन, आदिक महादुःखो ज्ञोगवीने, मृत्यु पामी ते सिंह थयो. त्यां घणां निरपराधी जंतुउने हणीने ते फरीने पाछो चोथी नरकमां गयो. त्यांथी चवी चांडालकुलमां क्रूर कार्य करनारो थयो, अने फरीने पाछो ते सातमी नरके गयो. त्यां बहु कष्ट सहन करीने ते दृष्टिविष सर्प थयो, त्यां एक दहाडो तेणे पोतानां बिलपासे केटलाक व्रतधारी मुनिउने जोया. त्यारे क्रोधथी फुंफाडा मारतो थको, तेउने डंखवानी इछाथी ते दोडवा लाग्यो; पछी तेउने जोइने ते चिंतववा लाग्यो के, आ तो मूर्तिथी शांत, तथा व्याधिरहित देखाय छे, एम विचारि ते धीरे धीरे चालवा लाग्यो. त्यां तेणे ते मुनिउने विद्याधरोप्रते उत्तम धर्मनो उपदेश देता, तथा शत्रुंजयनुं माहात्म्य कहेता दीठा, अने ते माहात्म्य तेणे पोते पण सांज्ञव्युं. ते शत्रुंजयमाहात्म्य सांज्ञव्याथी, तथा कर्मानां लघुपणाथी तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. अने तेथी ते पोतानां पूर्वज्ञवोने याद करवा लाग्यो. पछी ते बिलमांथी निकलीने, पोतानी संपदानां निदानज्ञूत मुनिनां चरणोने कुंडालांरूप थइने नमतो हवो. पछी तेनां ज्ञावने जाणीने मुनिए तेने अनशन कराव्युं, तथा विद्याधरनी साथे तेने पुंडरिक गिरिप्रते पहोंचडाव्यो. त्यांथी ते काल करीने आ हुं इंद्ररूपे थयेलो छुं. माटे हे मुनिउ! हुं एम मानुं छुं के, पृथ्वीपरनां सघलां तीर्थोमां तेना सरखुं बीजुं कोइ पापोने हरनारूं तथा उत्तम तीर्थ नथी. पछी ते महाऋद्धिवान इंद्र ते वात ज्ञरताधीशने निवेदन करीने, चंदन अने कपूरनां काष्टोथी ते सर्पना पुद्गलनी सत्क्रिया करी. त्यां दाहज्ञूमिपर रत्नोनुं सिंहासन करीने, तथा ते महातीर्थने नमस्कार करीने इंद्र पोतानुं राज्य पालवा लाग्यो. एवी रीतनुं चरित्र सांज्ञलीने हे चक्री! अमो समाधिथी वारंवार ते तीर्थनो स्पर्श करीए छीए. हवे ते तीर्थप्रते जतां अमोए आ तमारुं सैन्य जोयुं. अने तमो अमारा गुरुनां पुत्र छो, तेथी आदरपूर्वक अमोए तमारुं आजे दर्शन कर्युं. हवे आप अमोने रजा आपो? केम के अमारे तीर्थप्रते जवुं छेः वली अमोए आपनो अति उत्तम विवेक अने विनय जोयेलो छे. पछी चक्रीए नमस्कार कर्या बाद तेउ त्यांथी चालता थया; अने चक्री

पण ते वात सांभली मनोरथ करवा लाग्या के, ते दिवस, ते क्षण अने ते रात्रि क्यारे आवशे ! ! के जे वखते हुं संघसहित श्रीशत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करीश. हवे चक्री गंगाने समजावीने, तथा तेनी आज्ञा लेइने प्रबल लश्कर सहित खंडप्रपात नामनी गुफासन्मुख चालवा लाग्या. त्यां जइ अष्ठम तप करवाथी चलितासन थएलो नाट्यमाल देव भेटणां सहित चक्रीपासे आव्यो; तथा तेणे चक्रीने आभूषणप्रमुख आप्यां. पछी चक्रीए तेने बहुमान पूर्वक रजा आपवाथी ते पोताने स्थानके गयो. पछी त्यां चक्रीनी आज्ञाथी सुषेण सेनापतिए तमिस्रानी पेठेज खंडप्रपातनां द्वारो पण क्षणवारमां उघाड्यां. पछी चक्रीए हाथीपर चडीने तथा तेनां जमणा कुंभस्थलपर मणिरत्न राखीने ते गुफामां प्रवेश कर्यो. त्यां सैन्यसहित चालतां ते चक्रीए पूर्वनी पेठेज काकिणी रत्नथी गोमुत्रिका आकारनां मंडलो लख्यां; तथा निम्नगा अने उन्निम्नगा नदी ते उतर्या; अने त्यां ते गुफानुं दक्षिण द्वार पण पोतानी मेलेज उघडी गयुं. पछी ते गुफानां द्वारमांथी निकलीने गंगानां पश्चिम कांठापर तेणे पडाव नांख्यो, तथा अष्ठमनो तप कर्यो. ते अष्ठमने अंते एक हजार यक्षोथी अधिष्ठित थयेला प्रख्यात नवे निधानो तेनी समीप आव्यां. तेउनां नामो नैसर्प , पांडुक, पिंगल, सर्वरत्नक, महापद्म, काल, महाकाल, माणवक अने शंवक हतां. तेउनी उंचाइ आठ योजननी, पोहोलाइ नव योजननी, तथा लंबाइ बार योजननी हती. वली तेउनांज नामवाला तथा एक पल्योपमनां आयुष्यवाला, तेउनां नागकुमार नामनां अधिष्ठायको चक्रीने आवीने नमस्कार करवा लाग्या; अने कहेवा लाग्या के, अमो गंगानां मुखपर मागधतीर्थनां रहेनारा छीए, तथा हे महाभाग ! तमारां भाग्योथी वश थइने अमो तमारी पासे आव्या छीयें. वली हे चक्री ! तमारां भाग्यनी पेठे अमो कदी पण क्षय पामनारा नथी, माटे तमारी इछा प्रमाणे तमो अमोने दान तरिके आपो ? अने भोगवो ? एवी रीते ते निधानो प्राप्त थवाथी चक्रीए अठाइ महोत्सव कर्यो: तथा कल्पवृक्षथी पण अधिक दान ते पोतानी इछा मुजव देवा लाग्या. पछी चक्रीनी आज्ञाथी सुषेण पण गंगानो दक्षिण निष्कुट साधीने पाछो त्यां आव्यो. हवे त्यां केटलोक वखत हर्षपूर्वक रह्या बाद चक्ररत्न अयोध्याप्रते आ-

काशमार्गे जवा लाग्युं. एवी रीते ब खंड पृथ्वीनां स्वामि, सुर असुर अने नरोथी विंटाएला, तथा अखंड आज्ञावाला चक्री केटलेक दिवसे अयोध्या नजदीक पहोंच्या. चोरासी लाख हाथी, तेटलाज घोडा अने तेटलाज रथो, तथा छन्नु क्रोड सुभटोनां परिवारवाला ते भरत चक्री, पेहेला प्रयाणनां दिवसथी मांडीने साठ हजार वर्षों गया बाद पोतानां नगरमां आव्या. त्यां विनीता नगरथी थोडे दूर तेमणे लश्करनो पडाव नांख्यो, तथा त्यांनी अधिष्टायक देवीप्रते तेमणे अठमनो तप कर्यो. पछी वादलांमांथी जेम सूर्य, तेम पौषधशालामांथी निकलीने चक्रीए सर्वसंपदानां कारणरूप अठमनुं पारणुं कर्युं. पछी अयोध्यामां लोकोए पगले पगले तोरणो बांध्यां, तथा केसर अने कुंकुमनां जलथी पृथ्वीपर छंटकाव कर्यो. वली भरतनां चरित्रोथीज होय नहीं जेम, तेम लोकोए घरोमां चित्रामणो कर्यां, तथा सर्व जगोए त्यां मंगलध्वनिउ फेलावा लागी. वली ते वखते त्यां लोकोए हर्षथी उमदा उमदा पोषाको पेहेर्या, तथा जगोजगोए सोनानां स्तंभोपर मांचाउ मांड्या. वली त्यां चक्रीने जोवामाटे जाणे सूर्यबिंबोज आव्यां होय नहीं, तेम दरेक मांचाउपर रत्ननां वासणोनां तोरणो शोभतां हतां. वली त्यां चालता फुवाराउथी अचानक भर्तारनां दर्शनथी अयोध्यारूपी स्त्री जाणे पसीनावालीज थइ होय नहीं, तेम देखावा लागी. वली ते अयोध्यारूपी स्त्री विचित्र प्रकारनी पताकाउरूपी हाथोथी घणे काले आवेला पोताना पतिने जाणे उत्सुकताथी आलिंगन करवाने इच्छती होय नहीं, तेम देखावा लागी. वली ते अयोध्यारुपी स्त्री, लोकोए धूपधाणामां करेला धूपमांथी निकलता अत्यंत धुंवाडानां मिशथी जाणे पोतानां भर्तारनां वियोगने दूर करती होय नहीं, तेम लोकोथी तर्क करावा लागी. हवे ते वखते ते नगरीमां प्रवेश करवानी इच्छाथी चक्री ऐरावण सरखा हाथीपर स्वार थया. जगतनां आ एकज पतिने सूचवनारा, तथा तेनां यश सरखा श्वेत छत्रश्री ते चक्री शोभवा लाग्या. वली मानस सरोवरमांथी तेनां मुखरुपी कमलप्रते आवेला हंसोथीज होय नहीं जेम तेम बन्ने पडखे वींझातां चामरोथी ते शोभवा लाग्या. मांहोमांहे भटकातां किरणोथी जाणे युद्ध करतां होय नहीं, एवां रत्नोथी शोभता तथा इच्छित दान देवाथी जंगम

कल्पवृक्ष सरखा ते चक्री देखावा लाग्या. वली ते ते दिग्जयथी थएलां विचित्र चरित्रोनां वचनोथी पगले पगले सुभटोथी जेम, तेम सुरासुरोथी ते स्तुति करावा लाग्या. एवी रीते लोकोनां शरीरोथी पगले पगले नमाता ते चक्री नगरीमां, अने गुणोथी माणसोनां हृदयमां पण प्रवेश करवा लाग्या. पछी ते लाखो झरुखाउं रुपी नेत्रोथी उत्सुकपणे जोता, तथा उत्कंठा अने हर्षथी पताका रुपी हाथोथी नाचता, तथा कोइ जगोए इंद्रनील मणिउंथी श्याम, तो कोइ जगोए स्फटिकोथी निर्मल, तो कोइ जगोए माणिकथी लाल, तो कोइ जगोए सुवर्णथी पीला, अने विचित्र वर्णोथी देवलोक सरखा एकवीस भूमिवाला पोतानां पितानां मेहेल प्रते पहोंच्या. पछी चक्री वेदिकापर पग मुकीने, पर्वतपरथी जेम केसरी तेम हाथीपरथी नीचे उतर्या; अने बीजाउं पण पोतपोतानां वाहनोपरथी उतर्या. पछी त्यां चक्री लोकोनी भेटोने स्वीकारता, तथा नमस्कार करता माणसोने प्रीतिथी बोलावता थका क्षणवार थोभ्या. पछी तेमणे पोतानां शोल हजार अधिष्टायक यक्षोने यथोचित पूजीने विसर्जन कर्या; वली तेवीज रीते तेमणे बत्रीस हजार राजाउंने, सेनापतिने, पुरोहितने, गृहपतिने अने वार्धकीने पण विसर्जन कर्या; तथा एवी रीते तेणे सघलाउंने विसर्जन कर्या पछी इंद्राणी सहित जेम इंद्र, तेम सुभद्रा नामे स्त्रीरत्नसाथे, तथा बत्रीस हजार बीजी राणीउंथी, तथा तेटलीज जनपदराजाउंनी कन्याउंथी तथा बत्रीस पात्रो अने बत्रीस नाटकोथी वींटाएला ते चक्री, मणि अने रत्नोनी शिलाउंनी श्रेणिउंथी आपेल छे, दृष्टिने उत्सव जेणे एवा मेहेलमां, धनद जेम कैलासमां तेम प्रवेश करता हवा. त्यां श्री ऋषभदेव प्रभुनी मूर्तिने नमस्कार करीने, चक्री स्नानपीठपर गया, तथा पछी भक्तिथी, पुष्प, धूप, अक्षत विगेरेथी तेज मूर्तिनी तेमणे पूजा करी. पछी चंद्रशालामां जइने राजाउंनां समूहनी साथे, माणसोने आश्चर्य करनारां भोजनोथी तेमणे आहार कर्यो. पछी तांबुल, चंदन, पुष्पमाला, श्वेतवस्त्रो, तथा आभूषणोथी ते चक्री इंद्र सरखा शोभवा लाग्या. पछी त्यां दीव्य संगीत, नाटक तथा स्त्रीउंनां विलासोथी तेमणे केटलोक काल सुखमां गाल्यो. एक दहाडो देवो अने मनुष्योए आवी चक्रीने विनंति करी के, हे छ खंडनां

स्वामी ! तमो महाक्षत्रीय छो; अने तेथी हे प्रभु ! अमोने आप महाराज्यनां अभिषेक माटे आज्ञा आपो ? केम के जिनप्रते जेम इंद्रोनुं तेम चक्रीप्रते अमारुं ते कार्य छे. पछी चक्रीए तेमने तेम करवानी आज्ञा आपवाथी क्षणवारमांज विद्याधरो, तथा यक्षो एकठा थया, अने तेओए पूर्व दिशानां मंडनरुप रत्नोनां समूहोथी मंडप रच्यो. पछी तेओ द्रहो, नदीओ, क्षीरसमुद्र, अने तीर्थोमांथी पाणी, माटी तथा वेलु लाव्या. पछी चक्रीए पौषधशालामां जइ अठमतप कर्यो; केम के तपथी मलेलुं राज्य तपथीज वृद्धि पामे छे. पछी उत्तम वस्त्रो पेहेरीने ते राणीओ सहित, नाट्यरसमां मग्न थइने ते मंडपमां गया. मेरुने जेम सूर्य, तेम चक्रीए सिंहासन, तथा मणिमय स्नानपीठने प्रदक्षिणा करी. पछी पूर्व तरफनां पावडीयांओथी सिंहासनपर चडीने, स्त्री सहित ते पूर्वसन्मुख बेठा. वली त्यां बीजी बत्रीस हजार स्त्रीओ पण आसनोपर बेठी; पछी भक्तिवान राजाओ उत्तर तरफनां पावडीआंओथी ते स्नानपीठपर चड्या. वली सेनापति, गृहपति, वार्धकी, पुरोहित तथा श्रेष्टि आदिको दक्षिण बाजुनां पावडीआंओथी त्यां चड्या. वली ते वखते बीजाओ पण चक्रीने जोइ हाथ जोडीने, हर्षित थया थका यथायोग्य आसनोपर बेठा. त्यां चारण श्रमणोए प्रथम जैन आगममां कहेली विधिपूर्वक चक्रीने मंत्रस्नान कराव्युं. पछी तेनां आभियोगिक देवोए, इंद्रोए जेम जिनने तेम शुद्ध तीर्थोदकथी तेमनो अभिषेक कर्यो. पछी शुभ क्षणे बत्रीस हजार राजाओए तथा बीजा गोत्रवृद्धोए अने सेनापति प्रमुखोए पण तेमनो अभिषेक कर्यो. पछी चंदनथी लिप्त छे अंग जेमनुं, तथा चांदनी सरखा श्वेत वस्त्रवाला ते चक्री, शरद ऋतुनां वादलांओथी वींटाएला मेरुपर्वत सरखा शोभवा लाग्या. पछी देवोए चैत्यपर जेम कलश, तेम तेमनां मस्तकपर ऋषभ प्रभुने इंद्रे आपेलो मुकुट स्थापन कर्यो. वली तेओए पवित्र मोतीओथी गुंथेलो हार तेमनां कंठमां स्थापन कर्यो. ते हारनां काठिन्यपणाने भेदनारी पारिजातनां पुष्पोनी अत्यंत सुगंधिवाली माला तेओए चक्रीनां कंठमां स्थापन करी. पछी चक्री ते रत्ननां सिंहासनथी उठ्या, अने तेज वखते तेनां प्रतिबिंबोनी पेठे बीजाओ पण त्यांथी उठ्या. पछी जे मार्गेथी सिंहासनपर चड्या हता, तेज मार्गेथी उतरीने चक्री

जंगम मेहेल सरखा हाथीनां स्कंधपर चड्या. पछी फरीने स्नानगृहमां जइ, स्नान करी तथा प्रभुने पूजीने तेमणे अठमनुं पारणुं कर्युं. एवी रीते जुदा जुदा देशोमांथी आवेला राजाउंए, देवोए, तथा विद्याधरोए तेमनो बार वर्षोसुधि अभिषेक कर्यो, ते वखते ते अभिषेकथी मनोहर एकांत सुखमकाल सरखो त्यांनां लोकोनो काल निर्गमन थयो. एवी रीते चंद्रनी पेठे सौम्य, सूर्यनी पेठे शत्रुउं प्रते तीव्र, कुवेरनी पेठे धनवान, वरुणनी पेठे भुवनेश, तेजथी अग्नि सरखा, धर्मनी पेठे प्रसाद अने दंड करनार, कामदेव सरखा रूपवाला, दिवसे विकस्वर थएला कमल सरखा मुखवाला, देवोथी पण नथी मेलवातो मध्यभाग जेनो एवा क्षीर समुद्रनी पेठे गंभीर, अधिकारीउं प्रते आज्ञाथी इंद्रनी पेठे समर्थ, वरसादनी पेठे प्राणीउंने हमेशां जीवितदान देनार, तथा ताराउंमां जेम चंद्र, तेम सघला विद्याधरो, राजाउं अने भरतनां देवोमां पण ते चक्री एकज राजा होता हवा. वली ते हमेशां चौद रत्नोथी शोभता हता, तथा नवे निधानो तो तेनां चरणकमलनी पासेज रहेतां हतां. वली ते नीचेनी वस्तुउंनां स्वामि थया थका शोल हजार यक्षोथी, परिवार सहित बत्रीस हजार राजाउंथी, बत्रीस हजार जानपद कन्याउंथी, बत्रीस हजार राजकन्याउंथी, त्रणसो साठ रसोइआउंथी, चोरासी लाख रथोथी, चोरासी लाख हाथीउंथी, चोरासी लाख घोडाउंथी, छन्नुं क्रोड पालाउंथी, बत्रीस हजार जनपदराजाउंथी, बहोंतेर हजार नगरोथी, नवाणु हजार द्रोणोथी, अडतालीस हजार पत्तनोथी, चोवीस हजार कर्बटोथी, वीस हजार खाणोथी, सोल हजार खेटकोथी, चौद हजार संवाधोथी, छपनसो द्वीपोथी, तथा छत्रीस हजार बंदरोथी शोभता हता. वली ते उंगणपचास कुराज्योनां, भरत खंडनां अने बीजां राज्योनां पण स्वामी हता. वली आदीश्वर प्रभुए बतावेली नीतिने जाणनारा, विश्वंभर, श्रीधर, सुबुद्धि तथा बुद्धिसागर नामनां तेमनां मंत्रिउं हता. वली तेउंना अंश सरखा एकसो आठ, अने वली त्रण क्रोड पण मंत्रिउं तेमनां हता. वली भरत महाराजनां अंश सरखा, अने जगतमां एक वीर सरखा, तेमनां सुषेण, श्रीषेण, दुर्जय अने जगज्जय नामनां सेनापतिउं हता. वली तेमनां जीवानंद, महानंद, संजी-

वन, अने सुजीवन नामनां चार मुख्य नरवैद्यो, तथा बीजा साडात्रण लाख नरवैद्यो हता. वली तेमनां जांगल, कुतनाल, विशाल अने विमल नामनां चार मुख्य गजवैद्यो अने बीजा त्रण लाख गजवैद्यो हता. वली तेमनां विश्वरूप, परब्रह्म, हंस अने परमहंस नामनां चार मुख्य पंडितो, अने सात लाख बीजा पंडितो हता. वली तेमनां श्रीकुंठ, वैकुंठ, भृकुटि, अने धुर्जटि नामनां चार मुख्य धनुर्विद्या जाणनाराउं, तथा बीजा पण घणा हता. वली तेमनां ज्योतिषीउं, धर्मांग जाणनारा, अने दंडनीति जाणनाराउं पण घणा हता. हवे एक दहाडो भरत राजा हर्षथी क्रीडा करता थका पोतानां साठ हजार वीरोने संभालवा लाग्या. ते वखते राजपुरुषोए तेमने नामो लेइ लेइने देखाड्या, अने भरत राजा पण तेमने आनंद सहित जोवा तथा बोलाववा लाग्या. पछी दिवसे रहेली चंद्रनी कला सरखी कांति विनानी, तथा हिमथी क्लिष्ट थएली कमलनी सरखी विरूप थएली तथा सेवकोथी देखाडाती सुंदरीने भरत राजाए जोइ. त्यारे लाल आंखोथी चित्तमां थएला क्रोधनी रेखाने देखाडता थका भरत राजा कठिन वचनोथी सेवकोने कहेवा लाग्या के, अरे लुच्चाउं! शुं अमारा घरमां कंइ भोजन आदिक खावा मलतुं नथी? अथवा तमो शुं आ सुंदरीनो कंइं आदर करता नथी? वली शुं आ कंइ खाती नथी? के आने शुं कंइं रोग थयो छे? अथवा ते ते विद्याने जाणनारा वैद्यो शुं मरी गया? वली आ मदरहित हाथणीनी पेठे म्लान केम थइ छे? अने आ उपरथी खातरी थाय छे के, खरेखर तमोए मारुं बीजुं पण नुकशान कर्युं होशे!!! एवी रीते बोलता ते राजाने ते सेवको नमीने हाथ जोडी कहेवा लाग्या के, हे स्वामी! श्री भरत महाराजने घेर तो सघली संपदाउं छे, केम के, इंद्रने घेर कंइं दरिद्रपणुं होय? वली आ सुंदरी कुलदेवीनी पेठे अमोने हमेशां पूजनीक छे, तेम मृत्युप्रते उपाय करनारा वैद्यो पण घणा जीवता बेठा छे. पण हे स्वामी! आप ज्यारथी दिग्यात्रामाटे सिधावेला छो, ते दिवसथी आ सुंदरी केवल प्राण धारवामाटेज आंबेलो करे छे. वली ते वखते आपे तेणीने प्रभुपासेथी दीक्षा लेती अटकावी हती, तेथी ते आ गृहस्थावासमां पण भावसाधवी थइने रहेली छे. पछी भरत महाराजाए सुंदरीने पुछ्युं के, तारे दीक्षा

देवी छे ? त्यारे तेणीए हा पाड्याथी भरत राजा कहेवा लाग्या के, हे सुंदरि ! तुं जे आ संसारथी विरक्त थइ, माटे तने धन्य छे. वली तातना अपत्योने आ सुखदाइ कार्यज करवुं उत्तम छे. वली हे सुंदरि ! विषयरूपी चोरथी लुंटाएला अमो तातनां अपत्यो थइने पण तुछ सुखवाला आ राज्यमां माची रह्या छीए, माटे हे महासत्वे ! हवे तारी इछाप्रमाणे कर ? एवी रीते भरत राजाए आज्ञा आपवाथी ते हृदयमां अत्यंत आनंद पामी. हवे एटलामां त्रण जगतनां नाथ श्री रुषभदेव प्रभु पण जीवोनी अनुकंपाथी पृथ्वीपर विहार करता थका अष्टापद पर्वतप्रते आव्या. त्यां इंद्रोनां समूहोए हर्षथी आवीने रत्नोनी श्रेणिउथी प्रभुनुं समवसरण बनाव्युं. ते वखते त्यांनो उद्यानपाल वांदरानी पेठे कुदीने, हर्षथी भरतपासे आवी जय जय शब्द करवा लाग्यो; तथा पछी पृथ्वीपर मस्तक नमावीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! हुं आपने कल्याणकारी वार्तानी वधामणी आपुं छुं के, श्री तातपादोए अष्टापद पर्वतने पवित्र करेलो छे, तथा त्यां देवोए पण हमणाज समवसरण रच्युं छे. ते सांभली हर्ष पामेला चक्रीए प्रफुल्लित मनवाला थइने तेने साडा बार करोड सोनामोहोरोनुं इनाम आप्युं. पछी भरत राजाये सुंदरीने कह्युं के, आ तारो मनोरथ पण संपूर्ण थयो. एम कहीने तेमने तेणीने अंतःपुरनीस्त्रीउ मारफते शुद्ध तीर्थोदकोथी स्नान कराव्युं. पछी तेउए तेणीनां मनसरखां पवित्र अने निर्मल श्वेत वस्त्रो पहेराव्यां; तथा अंगे विलेपन कर्युं. पछी ते पालखीमां वेसीने छत्र चामरथी वींझाती थकी भरतनी पाछल अष्टापद पर्वतप्रते गइ. त्यां तेणीए भवनां तापथी दुःखित थएला पोतानां चित्तप्रते केलनां वृक्षसरखुं समवसरण जोयुं. हवे भरत अने सुंदरी वाहनमांथी उतरीने, तथा प्रभुने प्रदक्षिणा देइने भक्तिसहित नमस्कार करवा लाग्या. मुक्तिसुखनी स्पर्धा करता एवा जिनना चरणकमलोने साठ हजार वर्षे मेलवीने भरत चक्री अत्यंत आनंद पामवा लाग्या. पछी मनमां रहेला आनंदनेज जाणे बहार कहाडता होय नहीं तेम, त्रण जगतने स्तुति करवा लायक एवा रुषभदेव प्रभुनी भरत महाराज स्तुति करवा लाग्या के, हे स्वामी ! तमो सर्व प्राणीउने ध्यान धरवा लायक छो, पण तमो कोइनुं ध्यान धरता नथी, तेम तमो इंद्रोने

पण पूजनीक छो, पण तमोप्रते कोइ पूजनीक नथी; वली तमोज जगतनां पेहेला नाथ छो, पण तमाराथी कोइ पेहेलो नथी, वली जगदीश्वरपणाथी स्तुति करवा लायक छो, पण तमो कंइ कोइनी स्तुति करनारा नथी. वली तमो सर्वने शरणारुप छो, पण तमोने कंइ कोइनुं शरणुं नथी, वली तमो आ जगतनां स्वामी छो, पण तमारो कोइ स्वामी नथी. वली मोक्षनुं सुख पण आपनेज स्वाधिन छे, केम के ते देनारो आप शिवाय बीजो कोइ नथी. वली उत्कृष्टमां उत्कृष्ट पण आपज छो, आपशिवाय कोइ उत्कृष्ट नथी. वली आप अनादि, अनंत तथा ज्योतिरुप छो, तेम पंडितो आपनुंज ध्यान धरे छे, अने आपनाथीज आ त्रणे जगतोने धन्य माने छे. माटे आ भवरूपी समुद्रमां वहाणसमान एवा आपप्रते नमस्कार थाउं; वली हे नमनारप्रते वत्सल भाव राखनारा प्रभु! आपनी पासे हुं मोक्षसुखनां आनंदनी याचना करुं छुं. वली हे प्रभु! हुं तो आपनो दास छुं, अने आपना तरफथी सनाथपणानी मागणी करुं छुं, माटे हे जगतने शरणाभूत प्रभु! मारापर कृपा करी मारुं रक्षण करो? एवी रीते ते चक्रीश्वर प्रभुनी स्तुति करीने, जिनरूपी चंद्रपासेथी नीचे प्रमाणे देशनारूपी अमृत पीवा लाग्या के, शीलथी सौभाग्यपणुं मले छे, सुपात्रदानथी भोगो मले छे, देवपूजनथी साम्राज्य मले छे, तथा तपथी कर्मोनो क्षय थाय छे. आ सघलुं भावनाथी क्षणवार पण सेववाथी अनुक्रमे चिन्मयपणाने पमाडी मुक्तिनां कारणरूप थाय छे. पछी ते देशनाने अंते सुंदरी प्रभुने नमस्कार करीने कहेवा लागी के, हे नाथ! कृपा करीने मने दीक्षा आपो? तथा मारो तुरत उद्धार करो? एवी रीतनां तेणीनां आग्रहथी प्रभुए तेने हर्षथी दीक्षा आपी, अने तेथी ते पण पोताने अत्यंत धन्य मानवा लागी. पछी भरत राजा पण एवी रीते सुंदरीनो दीक्षामहोत्सव करीने, तथा प्रभुने नमीने, पोतानी नगरीमां आव्या. एक दहाडो दिग्जयमां पण नहीं आवेला पोतानां भाइउने जोवानी इछाथी भरत राजा तेमने संभारवा लाग्या. पछी तेमणे प्रीतिथी तेमने बोलाववामाटे दूतो मोकल्या; केम के राजाउं प्रायें करीने दूतरूपी पगोवाला होय छे. ते दूतो तेउंपासे जइ प्रथम साम वाक्योथी तेउंने समजाववा लाग्या; पण तेउये तेम नहीं मान्याथी आकरां वचनोथी तेउं ते-

मने कहेवा लाग्या के, जो तमारे जीवित अने राज्यनी पण इछा होय, तो तुरत भरतनी पासे आवी हमेशां तेमनी सेवा करो? एवी रीतनी तेउनी कडवी वाणी सांभलीने, ते राजाउ मानथी अष्टापदप्रते रहेला प्रभुपासे गया; त्यां प्रभुने नमीने तथा स्तवीने, आंखोमां किंचित आंसु लावीने पोतानो व्रतांत तेउ कहेवा लाग्या के हे तात! आपे दीक्षा लेती वेलाए अमोने अने भरतने पण यथायोग्य, आपनी इछामुजब राज्यो आप्यां हतां; हवे दावानलनी पेठे परनी उन्नतिने नहीं सहन करीने भरते आखा छ खंडनो ग्रास कर्यो. अने अमो तो आपनी भक्तिमां तत्पर थइने अमारां राज्योथीज संतुष्ट थया थका, सुखेथी दिवसो गालता हता. पण हवे तो आ मोटा भाइ अमारां राज्योने पण लेवाने इछे छे, माटे हवे अमारे शुं करवुं? ते माटे पूर्वनी पेठेज आप अमारां हितनीइछाथी फरमावो? ते सांभलीने जगतनां नाथ जगतने पण प्रिय लागे एवुं वचन कहेवा लाग्या के, पराक्रमी क्षत्रीउए शत्रुउने मारवाज जोइयें!!! अने तेथी हमेशां छलमां तत्पर अने पासेज रहेता एवा रागद्वेषरूपी महाशत्रुने तमो मारो? आ संसाररूपी समुद्रमां राग छे. ते पत्थरनां ढगला सरखो छे, तथा द्वेष छे ते सम्यक्त्वरूपी कल्पवृक्षने बालवामां अग्नि सरखो छे. माटे हे वत्सो! व्रतरूपी राज्य मेलवीने, अति भयंकर तपरूपी हथीयारोथी, ते रागद्वेषरूपी शत्रुने हणो? एवी रीते प्रभुपासेथी बोधिबीज पामीने, अत्यंत वैराग्ययुक्त थया थका, मोक्षसुखनी इछाथी तेउए तुरत दीक्षा लीधी. पछी ते सघली वात दूतोए भरतने जइ कही; त्यारे सूर्य जेम सघलां तेजोने, तथा समुद्र जेम पाणीनां समूहोने, तेम भरते तेउनां सघलां राज्यो लेइने स्वाधीन कर्यां; अने तेउनां पुत्रोने पोतानी आज्ञामां राखीने राज्यो सोंप्यां; केम के, राजाउ पोतानी आज्ञा मनाववानेज इछे छे. हवे सूर्यनां दर्शन सरखो, वरसादनी धारासरखो, पवननी गतिनी पेठे सर्वव्यापी, तथा पर्वतसरखो वजनदार भरतनो प्रताप शत्रुउथी सहन न करातो हवो. पोतानां हाथथी दीधेलां दानोथी याचकोनी दरिद्रताने, तथा धर्मरूपी सूर्यथी अज्ञानरूपी अंधकारना समूहने, अने चक्रथी शत्रुनां कुलने हणता एवा श्री भरत महाराजा जयवंता वर्तो? ते चक्रीश्वरे सकल जगतमां धर्मने एवो तो फेलाव्यो के जेना ध्वनिथी सर्व पापो तथा (अंत-

रंग) शत्रुउं नाश पामवा लाग्या. नमता राजाउंनां मुकुटनां किरणोनां समूहोथी मनोहर थएल ठे पादपीठ जेनुं, तथा लोकोनां तापने हरनारा, श्री जरतराजारूपी चंद्र शत्रुनी कीर्तिरूपी ताराउंने पोतानां गुणरूपी किरणोनां समूहोथी त्रास आपवा लाग्या; (ए आश्चर्य ठे)

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिए बनावेला श्री शत्रुंजय महा तीर्थनां माहात्म्यमां श्री ऋषजदेव प्रजुनो जन्म, राज्याजिषेक, दीक्षा, केवलोत्पत्ति अने जरतनां दिग्जयनां वर्णनरूप त्रीजो सर्ग समाप्त थयो.

चतुर्थः सर्गः प्रारभ्यते.

जे प्रजु रूपी व्यापारीना देव, असुर, जुवनपति, अने मनुष्य अनुग्रहवाला ठे, तथा कमल, समुद्र, चंद्र अने विद्याधरो संपदा रूप ठे, तथा कामधेनु, कल्पवृक्ष, दक्षिणावर्त शंख अने रत्नरूपी आकरो (खाणो) ठे, एवा श्री आदिनाथ प्रजु तमारुं रक्षण करो, ? हवे श्री वीरप्रजु इंद्रने कहे ठे के, हे इंद्र ! वली पण आ तीर्थनुं वखाणवा लायक तथा आश्चर्यवालुं माहात्म्य तुं सांजल ? एक दहाडो उलसायमान सुवर्ण कुंडलवाला जरत चक्री इंद्र जेम मेरुपर तेम सिंहासनपर बेठा हता. ते वखते त्यां रहेला बत्रीस हजार राजाउंनां मुकुटोना किरणोथी तेनी वरसाद सरखी सजा, विजलीउं सहित देखाती हती. वली ते वखते तुल्य अलंकार तथा वस्त्रोवाला मंडलीक अने सामंतोथी, सामानिक देवताउंथी जेम इंद्र तेम जरत चक्री शोजता हता. एटलामां सुषेण सेनापति पृथ्वीपर मस्तक राखीने, तथा बन्ने हाथो मस्तकपर जोडीने जरतने विनंति करवा लाग्यो के हे स्वामी ! सर्व जगोए विस्तार पामती आपनी आज्ञाने, जिननी आशिषनी पेरें राजाउं मस्तके चडावे ठे. वली आपना चक्ररत्ननो उदय थवाथी सघला क्षुद्र उपद्रवो नाश पाम्या ठे, केम के, सूर्यनुं बिंब तपते उते शुं ताराउंनो समूह रही शके ठे ? वली तमोए दानथी दरिद्रीउंनां दारिद्रने, तथा तलवारथी शत्रुउंने नाश कर्या ठे. तो पण हे स्वामी ! अजव्यनां मनप्रते जेम जिननो बोध, तेम आपणुं चक्ररत्न आयुधशालामां प्रवेश करतुं नथी. ते सांजलीने चक्रीए मंत्रिनां मुखसामुं जोयुं. केम के, राजाउं प्राएं करीने मंत्रीमुखा होय ठे. पठी विश्वं-

जर नामनो मुख्य मंत्री जरतने नमीने, हाथ जोडी, विनयथी वामन थयो थको कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! विस्तार पामता आपना प्रतापने अटकाववाने समर्थ त्रणे लोकमां कोइ देव के पुरुष नथी; वली मोटा मोटा घंटी सरखा पत्थरोनी गणना कराय, पण पर्वतनी खीणोमां रहेला कांकराउने ते कोण गणे? तो पण कोइक वीरपणांनुं डोल घालतो पृथ्वीपर रहेलो लागे ठे, के जे डुर्नयी घरमां शूरो थइने आपनी आज्ञा मानतो नथी. हवे मालुम पड्युं!!! हे स्वामी! जिताएला राजाउमां आपनो जाइ बाहुबलि के जे, बलवान अने गर्वथी पर्वत सरखो ठे, ते हजु बाकी रहेल ठे. बाहुबलिना हाथनां बलने रणसंग्राममां इंद्र पण सहन करवाने समर्थ नथी, ते पण हवे आपनी पासे निर्बल थशे; केम के इंद्रनां वज्र सरखा आपना दोर्दंडनां घातथी, पर्वतनी पेठे सघला राजाउ चूर्णपणाने पामे ठे. वली आपे आ दिग्जयनां मिशथी केवल दिग्निरीक्षणज कर्युं ठे, हवे आ बाहुबलिने जीतवाथी तमारुं चक्रीपणुं सफल थशे. वली हे स्वामी! “आ मारो जाइ ठे” एम विचारि आपे तेनी उपेक्षा करवी नहीं, केम के, शरीरनो रोग पण शुं मूलमांथी न उखेडवो? वली आज्ञा ठे मूल जेनुं एवुं राज्य पंडितोए कहेलुं ठे, केम के पोतानुं पेट जरनारा तो बीजा घणा होय ठे, तेमां यश शानो? ते सांजलीने स्नेह अने कोपने वश थएला चक्री जरा विचार करीने आदरसहित मंत्रीने कहेवा लाग्या के, एक बाजुथी “मारो आ जाइ ठे” तेथी मारुं मन शंका पामे ठे, अने बीजी बाजुथी ते मारी आज्ञा मानतो नथी, तेथी क्रोधबुद्धि आवे ठे. वली पोतानां जाइ साथे युद्ध करवामां मारा मनने लज्जा आवे ठे, अने शत्रुने नहीं जीतवाथी चक्र शांत थतुं नथी. वली जेनी आज्ञा घरमां पण चलाती नथी, तेनी आज्ञा बहार चलाती केम कहेवाय? अने नाना जाइनी साथे युद्ध करवाथी लोकापवादनो पण जय रहे ठे. ते सांजली अवसर उलखनारो, तथा राजानां अजिप्रायने जाणनारो ते मंत्री कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! आपनो नानो जाइ आपनुं संकट दूर करशेज; केम के गृहस्थीउनो एवो सामान्य आचार ठे के, मोटो जाइ आज्ञा आपे, अने नानो जाइ ते मस्तकपर धारण करे; माटे प्रथम दूत मारफते आपनी आज्ञा मानवामाटे तेमने कहेवरावो, पण ते.

हाथी जेम कमलनीनां बंधने, तेम तमारी आज्ञाने सहन करशे नहीं. अने एवी रीते ते अविनयीने शिक्षा करवाथी तमारो लोकापवाद थशे नहीं, अने तेथी तमारी पण जीत थशे. एवी रीतनुं सचीवनुं वचन सांजलीने चक्रीए, नीति जाणनार, तथा वाचाल एवा सुवेग नामनां दूतने बाहुबलिप्रते मोकल्यो. पछी ते सुवेग पण पोतानां स्वामीनी आज्ञा लेइने, तथा वेगवाला रथमां बेसीने, राजनां मूर्तिवंत उत्साहनी पेठे चालवा लाग्यो. उत्तम सैन्यनां परिवारवाला ते सुवेगे पण मार्गे चालतां शत्रुसरखां अपशुकनोने जरा पण गणकार्यां नहीं. ते वखते गधेडो जस्मादिक स्थानमां रहीने खराब रीते जुंकवा लाग्यो; तथा धूलि उडाडतो वायु तेनी सन्मुख वावा लाग्यो, अने प्रचंड कालदंडनी पेठे कृष्ण सर्प तेनी अगाडी थइने जवा लाग्यो; एवी रीतनां अपशुकनोने जाणतां थकां पण दूत वेगथी जवा लाग्यो, केम के, तेवा माणसो स्वामीना कार्यमाटे विलंब करता नथी. वली सिद्धा मार्गमां पण तेनो रथ जडना चित्तनी पेठे स्खलना पाम्यो, तेम तेनी डावी आंख फरकवा लागी. एवी रीतनां अरिष्टोथी पगले पगले वारण करातो पण ते अनुक्रमे क्षुद्र जंतुउथी दुस्तर वनमां गयो. त्यां कोइ जगोए जयंकर हाथी सरखा जीलोने, तो कोइ जगोए मारेल छे हाथीउ जेउए, तथा लाल चणोठी सरखी आंखोवाला सिंहोने, तो कोइ जगोए हाथीउथी उखेडाता पर्वतनां टुकडा सरखा वृक्षोने, तो कोइ जगोए आश्चर्यकारी चित्राउने, अने जूंडनां समूहोने, तेम पोकार करता, चालता तथा युद्ध करता अने बलवानोने पण जय आपता केटलाक दुष्ट जंगली प्राणीउने जोतो थको, मृत्युनां क्रीडावन सरखां, तथा कालरात्रिने आनंद आपनारां, तथा वृक्षोनी घटाथी नथी देखातो सूर्य ज्यां एवा वनने ते सुवेग उलंगी गयो. पछी अनुक्रमे ते छ खंडथी वीजा, तथा अखंड लक्ष्मीनां स्थानक सरखा, अने इंद्रने रहेवानां घर सरखा बाहुबलीना बहलि देशमां पहोंच्यो. ते त्यां ठेकाणे ठेकाणे तथा गाम गाम प्रते मनोहर गोपीउथी गवाता श्री युगादीश प्रजुनां गुणग्रामोने सांजलवा लाग्यो. वली पर्वत, गाम, सीमा विगेरेमां बाहुबलिना लोकोत्तर बलनुं मांहोमांहे थतुं वर्णन तेणे वारंवार सांजल्युं. वली त्यां तेणे बाहुबलि शिवाय वीजा राजाने नहीं जा-

णता, तथा लक्ष्मीथी कुबेर सरखा लोकोने जोया. वली सर्व जगोए पर्वतनां शिखरो सरखा धान्यनां ढगलाउंने तथा फलद्रूप वृक्षोने जोतो थको ते मनमां चमत्कार पामतो पामतो जवा लाग्यो. एवी रीते अनुक्रमे वेगथी त्रण लाख गामोने उलंगीने, ते बाहुबलीनी राजधानी तक्षशिला नगरीप्रते पहोंच्यो. त्यां तेणे उंचां अरिहंत प्रभुनां मंदिरोपर रहेली धजाउंनी पंक्तिथी वींझाती, तथा मोतीनां ढगलाउंथी जाणे पसीनावाली, तथा कुबेर सरखा सामंत लोकोवाली, अने लीलाथी मनोहर, तथा अक्षय संपदावाली, इंद्रपुरी सरखी ते नगरीने जोइ. त्यां तेनी आंखोने हर्ष आपता, अने कवायत खेलवाथी खिन्न थएला क्षत्रीउंने क्षणवार जोइने तेना मनमां भय थयो. पछी दुकानोनी श्रेणिपर रहेला, तथा पोताने "अहमिंद्र" मानता शाहुकारोनां पुत्रोने जोतो थको अनुक्रमे ते राजानां राजदरबारमां आव्यो. पछी महेनत विना रत्नोनां किरणोनां समूहोथी आकाशने चित्रित करता, तथा, कृत्रिम अने अकृत्रिम सिंहो, अने दीपडाउंथी बीता छे हाथीउं ज्यां एवा, तथा हाथमां खुल्लां हथीयारोनां समूहवाला, अने बीजानी छाया जोवाथी पण सावधान रहेता द्वारपालोथी आश्रित कराएला, तथा कोइ जगोए खरती कस्तुरीथी भरेला, अने कोइ जगोए शत्रुनां हृदयनी पेठे घोडानी खरीउंथी खोदाएला, तथा मंडपोथी देवलोकनी पेठे मंडित थएला, एवा अति सुंदर राजमेहेल प्रते ते पहोंच्यो. त्यां क्षणवार सुधि द्वारपालोथी रोकी रखाएलो, अने पछी छडीदारे राजानी आज्ञाथी प्रवेश कराएलो ते सुवेग बहु भयसहित राजसभामां दाखल थयो. त्यां तेणे शिखरोथी जेम मेरु, तेम बाहुबलि सरखाज स्वरूपवाला मुकुटबंध हजार राजाउंथी सेवाएला, किरणोथी जेम सूर्य, तेम उत्तम शृंगार वाला, अने मूर्तिवंत उत्साह सरखा कुमारोथी अधिष्टित थएला, वली रत्नोनी भींत अने मणिउंनां स्तंभोमां पडतां प्रतिबिंबोनां मिशथी अमात्योए करीने अनेक मूर्तिवाला, मुखरूपी सोनेरी कमलनी शंकाथी आवेला हंससरखा चामरोए करीने, देवांगनोउंथी जेम इंद्र, तेम वारांगनाउंथी वींझाता, पवित्र वेषवाला, तथा सुवर्णदंडने धरनारा छडीदारथी नामग्रहणपूर्वक वर्णन करातुं छे नमता राजाउंनुं जेनी पासे एवा, तथा

पोतानां तेजोथी सकल जगतने तृण समान चिंतवता, एवा बाहुबलिने सिंहासनपर बेठेला जोया. अपूर्व क्षत्रीय तेजवाला ते बाहुबलिने जोइने प्रथम तो क्षोभ पामेलो ते सुवेग दूत आकार गोपवीने तेमने नमतो हवो. पछी मस्तकपर जोडेल छे हाथ जेणे, तथा बाहुबलिनां मुखपर राखेल छे दृष्टि जेणे एवो ते दूत राजाए भ्रुकुटीसंज्ञाथी देखाडेला आसनपर बेठो. पछी बाहुबलि पडछंदाथी सभानी भींतने पण वाचाल करता थका गंभीर वाणीथी तेने कहेवा लाग्या के, हे सुवेग ! तातनी पेठे मने पूजवा योग्य एवा मारा मोटा भाइ तो खुशीमां छे नी ? तथा अयोध्या नगरी तो कुशलतामां छेनी ? वली पिताजीये लांबा कालसुधि लालन करेली एवी प्रजा पण कुशल छेनी ? तेम आर्य एवा मोटा भाइनो छ खंडनो विजय तो अखंड रीते थयो छेनी ? वली ते दिग्जयमां चोरासी लाख रथो, चोरासी लाख हाथीउ अने चोरासी लाख घोडाउने कंइ बाधा तो थइ नथी ने ? तेम सघला राजाउ पण कुशलतामां छे नी ? तेम त्यां कोइने कंइ पण विघ्न तो थयुं नथी ने ? एटलुं बोलीने बाहुबलि रही गया बाद सुवेग पण तेमने नमस्कार करीने, तथा तेमनी वाणीथी क्षोभ पामीने जरा विचार करी कहेवा लाग्यो के, ते तमारा मोटा भाइनी कृपाथी अन्योने घेर पण कुशलपणुं थाय छे, त्यारे तेमना कुशलमाटे तो पुछवुंज शुं ? वली जे विनीता नगरीनां तमारा मोटा भाइ अधिपति छे, ते नगरीने जिननां वचनमां जेम संशय, तेम विघ्ननो अंश पण क्यांथी होय ? वली जेनां शत्रुउने चक्ररत्न पोतानी मेलेज भेदी नाखे छे, तेनी प्रजामां तो सर्वदा कुशलज होय छे. वली जेनी सेवा सर्व सुर, असुर अने मनुष्यो करे छे, तेनी सामे थवाने छ खंडना विजयमां कोण हिम्मत धरी शके तेम हतुं ? वली त्रणे लोकनो विजय करवामां जे समर्थ छे, एवा भरत चक्री जेनां स्वामी छे, तेवा तेनां घोडा, रथ अने हाथीउने कोण विघ्न करी शके तेम छे ? वली ते लाख यक्षो, तथा राजाउ, विद्याधरो अने देवोथी सेवाय छे; तो पण बांधवो विना तेने चेन पडतुं नथी. सर्व राज्योमां भमतां थकां तेमणे क्यांय पण भाइने जोया नहीं, अने तेथी उत्कंठासहित ते बांधवोने मलवाने इछे छे. वली दिग्जयमां तेम बार वर्षनां राज्याभिषेकमां पण तेउ आव्या नहीं; वली

छेवटे तेर्ज सघला निरीह तथा पोतानां शरीरमां पण निस्पृह थया छे. हवे तमारामां भरत महाराजनी उत्कंठा होवाथी मने अहीं तेमणे मोकलेलो छे. माटे हवे तमो त्यां आवो, अने तमारा संगथी तेमने सुख आपो? केम के बंधुविना तेमनुं राज्य दीपतुं नथी. वली कुलीनोने पोतानो मोटो भाइ तातनी पेठेज पूजनीक होय छे, अने तमो तेमने नमवाथी तमारुं मान पण विशेष थशे. वली ते चक्रीनां चरणोने देवो पण नमे छे. तेथी तेमनी सेवा करवाथी तमोने लज्जा थशे नहीं. वली 'हुं आटला दिवससुधि गयो नथी' एवी शंका तमो करशो नहीं, केम के, ते मोटा भाइ छे, माटे तमारो अपराध क्षमा करशे. वली तमारा संगमथी ते मोटा भाइ सुख पामीने वात्सल्यपणाथी तमोने अधिक राज्य आपशे, तेम तमारुं सर्व कष्टोथी ते रक्षण करशे. वली तमो बन्ने इंद्र अने उपेंद्रनी पेठे, तथा अश्विनीकुमारोनी पेठे, वैरीनां हृदयमां शल्यरूप थया थका मलीने राज्य करो? वली 'ते मारो भाइ छे' एम विचारि तमारे निर्भय थवुं नहीं. केम के अहंकारीने शिक्षा आपवानी दारुण राजनीति छे. वली जूठा निमित्तिआनुं अवृष्टिनुं वचन, वरसाद वरसवाथी जेम निष्फल थाय छे, तेम तमारा विषे भरतने खोटुं समजावनाराउंनुं वचन निष्फल थशे. वली भरत महाराजनुं सघलुं सैन्य तो एक बाजु रह्युं, पण हाथमां दंड धारण करता एक सुषेण नामना तेमना सेनापतिनुं बल पण रणसंग्राममां कोण सहन करी शके तेम छे? वली रणसंग्राममां पर्वतोनी पेठे उछलता तेनां चोरासी लाख हाथीउंने तथा समुद्रनां मोजांउंनी पेठे उछलता तेटलाज घोडाउंने रोकवाने पण कोण समर्थ छे? वली तेनां अन्य सैन्योनी तो गणनाज शुं करवी? केम के, भरत राजानां संग्रामने बलवान इंद्र पण सहन करी शके तेम नथी!!! वली ते भरत महाराजाने इंद्र पण पोतानुं अरधुं आसन आपीने पासे बेसाडे छे, तेवा तमारा मोटा भाइने नमवामां तमोने लज्जा शानी? वली तमोने राज्यनी अने जीवितनी पण जो इछा होय, तो भरत महाराजनां चरणकमलने तमो तुरत सेवो? एवी रीतनां सुवेग दूतनां वचनो सांभलीने बलवान् बाहुबलि पोतानां खभाउंपर दृष्टि करता थका, तथा (क्रोधथी) लाल आंखोवाला थइने तेने कहेवा लाग्या के, हे दूत!

तुं खरेखर वाचाल छे, तथा परस्थानमां आवीने पण जे तुं आवां अहितकारी वचनो ऊंचे प्रकारे बोल्यो, तेथी खरेखर तुं तारा स्वामीनुं कार्य करनारो छे. ते भरत चक्री मारा मोटा भाइ छे, माटे ते मारे पूजनीक छे, तेमां संशय नथी; केम के, मोटा भाइने पितानी पेठे पूजवा, ए कुलीनोनो आचार छे; पण मोटो भाइ पोतानी मोटाइने ज्यांसुधि जालवी राखे, त्यांसुधि तो ते नाना भाइने पूजनीक छे, पण ज्यारे ते पोतानी मोटाइने उलंगी जइ कार्य करे, त्यारे तेने शी रीते सेवाय? वली तेमणे छल करीने नाना भाइउनां राज्यो छीनवी लीधां, माटे अहो! तेनुं भाइपणुं अने स्नेहरस पण केटलो बधो मोटो छे!!! वली तेउ सघला पण ताततनांज पुत्रो हता; अने रणसंग्रामथी कंइ डरता नहोता; पण "आ मोटा भाइ साथे कलह करवो!!" एम विचारि तेउने लज्जा थइ. पछी तेउए विचार्युं के, आ मोटा भाइने तो शरम नहीं आवी; पण अमोने लज्जा आवे छे, एम विचारि तेउए पिताजी पासे जइ दीक्षा लीधी. वली ते भरतने जे राजाउ सेवे छे, तेउने तो अधिक राज्य आदिकनी इछा छे, पण हुं तो पिताजीए आपेलां राज्यथी संतुष्ट थयेलो छुं, माटे मारे तेनी सेवा शामाटे करवी जोइये? वली बंधुउनां राज्योने ग्रहण करतां थकां में जे तेमनी उपेक्षा करी, एवी रीतनो मारो दोष शुं ते चाडीआउ तेने सूचवशे?!! वली तुं जे कहे छे के, ते तमारो अपराध क्षमा करशे, ते शुं में तेमनां कंइ गाम आदिक भांग्यां छे? के शुं? वली इंद्र पण जे तेने अरधा आसनपर वेसाडे छे, ते पण "आ श्रीऋषभदेव प्रभुनां ज्येष्ट पुत्र छे, माटे माननीक छे" एवुं विचारिनेज बेसाडे छे, तेमां कंइ भरतनो पोतानो प्रभाव नथी. वली ज्यारे हुं रणसंग्राममां चडीश, त्यारे तेनुं ते सैन्य, ते विचारो सुषेण, ते चक्र अने ते भरत पण शुं हिसावमां छे? वली अगाउ अमो बन्ने ज्यारे गंगानां कांठापर क्रीडा करता हता, त्यारे हुं तेने आकाशमां उछालतो, अने दया लावी तेने पाछो झीली लेतो; ते सघलुं हमणा आ राज्यमदथी शुं ते भूली गयो? के जेथी दुष्ट आशयथी माराप्रते तारासरखा दूतने मोकल्यो!!! वली तेनां भाडुत लश्करीउ तो रणसंग्राम वखते क्यांनाक्यांए नाठ्या जशे; अने ते वखते केवल भरतनेज मारा आ भुजदंडनां बलनुं

दुःख सहन करवुं पडशे!! माटे हे दूत! तुं चाल्यो जा? केम के न्यायी राजाए दूतने मारवो जोइए नहीं. फक्त ते भरतनेज तेनां अन्यायनुं फल हुं चखाडीश. एवी रीतनी गंभीर वाणीथी मनमां चमत्कार पामीने ते दूत पोतानो जीव लेइ ते आसनपरथी धीरे रहीने उठ्यो. दिङ्मूढ थवाथी तथा आंखनां चपलपणाथी तथा भयथी आंटीमां आवता पोताना दुपट्टाथी स्खलना पामतो थको, अने उगामेला हथीयारोवाला कुमारो अने राजाउथी पोताने हणाएलो मानतो थको ते धीरे रहीने सभामांथी निकल्यो. पछी ते जीवितव्यनां देहधारी मनोरथ सरखा रथपर भयभीत थयो थको वांदरो जेम वृक्षपर तेम चडी बेठो. ते दूतने जोइ त्यांना लोको नीचे प्रमाणे मांहोमांहें वातो करवा लाग्या.

एक—आ कोइक नवीन माणस क्षणवारमां सभामांथी निकल्यो!!

बीजो—अरे! हुं तो एम तर्क करुं छुं के, आ भरत राजानो दूत छे.

एक—अरे! शुं बाहुबलिविना आ पृथ्वीपर कोइ बीजो राजा छे शुं?!!

बीजो—आज आपणा बाहुबलि राजानो मोटो भाइ, तथा श्री ऋषभदेव प्रभुना भरत नामे पुत्र राजा छे.

एक—त्यारे शुं? ते आटलो वखत कोइ देशांतर गया हता?

बीजो—ते चक्रवर्ती छे; अने तेथी छ खंड भरतक्षेत्रने ते जीतवा गया हता.

एक—पण त्यारे तेणे आ बाहुबलिप्रत्ये दूत शामाटे मोकल्यो होशे!!?

बीजो—शा माटे शुं? पोतानां हुकममां रही सेवा माटे बाहुबलिने बोलाववा माटे?!!! वली बीजुं शुं? समज्यो!!!

एक—त्यारे शुं! तेनी पासे कोइ शिखामण आपनार मंत्री नहीं होय!!! के जे तेने आवां कार्यथी निवारे!!!

बीजो— आए कोक उंडुं लागे छे!!! तेनी पासे तो सेंकडो मंत्रीउ छे, अने तेउएज आ कार्य माटे तेने विशेषे करीने प्रेरणा करी छे.!!

एक—त्यारे तो ते भरत सुखे सुतेला सिंहने लाकडी मारी जगाडवा जेवुं करे छे!

बीजो—एमज छे!!! केम के, प्राणीउनुं जेवुं भाग्य तेवी तेने बुद्धि आवे छे!!!

एवी रीतनी नगरीनां लोकोनां मुखमांथी निकलती कथाने सांजलतो थको ते सुवेग रथने वेगथी हांकीने तुरत नगरी बहार निकल्यो. पढी सुजटोनां जुजास्फोटोथी, तथा तेउनां विविध प्रकारनां हथीयारोनां नर्तनोथी, अने शुरवीरोनां सिंहनादोथी जडकता ढे रथना घोडा जेनां, एवो थयो थको ते दूत चालवा लाग्यो. पढी सिंहनां टोलांनी व्यथाथी मुक्त थएला अने दिङ्मूढ थइ गजराएला हरिणनी पेठे, नगरमांथी निकल्यावाद ते थोडी थोडी जीवितव्यनी आशा राखवा लाग्यो. पढी मार्गमां नगर नगरप्रते वैरनी वातोमां आदरवाला, तथा खुल्लां हथीयारोवाला, अने पोतानां जुजामदथी अहंकारयुक्त थएला सुजटोने, तथा बालकोने पण रणसंग्रामनी उत्कंठावाला, अने हाथमां शस्त्रवाला जोइने ते दूत मनमां विचारवा लाग्यो के अहींनां आ स्त्री बालको विगेरे पण युद्धनी इछावाला ढे, तो शुं आ पृथ्वीनोज तेवो गुण ढे? के बाहुबलिनो प्रजाव ढे!!! वली जेवा राजा तेवी प्रजा पण होय ढे;अने तेथीज आ लोको पण पोतानां स्वामिनां बलनां माहात्म्यथी शूरा थएला ढे. वली तेउनां मुखथी ते दूते जरतनी साथे बाहुबलिनां युद्धनी वात तो उपहास तरीके जाणी; ते वात युक्तज ढे, केम के पोतानां स्वामिनां बलथी माणसो परनी अवज्ञा करेज ढे. वली त्यां तेउ पोतानां स्वामिनां तेजनेज जेम तेम हथीयारोने सजवा लाग्या, तेम केटलाको घोडाउने खेलाववा लाग्या, तथा रथोने समारवा लाग्या; तेम केटलाको जंगम मेहेलो सरखा तंबुउ सज्ज करवा लाग्या, अने केटलाको कवचो तथा जाथांउने दृढ करवा लाग्या. पढी ते दूत ज्यारे मार्गमां चालतो हतो, त्यारे त्यांना लोको जाणे वापमायांनुं वेर होय नहीं, तेम तेना तरफ करडी नजरे जोता हता; वली ते दूते त्यां सर्व जगोये पर्वतमां रहेता राजाउने पण बाहुबलिप्रते बहु जक्तिवाला, रणसंग्राममाटे सज्ज थयेला, तथा खुल्लां हथीयारोवाला जोया. एवी रीतनुं जोइने सुवेग दूत लोकापवादथी डरीने पोताना आत्माने निंदवा लाग्यो के, आ बन्ने जाइउनां वेररूप हुं थयो; वली ते विचारवा लाग्यो के, चक्रीने हजु शुं खोट रही गइ हती के, आ बाहुबलिनी पासेथी सेवानी इछा करी!! फोकट आ केसरी सिंहने जगाडवा जेवुं कर्युं ढे!! एवी रीते वारंवार विचारतो थको ते दूत केटलेक दिवसे रथना वेगथी

सुखे समाधे पोताना स्वामिना देशमां आव्यो. त्यारे तेणे पोतानां लोकोनी एवी वाणी सांजली के अरे जाइर्ज! जेटलामां वाहुबलि पासेथी दूत पाछो आव्यो नथी, तेटलामां स्त्री, छोकरां विगेरे सर्व सामान तुरत किल्लार्जमां दाखल करो? वली नहीं पाकेलां धान्यो पण तुरत लणी ल्यो? तथा जूमिमां डाटी मेलो? के जेथी सर्वनो नाश न थाय. वली केटलाको कहेवा लाग्या के, अरे! छोकरां छैयां तो एक बाजु रह्यां, पण पोतानुं शरीर सांचववुंए डुर्लज छे; वली ज्यारे बाहुबलि गुस्से थयो, त्यारे तो आपणुं किल्लार्जनुं बल पण फोकटज छे. एवी रीतनी लोकोनीवाणी सांजलीने दूत विचारवा लाग्यो के, आ लोको तो माराथी पण वधारे वेगवाला लागे छे! के जेर्ज आवी रीतनो पोतानो जय प्रगट करे छे. एम विचारतो, तथा बाहुबलिनां वचनने याद करतो थको ते दूत तुरत अयोध्यामां आवी जरत महाराजने नमस्कार करतो हवो. पछी ते जक्तिथी हाथ जोडीने नैगमेषी देवनी पेठे जरत महाराजनी सामे बेठो. त्यारे चक्री जरा हसीने तेने स्नेहथी पूछवा लाग्या के, हे दूत! तुं तुरत आव्यो, तेथी मारा जाइने कुशलतो छेनी? अथवा में तेनी बालक्रीडा वखते घणीवार परीक्षा करी छे, के ते गंधहस्तीनी पेठे अन्यनी आज्ञा सहन करे तेम नथी. ते सांजली सुवेग पण नमस्कार करीने जरतेश्वरने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामि! ते वाहुबलिने अकुशल करवाने आ पृथ्वीपर कोण समर्थ छे? वली में तेमने प्रथम सामवाक्योथी घणा समजाव्या; अने पछी विविध उपायोथी समजाव्या, पण ते तो कंइं गणकारता नथी. वली सुषेण, सैन्य अने चक्रादिकनां वर्णन वखते अवज्ञा करीने, तेणे छ खंड विजयनी तो वात पण सांजली नहीं; पण उलटुं पोतानां खजार्जतरफ दृष्टि करीने तेणे मने कह्युं के, हे दूत! तुं तुरत तारा स्वामी पासे जा? अने तेनां राज्य अने जीवितमाटे तुरत तेने मारीपासें मोकल? वली ते देशनां सघला लोको तेनाज रागी छे, अने पोतानां जीवितदानथी पण तेनीज लक्ष्मीने इछे छे. वली तमो वैरी थवाथी तेर्ज रणसंग्राम माटे तातामाता थइ रह्या छे, केम के, तेर्जमां पोतानां स्वामिनी शक्तिनां गुणो आवेला छे. एवी रीते दूत कही रह्या बाद चक्री क्रीडापूर्वक कहेवा लाग्या के, ते मारो नाहानो जाइ शत्रुरूपी काष्टप्रते अग्निसरखोज छे. वली हुं

ते मारा भाइनी साथे रणसंग्रामरूप दुःखदायक विरोध करीश नहीं; केम के सर्व देशोमां ढुंढतां पण सगो भाइ मली शकतो नथी. वली माणसोने संपदा राज्य विगेरे सर्व जगोए मले छे, पण सगो भाइ तो भाग्यविना क्यांए पण मली शकतो नथी. वली मन विनानुं जेम दान, चक्षुविनानुं जेम मुख, तथा मंत्रिविनानुं जेम राज्य तेम बंधुविना आ जगत वृथा छे; वली जे धन बंधुनां उपकारमाटे थतुं नथी, ते धन वृथा छे, तथा जे जीवित दुःखीनां दुःखो मटाडवामाटे थतुं नथी, ते जीवित पण वृथा छे. वली जेना घरमां गोत्रीउनां घातथी मलेली लक्ष्मी विलास करे छे, ते घरनां स्वामिने पतित जाणवो, तथा तेनुं राजतेज पण शोभतुं नथी. वली "आ पराक्रमहीन छे" एम लोको भले मारी हांसी करे, पण हुं आ नाना भाइनी साथे युद्ध करीश नहीं. हवे पोतानी (बाहुबलिए करेली) निंदाथी अंतरमां गुस्से थएलो, तथा महा उत्साही सुषेण सेनापति, राजानी ते वाणी सांभलीने धीर अने गंभीर वाणीथी कहेवा लाग्यो के हे स्वामी! युगादीश प्रभुनां पुत्र एवा तमोने क्षमा लाववी युक्तज छे, अने बंधु संबंधि अपूर्व स्नेह तमोने क्षमा करावे छे. पण हे स्वामी! आपनो आ स्नेह एक हाथनी ताली सरखो छे, केम के, आपनापर तेनी दृष्टि शत्रुतावाली छे, अने तमो उलटा तेनापर स्नेह करो छो! वली राजाउए तो पोतानी आज्ञानो भंग करनार एवा भाइनी पण उपेक्षा करवी जोइयें नहीं, केम के राजाउने तो आज्ञाज ज्योत्स्नानी पेठे सर्व तेजनी करनारी छे. वली पोतानांज राज्यथी कृतार्थ थएला राजाउ जे दिग्जय करे छे, ते कंइ लोभथी नहीं, पण पोतानां पराक्रमनी वृद्धिमाटेज करे छे. वली आगामि कालमां पोतानुं हित इछनार माणसे शत्रुनी उपेक्षा करवी नहीं, केम के ते क्षयरोगनी पेठे वृद्धि पामतो थको पोतानेज हणे छे. माटे ज्यांसुधि तमारां सैन्यनी रजोनी श्रेणिथी आ सूर्यमंडल छवातुं नथी, त्यांसुधि ते बाहुबलि झांखो थइने पोतानो देश छोडशे नहीं. वली ज्यांसुधि तमारा हाथीनां सैन्यनां भारथी आ पृथ्वी नमी नथी, त्यांसुधि अहंकारथी उद्धत थएला ते बाहुबलिनी गरदन केम नमशे? माटे हे स्वामी! आपने आ कार्यमां जरा पण विलंब करवो लायक नथी. जो मारा वचनपर श्रद्धा न होय, तो तमो आ मंत्रि प्रमुखोने पण रा-

जनीतिमाटे पूछो? पछी मंत्रिउं पण सुषेणना वचननां पडघानी पेठेज बोलीने विशेष प्रकारे चक्रीने उत्साहित करता हवा. पछी चक्रीए पण रणकार्यमां तत्पर एवुं भंभा नामनुं वाजित्र वगडाव्युं, अने तेना शब्दथी सर्व जगोएथी राजाउं त्यां आवी एकठा थया. पछी चक्रीए पण शुभ दिवसे स्नान करीने तथा पवित्र वस्त्रो पेहेरीने उत्तम पुष्पोथी श्री युगादीश प्रभुनी सेवा करी. वली तेणे वांछित सिद्धिमाटे पौषधशालामां रहेला मुनिउंने नमस्कार कर्यो; अने तेउंनी धर्मलाभनी आशिष पण तेने अधिक सिद्धिने आपनारी थइ. पछी ते महा पराक्रमी चक्रीए आनंद अने वेगथी पोताना नगरनी समीपे सैन्यनो पडाव नाख्यो. ते वखते चमकपाषाणथी जेम लोखंड तेम भंभानादथी खेंचाइने देश देशनां सघला राजाउं त्यां आव्या. वली त्यां जंगम पर्वतो सरखा हाथीउं तथा घोडाउं आव्या, अने तेउं मनुष्योनां समूहरूपी समुद्रमां मोजांउंनी पेठे शोभवा लाग्या.

हवे पतिवाली तथा पुत्रोवाली कुलकन्याउंथी अखंड चोखाउंए करीने वधावेल छे मंगल जेनुं, तथा बंदीउंनां समूहोथी स्तुति कराता, देवो अने राजाउंथी सेवाता, नगरनी स्त्रीउंथी गवाता, तथा महाजनोथी जोवाता, एवा ते चक्री प्रभात समये, अत्यंत उंचा, पोतानां यश सरखा सफेद, बन्ने पडखेथी झरता मदें करीने करेल छे कस्तुरी सरखी पत्रवल्ली जेनी, तथा लीलामात्रथीज पर्वतो अने समुद्रोने उलंघवामां समर्थ, हमेशां एक हजार यक्षोथी अधिष्ठित थएला, एवा सुरगिरि नामनां हाथीपर, सूर्य जेम पूर्वाचलपर तेम, यात्रानां आरंभमाटे चड्या. पछी तेमना अंश सरखा बीजाउं पण बखतर तथा हथीयार सहित थइने, तेज वखते रणवारमां हाथी, घोडा, रथ, खच्चर विगेरे पर स्वार थया. पछी शेषनागनां मस्तकपर जेम मणि, तेम संपूर्ण चंद्रसरखुं, तथा मंगलीक कलशोथी विंटाएलुं, हजारो नागकुमार तथा देवोथी अधिष्ठित थएलुं, तथा पर राज्यने त्रास करनारुं, जय नामनुं छत्ररत्न चक्रीनां मस्तकपर शोभवा लाग्युं. पछी लीलायुक्त स्त्रीउंथी चामरोए करी वींझाता ते चक्री पगना अंगुठाथी हाथीने चलाववा लाग्या. एवी रीते दुंदुभिनां अवाजोथी दिशाउंने बधिर करता, तथा भंभानां नादोथी ब्रह्मांडने वाचाल करता,

मांगलिक वाजांउनां अवाजोथी हाथीनां गर्जारवोने पुष्ट करता, ते चक्री किरणो सहित जेम सूर्य, तेम सैन्यो सहित चालवा लाग्या. पछी सूर्यमंडलनी पेठे चारे बाजुउथी दीपतुं, तथा एक हजार आरावालुं चक्ररत्न पण तेमनी आगल आगल चालवा लाग्युं. वली, हे दिशाउ! तमो दूर जाउ? पृथ्वी! तुं मोटी था? आकाश! तुं पण तुरत अवकाश आप? केम के, आजे आ नरत चक्री सैन्यनां समूहना नारथी, तथा वाजां अने डुंडुनिनां नादोथी तमोने दली नाखशे, एवी रीतनी वंदिउनी वाणीने सांनलता थका, तथा रथोनां चित्कारोथी वाचाल करेल छे दिङ्मुख जेणे एवा, ते चक्री अगाडी अगाडी चालवा लाग्या. एवी रीते सैन्यथी उडती धूलनां अंधकारथी सूर्यने पण पतंगीआं सरखो करता, पृथ्वीने पण अस्थिर करता, मार्गमां आवती नदीउने सूकावता, तलावोने स्थलरूप करता, हाथीउनां मदथी नवां तलावो करता, तथा अमार्गने पण मार्गरूप करता थका ते चक्री हमेशां योजननां प्रयाणे करीने अनुक्रमे केटलेक दिवसे बहलि देशनी पासें पहोंच्या.

हवे चक्रीए सैन्यनां पडावमाटे पेहेलेथी केटलाक माणसोने त्यां मोकल्या हता, तेउ तेमनी पासे आवीने हर्षथी कहेवा लाग्या के, हे स्वामी! आप जय पामो? अहींथी उत्तर दिशामां गंगानां कांठापर वृक्षोनां डालांउथी सूर्यने पण आच्छादित करतुं एक वन छे; त्यां हृदयने आश्चर्यनूत, तथा मनोहर सुवर्ण, मणि, रत्न विगेरेथी बनावेलुं तातनुं मंदिर छे. ते मंदिरमां पंडितनां कुलमां मंडनरूप, तथा उत्तम ध्यानमां रहेल छे अंतःकरण जेनुं एवो, अने उत्तम बुद्धिवालो कोइक साधु सुखेथी रहेलो छे. ते सांनलीने पुण्यमां आदरवालो ते नरत चक्री ते वनमां श्री प्रथमप्रनुने वांदवामाटे गया. त्यां विधिपूर्वक श्री रूषननदेव प्रनुने नमीने, तथा नक्तिथी पूजीने, रत्नमय वेदिकापर चक्री बेठा. पछी आम तेम जोयाबाद ते मुनिने जोइ तेणे नमस्कार कर्यो, अने उत्तम वचनोथी कहेवा लाग्या के, हे मुनि! तमो रणसिंहनी पेठे नमि विनमिनी जोडे मारी साथे युद्ध करवामां उत्सुक थएला विद्याधर छो. अने हवे तो सर्व प्राणीउमां समस्वनाववाला तमो थया छो, माटे हे कृपालु! तमो तमारा वैराग्यनुं मने कारण कहो? त्यारे मुनि कहेवा लाग्या के,

हे चक्री ! ते वखते तमोए नमिविनमि तथा मने पण जीत्यो; पछी अमोए अमारा पुत्रोने राज्य आपी वैराग्यथी दीक्षा लीधी, अने त्या-रथी श्री युगादीश प्रभुनी हुं सेवा करुं छुं; केम के, बन्ने भवोमां साम्रा-ज्यने आपनारनी कोण सेवा न करे ? पछी चक्रीए पुछ्युं के, हमणा तात क्यां छे ? त्यारे मुनिए कह्युं के, हे चक्री ! तुं ते कुतुहल सांभल ? हम-णा ते प्रभु श्रीप्रभ उद्यानमां देवोथी सेवाया थका रहे छे, त्यां अनंत नामनां नागकुमारनी साथे धरणेंद्र आव्यो हतो. पछी धरणेंद्रे प्रभुने नमीने पुछ्युं के, हे, स्वामी ! सर्व देवोमां आ अनंत देवनां शरीरनी कांति अधिक केम छे ? त्यारे प्रभुए कह्युं के, आ अनंत देव आजथी चोथे भवे एक आभीर थयो हतो, त्यां ते मुनिने पराभव करीने घणुं पाप उपार्जन करतो हतो. त्यांथी मृत्यु पामी नरकमां जइ, घणी वेदनाउ सहन करीने सुग्राम नामनां गाममां कुष्टी ब्राह्मण थयो. तेणे त्यां अ-मारा एक सुव्रत नामनां शिष्यने पुछवाथी तेणे कह्युं के, तें पूर्व भवमां मुनिने कष्ट आप्युं छे, तेथी तुं कुष्टी थयो छुं. माटे उत्तम माणसोए मु-निनी आराधना करवी, पण तेने विराधवो नहीं; ते मुनि कदाच क्षमा-वान होय, तो पण (तेनां विराधननुं) पाप तो पाछल आवेज छे. वली मुनिनुं सन्मान करवाथी ते उत्तम स्वर्गादिकनी गति आपे छे, अने तेनुं अपमान करवाथी मूलमां पडेला अग्निनी पेठे अनंत कुलोने ते वाली नाखे छे. पछी ते ब्राह्मणे ते रोग मटवानो उपाय पुछ्यो, त्यारे ते मुनिए कह्युं के, हवे तुं शत्रुंजय गिरिवरनी सेवा कर ? त्यां रागद्वेष रहित थइ समतारसमां रहेवाथी कर्मोनो क्षय करी तुं निरोगी थइश. वली आकरा तपथी प्राणी जेम वज्ररूप कर्मोथी मुकाय छे, तेम आ शत्रुंजयनी सेवाथी पण ते कर्मोथी मुकाय छे. वली आ तीर्थना माहात्म्यथी, शुद्ध आशयवाला अहीं रहेनारा तिर्यंचो पण प्राएं करीने पाप रहित थया थका सुग-तिमां जाय छे. वली ते शत्रुंजय तीर्थनां स्मरणथी माणसोनो, सिंह, अग्नि, समुद्र, सर्प, राजा, झेर, युद्ध, चोर, शत्रु, तथा मरकीनो भय पण नाश पामे छे. वली उग्र तपथी, तथा ब्रह्मचर्यथी पण जे पुण्य मले छे, ते पुण्य आ शत्रुंजय प्रते रहेवाथी मले छे. वली श्री विमलाचलनुं दर्शन कर्याथी त्रणे लोकनां तीर्थोमां जे कंइ छे, ते सघलुं जोएलुं कहेवाय. एवी रीतनी

मुनिना मुखनी वाणी सांजलीने, ते शत्रुंजय पर्वत प्रते गयो, अने त्यां मुनिना कहेवा प्रमाणे करवाथी अनुक्रमे ते निरोगी थयो. त्यां वैराग्ययुक्त थइ अनशन करी, मृत्यु पामीने अधिक कांतिवालो आ अनंतदेव थयो छे. वली ते तीर्थसेवानां प्रजावथी आजथी त्रीजे जवे, सघलां कर्मोनो क्षय करी, अनंत चतुष्टयवालो थइ मोक्षे जशे. ते सांजलीने ते अनंत नागकुमार शत्रुंजयप्रते गयो, अने हुं पण तेनी साथेज आग्रह सहित ते तीर्थने उद्देशीने गयो. पछी ते देव त्यां महोत्सव पूर्वक अठाइ करीने, जक्तिथी तीर्थनुं स्मरण करतो थको पोताने स्थानके गयो. माटे हे चक्री! ते शत्रुंजय समान बीजुं कोइ पण तीर्थ त्रणे जुवनोमां पण नथी, केम के, जेनां स्पर्शमात्रथीज आपदाउ दूर जाय छे. एवी रीते हे राजन्! तीर्थोप्रते नमतो थको हुं अहीं श्री युगादीश प्रजुने नमवामाटे आव्यो हतो, त्यां प्रसंगे तमारुं पण दर्शन थयुं. वली श्री बाहुबलिना सोमयशा नामे पुत्र छे, तेमणे आ श्री युगादीश प्रजुनुं मंदिर बंधाव्युं छे. श्री युगादीश प्रजु त्रणे लोकोनां नायक छे, अने तमो तेमनां पुत्र छो, माटे आपनां दर्शनथी मने बहु आनंद थयो छे. ते सांजलीने चक्री शत्रुंजयनुं तथा श्रीयुगादीश प्रजुनुं स्मरण करता थका पोतानां सैन्यप्रते आव्या, वृक्षोनी घटावाला तेज प्रदेशमां तेणे सैन्यने पडाव पण नांख्यो. अने ते मुनि पण त्यांथी चालता थया.

हवे बाहुबलिए पण जरतने आवेला जाणीने पोताना सिंहनादसहित जंजा वाजित्र वगडाव्युं. त्यारे सैन्यसहित जरतने "हुं जीतीश, हुं जीतीश" एम स्पर्धा करता थका सर्व योद्धाउ त्यां आवी पहोंच्या. ते सुजटो जाणे पोतानां अंतरंग तेजनेज देखाडता होय नहीं तेम, हथीयारोथी आकाशने दांतावालुं करता थका शोजवा लाग्या. वली ते बाहुबलिनां सुजटो ते रणसंग्रामने तो आवेला उत्सव तरीके लेखवा लाग्या. पछी उत्तम शृंगारवाला तथा देहधारी वीररस सरखा त्रण लाख पुत्रोथी वींटाएला ते बाहुबलिए चतुरंगी सेना तैयार करी. पछी ते सैन्यसहित जंजानां शब्दोथी दिशाउने वाचाल करता, छत्रवाला, तथा चामरोथी विंजाता, तथा करेलुं छे मंगल जेनुं एवा ते बाहुबलि उत्तम दिवसे कल्याणकारी जद्रंकर हाथीपर चड्या. पछी उत्तम परिवारवाला ते बाहुबलि

राजाए पण पोताना देशनां सिमाडापर लश्करनो पडाव नांख्यो. पछी प्रज्ञातमां सर्व राजाउंनी सम्मतीथी बाहुबलिए पोतानां पुत्र सिंहरथने सेनापति तरिके नीम्यो. पछी राजाए पोते तेनां मस्तकपर रणपट्ट बांध्यो, तेथी ते उंचे चडता तेजथीज होय नहीं जेम, तेम शोजवा लाग्यो. वली जरत चक्रीए पण पोतानां राजाउंनी संमतिथी, वैरीनी सेनाने मर्दन करनार सुषेणने सेनापति नीम्यो. वली जरत चक्रीए सर्व राजाउंने तथा पोतानां सवा क्रोड पुत्रोने दूतो मारफते बोलावीने, तथा दरेकने बहु मानथी नामो लेइ बोलावीने, इंद्र जेम वैमानिकोने तेम, तेउंने तेणे कह्युं के, दिग्जय करीने सघला राजाउं, विद्याधरो, देवो तथा दुर्मद जीलोने पण जीत्या, पण तेउंमां आ बाहुबलिनां सामंत सरखो जोरावर पण कोइ नहोतो, वली आ बाहुबलिपासे रणसंग्राममां कुशल एवा घणां शूरवीरो छे. वली परनी सेनामां जेम एक महा पराक्रमी होय छे, तेम आनी सेनामां तो सघला वीरो पराजयने जेदनारा (महापराक्रमी) छे. वली आ बाहुबलिनो महापराक्रमी सोमयशा नामनो पुत्र छे, ते एक लाख हाथीउं, त्रण लाख घोडाउं अने रथोनी साथे लडी शके तेवो छे. वली ते सोमयशानो नानो जाइ सिंहरथ नामे छे, ते पण महा शूरवीर अने हाथमां दीव्य शस्त्रोने धरनारो छे. वली ते बाहुबलिनो क्षोज पामेला समुद्र सरखा ध्वनिवालो सिंहकर्ण नामनो पुत्र छे, ते पोताना बलथी हाथें करीने पर्वतोने पण अधर उपाडे छे. वली तेने जगतनां वीरोथी पण न जीती शकाय तेवो, तथा सिंह सरखा पराक्रमवालो, अने शत्रुनां सैन्यनो क्षय करवामां समर्थ सिंहसेन नामनो पण पुत्र छे. वली ते कुमारोमां जे सर्वथी नानो छे, ते पण दुःखें करीने जीती शकाय तेवो छे. वली तेउंमांथी कोइक तो अक्षौहिणी सेनाने पण जीती शके तेवो छे, एम सांजल्युं छे. वली हे राजाउं! दिग्जयनां मिशथी तो केवल दिशाउंनुं जोवापणुंज थयुं छे; खरेखरुं युद्ध तो आ बाहुबलि साथे करवानुं छे. माटे समुद्र प्रते जेम प्रवाहो, तेम तमारे आ सुषेण सेनापतिनी पाछल रहेवुं. एवी रीतनी चक्रीनी आज्ञा धारण करीने हर्षित थया थका, तथा पोतानां स्वामी प्रते सेवकपणानो बदलो वालवानी इछावाला थया थका तेउं पोतपोताने स्थानके गया; तथा त्यां तेउए वज्र,

मुद्गर, चक्र, तलवार, भालां, बाण विगेरे हथीआरोनी विविध प्रकारनां पुष्पोथी पूजा करी; वली तेओ नृत्य सहित जयलक्ष्मीनां प्रारंभ सरखां मंगल वाजिंत्रो शस्त्रोनी पासे वगाडवा लाग्या. वली आठे दिशाओमांथी लक्ष्मीने खेंचवा माटेज होय नहीं जेम तेम तेओए हथीआरोनी आगल अक्षत अने रत्नोथी अष्ट मंगलो आलेख्यां. प्रभातमां युद्धनी इच्छावाला बन्ने सैन्यना वीरोने ते रात्री पण लांबी थइ पडी. "हवे प्रभात क्यारे थशे. ?" एवा विचारथी तेओ उठी उठीने वारंवार अस्ताचल प्रते जता चंद्रने जोता हता. ते वखते ते वीर पुरुषोनां मनने जाणीने रणसंग्रामनी इच्छावाली तेओनी आंखोमां बीकथीज होय नहीं जेम तेम निद्रा आवी नहीं. हवे ते श्री ऋषभदेव प्रभुनां बन्ने पुत्रोनां युद्धने जोवानी इच्छथीज होय नहीं जेम, तेम सूर्य पण उदयाचलनी चूलिकाप्रते तुरत चड्यो. हवे दश लाख वाजित्रोनां दृढ शब्दोथी दिग्गजो तो जाणे शब्दविनानां अने चेष्टाविनानांज थया होय नहीं, तेम थया. वली ते वखते अढार लाख दुंदुभिओ वागती थकी चंद्रनां हाथीने अने सूर्यना घोडाओने पण भय देवा लागी. भरतनां सैन्यमां वैरीनां प्राणोने हरनारा शोल लाख रणशींगाओ वागवा लाग्यां. ते वखते काहलीओनां तथा भेरीओनां भांकारोथी पृथ्वीतल भेदावा लाग्युं. वली ते वखते वाजांओना शब्दोथी तारामंडल त्रास पामवा लाग्युं, तथा वीरोनां सिंहनादोथी जगत शब्दमय थइ गयुं. वली ते समये, "हे वीरपुरुषो ! तमो बख्तर पेहेरो ? घोडाओने पाखरो पहेरावो ? शस्त्रो तथा रथादिक तैयार करो ? हमणा रणसंग्राम थशे;" एवी रीते वारंवार कहेता थका राजपुरुषो बन्ने सैन्योमां फरवा लाग्या. ते वखते वीरपुरुषो राजानी आज्ञाथी शरीपर रोमांच धारण करवा लाग्या. वली तेओ घोडाओने पाखर पहेरावता थका तेओनां जय सूचवनारा हेषारवोथी अत्यंत आनंद पामवा लाग्या. ते वखते रणशींगानां अवाजोथी घोडाओ भडकता हता, तेथी तेओने मधुर वाक्योथी शांत करीने तेओ पाखरो पहेरावता हता. वली तेओए ते घोडाओनी बन्ने बाजुओए गरुडनी चांचो सरखां भालांओ बांध्यां. ते वखते शत्रुनां समुद्रने गलवा माटे केटलाक घोडाओ सिंहमुखा, गरुडमुखा, हस्तीमुखा अने बहुमुखा पण थया. वली बखतरवाला तथा गर्जना कर-

ता हाथीउं, मेखलापर उगेला वृक्षोवाला जंगम पर्वत सरखा शोजता हता. वली ते वखते वीर पुरुषोए हाथीउंनी सुंढोमां परशु, जालां तथा मुजरो आप्यां, तथा तेउंनां दांतोमां लोखंडनां वलयो पहेराव्यां. वली ते वखते डुंडुजिनां नादोथी जडकता घोडाउंने चोकडांउंथी खेंचीने घणी मेहेनते रथोमां जोड्या. क्रोधायमान थएला योद्धाउं, जाथांउं बांधीने वेगथी वारंवार चालता रथोपर पण चडवा लाग्या.

हवे बाहुबलि पण स्नान विलेपन करीने, तथा श्वेत वस्त्रो पेहेरीने प्रजुने पूजवा माटे गया. त्यां तेमणे श्री आदिनाथ प्रजुनी प्रतिमाने जलथी स्नान करीने विविध प्रकारनां पुष्पो, अक्षत, तथा स्तवनोथी तेमनुं पूजन कर्युं. पठी ते देवलमांथी निकलीने, तेमणे वज्रनुं वखतर तथा टोप पहेर्यां. वली तेणे पीठपर बाणोथी जरेलां जाथांउं बांध्यां, अने तेथी ते चार हाथोवाला देखावा लाग्या. वली जेनां टंकारथी आकाशमांथी ताराउं पण खरी जाय ठे, एवुं धनुष्य तेणे डाबा हाथमां पकड्युं. पठी ऊरता मदथी ऊरणावाला पर्वत सरखा, तथा जंगम उत्साह सरखा महाजद्र नामनां गंधहस्तीपर ते बाहुबलि चड्या. पठी सिंहनां चिह्नवाली धजानां मिशथी जाणे नाचताज होय नहीं एवा बाहुबलि, जगतने त्रण समान गणता थका सैन्यसहित समरांगणमां आव्या. ते वखते लीला घोडावालो चंद्रनी ध्वजावालो तथा चंद्ररथवालो सोमयशा शत्रुउंने रोकवा माटे बाहुबलिनी आगल थयो. वली त्यां यमनी पेठे डुःखे जोइ शकाय एवो, कूर्मनी धजावालो, अने सिंहघोडावालो, महायशा पण जालां सहित आव्यो. तेनी आगल सिंहनी धजावालो तथा जगज्जय नामनां रथवालो, महा बलवान सिंहरथ पण अनेक शस्त्रोसहित चालवा लाग्यो. वली त्यां मयूरकेतुवालो, महासागर सरखा ध्वनिवालो, अने कालदंष्ट्र नामनां रथपर चडेलो सिंहकर्ण पण आव्यो. तेम त्यां रक्तवीजहंसकेतुवालो, सर्व शत्रुउंथी न जीताय एवो, तथा महाबल रथपर चडेलो सिंहविक्रम पण आव्यो. वली चक्रकेतुवालो, तथा रणसंग्राममां सर्व शत्रुउंने जीतनारो अने कालागल नामनां रथपर चडेलो सिंहासन पण त्यां आव्यो. इत्यादि बाहुबलिनां पुत्रो, तथा राजाउं नाना प्रकारनां वाहनो तथा शस्त्रो सहित उत्साहथी त्यां आव्या.

हवे भरत महाराज पण स्नान करी, शुद्ध वस्त्रो पेहेरीने देवलमां गया; केम के, संत पुरुषो पोतानां कार्योमां गाफल रहेता नथी. त्यां श्री ऋषभस्वामिनी प्रतिमाने स्नान करी, तेणे पोतानां यशथी जेम पृथ्वीने, तेम ते प्रतिमाने केसरथी लेपन कर्युं; पछी संपूर्ण भक्तिथी तेमणे सुगंधि पुष्पोथी ते प्रतिमानुं पूजन कर्युं, तथा धूप उखेवीने स्तुति करी. पछी तेणे जगतने जीतनार, अने वज्रथी पण भेदाय नहीं तेवुं बखतर तथा उत्तम शोभावालुं शिरस्त्राण (टोप) पेहेर्युं. पछी तेमणे अक्षय तथा लोखंडनां बाणोथी भरेलां जय अने पराजय नामनां बे तुणीरो बांध्यां. वली तेमणे डाबा हाथमां त्रणे लोकोने दंड करनारुं, तथा देवोनां समूहोथी आश्रित, अने भयंकर टंकारवालुं धनुष्य धारण कर्युं. वली तेमणे दैत्योप्रते दावानल सरखुं, तथा वैरीउने नाश करनारुं खड्ग धारण कर्युं, तथा बीजां हथीयारोने पण चक्रीए हाथथी स्पर्श कर्यो. पछी ते झरता मदनां समूहवाला, तथा ऐरावण सरखा सुरगिरि नामनां हाथीपर शक्रकेतु सहित बेठा. पछी सिंहनी धजावालो सुषेण पण पवनंजय नामनां रथपर चड्यो, अने तेनो नानो भाइ गरुड नामनां रथपर बेठो. वली ते सुषेण सेनापतिए कालानल खड्गने तथा वीजली सरखी कांतिवाला अग्निमुख भालांने हाथमां धारण कर्युं; पछी त्यां महा पराक्रमी सवा लाख कुमारो पण सज्ज थइने आव्या. तेउमां सर्वथी मोटो सूर्ययशा नामे हतो, के जे त्रणे लोकोनो जय करवामां समर्थ, तथा दीव्य शस्त्रोथी रणमां वैरीउथी न जीताय तेवो हतो. वली ते देवसंबंधि सूर्यहास खड्गने, इंद्र धनुष्यने तथा सुरसन्नाह नामनां बखतरने धारण करतो थको शोभतो हतो. वली ते सूर्यध्वजवालो, लीला घोडावालो, वैनतेय नामनां रथमां चडीने रणसंग्राममां आव्यो. वली देवोथी पण न जीताय तेवो, सफेद घोडावाला रथपर चडेलो, अने सिंहध्वजवालो देवयशा कुमार पण त्यां आव्यो. वली गरुडपताकावालो तेनो नानो भाइ वीरयशा पण, उग्र बखतर तथा धनुष्यने धारण करतो थको त्यां आव्यो. वली कपिकेतुवालो तथा दुर्जय नामना रथपर चडेलो, सुयशा नामनो चक्रीनो पुत्र पृथ्वीने कंपावतो थको त्यां आव्यो. वली पोतानां नादथी आकाशपातालने पण गजावतो, मत्स्यनां केतुवालो अने धनुष्यने धारण

करनारो महापराक्रमी मेघनाद कुमार पण त्यां आव्यो. वली वरसादनी पेठे बाणोनी धारा वरसावनारो, तथा हाथीनी पताकावालो, रथपर चडीने सर्व शस्त्रोसहित कालमेघ कुमार पण त्यां आव्यो. वली वैरीउनां सुन्नटोनुं मर्द्दन करनारो, पीला घोडावालो तथा घुवडानी पताकावालो महाकाल कुमार पण रणसंग्राममां उत्सुक थयो थको रथमां बेसीने त्यां आव्यो. वली अश्वनी पताकावालो श्याम घोडावालो, अने रणमां पांच अक्षौहिणी सेनाने पण जीतनारो, वैरिसिंह कुमार पण त्यां आव्यो. वली ते वखते वीरपणानुं मान धरावनारो, लीला घोडावालो, हंसनी पताकावालो, अने हाथमां गदा धारण करनारो वीरसेन कुमार पण रणसंग्राम माटे उत्सुक थयो. इत्यादि चक्रिना पुत्रो अने बीजा महा बलवान राजाउं पण विविध प्रकारना वाहनोपर बेसीने त्यां रणसंग्राम माटे आव्या.

हवे ते वखते रथमांथी निकलता शब्दोथी गर्जना करतो, अने क्रोडो सुन्नटोथी वींटाएलो महाबलवान सुषेण सेनापति सैन्यनी अगाडी थयो. वली बीजा पूर्णरथी तथा अर्धरथी एवा राजाउं अने कुमारो पण हाथी, घोडा, रथ विगेरे वाहनोपर बेसता हवा. ते वखते केटलाक सुन्नटो तो रसातुर थइने प्रथमथीज रणसंग्राममां न्नटकवा लाग्या, तेउंने स्वामिना हुकमथी छडीदारो वेगथी रोकवा लाग्या. वली ते वखते चालता लश्करीउंनां पदघातोथी, पृथ्वी पण शेषनागनी फणोनी पंक्तिने नमावती थकी कंपवा लागी. वली ते वखते बन्ने सैन्योनां महायोद्धाउंनां बलातिशयथी रंजित थइने जाणे मस्तको धुणावता होय नहीं तेम, महान पर्वतो पण कंपवा लाग्या. हवे प्रलयकालनां प्रारंन्नमां उछलता समुद्रनी पेठे गर्जारवा करता, एवा ते बन्ने लश्करो एकठां मल्यां. ते बन्ने सैन्योनां दुंदुन्निनां नादोथी पुष्ट थयेला वाजिंत्रोनां शब्दोथी त्रणे लोको क्षोन्न पामवा लाग्यां. ते वेलाए स्वारोनी साथे स्वारो, रथवालाउंनी साथे रथवालाउं, विद्याधरोनी साथे विद्याधरो, राजाउंनी साथे राजाउं, सुन्नटोनी साथे सुन्नटो, सामंतोनी साथे सामंतो, तथा न्निल्लोनी साथे न्निल्लो मल्या. वली ते समये बन्ने सैन्योनां हाथीउंनां दांतो एक बीजा साथे मलीने जयलक्ष्मीनां पलंगपणाने न्नजता हता. ते वखते बाणधाराउंनां

वरसादथी दिशाउंने आच्छादित करता, विचित्र प्रकारना धनुष्योने धरता, सिंहनादथी गर्जना करता, जालांउनां अग्रजागोने खद्योतरूप करता, खड्गोने विजलीरूप करता, पताकाउने बगलीरूप करता, उछलती धूलिने वादलांरूप करता, कीर्तिरूप वेलडीनी वृद्धिमाटे रुधिररूपी पाणीथी पृथ्वीने सिंचता, पाछलनां योद्धाउने जीवितदानथी चातकोनी पेठे संतुष्ट करता, तथा वाहनोथी पृथ्वीने पण स्पर्श नहीं करता, एवा ते सुजटो रणसंग्राममां आम तेम जमता प्रलयकालनां मेघसरखा शोजता हता. वली. सैन्यरूपी समुद्रमां उछलता मोजांउनी पेठे क्रोधातुर थया थका तेउ, घोडा, रथ के हाथीने पण गणकारता नहोता. वली ते वखते त्यां हाथीउ सुंढमां योद्धासहित रथने लेइने तथा तेने आकाशमां जमाडीने पक्षिनां मालानी पेठे फेंकवा लाग्या. एवी रीते ते जयानक रणसंग्राम चालते छते कोइक साहसी योद्धो, पोतानी स्त्रीनां स्तननां वैरथी हाथीनां कुंजस्थलोने ताडना करवा लाग्यो. ते वखते सुषेण सेनापति पोतानां सैन्यनुं जरा मंदपणुं देखीने क्रोधातुर थयो थको, हथिआरसहित घोडापर वेसीने प्रलयकालना अग्निनी पेठे आगल धस्यो. एवी रीते ते सुषेणे लीलामात्रथी सुजटोनां समूहोने तृणनी पेठे कापवा मांड्याथी तेनी सामे कोइ पण सुजट उजी शक्यो नहीं. एटलामां अनिलवेग नामनो महाविद्याधर सुजट वाहुवलिनां चरणोने नमीने पवन सरखा वेगथी सुषेणनी सामे दोड्यो, अने तेने कहेवा लाग्यो के, हे सुषेण! तुं सेनापति छे, अने हुं तो एक वाहुवलिनो पालो छुं, पण मारुं जुजावल तुं जो? तेने जोइ महापराक्रमी सुषेण पण समुद्रसरखी गर्जनाथी आकाशपातालने पण गजाववा लाग्यो. तुल्य वलवाला तेउ बन्ने दर्पयुक्त थया थका रोमांचकंचुकथी ते वखते वखतरने पण फाडवा लाग्या. पछी तेउ बन्ने वाणोथी लडता थका देवोने पण जगतनां नाशनी शंका करावता लाग्या. वली तेउ आकाशमां रही जोता देवोनां विमानोने वाणोनां स्पर्शथी त्रास पमाडवा लाग्या. मदोन्मत्त थएला हाथीउंनी पेठे एक बीजानां यशनी इछा राखता, तथा क्रोधथी लाल आंखोवाला तेउ बन्ने, सैनिकोने दुःखे जोवालायक थया. प्रलयकालमां पर्वतनी साथे जेम पर्वत अथडाय, तेम अथडातां थकां ते विद्याधरे सुषे-

णने जरा हठाव्यो. ते वखते ते विद्याधरे वीर्योल्लासथी वरसादनी पेठे महाध्वनिवालो सिंहनाद कर्यो. ते सिंहनादथी अत्यंत हर्षित थएला बाहुबलिनां लश्करीउं तेनां पडघानी पेठे चारे कोरथी गर्जना करवा लाग्या. ते वखते क्रोधथी लाल थएलो, विकराल आंखोवालो, तथा साक्षात कल्पांतकालनां अग्निसरखो सुषेण सेनापति खड्गरत्न लेइने दोड्यो. ते वखते लोको एवी तर्क करवा लाग्या के, शुं आ सुषेण आखा जगतनो संहार करशे ? के पर्वतोने उखेडी नाखशे ? के पृथ्वीने फाडी नाखशे ? हवे तेवी रीते सुषेणने धसी आवतो जोइने सिंहरथ कुमारे वायुसरखा वेगवाला घोडाउंथी रथने वच्चे नांख्यो. त्यारे कांठापरनां पर्वतथी अटकावेलो समुद्रनो मोजो जेम अटकी जाय, तेम महाबलवान सुषेण पण तेथी अटकी गयो. ते वखते युद्धनो साक्षी सूर्य पण बहु पडतां एवां सुभटोनां बाणोथी जाणे त्रास पाम्यो होय नहीं, तेम अस्ताचलप्रते गयो. त्यारे बन्ने राजाउंनी आज्ञाथी पूर्वापर समुद्रोनी वेलानी पेठे बन्ने सैन्यो पाछां वल्यां. पछी ते महापराक्रमी वीरो केटलीक मेहेनते ते रात्रि गालीने, प्रभात काल थवाथी नाचवा लाग्या. पछी तेउं पोतपोतानां बख्तरोतथा हथियारो धारण करीने तैयार करेला पोतपोतानां वाहनोपर चड्या. पछी तेउं वाजांउंनां शब्द प्रमाणे चालता थका रणभूमिपर आव्या; तथा प्रसिद्ध पताकाउंथी उलखीने तथा एकबीजानां कुलादिकनुं वर्णन करीने, तथा बोलावीने बाणोनो वरसाद वरसाववा लाग्या. ते वखते पोतानां स्वामिना कृपारूपी समुद्रने पार पहोंचवानी इच्छाथी तेउं तीक्ष्ण अणिवालां बाणोने पण गणकारता नहोता. वली ते समये बाणो, बाणोनी साथे घसावाथी अग्निने उत्पन्न करता थका, जोवा आवेला देवोने पण भय उपजाववा लाग्या. वली ते वखते घासथी जेम दरिद्रिनुं घर, तेम राजाउं बाणोथी आकाशने आछादित करवा लाग्या, अने तेथी देवोने ते रणसंग्राम जोवामां विघ्न थवा लाग्युं. ते भयंकर रणसंग्रामने जोइने कायरो तो त्रास पामवा लाग्या, अने वीर पुरुषो तो ते महाघातोथी पण जाणे बेवडा थवा लाग्या. त्यां वीर पुरुषो, लोहीथी सींचाएली, तथा घोडाउंथी चूर्णित थएली पृथ्वीपर, हाथीनां कुंभस्थलोने भेदीने मोतीउं-

रूपी बीजो वाववा लाग्या; ते बीजोमांथी तेउनुं यशरूपी वृक्ष डालां-उथी विस्तार पामीने अक्षय थयुं थकुं, त्रणे जगतमां व्यापवाने समर्थ थशे. हवे सिंहरथ कुमार क्रोधातुर थइने, सर्व शस्त्रोथी स्फुरायमान थयो थको चक्रीनी सेना प्रते पोतानो रथ वेगथी दोडाववा लाग्यो; ते वखते सिंहकर्ण कुमार, अग्निनी पाछल जेम वायु, तेम सर्वने संहार करवामां समर्थ थयो थको तेनी पाछल आव्यो. पछी ते बन्ने वीरो चक्रीनी सेनाने क्षोभाववा लाग्या, अने पृथ्वीने कंपाववाथी देवोने पण दुष्प्रेक्ष्य थया. तेउनां बाणोना पडवाथी ते नहीं सहन करी शकावाथी लश्करीउनी आंखो मीचाइ गइ. तेउ संग्राममां रसिक थया थका हाथी, घोडा, रथ, पाला के राजाउने पण गणवा लाग्या नहीं. एवी रीते तेउना स्वछंद रीते चालवाथी लश्करमां आंतरो पडी गयो. त्यारे सुषेण पण मात्सर्यपणाथी प्रलयकालनां समुद्रनी पेठे, विविध प्रकारनां हथियारो सहित पवनवेगे दोड्यो. त्यारे बाहुबलिनां सैन्यनां राजाउ बोलवा लाग्याके, अरे ! आने मारो ! मारो ! पकडो ! पकडो ! पछी सुषेणे बाहुबलिनी सेनाने एवी तो विखेरी नाखी के, तेनी सामे कोइ पण आवी शक्यो नहीं. पछी त्यां सुषेणे पेला विद्याधरनां पुत्रने जोइने त्रणे जगतने क्षोभावनारो धनुष्यनो टंकार कर्यो; अने तेने कह्युं के, हे विद्याधर ! ते वखते सिंहरथे वचमां रथ नाखीने तारुं रक्षण कर्युं हतुं, पण आ समये तारुं रक्षण कोण करी शके तेम छे ? ते सांभलीने अनिलवेग पण महावेगथी तेनी सामे आव्यो. पण ततक्षण सुषेणनां हथीयारोथी व्याकुल थइ ते पाछो वल्यो. पछी त्यांथी वेगसेहित उछलीने ते चक्रीनी हाथीनी सेनामां आव्यो, त्यां ते दडाउनी पेठे हाथीउने आकाशमां उछालवा लाग्यो, तथा तेउने पडता झीलीने मुष्टीउथी मारवा लाग्यो. ते कोइ वखते पृथ्वीपर, तो कोइ वखते आकाशमां, तो कोइ वखते तीछों, तो कोइ वखते फुदडी फरतो, तो कोइ वखते चतुरंगी सेनामां देखावा लाग्यो. तेवी रीतनो तेने जोइने, हथीपर बेठेला चक्रीए क्रोधथी, इंद्र जेम वज्रने तेम तेनापर चक्रने मुक्युं. हजार आराउमांथी निकलती ज्वालाउनी श्रेणिवालां सूर्यबिंब सरखां ते चक्रने जोइने हुबदनी पेठे ते विद्याधर जय पाम्यो. पछी तेणे विचार्युं के, अ-

हींथी नाशी जवुं तेज श्रेष्ट छे, एम विचारि वारंवार चक्रने पाछुं वाली जोतो थको ते नाशवा लाग्यो. पछी ते मेरु, गुफा, समुद्र, रुचकद्विप, बीजा द्वीपो, अने पाताल विगेरे ज्यां ज्यां जवा लाग्यो, त्यां त्यां ते चक्रने पूर्वार्जित कर्मनी पेठे पाछल आवतुं जोइ, तेणे वज्रपंजर बनाव्युं. त्यारे तेने चक्राधिष्टायक देवो हसीने कहेवा लाग्या के, रे रंक ! तें आ चक्रीप्रते शुं करवा मांड्युं छे ? वली हे रंक ! ते चक्री ज्यारे तारापर कोपायमान थया, त्यारे देवोमांथी पण तारुं कोण रक्षण करी शके तेम छे ? माटे हवे तें पक्षीनी पेठे पंजर शामाटे धारण कर्युं छे ? पछी ते अनिलवेग विद्याधर छमास पछी पोतानां ते पिंजरमांथी निकल्यो, त्यारे चक्रे तेनुं माथुं कापी नांख्युं. पछी ते चक्र पाछुं वलीने चक्रीना हाथमां आव्युं, अने चक्रीनां सैन्ये वारंवार जय जय शब्द कर्यो. हवे सिंहरथ तथा सिंहकर्णने तेवी रीतना जोइने मेघनाद अने सिंहनाद नामनां चक्रीनां पुत्रो तेनी तरफ दोड्या. पछी ते चारे वीरो परस्पर युद्ध करता थका, देवोने पण चारे दिशाउंनां प्रलयनी भ्रांति सूचववा लाग्या. जगतने क्षोभ पमाडनारा ते चारे वीरो वज्रोनी साथे जेम वज्रो तेम अत्यंत बलथी लडवा लाग्या. हवे ते वखते तेउंनां रणसंग्रामथी जाणे डर्यो होय नहीं तेम, सूर्य अस्ताचलप्रते गयो; अने बन्ने लश्करो पण पोतपोताने स्थानके गयां. त्यां पुरोहिते काकिणी रत्नां पाणीथी वैरिनां मारथी घायल थएली सेनाने पाछी नवी जेवी करी; अने चंद्रयशाए चंद्रथी मेलवेली विद्यानां योगथी बाहुबलिनी सेनाने शल्यरहित करी. पछी प्रभातमां पोतपोतानी पताकाउंथी आकाशने चित्रित करता थका, अंदर क्रोधवाला थइने सर्वे शस्त्रो सहित त्यां आवी पहोंच्या. त्यां पर्वत सरखा माथांवालो रत्नारि नामनो विद्याधर बाहुबलिनां चरणोने नमीने, तथा तेनी आज्ञा लेइने, लाख भारनां वजननी लोखंडनी गदा हाथमां धारण करीने, वंटोलीआनी पेठे गर्जना करतो थको वेगथी दोड्यो. यमनी पेठे हाथमां गदावाला, ताडनां वृक्ष सरखा उंचा, बलती अग्निसरखी पीली आंखोवाला, उगता सूर्य सरखा मुखवाला, वृक्षनां डालां सरखा हाथोवाला. शीलातल सरखा हृदयवाला, बीजा विद्याधरोथी वींटाएला, महा भयंकर तथा महा बलवान एवा ते विद्याधरने

जोइने लश्करीर्ज कंपवा लाग्या. ते विद्याधर, वरसादनी पेठे गर्जना करतो थको चक्रीनां सैन्यमां प्रलयकालनां अग्निनी पेठे गदानां मारथी कांकराउंनी पेठे हाथीउंने, पतंगीआंउंनी पेठे घोडाउंने, पक्षिनां मालाउंनी पेठे रथोने, तथा क्षुद्र कीडाउंनी पेठे पालाउंने मारवा लाग्यो. त्यारे माहेंद्रचूड नामनो विद्याधर पण भरतने नमी, हाथमां भयंकर मुशलने भमावतो थको क्रोधथी तेनी सामे दोड्यो. पछी ते महा बलवान विद्याधरे वज्रथी जेम पर्वतने, तेम ते रत्नारिने मार्यो, अने तेथी ते पृथ्वीपर लोटवा लाग्यो. ते वखते सूर्य पण तेनी साथे तेनीज आकृतिने धारण करतो थको पश्चिम समुद्रमां जइने पड्यो. ते रात्रिए बाहुवलिनुं सैन्य कमलनी पेठे मुकुलित थइ गयुं; पण प्रभात होते छते पाछुं क्षणवारमां प्रफुल्लित थयुं. हवे रत्नारिने हणाएलो जाणिने अमितकेतु क्रोधथी वलतो थको, धनुष्य अने फरसी लेइने चक्रीनां सैन्यप्रते दोडी आव्यो. ते बाणोनी धाराउंथी वैरीउंनां समूहमां दुर्दीन करतो थको मेघनी पेठे तेउंनां मुखोने उलटां करवा लाग्यो. पछी क्षीरसमुद्रनी पेठे गर्जना करतो, तथा प्रलयकालनां सूर्यनी पेठे तीव्र अने अद्भूत तेजोथी तपतो, तथा दोषोनी खाणसरखा (चंद्र सरखा) शत्रुनां समूहोने कलंक सहित करतो थको सूर्ययशा रथ सहित तेनी सामे आव्यो. ते सूर्ययशानां नादथी चक्रीनां लश्करीउंने जाणे बेवडो हर्ष थयो होय नहीं तेम, तेउं समरांगणपर आव्या. एवी रीते धसी आवता सूर्ययशानां केतुने अमितकेतुए क्षणवारमां बाणथी छेदी नाख्यो. ते जोइ धूमकेतुनी पेठे उछलेला सूर्ययशाए अर्धचंद्र नामनां बाणथी तेनुं गलुं कापी नाख्युं. ते वखते चक्रीनी सेनामां जय जय शब्द थयो, तथा सूर्ययशापर आकाशमांथी पुष्पवृष्टि थइ. एवी रीते मंथानक सरखो ते सूर्ययशा बाहुबलिनी सेनाने वलोवीने पाछो पोतानां सैन्यमां आव्यो. पछी बाहुबलिए राजाउंने बोलाव्याथी वीस क्रोड पाला, तेटलाज घोडा, रथ, तथा हाथीउंनो स्वामी, तथा वैताढ्यनी दक्षिण श्रेणिनो सुमति नामनो नायक. बाहुबलिने नमीने रणसंग्राममां धस्यो. ते वखते साक्षात शौर्यधर्म सरखो, तथा सिंहनी पेठे महापराक्रमी शार्दूल नामनो चक्रीनो पुत्र ते सुमतिने धस्यो आवतो जोइने, वीररसथी आकुल थयो थको, हा-

थीपर बेसी सिंहनाद करी समरांगणमां आव्यो. तेनां बाणोनुं आकर्षण, संधान, के मोक्ष कंइ पण शत्रुनां समूहो जोइ शक्या नहीं; एवी रीतनां ते शार्दूलने बाणोथी दुर्जय जोइने सुमतिए देवोथी पण ने भेदाय एवां दीव्य शस्त्रो तेनापर फेंक्यां. त्यारे प्रेमपाशोथी जेम प्राणी, तेम ते शार्दूल सिंहनी पेठे नागपाशोथी बंधायो थको चालवाने अशक्त थयो. तेनी पीडा जरा वेठीने, तथा तुरत सूर्यथी प्राप्त थएली विद्यानुं स्मरण करीने, हाथी जेम कमलनां तंतुउने, तथा योगी जेम कुकर्मोने तेम तेणे तुरत ते नागपाशोनां बंधनो त्रोडी नांख्यां. पछी वादलांमांथी निकलता सूर्यनी पेठे अधिक कांतिवालो थएलो ते शार्दूल खड्ग उगामीने क्रोधथी सुमतिप्रते दोड्यो. पछी सिंह जेम पर्वतने तेम हाथीने छोडीने तेणे सुमतिने क्रोधथी मस्तकमां खड्गथी मार्यो. ते घाथी ते विद्याधरनां काचा घडानी पेठे वे टुकडा थइ गया; अने रणसंग्राममां शार्दूलनो प्रताप पण वेवडो थयो. ते वखते सूर्य पण कमलोनां निमीलनने नहीं सहन करवाथी जय पामीने अपर समुद्रप्रते गयो. पछी प्रभाते वैरीरूपी कमलोने नाश करनारो सोमयशा, तेजथी जाज्वल्यमान थइने चक्रीनी सेनासाथे लडवा लाग्यो. कालसरखो भयंकर एवो ते सोमयशा चक्रीनी सेनामांथी सर्व शस्त्रो एकठां करीने बहु क्रोधथी तेनो वरसाद वरसाववा लाग्यो; त्यारे तेनी साथे चक्रीनां सैनिको सूर्यसाथे जेम अंधकारो तेम लडवा लाग्या. एक एवो पण ते सोमयशा रणमां अनेक सरखो थइने, हरिणोनी साथे जेम सिंह, तेम ते सघलाउनी साथे लडवा लाग्यो. एवी रीते वंटोलीआनी पेठे तेणे चक्रीनी सेनाने उन्मार्गे चडावी दीधी. ते वखते सूर्ययशानो सुरराज नामनो महाबलवान् पुत्र, सोमयशाने तेवी रीते नुकशान करतो जोइने तेनी सामे धस्यो. एवी रीते जयनी इछावाला तेउ बन्ने ज्यारे एकठा थया, त्यारे लोकोनां मनमां क्षणवारसुधि प्रलयकालनी शंका थइ. ते वखते तेउनी वीकथीज जेम, तेम सूर्य अस्त थयो; तथा पाछो तेउने जोवामाटे ते कौतुकी सूर्य उदय थयो. ते वखते शब्दबंधु अने वीरबंधु, महाबाहु अने सुबाहुक, धूपघट ने धूमकेतु, जयवीर अने महाजय, वालुक ने त्रिलोक, तथा कामभोज अने चंडक, एवी रीते चक्री अने बाहुबलिनां

वीरो मांहोमांहे लडवा लाग्या. एवी रीते ते बन्ने सैन्योनो भयंकर रणसंग्राम बार वर्षोसुधी चाल्यो. हवे प्रभातमां रणतुरीओथी फरीने आवी पहोंचेला लश्करीओ महाक्रोधथी शस्त्रोनो वरसाद वरसाववा लाग्या. ते वखते भरतनां कालसेन अने वीरसेन नामनां पुत्रो, तथा महायश अने सिंहसेन नामनां बाहुबलिनां पुत्रो लडवा लाग्या; वळी कालमेघ अने महाकाल, सिंहविक्रम अने सुंदर एवी रीतनां कुमारो मांहों मांहे रणसंग्राम करवा लाग्या. तेओनां रथोनां चित्कारोथी पृथ्वीतल कंपवा लाग्युं. अने बाणोनां प्रहारोथी आकाशमां रहेला देवो पण त्रास पामवा लाग्या; वळी तेओनां सिंहनादोथी सिंहादिक पशुओ पण हरिणोनी पेठे दूर नाशवा लाग्या; तथा तेओनां भुजास्फोटोथी पर्वतो पण फाटवा लाग्या. ते वखते श्री भरत महाराजाना मोटा पुत्र सूर्ययशाए कल्पांतकाले उद्भ्रांत थएला समुद्रनी पेठे गर्जना करी; पछी ते उंचे प्रकारे नाद करतो थको तथा पोतानां हाथमां धनुष्य धारण करतो थको, बाणोनां समूहोने फेंकतो थको, सैन्यनां समूहने मूर्छित करतो थको, वायुथी जेम पर्वतो, तेम वेगथी हाथीओने लोटावतो थको, मूर्तिवंत यमनी पेठे सुभटोनां समूहने हणतो थको, रथोने चूर्ण करतो थको, घोडाओनां समूहने घुमावतो थको, रथनां चक्रनां शब्दोथी पृथ्वीमंडलने क्षोभ पमाडतो थको, वीरोनां कलेवरोथी गीधो अने शियालोने लोभावतो थको, दुःसह पराक्रमथी पोताना पिताने आनंद आपतो थको, महान राजाओने जडमूळथी काढी नाखतो थको, तथा अगल रहेलाओने भस्मरूप करतो थको, बाहुबलिनां लश्करप्रते दोड्यो. एवी रीते पोतानी सेनानो संहार करता सूर्ययशाने जोइने, क्रोध पामेला बाहुबलि तेनी सामे रणभूमिमां आव्या; तथा पृथ्वीने धडो अने मस्तकोवाली, आकाशने शस्त्रोवाळुं, तथा दिशाओनां चक्रने रुधिरवाळुं करवा लाग्या. पछी ते सूर्ययशाने कहेवा लाग्या के, हे वत्स! तुं क्षीरकंठ (बालक) छतां पण मारी सेनामां आवी हीन फुके छे. तेथी हुं खुशी थयो छुं, केम के, तें वंशनी शोभा वधारी छे. वळी त्रणे लोकमां पण एवो कोइ माणस नथी के, जे मारा क्रोधने सहन करी शके. माटे तुं जलदी मारी दृष्टिथी दूर था? केम के, तुं मने मारा सोमयशा सरखो छे. ते सांभळीने, सूर्ययशा उत्साह सहित जाणे

उलटो तेमने तर्जना करतो होय नहीं, तेम गंभिर वाणीथी बाहुबलिने कहेवा लाग्यो के, हे काकाजी! आजे तो मंगल छे; वली तमो मने ताततुल्य छो, तेथी हुं तमोने भक्तिथी नमुं छुं. वली पिताजी ज्यारे दिग्जयमाटे गया हता, त्यारे तेउ मने विनीतामांज छोडी गया हता, तेथी में जरा पण रणसंग्राम जोयो नथी; माटे आजे कृपा करीने आपनां आ पुत्रनी भुजाउनुं पराक्रम जुउ? एम कही तेणे धनुर्दंडनो टंकार कर्यो. ते वखते त्रणे लोकनां नाशनी शंकाथी संभ्रांत थएला देवो, आकाशमां एक बीजापर पडता थका टोलांबंध एकठा थया; अने विचारवा लाग्या के, अहो! पोतानां बन्ने हाथोसरखा, आ बे रुषभदेव प्रभुनां प्रत्रोनो रणसंग्राम केवो भयंकर निवडशे! एम विचारि तेउए बन्ने सैन्योनां सुभटोने कह्युं के, हे सुभटो! ज्यांसुधि अमो तमारा बन्ने स्वामिउने समजावीयें, त्यांसुधि तमोए कोइए युद्ध करवुं नहीं; अने ते माटे तमोने श्री रुषभदेव प्रभुनी "आण" छे. एवी रीते त्रणे जगतनां स्वामिनी आणाथी बन्ने सैन्योनां सुभटो चित्रेलाउनी पेठे स्थिर थइ गया. अने देवो भरत महाराजापासे गया. त्यां जइ तेउए भरतने कह्युं के, हे छ खंड भरतनां स्वामी! तथा हे चक्रीशिरोमणि! तमोए छ खंड पृथ्वीनो जय सुखेथी कर्यो; अने तेमां देवोमांथी पण कोइ तमारी सामे थयुं नहीं; अने हवे तमो बन्नेए श्रीरुषभदेव प्रभुनां पुत्रो थइने, पोतानां हाथथीज पोतानां हाथनो वध केम आरंभ्यो छे? तमारा पिताजीएज आ जगतनी सृष्टि बनावी, अने ते सृष्टिनो तमो बन्ने संहार करो छो, ते तेमनां पुत्रपणाने लायक छे? वली तमो ज्यारे सामा चालीने लडवा आव्या छो, त्यारे ते बाहुबलि पण सामा आवेल छे, माटे तमो चाल्या जवाथी ते पण चाल्या जशे. वली ते तमारा नाना भाइ छे; माटे कारणे कारज नीपजे छे. माटे हे राजन्! जगतने संहार करवानां कारणरूप आ रणसंग्रामथी तमो विरमो? के जेथी आप जेवानो उदय त्रण जगतनां हर्षमाटे थाय. एवी रीते कहीने देवो मौन रह्यावाद चक्री तेउने कहेवा लाग्या के हे देवो! तमो हमेशां पिताजीनां भक्तो छो, अने अमो पण तेज पिताजीना पुत्रो छीयें; माटे युक्तायुक्तनो विचार करीने, तमो अमोने शिखामण आपो? "हुं बलवान छुं" एवा हेतुथी अथवा मात्सर्यथी हुं कंइ रणसंग्रामनी इछावालो नथी. पण आ

चक्र आयुधशालामां प्रवेश करतुं नथी, माटे तेनुं मारे शुं करवुं? वली साठ हजार वर्षोंसुधिमां दिग्जय करीने हुं आव्यो, अने ते वखते पण नहीं आवेला जाइउने में माणसो मारफते बोलाव्या, त्यारे तेउ तो मनमां कंइंक लावीने तातनां अनुयायिउ थया; पण आ बाहुबलि मारो अविनय करवा लाग्यो. पेहेलां तो ते मने तातनी पेठे विनयथी आराधतो हतो, अने हमणां तो ते दैवयोगे मारी आज्ञा पण मानतो नथी. हवे एक बाजुथी जोउं छुं तो आ मारो नानो जाइ माराज अंशतुल्य छे; अने बीजी बाजुथी आ चक्ररत्न पोतानां स्थानकमां प्रवेश करतुं नथी. माटे एकज वखत ते मारो जाइ मारी पासे आवे; अने पछी ते आ हाथी, घोडा, रथो, राज्य विगेरे मारुं सघलुं तुरत जले लेइ जाय. माटे हे देवो! एवी रीते संकटमां रहेला मने न्यायदृष्टिथी विचारिने तमो शिखामण आपो? एवी रीतनी चक्रीनी वाणी सांजलीने ते देवो तेमने कहेवा लाग्या के, हे महीपति! चक्ररत्ननां अप्रवेशथी अमो तमोने कंइ पण अटकावी शकता नथी. पण हवे जो ते बाहुबलि राजा पण माने तो, तमोए द्वंद्वयुद्धथी लडवुं, के जेथी जगतनो क्षय थाय नहीं, अने तेथी तमो बन्नेए दृष्टि, वचन, मुष्टि, अने दंडथी युद्ध करवुं; के जेथी तमारां बन्नेनां पराक्रमनी सिद्धी थशे, अने प्राणीउनो नाश थतो अटकशे. पछी ते वात जरते कबुल करवाथी ते देवो बाहुबलिनां सैन्यमां गया, त्यां तेउए बाहुबलिने जोया; त्यारे तेउए तेमने आशिष आपी के, हे युगादीश प्रजुनां पुत्र बाहुबलि! तमो जय तथा आनंद पामो? एम कही तेउ तेमने कहेवा लाग्या के, हे बाहुबलि! बलवान एवा तमोए जुजदंडनी खरजना मिशथी जगतना संहारनां कारणरूप आ शुं आरंज्युं छे? वली हे राजन्! तमो यशनां अर्थी तथा गुरुजक्त छो, तो आ मोटा जाइ साथे तमोए रणसंग्राममनो संरंज शुं मांड्यो छो? माटे तमो चालो? अने जरतराजाने नमस्कार करो? केम के तेवी रीतनी गुरुसेवाथी तमारुं विशेष मान थशे. वली पोतेज मेलवेला धननी पेठे छ खंड जरतनुं राज्य तमो करो? अने तेम कर्याथी सर्वथा तमारी शोजा वधशे, केम के, अहंकार तो अज्ञानी माणसोने होय छे; एटलुं कहीने देवो मौन रह्या बाद बाहुबलि तेमने कहेवा लाग्या के, सरल आशयवाला तमो तातनां अत्यंत

नक्त छो. अगाउ श्री पिताजीए याचकोप्रते जेम धन, तेम अमोने अने भरतजीने पण राज्य वेहेंची आप्युं छे. त्योरे अमो तो पिताजीनी आज्ञापूर्वक तेटलाज राज्यथी संतुष्ट रह्या; अने भरतजी तो असंतुष्ट थइने समस्त भरतखंड गली गया; तेटलेथी पण तेनी आशा संपूर्ण न थवाथी तेमणे भाइउनां राज्यो लेइ लीधां; अने तेम करीने तेमणे तेवी रीतनी पोतानी गुरुता देखाडी !!! अने तेथी मिथ्यात्वथी मूढ मनवालो अतत्वने पण जेम तत्वबुद्धिथी माने छे, तेम में पण गुरुबुद्धिथी तेमनी फोकट तातनी पेठे सेवा करी. वली ते चक्री थइने पण मारुं राज्य अन्यपणानी बुद्धि लावी हरवानी इछा करे छे, पण ते एम नथी जाणता के, आ बाहुबलि तो तेनुं सर्व कंइ हरी लेशे! माटे ते मोटा भाइने पण गुरुबुद्धिथी फोकट केम नमुं ? अने तेथी पोतानां पराक्रमथी जो ते राज्य लेइ शके, तो भले लीए. वली हे देवो! जे सामो लडे नहीं, तेनी साथे लडवुं नहीं; माटे ते जेवा आव्या छे, तेवाज जो पाछा जाय, तो समर्थ एवो पण हुं तेमनी उपेक्षा करीश. वली तेमनां दीधेला भरतखंडने हुं भोगवुं, एवुं तमोए सांभल्युं पण क्यांथी ? केम के, जो पिताजीनां आपेलांथी पण तृप्ति न थइ, तो पछी शाथी थवानी हती ? माटे हे देवो ! जो तमो अमारुं हित इछता हो तो, तेमनीपासे जइ तेमने लोभांधनेज समजावो ? वली हुं तेमना जेवो कंइ लोभी पण नथी. एवी रीतनी बाहुबलिनी वाणी सांभलीने देवो मनमां आश्चर्य पामी कहेवा लाग्या के, चक्रनां अप्रवेशथी भरतने पण अटकावी शकाय तेम नथी, माटे हवे तमो बन्नेए उत्तम द्वंद्व युद्धोथी लडवुं, पण अधम युद्धोथी लडवुं नहीं. ते वात बाहुबलिए कबुल करवाथी देवो जोताथका नजदीकमां आकाशमां उभा.

हवे बाहुबलिनो छडीदार हाथीपर चडीने, हाथ उंचो करी, मोटा शब्दोथी सुभटोने कहेवा लाग्यो के, हे सघला राजपुरुषो ! तमो आ वांछित रणसंग्रामथी पाछा हठो ? तथा हाथी घोडा आदिक वाहनोने पण सर्वे जगोएथी पाछा खेंची ल्यो ? केम के, देवोनी मागणीथी आपणा स्वामीए द्वंद्वयुद्ध करवुं कबुल्युं छे; माटे तमो ते दूर रहीने जुउ ? ते सांभली सर्वे सुभटो पोतानी भुजाउने फोकट वृद्धि पामेली मानता थका, राजानी आज्ञाथी वांछित रणथी दूर खस्या. पछी भरतनां लश्क-

रीउ पण पाछा हठता थका एवुं चिंतववा लाग्या के, अमो बेठा छतां आपणा स्वामीए द्वंद्वयुद्धनो शामाटे आश्रय कर्यो हशे? वळी सैन्यनां मृत्युथी तथा जागवाथीज सर्वथा रक्षण करवा लायक एवा राजाउंये द्वंद्वयुद्ध करवुं लायक गणाय. वळी एक आ बाहुबलि शिवाय समस्त छ खंड जरतमां पण आपणा स्वामि सरखो कोइ बलवान नथी, अने तेथीज अमोने आ बाबत शोच थाय छे. एवी रीते एकठा थइने शोचमां पडेला पोतानां सैनिकोने जोइने जरते पोतानुं बल देखाडवा माटे तेउंने आज्ञा आपी के, तमो एक मोटो खाडो खोदो? ते सांजळी तेउंए एक विस्तारवालो खाडो खोद्यो. पछी महा बलवान चक्री ते खाडानां कांठापर बेठा, अने पोतानां बन्ने हाथो सांकलोथी बांध्या. एवी रीते सेंकडो छेडावाळी सांकलोथी विंटाएल छे शरीर जेमनुं एवा ते चक्री, वडवायोथी विंटाएला वडनी पेठे, तथा किरणोथी विंटाएला सूर्यनी पेठे शोजवा लाग्या. पछी तेमणे पोताना लश्करीउंने हुकम कर्यो के, हवे तमो सघला सर्व वाहनोसहित, तथा तमारां समस्त बलथी मने खेंचीने आ खाडामां तुरत पाडो? के जेथी तमोने मारा बलमाटे निर्जयपणुं थाय. पछी तेउं सघला तेमने खेंचीखेंचीने थाकी गया, पण तेथी चक्रीने जरा पण तेउं चलावी शक्या नहीं. पछी चक्रीए हृदयपर हाथ फेरववानां मिशथी तेउंने जरा खेंच्या; त्यारे सघला राजाउं विगेरे सैनिको पोतानां वाहनो अने परिवारोसहित, लताप्रते जेम पक्षिउं, तेम सांकलमां लटकता थका खाडामां पड्या. एवी रीतनां पोतानां स्वामिनां बलनां माहात्म्यथी खुशी थएला एवा तेउं रणसंग्राममां पराङ्मुख थइने साक्षिउंनी पेठे नजदीक उजा.

हवे देवोए ते रणजूमिने गंधोदकथी सींची, तथा त्यां पचरंगी पुष्पोनी श्रेणि पाथरी. पछी चक्री अने बाहुबलि दृष्टियुद्धनी प्रतिज्ञा करीने, रणजूमिपर सामसामा उजा. एवी रीते अनिमेष रीते जोता थका तेउं बन्ने चिरकालनां अनालोकदोषनुं मार्जन करता होय नहीं, तेम शोजवा लाग्या. विस्तारवाळी आंखोवाला, लाल मुखवाला, तथा पर्वतसरखा उंचा, एवा ते बन्ने वीरो, एक बीजाने ग्रस्त करवानी, इच्छावाळा होय नहीं, तेम जयंकर देखावा लाग्या. पछी बाहुबलिनां सूर्य सरखा गाढ मुखने जोवाथी चक्रीनी आंखोमां पाणी आवी ते बीडाइ गइ. ते

वखते ज्ञरतेशनां लश्करीउंनां मुखो नीचां थयां. अने तेनी स्पर्धाथीज होय नहीं जेम, तेम बाहुबलिनां सैनिकोनां मुखो उंचां थयां, पछी नीचुं मुख करी रहेला ज्ञरतने बलवान बाहुबलि कहेवा लाग्या के, हे स्वामी! तमो उद्विग्न केम थाउं छो ? हजु मारी साथे वाग्युद्ध करो ? एवी रीतनां तेनां वचनथी, पदघातथी जेम सर्प, तेम आमर्षयुक्त थइने चक्री कहेवा लाग्या के ज्ञले तेम करो ? पछी चक्रीए मंदराचलथी वलोवाएला समुद्रना ध्वनि सरखो, तथा ऐरावणनी गर्जना सरखो, अने कल्पांतकालनी मेघनी गर्जना सरखो, तथा आकाशमांथी नक्षत्रोनां समूहने पाडतो, एवो महाज्ञयंकर सिंहनाद कर्यो. ते सिंहनादथी कुलपर्वतोनां शिखरो कंपवा लाग्यां, तथा समुद्र उछलवा लाग्यो, अने तेनां पाणी गगनांगणमां पहोंचवा लाग्यां, वली ते वखते नागकुमारो एक पातालमांथी बीजा पातालमां, तथा सिंहादिक दुष्ट प्राणीउं एक गुफामांथी बीजी गुफामां जवा लाग्या. वली ते समये दुर्बुद्धिउं, जेम सुबुद्धिने तेम घोडाउं लगामने, तथा हाथीउं अंकुशने, न गणकारवा लाग्या. वली चाडीआउं जेम उत्तम वाणीने तेम रथनां घोडाउं राशने, अने खच्चरो जाणे ज्ञूतज्ञराएलां थयां होय नहीं तेम, चाबुकना मारने न गणकारवा लाग्या. वली सर्वे लश्करीउं तो घूर्णित तथा निश्चेतनोनी पेठे, पोतानुं सर्वस्व हराइ गयुं होय नहीं तेम मूर्छित थया. पछी क्रोधातुर थयेला वाहुबलिए पण सर्व गर्व अने सर्व तेजथी ब्रह्मांडने पण फोडी नाखे, एवो सिंहनाद कर्यो. ते वखते अंदर पडेला मंथाचलनां मथननां शब्दनी शंकाथी समुद्रमां रहेला जलचरो त्रास पामवा लाग्या. वली फरीने इंद्रे मुकेला वज्रनी ध्वनिनां ज्रमथी पोतानां क्षयनी शंका करता थका कुलपर्वतो पण कंपवा लाग्या. वली ते समये अंतःकरणमां जाणे शल्य पेठुं होय नहीं, तेम त्रणे जगत चेतनरहित थयां. वली देवांगनाउं पण दिग्मूढ थइने पोतानां ज्ञरतारनां हृदयनुं शरणुं लेवा लागी, पछी चक्रीए फरीने दुःसह सिंहनाद कर्यो. त्यारे वाहुवलिए पण कानने वेहेरा करी नाखे एवो, तथा स्थिर वस्तुउंने पण चलायमान करे तेवो, सिंहनाद फरीने कर्यो. तेम करतां थकां अनुक्रमे दुर्जननी मित्राइनी पेठे चक्रीनो सिंहनाद घटवा लाग्यो, अने वाहुवलिनो सिंहनाद नदीनां प्रवाहनी पेठे, तथा सज्जननी

मित्राइनी पेठे वृद्धि पामवा लाग्यो. एवी रीते शास्त्र संबंधि वादमां पण सर्वनी साक्षीए बाहुबलिनी जीत थइ. पछी बाहुबलिए फरीने चक्रीने कह्युं के, हे जगन्नाथ! आ काकतालीय न्यायथी में तमोने जीत्या छे, पण तेथी तमो विषाद करो नहीं? हजु मुष्टियुद्ध करो? एवी रीतनां बाहुबलिना वचनथी उत्साहवंत थयेला भरताधिपे मुष्टियुद्धमाटे उंचे प्रकारे भुजास्फोट कर्यो. पछी तेउ बन्ने कटीपर पट्टा बांधीने, तथा पगनां धबकाराउथी पृथ्वीने उंची नीची करता थका खेलवा लाग्या. पछी तेउ सिंहनाद करता थका वायुवेगथी जेम वृक्षो, तेम आकाशपातालने उंचुं नीचुं करता थका शोभवा लाग्या. वली तेउ वारंवार कुदीकुदीने पगोथी पृथ्वीने ताडन करता थका कूर्मराजने पण प्राणसंदेहनां संकटमां पाडवा लाग्या. वली तेउ नजदीक नजदीक रहेलां वृक्षोनी पेठे, एक बीजानी भुजाउने मरडता थका भेटवा लाग्या, तथा ततक्षण विखुटा पडवा लाग्या. पछी बाहुबलिए क्रोधायमान थइने चक्रीने हाथमां लेइने दडानी पेठे आकाशमां वेगथी उछाल्या. ते वखते "आ चक्री छखंडने जीतीने हवे शुं आकाशने पण जीतवानी इच्छा करे छे?" एवी शंकावाला देवोथी कौतुके करीने जोवोता, ते चक्री योगीनी पेठे आकाशने तेजस्वी करता थका तेने उलंगीने अदृश्य थया. ते वखते बन्ने सैन्योमां मोटो हाहाकार थइ रह्यो; तथा आकाशमां रहेला देवोने पण ग्लानि आवी गइ. ते वखते बाहुबलि शोचवा लाग्या के, धिक्कार छे मारा आ उच्छृंखल बलने! तथा मने अविवेकीने! तथा धिक्कार छे! मारा आ राज्यमाटेनां लोभने! अने बन्ने राज्योनां मंत्रिउने पण धिक्कार छे!!! पण हवे आवी शोचनाथी शुं थवानुं छे? माटे जेटलामां आ मारा मोटा भाइ पृथ्वीपर पडीने चूर्ण न थइ जाय, तेटलामां तेनो उपाय करुं. एम विचारि तेमणे पोताना बन्ने हाथोने शय्यानी पेठे विस्तार्या; तथा उंची दृष्टि करीने पगनां अग्र भागथी पृथ्वीने स्पर्श करीने उभा. पछी आकाशने दीपावता एवा विद्युदंडनी पेठे पडता चक्रीने बाहुबलिए झीली लीधा. पछी चक्री अत्यंत उग्र मुष्टिने उगामीने खेचरोने त्रास पमाडता थका बाहुबलिप्रते दोड्या. पछी चक्रीए ते मुष्टि बाहुबलिने माथामां मारवाथी, ते जाणे भरा आंखो मिंचीने कंइक याद करता होय नहीं, तेवा देखावा

लाग्या. पछी पवन जेम पर्वतना शिखरने, तेम बाहुबलिए स्वस्थ थया बाद मुष्टिथी जरतनी गतीमां ताडना करी. ते घाथी चक्री, जाणे पोताप्रते पृथ्वीनां समस्त रागने जाणवानी इच्छावाला थया होय नहीं तेम पृथ्वीतलपर पडी गया. ते वखते पोतानां स्वामिनां दुःखथी दुःखी थएला जरतना सर्व सैनिको मूर्छा पाम्या; केमके मोटाउनी आपदा कोने दुःखदायक थती नथी? ते वखते बाहुबलि विचारवा लाग्या के, अहो! में दुर्मेदीए आ कुलनो नाश करनारुं शुं कार्य आरंभ्युं छे? वली ज्यारे आ मोटा जाइ जीवे नहीं, त्यारे तो हुं पण जीवी शकुं नहीं; एम विचारिते आंखमां आंसु लावी जरत महाराजने पोतानां दुपटाथी पवन नाखवा लाग्या. पछी संज्ञा आव्या बाद चक्रीए नाना जाइने चाकरनी पेठे पासे उन्नेला, तथा पोताने तेवी स्थितिमां रहेला जोया. पछी ते चक्री उठीने क्रोधांध थया थका लोखंडनो दंड जमावता थका बाहुबलिप्रते दोड्या. पछी हाथी दांतोथी जेम नगरनां दरवाजाने, तेम चक्रीए क्रोधथी बाहुबलिने तुरत ते दंडथी ताडना करी. एवी रीतना चक्रीना दंडघातथी बाहुबलिनां मस्तकपर मोटो ध्वनि थयो, तथा तेमनो मुकुट जीर्ण घडानी पेठे चूर्णित थइ गयो. अने तेनी व्यथाथी बाहुबलिनां नेत्रो बीडाइ गयां, तथा तेनां दुःसह शब्दथी लोकोए कानोपर हाथ मेल्या. पछी ते व्यथाने नहीं गणकारीने तेणे पण लोखंडनो दंड लेइ जमाववा मांड्यो; ते वखते लोकोने एवी शंका थइ के, शुं आ पर्वतोना शिखरोने जांगी नाखशे? के पृथ्वीने फाडी नाखशे? पछी हाथी जेम पोतानां मजबूत दांतोथी नगरनां दरवाजाने, तेम तेणे ते दंडथी चक्रीना हृदयमां ताडना करी. ते घाथी चक्रीनुं दृढ बख्तर पण चुर्णित थइ गयुं; अने तेथी वादलांमांथी निकलेला सूर्यनी पेठे प्रगट कांतिवाला ते देखावा लाग्या. पछी कल्पांत कालनो मेघ तडिद्दंडथी जेम पर्वतने, तेम चक्रीए ते दंडथी बाहुबलिने ताडना करी. ते वखते बाहुबलिप्रते पोताना अपराधनां जयथीज होय नहीं जेम तेम ते लोखंडनो दंड जांगी गयो. ते दंडघातथी बाहुबलि घुंटणसुधि पृथ्वीमां समाइ गया; अने ध्यानमां रहेला योगीनी पेठे क्षणवार बेजान रह्या. पछी कादवमां डुबेला हाथीनी पेठे पोतानुं अंग कंपावीने ते तुरत बहार निकल्या; तथा

हाथमां लोहदंड लीधो. ते वखते "शुं आ ताराउने पाडी नाखशे ? के पर्वतोने चूरी नाखशे ? के पद्मिनां मालाउनी पेठे आकाशमांथी विमानोने फेंकी देशे ?" एवी रीते लोकोथी शंका कराता, अने जोवाता एवा बाहुबलिए यमनी पेठे चक्रीने बलथी ताडना करी. ते दंडघातथी चक्री ठेक कंठसुधि जमीनमां डुबी गया; अने तेथी राहुथी जरा ग्रसाएला चंद्र सरखा ते देखवा लाग्या. ते वखते बाहुबलि शोचवा लाग्या के, अहो! न्नाइनां वधथी मने मोटुं अने डुःसह पाप थयुं! तथा अरे! में कुपुत्रे तातना वंशने कलंकित कर्यो!! एवी रीते बाहुबलि जेटलामां शोच करे ठे, तेटलामां सूर्य सरखी कांतिवाला चक्री ते व्यथाने तजीने पृथ्वीमांथी बहार निकल्या; तथा विचारवा लाग्या के, देवोथी जेम इंद्र, हरिणोथी जेम सिंह, तथा ताराउथी जेम चंद्र, तेम चक्री बीजा राजाउथी जीताय नहीं!! माटे साठ हजार वर्षोसुधि में जे दिग्जय कर्यो, ते शुं आ बाहुबलिमाटेज कर्यो ? के जेथी आ मने मारवाने उद्यमवंत थयो ठे!!! वली वासुदेवनी पेठे एकी वखते बे चक्री थाय पण नहीं; केम के जिनागमनी वाणी शुं वृथा थाय ? माटे खरेखर हुं चक्री नथी, पण आ चक्री ठे; अने आजदनसुधि में तेना सेनापतिनी पेठे दिग्जय कर्यो. एवी रीते मनमां चिंतातुर थएला ते चक्रीना हाथमां तेज वखते सूर्यसरखी कांतिवालुं, तथा अग्निकणोने उडाडतुं चक्ररत्न आव्युं. ते चक्रनां आववाथी पोताने चक्री मानीने, तथा चक्रने न्नमावीने गर्वथी तेणे बाहुबलिने कह्युं के, हे बाहुबलि! हजु पण कंइं बगडी गयुं नथी; माटे देवोए पण मानेली, एवी मारी आज्ञाने तुं मान ठोडीने अंगीकार कर ? वली तुं नानो न्नाइ ठे, तेथी तारा पूर्वना सघला अपराधो हुं क्षमा करीश, अने तारा वधथी मने भ्रातृहत्यानुं पाप पण न लागे तो सारुं! वली तीर्यंचोमां पण जेम हाथीथी मोटो सिंह, अने तेथी मोटो अष्टापद ठे, पण तेउ सघला शुं राजाने वश नथी थता ? एवी रीते बाहुनां बलथी तारे पण गर्व करवो लायक नथी, केम के सघला बलवान राजाउ पण चक्रीनी आज्ञा माननाराउ थाय ठे. एवी रीते बोलता चक्रीने बाहुबलि पोतानां खन्नाउपर दृष्टि नाखता थका गंभीर वाणीथी कहेवा लाग्या के, हे आर्य! आ तमारी क्षत्रीयपणानी

बुद्धि तथा तमारुं तातपुत्रपणुं तो अहो! बहु सारुं शोभे छे!! केमके दंडयुद्धनी प्रतिज्ञा करीने पण तमोए चक्र ग्रहण कर्युं छे!!! वळी हे गुणज्येष्ट! पतंगीउं जेम सूर्यने तेम तमो आ लोखंडनां टुकडाथी आ बाहुबलिना बाहुनां बलने शामाटे निंदो छो? वळी तमारा बाहुनुं वल तमोए जोयुं! हवे आ चक्रनां बलने पण तमो जुउं? वळी हे जाइ! तमो कंइ पण शंका करशो नहीं! केम के क्षत्रीयोनो ते व्यवहार छे. ते वचनथी क्रोध पामेला चक्रीए ते चक्ररत्नने जवामीने, तथा जोनाराउंने जय उत्पन्न करीने, तुरत ते छोड्युं. ते वखते बाहुबलि विचारवा लाग्या के, शुं आ चक्रने हुं लोहदंडथी घडानी पेठे फेंदी नाखुं? के दडानी पेठे लीलामात्रथी आकाशमां उछाली नाखुं? अथवा मारा यशरूपी वृक्षमाटे तेने पृथ्वीमां बीजनी पेठे दाटी देउं? अथवा चकलीनां बच्चांनी पेठे हाथमां लेइने तेने चूर्ण करी नाखुं? अथवा मूष्टी मारीने तेने कोइ दिशामां फेंकी दउं? नहीं! पण तेनुं पराक्रम तो जोउं!! बाहुबलि एम विचारते छते, ते बलतुं चक्र तेने प्रदक्षिणा करीने, फरीने चक्रीना हाथमां गयुं. (चक्रीनां सामान्य गोत्रीउंपर पण ते चक्र चाली शकतुं नथी; त्यारे आवा सिद्धिवंत पुरुषनी तो वातज शी करवी?) पछी बाहुबलिए विचार्युं के, हवे तो आजे आ चक्रने, तेनां अधिष्टायक हजार यक्षोने, तथा अन्याय करनारा ते चक्रनां स्वामी जरतने पण मुष्टिथी चूर्ण करी नाखुं; एम विचारि बाहुबलि कल्पांतकाले मूकेला इंद्रनां वज्र सरखी निष्ठूर मुष्टि उगामीने चक्रीप्रते दोड्या. पछी समुद्र जेम मर्यादाजूमिप्रते तेम, बाहुबलि रणजूमिपर चक्रीनी पासे आवी विचारवा लाग्या के, अरे!! चलाचल राज्य माटे, तथा मारा वन्ने जवोने नष्ट करवा माटे, में आ जाइनो वध करवानुं कार्य प्रारंज्युं छे!!! वळी मोटा जाइने मारीने, तथा नाना जाइउंने छलथी ठगीने जे राज्य आ दुनियामां मेलवाय छे, तेवुं मनोहर राज्य पण मारे जोइतुं नथी. वळी लेशमात्र सुखनी प्राप्तिथी ज्रमित थएला अधम नरोज नरकागारनां कारणरूप कार्यमां पडे छे; जो एम न होत तो जिनेश्वर प्रजु शामाटे तेवा राज्यनो त्याग करत? माटे हवे आजे तो हुं पिताजीने मार्गे चालनारो थउं!! एम मनमां विचारिने ते महाबुद्धिवान बाहुबलि, जरा उष्ण अश्रुजलोथी ए-

थ्वीने सिंचता थका चक्रीने कहेवा लाग्या के, हे ज्येष्टबंधु! आप हवे मारो अपराध क्षमा करो? वली हे जगत्प्रभु! में राज्यमाटे आपने बहु खेद आप्यो छे; वली हे वडीलभाइ! मारे हवे संपदानुं प्रयोजन नथी; हुं तो हवे पिताजीने मार्गे चालनारो थइश; एम कही बाहुबलि महाराजे तेज उगामेली मुष्टीथी पोताना मस्तकपरनां केशोने उखेडी नाख्या. (लोच कर्यो.) ते वखते "अहो! उत्तम कार्य! अहो! उत्तम कार्य!" एवी रीते देवो आनंद सहित बोलवा लाग्या; तथा बाहुबलि महाराजपर पुष्पोनी वृष्टि करवा लाग्या. पछी अंगीकार करेल छे महाव्रतो जेणे एवा बाहुबलि मुनिराज विचारवा लाग्या के, अनंत सुखनी संगतिवाला श्री पिताजीनां चरणकमलप्रते हवे हुं जउं; अथवा अहींज रहुं; केम के त्यां जवाथी प्रथमथी दीक्षित, तथा ज्ञानें करीने मनोहर एवा मारा नाना भाइउनी मध्ये मारी लघुता थशे. माटे अहींज ध्यानरूपी अग्निथी घातिकर्मोने बालीने, केवलज्ञान मेलव्याबाद हुं प्रभुनी सभामां जइश. पछी ते पंडितशिरोमणि बाहुबली मुनिराज एम विचारता थका, त्यांज बन्ने हाथो लांबा करीने कायोत्सर्ग ध्यानमां लीन थया.

पछी चक्री, बाहुबलिने तेवी रीतनां, तथा पोतानुं तेथी उलटुं कार्य जोइने, नीचुं मुख करी जाणे पृथ्वीमां समाइ जवानी इछा करता होय नहीं तेम देखावा लाग्या. पछी आंखोमां आंसु लावीने चक्रीए ततक्षण पोतानां नाना भाइने नमस्कार कर्यो; तथा पोतानी निंदारूप तथा तेमनी प्रशंसारूप नीचे प्रमाणे वचनो ते बोलवा लाग्या.

हे बांधव! आ दुनीयामां जेटला लोभ अने मत्सरथी ग्रस्त थएला माणसो छे; तेउनो हुं सरदार छुं! अने आप तो बलवान, कृपालु, अने धर्मीउनां सरदार छो. वली हे बंधु! आपे मने प्रथम युद्धथी जीत्यो, तथा हवे तमोए व्रतरूपी हथीयारथी रागादिक शत्रुउने जीत्या; माटे आपसरखो आ दुनीयामां कोइ पण बलवान नथी. वली हे भाइ! आपज खरेखरा तातनां पुत्र छो! केम के, तेमना मार्गमां आप वर्तो छो! अने हुं तो जाणतां छतां पण रागद्वेषथी कदर्थित थयो छुं. माटे हे भगवन्! आप हवे माारपर कृपा करो? अने आ समस्त पृथ्वीनुं मारुं राज्य ग्रहण करो? अने हुं आपनुं संयमरूपी साम्राज्य ग्रहण करीश. एवी रीते बाहुबलि

मुनिराजप्रते बालकनी पेठे आलाप करता ते चक्रीने, पवित्र बुद्धिवाला मंत्रीओए पछी समजाव्या.

पछी ते चक्री बाहुबलिनां पुत्र सोमयशाने अगाडी करीने, तक्षशीला नगरीपासे रहेला जिनमंदिरमां गया. त्यां उद्यानमां हजार आरावाला, तथा विचित्र मणिओथी जडेला, मंदिर सहित धर्मचक्रने नमस्कार करीने सोमयशा चक्रीने कहेवा लाग्यो के, हे तात! पूर्वे कल्मष रहीत श्री ऋषभस्वामी छद्मस्थ अवस्थामां पृथ्वीपर विहार करता थका रात्रिए आवी अहीं समोसर्या हता; त्यारे पिताजीए (बाहुबलिए) एम विचार्युं के, हुं प्रभातमां सर्व राजाओ तथा सर्व लोको साथे मोटा उत्सवपूर्वक तातपासे जइ तेमने वांदीश; एवी प्रतिज्ञा करीने, तेमणे मांचाओ, झरुखा, बजार विगेरे शणगाराव्यां; तथा त्रेवटा अने चोवटाओ विगेरे सर्व मार्गोपर कपूर अने चंदननां छंटकावपूर्वक कस्तूरीथी मंडलो कराव्यां; तथा त्यां पुष्पमालाओ, रंगबेरंगी पताकाओ अने मणिनां तोरणो बंधाव्यां. पछी प्रभाते पवित्र थइने, परिवार तथा सर्व लोको सहित, तातनी स्तुतिनुं स्मरण करता थका ते अहीं आव्या; पण तेटलामां तेमणे सूर्य विनानुं जेम आकाश, पुत्र विनानुं जेम उत्तम कुल, तथा जीवविनानुं जेम शरीर, तेम पिताजी विनानुं आ वन जोयुं. त्यारे मनमां खुंचेला दुःखरूपी खीलाथी पीडित थएला पिताजी, पडखे रहेला वृक्षोने पण रोवरावता थका रुदन करवा लाग्या के, विलंब करनार, तथा धर्मनो विघात करनार एवा मने धिक्कार छे!! केम के, में रात्रिये जइने पण पिताजीनां चरणकमलोने नमस्कार कर्यो नहीं!! वली हे भगवन्! तमो खरेखर वीतरागज छो, आप समान बीजो कोइ पण आ पृथ्वीपर ममतारहित नथी. केम के, पुत्रप्रते पण तमोए जरा पण राग धर्यो नहीं. एवी रीते रुदन करता पिताजीने मंत्रि प्रमुखोए समजाव्या बाद, तेमणे पिताजीना पगलांनी प्रतिमाने नमस्कार कर्यो; पछी तेमणे विचार्युं के, पिताजीना आ पगलांना स्थानकने कोइ स्पर्श न करे तो सारुं, एम विचारि तेमणे आ उंचां प्रासाद सहित आ धर्मचक्र अहीं स्थापन कराव्युं. (माटे बुद्धिवाने नानुं अथवा मोटुं प्रारंभेलुं धर्मकार्य विलंबविना प्रयत्नथी करवुं, धर्मकार्यना विस्तार माटे विलंब करवोज नहीं. केम के, विलंबथी रात्रि गया-

बाद बाहुबलि पण प्रभुने नमी शक्या नहीं) ते सांजली चक्री ते धर्मचक्रने नमीने तक्षशिलामां गया, तथा त्यां सोमयशानो अभिषेक करी राज्यपर बेसाड्यो. अने त्यांथी सेंकडो शाखाउंवालो सोमवंश (चंद्रवंश) चालु थयो, केमके पुरुषरत्नोनी उत्पत्तिनुं कारण तेवुं तेवुं एक होय छेज. ते सोमयशाने रूपवंती, तथा कुलीन एवी सुव्रतादिक चोवीस हजार स्त्रीउं हती, तथा जगतमां प्रख्यात पराक्रमवाला अने पवित्र श्रेयांस आदिक बहोतेर हजार तेमने पुत्रो हता; वली ते बत्रीस लाख गामोनुं, एकसो पत्तनोनुं, तथा त्रणसो नगरोनुं रक्षण करता हता. वली तेमने चुमालीस लाख रथो, एक लाख हाथी, तथा सूर्यनां घोडासरखा पांत्रीस लाख घोडाउं, तथा सवा क्रोड पालाउं हता; तेम सातसो राजाउं तेमनी आज्ञा धारण करता हता.

हवे सोमयशाथी, तथा त्यांनां सर्व राजाउंथी पूजाएला चक्री फरीने पण श्रीबाहुबलि मुनिराजनां चरणोने नमीने पोताना नगरप्रते गया, तथा त्यां सुर, असुर अने मनुष्योनां समूहोथी सेवाएला ते चक्री पितानी पेठे प्रजाने पालवा लाग्या.

हवे त्यां बाहुबलि मुनिराजे सर्व सावद्य व्यापारथी रहित थइने, तथा सर्व प्राणीउंप्रते हितकारी थइने, कर्मोनो नाश करवामाटे ध्यान धरवा मांड्युं. नाशिकापर राखेल छे दृष्टि जेमणे, निर्मल ज्योतिवाला, प्रभुनुं ध्यान धरता, तारानां प्रचारोथी रहित मेरुसरखा निष्कंप, घुटणसुधि लंबावेल हाथोवाला, रोकेल छे सर्व आश्रवो जेमणे एवा, तथा गोपवेल छे, चित्तरूपी पवन जेमणे एवा ते बाहुबलि मुनि शोभवा लाग्या. सर्व ऋतुनां दोषोथी दूषित नहीं थएला, तथा द्वेष अने रागथी नहीं लेपाएला योगी, तेम टाढ, तडको, तथा वरसादथी नहीं लेपाएली मूर्तिवाला ते बाहुबलि मुनि पर्वत सरखा शोभता हता. वली परस्पर जन्मवैरवाला जीवो पण सहोदरतुल्य थइने, तेमनो आश्रय करता हता; तथा तेमना मस्तकपर, डाढीमूछोपर अने भुजादिकमां पक्षिउं मालाउं बांधी रहेता हता. वली कर्मरूपी लताउं उखडी जवाथी, वनलताउंथी वींटाया थका, बादलांउनां समूहोथी जेम मेरुपर्वत तेम अधिक कांतिवाला ते गंभीर मुनिराज शोभता हता. वली दुष्ट माणसो जेम सज्जनोनां चित्तने, तेम

जलथी वृद्धि पामेला, अने तीक्ष्ण मुखवाला दर्भनां अंकुरो, पगमां प्रवेश करीने, तेमनां शरीरने ञेदवा लाग्या. एवी रीते ते मुनिराज रागद्वेषने जीतीने, हृदयकमलमां प्रज्ञुनुं ध्यान धरता थका, तथा मत्सररहित बुद्धिवाला थया थका, समज्ञावमां एक वर्षसुधि रहीने घातिकर्मोनां पटलोने बालवा लाग्या. पढी श्री युगादीश प्रज्ञुए तेमनी केवलोत्पत्तिना समयने, तथा तेमां विघ्न करनारा तेमनां मानने जाणीने, तेमने प्रतिबोधवामाटे ब्राह्मी अने सुंदरी सतीउने त्यां मोकली; अने तेउ पण अनुक्रमे ते मत्सररहित मनुष्यवाला वनमां आवी. त्यां ते साधवीउ वादलांमां रहेला सूर्यनी पेठे, वेलडीउनां समूहोथी विंटाएला ते मुनिराजने केटलीक महेनते उलखीने, आदरपूर्वक तेमने प्रज्ञुनां वचनो कहेवा लागी के, हे ञाइ! श्रीयुगादीश प्रज्ञु आपने अमारा मुखथी संदेशो कहेवरावे ढे के, हाथीपर चडेला पुरुषोने शुं केवलज्ञान थाय? माटे ते तमारा वैरीने तमो जीतो? वली हे युगादीश प्रज्ञुनां पुत्र! तमो ते तरुण गजेंद्रथी नीचे उतरो? वली हे बांधव! तमो आवा उत्कृष्ट मुनि थइने पण केम मोहमां पडो ढो? माटे बोध पामो? एटलुं कहीने ते बन्ने बेहेनो श्री आदिदेव प्रज्ञुनां चरण समीपे गइ; पढी ते वचनो सांञलीने बाहुबलि पण तेनुं तत्व विचारवा लाग्या के, आ बन्ने मारी बेहेनो सर्वज्ञ एवा श्री पिताजीनी शिष्यो ढे; माटे ते कोइ पण वखते जूठुं बोले नहीं, पण तेमणे जे हाथी कह्यो ते क्यां ढे? वली में तो हमेशने माटे आ ससांग राज्य तो तज्युं ढे! अने हुं तो कायोत्सर्ग ध्यानमां छुं! त्यां मने हस्तीनी प्राप्ति क्यांथी? पण अहो! हवे मालुम पड्युं!! "नाना ञाइउने कोण नमे?" एवी रीतनो मानरूपी हाथी मारी पासेज रहेलो ढे, माटे ते मारुं डुष्कृत हवे मिथ्या थाउ? हुं तेउने जइ नमीश. मानथी तो पुण्य, कीर्ति, यश, लक्ष्मी तथा स्वर्गनुं साम्राज्य पण जतुं रहे ढे, अने ते डुर्गतिनी संगति करावे ढे. वली मान ढे ते म्लानि करनारुं, गुणोने हरनारुं, धर्मरूपी लक्ष्मीने चोरनारुं, नीचगोत्ररूपी वृक्षप्रते वरसादसरखुं, सौञाग्यनो नाश करनारुं, कीर्तिने घटाडनारुं, मोक्षसुखने दूर करनारुं, तथा पुण्योनी श्रेणिरूप रात्रिने नाश करवामां सूर्यसरखुं ढे. तेथी सत्पुरुषो प्रायें करी तेनो त्याग करे ढे. वली पूर्वे जेउए चारित्रनो ञार अंगीकार करेलो ढे, एवा

मारा नाना जाइउंने पण हुं तातनी पेठेज वंदना करीश, एम पोतानां मनमां विचारिने, जेवा तेउं तातपासे तुरत जवाने इछे छे, तेटलामां केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी, के जे पेहेलेथीज तेमनाप्रते अत्यंत रागवाली हती, ते तेमनां मानरहित चित्तरूपी मंदिरमां तुरत दाखल थइ, अने तेथी ते वाहुवलि महामुनिराज समकालेज समस्त जगतने जोवा लाग्या. पछी त्यां देवोए आपेला मुनिनां वेषने धारण करीने ज्ञानथी शुद्ध चित्तवाला ते वाहुवलि मुनिराज त्यां जइ प्रजुने प्रदक्षिणा करीने केवलीनी सजामां वेठा. एवी रीते बलवानोमां पण महाबलवान आ बाहुबलि मुनिराज छे; केम के, तेमणे एकी वखतेज रणसंग्राममां जरत चक्रीने अने कर्मोने पण तुरत जीत्यां; तथा पोतानुं मान पण तेमणे तजी दीधुं.

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिए बनावेला महातीर्थ श्री शत्रुंजयनां महात्म्यमां जरतचक्री अने बाहुबलिनां संग्रामनां वर्णननो चोथो सर्ग संपूर्ण थयो. श्रीरस्तु.

पंचमः सर्गः प्रारभ्यते.

श्री शत्रुंजय पर्वतरूपी ऐरावणमांथी उत्पन्न थएला मुक्तामणि सरखा, लक्ष्मीनी श्रेणिसरखा, पुण्यनां सूर्यसरखा, शुन्न यशनी वेणिसरखा, त्रणे लोकोनां गुरु, नाजिराजाना वंशथी (वांसथी) उत्पन्न थएला मणिसरखा तथा कुवलयने (चंद्रविकासी कमलने) उद्बोध करवामां चंद्र सरखा, श्रीयुगादीश प्रजु अखंडित सुख आपो? हवे श्री वीरप्रजु इंद्रने कहे छे के, हे इंद्र! हवे ते चक्रिनां वाह्य शत्रुनी जीतनी पेठे, तेमनो अंतरशत्रुउंनो जय, तथा श्री शत्रुंजय तीर्थनी सिद्धिने तुं सांजल?

हवे अतिशयोरूपी किरणोवाला, तथा चक्रवाकोथी जेम सूर्य, तेम त्रणे जगतनां लोकोथी सेवाता, श्री ऋषजदेव प्रजु पृथ्वीने पवित्र करता थका, तथा जव्यरूपी कमलोने उल्लासित करता थका पूर्वाचलप्रते जेम सूर्य, तेम श्रीशत्रुंजय पर्वतप्रते आव्या. कल्पवृक्ष, पारिजात, संतान, हरिचंदन, लवंग, चारोली, आंबा, चंपक, अशोक, नालीएरी, नागरवेल, सोपारी, केल, सालरी, शाल्मली, तथा शाल आदिक वृक्षोथी शोजता,

सर्व पर्वतोनां स्वामिपणाथी चमरी गायोनां पुंछडांरूपी चामरोथी वीं-
ऊाता, जिनमंदिरोरूपी छत्रो अने उंचां कलशोथी वींटाएला, हजारो
उंचां शिखरोथी प्रगट रीते मुकुटयुक्त थएला, विचित्र प्रकारनां मणि
अने रत्नोनां किरणोथी आकाशने पण देदीप्यमान करता, नदी, द्रहो,
कुंडोनां समूहो, तथा वावोथी उत्तम शोभाने धारण करता, कमलोथी
देवलोकनी पण हांसी करता, कल्पवृक्षोनी घाटी छायामां भर्तारो सहित
बेठेली किन्नरीउथी गवाती छे, युगादीश प्रभुनां गुणोनी पंक्ति ज्यां एवा,
दर्शनमात्रथी पण जगतने पवित्र करता, स्पर्शमात्रथी पण पापोनां समू-
हने हरता, नेत्रप्रते एक रसांजन सरखा, मोक्षनी इछावाला अनेक गां-
धर्वो, विद्याधरो, मनुष्योनां समूहो, देवो, असुरो, नागकुमारो, तथा सिं-
हादिकोथी सेवाता, अनंत सिद्धोनां स्थानरूप, अनंत सुख देनारा, प्रा-
णीउप्रते अनंत भवरूपी समुद्रमां द्वीपसरखा, एक लाख बत्रीस हजार
गामोथी विभूषित थएला, हमेशां समुद्रना रत्नोथी बंधाएली मेखलावाला,
छत्रसरखी छायावाला वृक्षोथी मध्याह्नकाले पण ताप विनाना, सौराष्ट्र
देशनी स्त्रीउनां गीतोनां झंकारोथी खुशी थएल छे देव, मनुष्य अने ना-
गकुमारो ज्यां एवा, मूलमां पचाश योजनवाला, शिखरपर दश योजन-
वाला, तथा आठ योजन उंचा, एवा ते पर्वतपर प्रभु चड्या. वली मो-
क्षनी नीसरणीनां पगथीआं सरखा ते उंचा पर्वतपर पुंडरिक प्रमुख मु-
निउ, तथा सुंदरी प्रमुख साधवीउ विगेरे चड्या. पछी तीर्थंकर जेम ती-
र्थने, तेम श्रीयुगादीश प्रभु ते रायणने विशेषथी पवित्र करता थका, रा-
त्रिए तेनी नीचे समोसर्या. हवे आसन कंपवाथी प्रभाते देवोए त्यां आ-
वीने, भवभीरूउने शरणातुल्य समवसरण बनाव्युं. त्यां प्रभुए पोरसीसुधी
धर्मदेशना आपी; तथा पछी पुंडरिकजीये प्रभुनां पादपीठपर बेसीने
धर्मदेशना आपी के, तीर्थ, जिन, अने गुरुमां भक्ति, धर्मशास्त्रनी रुचि,
दया, सुपात्रेदान, प्रिय वचन अने विवेक एटलां सम्यक्त्वनां लक्षणो छे.
वली आर्यदेश, मनुष्यपणुं, दीर्घ आयुष्य, उत्तम कुल तथा न्यायोपा-
र्जित धन, एटलां माणसोनां पुण्योपार्जननां हेतुउ छे. वली आर्य-
देशमां जो मनुष्य भव मलेलो होय. तोज पापकार्योथी लज्जा, धर्मना
आगमोनुं सांभलवुं, कृत्याकृत्यनो विचार, दयालु बुद्धि, गुरुनी सेवा,

अपयशनी बीक, पापनां नाशनी इछा, तथा उत्तम धर्ममां प्रीति थाय छे. वली जे मनुष्यभवें करीने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष नामनां चारे पुरुषार्थों साधी शकाय छे, ते मनुष्य भवनी स्तुति करवाने कोण समर्थ छे? वली उत्तम न्यायमार्गेथी उपार्जन करेली संपदा पण दानेश्वरीने घेरज कृतार्थ थाय छे; तथा आर्य देशमां विवेकी कुलमां जे मनुष्यपणुं मले छे, तेज प्रशंसवा लायक छे. वली जे उद्यमवंत माणसो पोतानां आयुष्यनां क्षणमात्रने पण प्रमादथी फोकट गुमावता नथी, एवा विवेकी माणसो आ जगतमां धर्मकार्योप्रते लांबां आयुष्यवाला थाउ? वली जे माणस खांसी, श्वास, संग्रहणी, अर्श, रक्तपित्त, तथा ज्वर आदिक रोगोथी हमेशां पीडाएला छे, तेउ शी रीते पुण्योपार्जन करी शके? वली प्रायें करीने पराक्रम दैन्यमाटे, शौर्यता पराभवमाटे, उद्यमपणुं दरिद्रतामाटे, तथा उज्ज्वल कुल पापमाटे थतुं नथी. पछी ते देशनाने अंते प्रभु पुंडरिक महाराजने कहेवा लाग्य के, आ शत्रुंजय पर्वत मोटुं तीर्थ छे, तथा मोक्षनां घररूप छे. वली आ तीर्थपर आववाथी प्राणीउ दुर्लभ लोकाग्रने पण मेलवे छे, तेम आ गिरिराज शाश्वतो छे. वली आ तीर्थ अनादि छे; तथा अहीं अनंत तीर्थंकरो पोतानां कर्मसमूहनो नाश करीने सिद्ध थया छे. वली आ तीर्थपर जे पक्षिउ, तथा बीजा पण क्षुद्र अने हिंसक जंतुउ रहे छे, तेउ पण त्रण भवोमां मोक्षे जशे. वली जे जीवो अभव्य तथा पापी छे, तेउ आ पर्वतने जोइ शकता नथी. वली राज्यादिक तो मली शके छे, पण आ तीर्थ मली शकतुं नथी. वली तीर्थंकरो मोक्षमां गए छते, तथा केवलज्ञाननो लय थए छते, आ तीर्थ श्रवणथी तथा स्तुतिथी पण लोकोने तारनारुं छे, तेम आ दुःखम कालमां केवलज्ञाननो लय थवाथी, तथा धर्मनी पडती आववाथी आ तीर्थज जगतनुं हित करनारुं छे. वली जिनोमां जेम हुं मुख्य छुं; तथा पर्वतोमां जेम मेरु छे, तथा द्वीपोमां जेम जंबूद्वीप छे. तेम सघलां तीर्थोमां आ मुख्य तीर्थ छे. वली जे माणसोए पोतानी जींदगीमां आ तीर्थनुं दर्शन कर्युं नथी, तेउने मनुष्यरूपधारी पशुउज जाणवा. तेम आ तीर्थप्रते अनंता तीर्थंकरो, तथा केवलीउ आव्या छे, तेम मोक्षे गएला छे, तथा जशे. वली अतीतकालमां थइ गएला तथा हवे थनारा तीर्थंकरो

आ तीर्थमां रायणनां वृक्षतले समोसर्या छे, तथा समो सरशे. वली आ सुराष्ट्र देश, आ शत्रुंजय गिरि, आ रायण, तेम वर्तमान तीर्थंकर ए सघला तीर्थरूप छे. वली समुद्रमां रहेलो जेम वडवानल, तेम आ दुःखम कालमां आ तीर्थनो महिमा अधिक अधिक थशे, माटे आ मोटामां मोटुं तीर्थ छे. आ तीर्थमां श्री अरिहंत प्रभुनी पुष्प, अक्षत विगेरेथी पूजा करवाथी, तथा स्तुति करवाथी प्राणीउनुं जन्मसुधि करेलुं पाप नाश पामे छे. वली अन्य तीर्थ करतां आ तीर्थमां जिननी पूजा करवाथी अनंतगणुं फल मले छे. तेम अहीं फक्त एकज पुष्पथी प्रभुपूजा करवाथी स्वर्ग अने मोक्ष दुर्लभ थतां नथी. वली आ तीर्थमां जे माणस प्रभुनी अष्टप्रकारी पूजा करे छे, ते नवे निधानो पामीने अरिहंत तुल्य थाय छे. वली पुण्यशाली माणसज अरिहंत प्रभुनी पूजा, सुगुरुनी भक्ति, शत्रुंजय तीर्थनी सेवा, तथा चतुर्विध संघनो संगम करे छे. वली अहीं शुभ गुरुनी त्रिकरणशुद्धिपूर्वक आराधना करवाथी ते तीर्थंकर पद आपे छे, तथा सामान्य मुनिनी आराधनाथी चक्रीनी लक्ष्मी मले छे. वली जेणे पोतानां धननां समूहथी गुरुनी सेवा करी नथी, तेनो जन्म, तथा तेनी सर्व लक्ष्मी पण निष्फलज छे. वली पूर्व भवमां तीर्थकरोने पण बोधिबीजनां हेतुरूप गुरुज छे, माटे बुद्धिवाने तेवा गुरुनी अहीं विशेष पूजा करवी. वली अहीं सघली धर्मक्रीयाउ पण गुरुनी साथे रहीने करवी; केम के गुरु विना ते सघली निष्फल छे. माटे पोतानां अनृण्यपणाने इछनारा माणसे आ तीर्थमां धर्म आपनार गुरुनी वस्त्र, अन्न, पाणी आदिकथी सेवा करवी. वली आ शत्रुंजय तीर्थमां गुरुने वस्त्र, अन्न, तथा जलनुं दान देवाथी, तथा तेनी भक्ति करवाथी आ लोक अने परलोकमां सर्व संपदाउ मले छे. आ शत्रुंजय तथा जिन, ए बन्ने स्थावर तीर्थो छे; पण गुरु तो जंगमतीर्थरूप छे, माटे तेमनी अहीं अत्यंत सेवा करवी. वली आ तीर्थमां अभयदान, अनुकंपादान, सुपात्रदान, तथा कीर्त्यादिक मोटनुं दान, तेम अन्नदान, ज्ञानदान, ओषधदान, अते जलनुं दान देवुं; एम जिनेश्वरोए कहेलु छे. वली जे माणस अहीं दीन, तथा अनाथादिकोने दान आपे छे; तेने घेर अटकाव रहित निरंतर लक्ष्मी नाच्या करे छे. माटे महा बुद्धिवाने मोक्ष देनारुं दान आ तीर्थमां देवुं; केम के, दान-

विना प्राणीउ ज्ञवसागरने तरी शकता नथी. वली आ तीर्थमां अत्यंत गुणवालुं तथा मोक्षसुख आपनारुं तथा सर्व दुःख हरनारुं शील त्रिकरणशुद्धिथी पालवुं. पोतानुं अहित इच्छनारा एवा जे माणसे आ तीर्थमां शीलज्ञंग कर्युं छे; तेनी क्यांए पण सिद्धि थाय नहीं; तथा ते चांडालथी पण वधारे निंदनीक छे. वली आ तीर्थमां तप करवाथी निकाचित कर्मो, तथा जन्मसुधिनुं पाप पण नाश पामे छे. वली छठ अने अठम आदिक तपथी उत्तम फल मले छे; माटे सर्व इच्छित आपनारो ते तप अहीं विशेषें करीने करवो. वली अहीं अठाइनो तप करवाथी कर्मोनो नाश करी प्राणी स्वर्ग अने मोक्षनां सुख क्षणवारमां मेलवे छे. वली अहीं चैत्री पुनेमनो उपवास करवाथी सुवर्णनो चोर, तथा शुज्ञ ज्ञावथी सात आंबेल करवाथी वस्त्रनो चोर शुद्ध थाय छे. रत्ननी चोरी करनारो अहीं अत्यंत उत्तम ज्ञावथी दान देतो थको, कार्तिक मासनां सात दिवसनां तपथी शुद्ध थाय छे. वली रुपुं, कांसुं, त्रांबुं तथा पित्तलनी चोरी करनारो, ते पापथी अहीं सात दहाडाउ सुधी परमार्ध नामनो पृथक रीते तप करवाथी मुक्त थाय छे. वली मोती तथा परवालांनो चोर, अहीं त्रिकाल जिन पूजाथी, तथा पंदर आंबेलोथी निर्मल थाय छे. वली धान्य तथा जलनो चोर अहीं सुपात्रे दान दीधाथी, तथा रसनो चोर महादानथी शुद्ध थाय छे. वली वस्त्र अने आज्ञूषणनो चोर अहीं जिनपूजन करवाथी पोतानां आत्मानो खाडा सरखा ज्ञवमांथी उद्धार करनारो थाय छे. वली देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्यने चोरनारो माणस अहीं जिनपूजनथी शुद्ध थाय छे; तथा ध्यान अने सुपात्रे दान देवाथी ते अंतरंग शत्रुउनो नाश करनारो थाय छे. वली जे माणसे कुमारिका, दीक्षित स्त्री, वटलेली, सधवा, विधवा, तथा गुरुस्त्रीसाथे गमन कर्युं होय. ते माणस पण मनने रोधीने जिननुं ध्यान धरतो थको अहीं जो छ माससुधी तप करे, तो शुद्ध थाय छे. वली गाय, ज्ञेंस, घोडा, हाथी, पृथ्वी तथा घरनो चोर, अने मंत्र तंत्र देनारो पण अहीं ज्ञक्तिथी जिननुं ध्यान धरवाथी शुद्ध थाय छे. वली अन्यनां चैत्य, घर, वगीचा, पुस्तक तथा प्रतिमादिक उपर जे दुष्ट बुद्धि "आ मारुं छे" एम धारी पोतानुं नाम नाखे छे, ते माणस पण अहीं सामायिकथी पवित्र थइ छ

मास सुधि तप करवाथी पापोने नाश करी शुद्ध थाय छे. वली अहीं परमेष्टिनुं ध्यान, तथा, देवार्चन आदिकथी समकीती श्रावक सर्व पापोथी मुकाय छे. एवुं कोइ पण पाप नथी, के जे अहीं अरिहंत प्रभुनां ध्याननथी नाश न पामे; तेम तेवुं कोइ पण पुण्य नथी, के जे अहीं अरिहंत प्रभुनां ध्यानथी न मले. वली पोताना चित्तमां चिंतवेलां एवां नहीं करेलां पण पुण्यो अहीं उत्तम भावनाउंथी थाय छे, माटे अहीं उत्तम ध्यान धरवुं. सघला व्यापारोमां "मनोव्यापार" मुख्य छे, अने तेज प्राणीउंने स्वर्ग, नरक तथा मनुष्य भवमां लेइ जाय छे; माटे आ तीर्थमां कृष्ण, नील, अने कापोत लेश्या चिंतववी नहीं; पण कर्मोनां क्षय माटे पद्म, सित विगेरे लेश्याउं चिंतववी, वली क्षुद्र जंतुउं प्रते पण अहीं मनथी के वचनथी के शरीरथी पण हिंसा करवी नहीं; केम के, ते धर्मरूपी वृक्षने बालवाने दावानल सरखी छे. कंथुआ सरखा जीवने पण जे माणसो मारे छे, तेउंनुं सातमी नरक शिवाय बीजुं स्थानक नथी. माटे नरकप्रते दूती सरखी हिंसा तो सर्वथा प्रकारे करवीज नहीं, केम के, जे माणस परने पीडा उपजावे छे, तेनी पासे धर्मरूपी राजा आवतो नथी. वली सघला जंतुउं अनंत भवोनी अपेक्षाए बंधुसरखाज छे; माटे तेउंनुं पोताना आत्मानी पेठे रक्षण करवुं; अने जाणवुं के, कोइ कोइना शत्रु नथी. वली. प्राण जाय तो पण उत्तम बुद्धिवाने जूठुं बोलवुं नहीं; अने सत्य बोलनारो अपवित्र पण पवित्रज छे. असत्य बोलवाथी प्राणीउंने मुखमां फोडा, परु, कीडा विगेरेनी व्याधि थाय छे. वली कोइए नहीं दीधेली पाणीनी अंजलि पण ग्रहण करवी नहीं; केम के अदत्तादानथी जीवो निर्धन तथा स्वल्प आयुष्यवाला थाय छे. डाह्या माणसे चोरी करवी नहीं, केम के धन छे ते जीवोने प्राणसमान छे, अने तेथी प्राण हरनार करतां पण धन हरनार वधारे भयंकर छे. वली आ तीर्थमां उत्तम माणसे पोतानी स्त्रीने पण सेववी नहीं; त्यारे बन्ने लोकनो नाश करनारी परस्त्रीनी तो वातज शी करवी? परधननी चोरी, चाडी तथा परनो उपकरवाथी महा पाप थाय छे. आ भयंकर संसाररूपी समुद्रमां परिग्रहनां भारथी प्राणी होडीनी पेठे डुबी जाय छे. माटे ते जेम बने तेम अल्प करवोः वली ते क्रमे क्रमे करीने तेवी रीते अल्प

करवो, के जेथी लोभरूपी भयंकर पिशाच छली शके नहीं. वली सर्व प्राणीओने विषे पोताना आत्मानी पेठे समपणुं (सामायिक) चिंतववुं; केम के, तेवा समपणाविना सघली क्रियाओ निष्फल छे. वली जे माणस समतामां रहे छे, तेने त्रणे जगत वश थाय छे; तथा तेने देवो पण जरा पण पराभव करी शकता नथी. वली पौषधप्रतिमाने प्राप्त थएलो माणस क्षणवारमांज कर्मोनो नाश करे छे, अने ते चारित्रधारीनी पेठे देव अने मनुष्योथी पण वंदाय छे. वली आ तीर्थमां पौषधव्रत करवाथी मासक्षपणनुं पुण्य मले छे, तथा अतुल्य केवलज्ञान पण मले छे. वली अतिथिसंविभागव्रत करवाथी नरक अने तिर्यंच गतिनो नाश करी प्राणी मोक्षसुख मेलवे छे; भोजन वखते आवेला मुनिओने दान देवाथी मोक्षराज दूर रहेतुं नथी; त्यारे (आलोक संबंधि) राज्यसुखनी तो वातज शी करवी? जे माणस गुरुदेवप्रते आहार तथा नैवेद्य दइने भोजन कर छे, तेज खरुं भोजन जाणवुं; अने ते शिवायनुं तो देहने पोषण करनारुं फक्त पशुग्रास सरखुं भोजन जाणवुं. वली ग्रहण करेलुं देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्य अंगारानी पेठे सात कुलोने वाली नांखे छे, माटे ते बुद्धिवानोए लेवुं लायक नथी. देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्यथी थएली धननी वृद्धि झेरनी पेठे प्रथम स्वादिष्ट लागे छे, पण पाछलथी तीव्र वेदना आपे छे. जे माणसो हमेशां देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्य भक्षण करे छे, तेओनी शुद्धि सर्व तीर्थोनां आश्रयोथी पण थती नथी. लोभांधचित्तथी देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्य जो लेवामां आवे, तो ते निर्यंच तथा नरकादिक दुर्गति आपे छे. वली एकेंद्रिआदिक जीवोने निरर्थक जे ताडन करवुं, ते "अनर्थदंड" कहेवाय; तेवा अनर्थदंडथी यत्नपूर्वक विरति करवी. अनर्थदंड करवाथी माणस शरणारहित थइने आ भवरूपी समुद्रमां मगरोसरखा कर्मोथी पीडाय छे. वली कल्याणना अर्थी माणसे विशेषे करीने आ तीर्थमां वृक्षनां डालां, पांदडां, फल, अंकुरा विगेरे छेदवां नहीं. आ शत्रुंजय तीर्थमां सर्व जगोए हमेशां देवोनो वास छे, माटे तेओने छेदवां नहीं. वली यशरूप धनवालाओए प्राणोथी पण उपकार करवो; केम के, ते सर्वधर्मरूप, तथा मोक्षसुखनां कारणरूप छे. परोपकारथी उत्पन्न थएलुं पुण्य भवभवप्रते वृद्धि पामे छे; अने जे परोपकार करे छे. ते सर्व जगोए अटकाव रहित देवनी पेठे चाली शके छे.

वली ज्ञानी अने पुस्तकोनी अन्न वस्त्रादिकथी करेली सेवा सूर्यनी कांतिनी पेठे प्राणीउंनी जडतानो नाश करे छे. ज्ञानपूजाथी ज्ञानावरणीय कर्मोनो नाश थइ, मुक्तिलक्ष्मीनां कारणरूप केवलज्ञान प्राप्त थाय छे. वली आ शत्रुंजय तीर्थपर जिननी पूजानी पेठे ज्ञाननी पूजा पण प्राणीउंने छेक मोक्षसुधिनुं अधिक अधिक फल आपे छे. वली आ तीर्थमां रात्रिभोजन करवाथी माणस गीध, घुवड, प्रमुख भवो पामीने अत्यंत दुःखी थयो थको नरकमां जाय छे. सदा रात्रिभोजनमां तत्पर रहेला एवा अपवित्र माणसे आ तीर्थनो कोइ पण वखते स्पर्श पण करवो लायक नथी. वली आ तीर्थमां रहीने जे माणसो सम्यक्त्वमूल बार व्रतोने पाले छे, तेनां तुल्य बीजो कोइ धन्य नथी, तथा तेउं मोक्षमां जाय छे. वली अन्य तीर्थमां जप, तप, तथा दानथी जे फल थाय छे, तेथी क्रोडगणुं फल आ तीर्थनां स्मरणथी पण थाय छे. वली आ तीर्थमां जे माणस रथ, घोडा, जमीन, हाथी, सुवर्ण तथा मणिनी भेट आपे छे, ते हर्ष सहित चक्रीपणाने तथा इंद्रपणाने भोगवे छे. वली जे माणस आ तीर्थमां इंद्रोत्सवादि कार्य करे छे, ते सघला भोगो भोगवीने निश्चयें करी मोक्ष मेलवे छे. वली हे पुंडरिक ! सघला तीर्थोमां आ तीर्थराज छे, तथा सघला पर्वतोमां ते उत्तम पर्वत छे; माटे जेम मने, तेम मोक्षनां कारणरूप आ गिरिवरने तुं सेव? वली हे मुनि ! माराथी जेम आ जगतनी स्थिति, तेम तारा नामथी आ अवसरपिणीमां आ तीर्थ प्रसिद्धि पामशे. वली नहीं बलथी तेम नहीं अनभ्यासथी, तेम इंद्रिउंने तथा मनने रोधिने तुं अहीं रहे ? स्फटिकसरखा निर्मल आत्माने त्रण ध्यानोथी (पिंडस्थ, पदस्थ, अने रूपस्थथी) ध्यावतां थकां, अने कंइ पण चिंता रहित आश्रव परिणामने रोकीने, विकल्प रहित लयमां प्राप्त थइ, पांच ह्रस्व अक्षरोनां उच्चारनां परिमाणवाला कालमां शुभाशुभनो नाश करी, तथा घातिकर्मोने वालीने, अने केवलज्ञान पामीने, आज तीर्थनां माहात्म्यथी तुं मुक्तिरूपी स्त्रीनो स्वामी थइश. एवी रीते पुंडरिक महामुनिने कहीने भगवान पण त्रिलोकनां हितनी इछाथी बीजी जगोये विहार करी गया. पछी त्रणे लोकमां रहेनारा लोको पण तेवी रीतनां सर्वज्ञ प्रभुनां वचनने सांभलीने आनंद सहित, तीर्थमां अनुराग धरता थका पोतपोताने स्थानके गया.

हवे पुंडरिक महाराज पण त्यां पांच क्रोड मुनिओथी वींटाया थका चंद्रनी पेठे समता धारीने रह्या. तथा ते मुनिओने परम वैराग्यरूपी अमृतथी भरेली वाणी कहेवा लाग्या के, क्षेत्रानुभावथी आ गिरि मोक्षसुखनां स्थानकरूप छे; अने कषायरूपी शत्रुओने जीतवामाटे किल्लासमान छे. हवे आपणे अहीं मोक्षनां कारणरूप संलेखना करवी; ते संलेखना द्रव्यथी अने भावथी, एम बे प्रकारनी छे. सघला उन्माद, तथा महारोगनां कारणरूप एवी सर्व धातुओनुं चारे बाजुथी जे शोषवुं; तेने द्रव्य संलेखना मानेली छे. मोह अने मात्सर्यवाला रागद्वेषादिक कषायोनो समताथी जे छेद करवो, तेने भाव संलेखना कहेली छे. एम कहीने पुंडरिकजी महाराज ते साधुओ सहित सघला सूक्ष्म अने बादर अतिचारोने आलोचवा लाग्या. वली तेमणे फरीने पण पोतानां महाव्रतोने दृढ कर्यां; केम के, वारंवार अग्निनो ताप सुवर्णनी शुद्धि माटे थाय छे. चोंत्रीस अतिशयोवाला, मोतीसरखी निर्मल कांतिवाला तथा त्रणे लोकनां स्वामी एवा सर्व जिनेश्वरो अमोने शरणरूप थाओ? अनंत अने अक्षय स्थानप्रते प्राप्त थयेला, परवालांसरखी कांतिवाला, अने पंदर भेदे सिद्ध थएला सिद्धो अमोने शरणरूप थाओ? महाव्रतोने धरनारा, धीर, सावद्यनां आश्रयविनानां, इंद्रनीलमणिसरखी कांतिवाला एवा मुनिओ अमोने शरणरूप थाओ? केवली प्रभुए कहेलो, सर्व दयामय, तथा स्फटिकोपल सरखो तंद्रारहित एवो धर्म अमोने शरणरूप थाओ? वली चोरासी लाख जीवायोनि मांहे जे कंइ दुष्कृत थयुं होय, ते सघलुं अमारुं अपुनःक्रिया पूर्वक मिथ्या थाओ? वली अज्ञानताथी जे अढार पापस्थानको सेव्यां होय, ते सघलांओने त्रिकरणशुद्धिथी वोसरावुं छुं. वली एकेंद्रियादिक सर्व जंतुओने हुं खमावुं छुं; अने तेओ पण वैररहित एवा हुं प्रते क्षमा करो? वली कर्मोथी आ संसारमां भमता एवा सर्व प्राणीओ प्रते मने मित्राइ छे; हुं एकलोज छुं; मारुं कोइ नथी; अने आ मारा आत्माने अरिहंत प्रभुनुं श-
प [illegible] एटलुं कहीने पुंडरिकजी महाराजे सघला साधुओनी साथे दु-
छे. परोपका[illegible]प्रकार अनशन अंगीकार कर्युं. एवी रीते ते क्षपकश्रेणिपर च-
पकार करे छे [illegible]ने त्यां जीर्ण दोरडांनी पेठे चारे बाजुएथी तेमनां तथा पांच क्रोड

मुनिर्जनां पण घातिकर्मो त्रुटी गयां; केम के, तप सर्वने सरखो छे. तपथी राज्य, स्वर्गनी संपदा, तथा मोक्षसुख मळे छे; अने त्रणे लोक वश थाय छे. त्यां चैत्रसुदी पुनेमने दिवसे पुंडरिकजी महाराजने प्रथम केवळज्ञान थयुं; तथा पछी ते मुनिर्जने थयुं. पछी ते योगिर्ज क्षणवार चोथा शुक्लध्यानमां रहीने, सर्व कर्मो क्षीण थवाथी मोक्षे गया. ते वखते त्यां सर्व देवोए आवीने मरुदेवा मातानी पेठे, तेमनो निर्वाणमहोत्सव कर्यो. जेम आ अवसर्पिणीमां श्री ऋषभदेव प्रभु पेहेला तीर्थंकर छे, तेम आ पेहेलुं तीर्थ थयुं: ज्यां एक मुनि पण सिद्ध थाय छे, ते तीर्थ कहेवाय छे, त्यारे ज्यां आटला बधा मुनिर्ज सिद्ध थया, तेने तो मोटामां मोटुं तीर्थ जाणवुं. हवे श्रीऋषभदेव प्रभु फागणसुदि आठमने दिवसे आ शत्रुंजयपर आव्या, त्यारथी अष्टमीपर्व थयुं. आठम, पाखी तथा पुर्णिमाने दिवसे प्राणीर्जने शुभाशुभ आयुनो बंध पडे छे. ते बन्ने पर्वने दिवसे आ तीर्थमां भक्तिथी अल्प आपेलुं दान पण क्षेत्रमां रोपेला बीजनी पेठे बहु फल आपे छे. तप, दान तथा शीलादिकथी जिनभक्तिनी पेठे आराधेलुं अष्टमी पर्व प्रगट रीते प्राणीर्जना आठे कर्मोनो नाश करे छे. चैत्रसुदी पुनेमने दिवसे आ तीर्थपर पुंडरिकजी महाराज मोक्षे गया, त्यारथी चैत्रीपुनेमनुं पर्व थयुं; तथा आ पर्वतनुं नाम पुंडरिकगिरि पड्युं. जे माणस संघसहित चैत्री पुनेमने दिवसे आ पुंडरिकगिरिपर रहेला पुंडरिक महाराजने पूजे छे, ते लोकोत्तर स्थितिवाळो थाय छे. वळी नंदीश्वरादिक द्वीपोमां रहेला शाश्वता प्रभुर्जनां पूजनथी जे पुण्य थाय छे, तेथी पण अधिक पुण्य शत्रुंजय गिरिनी चैत्रीनी यात्राथी थाय छे. वळी बीजे वखते दान, शील, तप तथा पूजा प्रमुखथी जे पुण्य थाय छे, तेथी क्रोडगणुं पुण्य चैत्री पुनेमने दिवसे अहीं शत्रुंजयपर जिनपूजनथी थाय छे. चारित्र, चंद्रप्रभ प्रभु, चैत्री पुनेम, शत्रुंजय पर्वत, तथा शत्रुंजयी नदी पुण्यविना मळी शकतां नथी. जे माणस आ तीर्थपर चैत्री पुनेमने दिवसे जिनालयमां शांतिस्नात्र, ध्वजारोपण, तथा आरति करे छे, ते पोतानां निर्मल भवोने मेळवे छे. वळी बीजी जगोये पण चैत्री पुनेमने दिवसे संघपूजन करवाथी माणस ज्यारे देवनां सुखोने मेळवे छे, त्यारे आ विमलाचलपरनी तो वातज शी करवी? चैत्री पुनेमने दिवसे वस्त्र, अन्न अने

पाणीआदिकथी प्रतिलाभेला मुनि चक्रीनी अने इंद्रनी पदवी आपीने; छेवटे मोक्ष आपे छे. चैत्री पर्व सर्व पर्वोमां उत्तम छे; तथा सर्व पुण्योने वधारनारुं छे; तेनुं पुंडरिकगिरिपर आराधन करवाथी ते उत्कृष्ट फलने देनारुं छे. वली चैत्री पुनेमनी अठाइ अष्ट सिद्धिउने आपनारी छे. वली सघला देवो पण आ चैत्री पर्वने नंदीश्वर द्वीपमां जइ जिनपूजादिकथी भक्ति पूर्वक आराधे छे. माटे धर्ममां प्रीतिवाला माणसे प्रमादनां हेतु-रूप कलह, क्रीडा तथा अनर्थदंडादिक तजीने चैत्री पर्वने भजवुं. वली अक्षय सिद्धिमाटे चैत्रीपुनेमने दिवसे प्रभावना, जिन, चैत्य, सिद्धांत, गुरु अने मुनि प्रते भक्ति करवी.

हवे श्री ऋषभदेव प्रभु विहार करी पृथ्वीने पावन करता थका विनीता नगरीनी पासे रहेला सिद्धार्थ नामनां उद्यानमां पहोंच्या. त्यां इंद्रादिक देवो प्रभुनी भक्तिथी आकाशमांथी उतरीने आव्या; तथा तेउए त्यां योजन सुधिनी भूमिमां त्रण गढोवालुं प्रभुनुं समवसरण रच्युं. त्यारे उद्यानपालके तेनी भरत महाराजने वधामणी आपी; त्यारे भरतजीए पण तेने हर्षथी बार क्रोड सोनामोहोरोनुं इनाम आप्युं. पछी पाला, घोडा, हाथी, रथो, पुत्रो, सामंतो, सेनापतिउ, राजाउ, राणीउ तथा माणसोथी वींटाएला, तथा साहुकारो, सार्थवाहो, चारणो, वंदिउ, गांधर्वो, अने सघलां लश्करोथी सेवाएला भरत महाराज आकाशने छत्रमय करता थका, दिशाउने चामरो तथा धजाउ सहित करता थका, अने सैन्योथी पृथ्वीने पूरता थका त्यां चालवा लाग्या. पछी त्यां पूर्व तरफनां द्वारथी समवसरणमां आवीने, तथा प्रभुने प्रदक्षिणा देइने चक्री नीचे प्रमाणे तेमनी स्तुति करवा लाग्या के हे स्वामी! हे जिनाधीश! हे करुणासमुद्र! हे संसार रूपी वनमांथी तारनारा! तथा हे वत्सल प्रभु! तमो जय पामो? घणां कालथी उत्कंठा करता एवा मने आजे आपनुं दर्शन थयुं छे, अने तेथी मने एम लागे छे के, आजे मारुं पूर्वेनुं करेलुं शुभ कर्म फलीभूत थयुं. वली हे प्रभु! आप वीतरागनां चित्तमां हुं वसुं छुं, एम केम कहेवाय? पण आप मारा चित्तमां वसी रह्या छो, माटे हवे मारे बीजा कोइनी पण जरुर नथी. सुखमां, दुःखमां, नगरमां, अरण्यमां, जलमां, अग्निमां, रणसंग्राममां, दिवसमां अने

रात्रिमां पण मारा चित्तमां आपना चरणोनुं ध्यान रहेजो ? एवी रीते प्रभुनी स्तुति करीने तथा पंचांगथी प्रभुने नमीने चक्री इंद्रनां नाना भाइनी पेठे तेमनी पाछल वेठा. त्यारे प्रभु पण सर्व भाषारूप, तथा एक योजनसुधि संभलाय एवी वाणीथी देशना देवा लाग्या के, सुपात्रे दान, श्री संघनी पूजा, उत्तम प्रभावना, महोत्सव पूर्वक तीर्थयात्रा, सिद्धांतोनुं लखाववुं, स्वामीवात्सल्य, गुरु तथा आगमोनो महोत्सव, समता, अने शुभध्यान एटलां पुण्यनां स्थानको छे. ते देशनाने अंते भरत महाराजा प्रभुने मस्तकथी नमस्कार करीने, तथा पोतानां शब्दोथी समुद्रने पण लज्जित करता थका पुछवा लाग्या के, हे स्वामी ! आपे संघाधिपनां पदनुं बहु वर्णन कर्युं छे; ते शी रीते उत्तम प्रकारे प्राप्त कराय ? तथा तेथी शुं फल मले ? त्यारे श्री युगादीश प्रभुए कह्युं के, हे राजन् ! जेवुं तीर्थंकर पद छे, तेवुंज संघाधिपनुं पद छे. वली छती संपदाए पण पुंडरिकगिरिनी पेठे भाग्यविना संघाधिपतिनुं पद मली शकतुं नथी. इंद्रपद तथा चक्रीपद पण प्रशंसवा लायक छे; अने ते बन्नेथी पण संधाधिपनुं पद पुण्योत्पादक होवाथी वधारे प्रशंसनीक छे. संघपति उत्तम दर्शनशुद्धि पामीने दुर्लभ तीर्थंकरनामगोत्रने पण मेलवे छे. संघ तो अरिहंतोने पण हमेशां माननीक तथा पूजनीक छे; अने तेवा संघनो जे अधिपति थाय, ते तो लोकोत्तर स्थितिवालो थाय. चतुर्विध संघ सहित, शुभ भाव सहित महोत्सव पूर्वक जिनबिंबने रथमां स्थापन करीने, पंचविध दान देतां थकां, दीनोनो उद्धार करतां थकां, नगर नगर प्रते जिनमंदिरोपर ध्वजारोपण करतां थकां, शत्रुंजयपर, गिरनारपर, वैभार पर्वतपर, अष्टापद पर्वतपर, तथा सम्मेतशिखरपर शुद्ध सम्यक्त्वथी देवपूजन करतां थकां, तथा गुरुनी आज्ञा प्रमाणे ते सर्व तीर्थोमां अथवा एक तीर्थमां पण इंद्रोत्सवादिक कार्य करतां थकां संघपति थवाय छे. वली हमेशां पूजनिक एवा गुरु पुण्यकार्य माटे जे आराधाय छे, ते सुवर्णमां सुगंध मलवा बरोबर छे. वली उत्तम यात्रानुं फल इछनार माणसे, मिथ्यात्विओनो संग, तथा तेनां वाक्योमां आदर करवो नहीं. वली परतीर्थनी निंदा के स्तुति करवी नहीं; पण त्रिकरण शुद्धिथी जीवित पर्यंत सम्यक्त्व पालवुं. वली संघयात्रा करनारे साधुओ तथा

साधर्मीउने वस्त्र, अन्न, तथा नमन आदिकथी प्रत्यक्ष रीते पूजवा. वली आर्जवयुक्त संघपतिए पाक्षिकादिक पर्वो, दानादिक धर्मो, तथा श्री संघनी पूजा करवी. एवो संघपति देवोने पण पूजनीक थाय छे, तथा कोइ संघपति तो तेज नवमां अने कोइक त्रण नवोमां सिद्ध थाय छे. एवी रीतनो व्रतांत प्रनु पासेथी तथा इंद्र पासेथी पण सांनलीने श्री नरत महाराजा प्रनुनां चरणोने नमीने नक्तिथी कहेवा लाग्या के, हे त्रणे जगतोने आराधवालायक प्रनु! मारापर आप कृपा करो? के जेथी हुं निर्मल संघपतिपद मेलवुं. पछी प्रनुए इंद्रादिक देवो तथा संघ सहित उठीने, नरत महाराज उपर अक्षत तथा वासक्षेप नाख्यो. ते वखते इंद्रे पण दीव्य माला लावीने चक्रीना तथा तेमनी पटराणी सुनद्रानां कंठमां ते नांखी. पछी चक्री मार्गे राजाउथी पूजाता थका सघला सांमंतो सहित अयोध्यामां आव्या. पछी त्यां तेमणे बहुमान पूर्वक संघनां लोकोने बोलाव्या, तथा पापरूपी शत्रुउने नसाडवा माटे उंचे प्रकारे नंना वाजित्र वगाडाव्युं. पछी चक्रीए त्यां आवेला संघनां लोकोने सन्मान देवा पूर्वक नगरमां रहेलां जिनचैत्योमां अठाइ महोत्सव कराव्यो. पछी तेमणे गणधरोने बोलावीने पोतानां घरमां सर्व विघ्नोने नाश करवा माटे शांतिस्नात्र कराव्युं. ते वखते गणधरोनां मंत्रोथी सघला देवोए प्रत्यक्ष थइने निर्विघ्न यात्रा करवा माटे पोतानी गति अंगीकार करी. एटलामां इंद्रे स्वर्णनां देवालयवाली श्री युगादीश प्रनुनी प्रतिमा चक्रीने आपी. ते वखते नरत राजाए इंद्रने पूछ्युं के, हे इंद्रराज! सर्वज्ञ प्रनु तो सर्व सावद्य रहित तथा सर्व कार्योमां मूकपणाने नजनारा छे, तो सावद्यमय एवा आ संघाधिपपणामाटे मने तेमणे केम उपदेश कर्यो? त्यारे इंद्रे कह्युं के, हे चक्रीश्वर! जेमां बहु पुण्य तथा अल्प पाप थाय, तेवुं कार्य कोण आदरता नथी? वली प्रायें करीने गृहस्थीउनुं पुण्यकार्य तो सावद्य होय छे, अने साधुउनुं कार्य निरवद्य होय छे. वली माटी सहित जेम सुवर्ण, तथा औषधि, तेम सावद्य धर्म परिणामे हितकारी छे. वली सावद्यना अंशवालां दान, शील तथा अनयदान आदिकथी पण महान पुण्य थाय छे. वली जे सरलस्वनावी माणस सर्व आरंनोथी पण शासननी प्रनावना करे छे, ते स्वर्ग

तथा मोक्षनुं सुख मेलवे छे. वली तीर्थयात्रा तथा प्रतिष्ठादिक कार्य पण सावद्यथी थाय छे, पण तेवी रीतनो सावद्यनो लेश पण बहु पुण्य माटे थाय छे. एवी रीते भरत संघपतिने शिखामण देइने, तेनी रजा लेइ इंद्र पोताने स्थानके गयो.

हवे चक्री शुभ दिवसे वार्धकीए बनावेला मणि, रत्न तथा सुवर्णमय आवासमां संघसहित नगरनी बहार रह्या. ते संघावासमां रहेलुं सुवर्णमय जिनमंदिर जंबूद्वीपमां रहेला, तथा नक्षत्रोथी शोभता मेरु सरखुं शोभवा लाग्युं. तेज आवासना दक्षिण भागमां क्षणवारमां वार्धकीए बनावेली पौषधशालामां गणो सहित गणधरो रह्या. तेथी डावी बाजुए चक्रीनो अद्भुत आवास हतो, तथा तेनी चारे बाजुए बीजा संघमाटेनां आवासो हता. एवी रीते मार्गमां सर्व मुकामे भक्तिवंत वार्धकीए संघनां आवासो बनाव्या. वली त्यां सुवर्णमय जिनमंदिरमां रत्नमय प्रभुनी मूर्ति शोभती हती; वली त्यां गणधरोए ते जिनालयमां बाहुबलिनां पुत्र चंद्रयशाने, विनमि विद्याधरनां पुत्र गगनवल्लभने, पूर्व दिशानां राजा वज्रनामने, तथा कल्याणकेतुने सूरिमंत्रोथी प्रतिष्ठित कर्या. वली भरत चक्रीनां ते संघमां धर्मनां भारनी धोंसरीने धरनारा बीजा पण हजारो राजाओ हता. ते वखते विकस्वर पुष्पमालावाली सुभद्राथी चक्री, वनमालाथी भूषित थएला जंगम वसंत ऋतु सरखा शोभता हता. साधर्मीओनुं वात्सल्य करीने, संघनी पूजा करीने, तथा जिननी सेवा करीने करेल छे प्रस्थानमंगल जेणे एवा, तथा शुभ दिवसे हाथीपर चडेला, छत्र चामरथी शोभता, चारण श्रमणोए करेल छे प्रथम मांगल्य जेमनुं एवा, तथा इंद्र जेम सामानिकोथी तेम चारे दिशाओमां राजाओथी विंटाएला, अप्सराओनुं संगीत जोता थका. तथा हे भरत महाराजा ! तमो “ जय पामो ? लांबा काल सुधि जीवो ? आनंद पामो ? ” एवी रीते देवोथी जेम तेम वंदीओथी स्तुति कराता, सामंतोथी, मंडलीकोथी, कुमारोथी, राजाओथी, मंत्रीओथी, संघपुरुषोथी, तथा चतुरंगी सेनाना समूहोथी, पर्वत सरखा हाथीओथी, समुद्रनां मोजां सरखा घोडाओथी, (जंगम) घर सरखा रथोथी, पोतानां उत्साह सरखा पालाओथी, अणुव्रत धरनारा श्रावक श्राविकाओथी, श्रीनाभ प्रमुख क्रोडो

गमे साधुउंथी, नमि विनमिथी, ज्ञानी गणधरोथी, शील रुपी अलंकारोवाली साधवीउंथी, गायन करनारा गांधर्वोथी, बंदिउनां समूहोथी, कौतुकी नटोथी, तथा नाचती नायिकाउंथी वींटाएला, एवा जरत महाराज चालवा लाग्या. त्यां सोनानां रथपर रहेलुं मणिनुं देवायलय, आकाशमां जिनेश्वर प्रजुनां शरीरथी जामंडलनी पेठे शोजतुं हतुं. तेनापर चामरोनां वींजावा सहित त्रणे लोकनां ऐश्वर्यने सूचवनारुं पूर्णिमानां चंद्र सरखुं छत्रत्रय शोजतुं हतुं. सैन्यनां चालवाथी उडती रजोए करीने सूर्यमंडलने आछादित करता, तथा संघनां चरणन्यासथी पृथ्वीतलने पवित्र करता, अंतःपुरनी स्त्रीउंथी धवलध्वनियें करीने गवाता, मोटी स्त्रीउंथी लवण उताराता, जगोए जगोए अने नगरे नगरे गुरुनी पूजा करता, तथा जिनचैत्योनो उद्धार करता थका जरत राजा प्रयाण करवा लाग्या. पोते वावेला वृक्षोप्रतेथी जेम, तेम देशो देशनां राजाउं पासेथी रत्नो अने सुवर्णनी अमूल्य जेटोने लेता थका, योजनप्रमाण प्रयाणथी विविध देशोने उलंगीने अनुक्रमे जरत राजा सौराष्ट्र देशमां पहोंच्या. ते वखते सुराष्ट्रनो पुत्र, तथा जरतजीनो जत्रीजो, अने सौराष्ट्र देशनो राजा शक्तिसिंह तेमनी सन्मुख आव्यो. पृथ्वीतलपर पडीने नमता एवा तेने चक्रीए पोताने हाथे उठाडीने तथा आलिंगन करीने कह्युं के, हे पुत्र! आ देशनुं सुराष्ट्र नाम सफल थयुं छे; केम के, अहीं परदेशीउंने डुष्प्राप्य एवुं शत्रुंजय तीर्थ छे. वली हे पुत्र! तुं धन्य छे, के आ तीर्थनी हमेशां सेवा करे छे. दूर रहेनारा अमो तो अहीं रहीने तेने जोइ शकता नथी. एवी रीते प्रीतिपूर्वक तेने बोलावीने, आजूषण आदिकथी तेनुं चक्रिए सन्मान कर्युं. पछी शिखरोथी स्पर्श करेल छे आकाशने जेणे, तथा यात्रिकोनां यशनां जंडार सरखा, तथा संसारथी जयजीत थएला प्राणीउं प्रते किल्ला सरखा, तथा पृथ्वीरूपी स्त्रीनां अमुल्य मुकुट सरखा, तथा मोक्षरूपी स्त्रीने रमवानां दडासरखा, तथा रत्नोनी कांतिथी यलविनां आकाशने चित्रित करता, एवा ते पुंडरिक गिरिने जोइने रोमांचने धारण करता थका तथा आदरथी मस्तकने धुणावता थका जरत महाराजा सोमयशाने कहेवा लाग्या के, आ सौराष्ट्र देशनां पुण्यशाली लोकोने धन्य छे, के जेउं हमेशां नजदीक रहीने आ पुंडरिक गिरिने सेवे छे. आ पर्वतनी छाया, तथा वायु

पण चंद्रनां किरणोनी पेठे जगतने तापरहित करे छे. कमल सरखा उज्वल एवा आ पुंडरिक गिरिनुं जेउं दर्शन करे छे, तेउं पुण्यरूपी अमृतथी पवित्र थइने पापरूपी कादवथी मुकाय छे. वली आ गिरिराजने जोइने मारुं मन एटलुं तो आनंद पामे छे के, जाणे हुं पापरूपी मेलथी मुकाइने निर्मल थयो होउं नहीं, तेम लागे छे. वली मारा पोतानांज आत्मानी खातरीथी आ तीर्थने हुं पंकरहित धारुं छुं, केम के, कार्य कारणनी अपेक्षाथीज थाय छे. वली पवनथी कंपता मस्तकोये करीने आ वृक्षो तीर्थनां वासथी जाणे नाचतांज होय नहीं, तेम मारी आंखोने अत्यंत आनंद आपे छे. वली जे पक्षिउं आ तीर्थपर वसे छे, तेउंने पण धन्य छे; पण चक्रीनी लक्ष्मीवाला, एवा पण अमो दूर होवाथी धन्य नथी. एम कहीने चक्रीए हस्ती स्कंधथी उतरीने गणधरोने तथा मुनिउंने हर्षथी नमस्कार कर्यो; तथा धर्ममार्गने देखाडनारा ते गुरुउंने तेमणे पुछ्युं के, हे जगवन्! आ पर्वतने शी रीते पूजवो? तथा अहीं शुं क्रियाउं करवी? त्यारे श्रीनाज्ञ नामनां मुख्य गणधर अवधिज्ञानथी जाणीने कहेवा लाग्या के, हे चक्री! जोवामात्रथीज आ पर्वतने नमस्कार करवो; वली आ गिरिनां प्रथम दर्शननी जे माणस वार्ता पण निवेदन करे, तेना प्रते जे कंइ देवाय, ते पुण्यनी वृद्धिमाटे थाय छे. वली उगता चंद्रने जेम तंतुउंथी तेम, पुण्यलाज्ञ माटे प्रथम आ पर्वतने सुवर्ण, मणि, रत्न विगेरेथी वधाववो. पछी वाहनो तजीने, तथा पृथ्वीतलपर लोटीने जिननां चरणनी पेठे, तेनुं पंचांगी नमस्कारथी सेवन करवुं. पछी त्यांज आवास करीने, तेज दिवसे उपवास सहित संघपतिए महाधरोनी साथे, ज्ञक्ति पूर्वक स्नान करीने तथा शुद्ध वस्त्रो पेहेरीने, स्त्रीसहित देवालयमां जिननी मनोहर स्नात्रपूजा करवी. संघनी वहार शुद्ध देशमां श्री शत्रुंजयनी सन्मुख पोतानां चित्तसरखो (संघपतिए) उंचो आवास करवो. पछी उत्तम धूप उखेवीने, संघसहित मंगलध्वनिउंनो उच्चार थाते छते, याचको प्रते ज्ञावसहित दान देतां थकां, उत्तम यक्षकर्दमथी पृथ्वीतलने लींपतां थकां, कुंकुमनां मंडलपर संघने कल्याणकारी एवो मोति अथवा तंदुलोथी स्वस्तिक करवो. पछी सघलो धोंधाट मटाडीने, तथा गणधरजीने अगाडी करीने, तेनी पाछल संघपतिए रहीने पूजानो उत्सव करवो. त्यां तुंजेलां.

रांधेलां, तथा सिद्ध करेलां नैवेद्योथी, रुपाथी, सुवर्णथी, वस्त्रोथी तथा पुष्पमालाउंथी प्रथम पूजा करवी; तथा नक्तिथी स्वामीवत्सल, अने संघपूजा करवी; तथा अनंत फल देनारुं संगीत जिनमंदिरमां करवुं. पढी त्यां महाधरोए तथा बीजा शुन्न आशयवालाउंये संघपतिनी स्त्री सहित, आनूपण, वस्त्र, तथा पुष्पमालाउंथी पूजा करवी. पढी त्यां गुरुनक्ति करतां थकां संघवासीउंए धर्मकथा सांनलवा पूर्वक रहेवुं. एवी रीते गुरुनी वाणी सांनली अत्यंत आनंद थएला चक्रीए विमलाचलनी पासे आवास कर्यो. पढी स्नान करी पवित्र थइ, श्वेत वस्त्रो पहेरी, महाधरो तथा स्त्री सहित ते जिनमंदिरमां गया. त्यां अष्टापदनां (सुवर्णनां) पात्रोमां रहेलां पक्वानो, जाणे नरत पासे अष्टापद पर्वतनां शिखरो आव्यां होय नहीं, तेम शोनतां हतां. पढी त्यां चक्रीए गणधर महाराजनी साक्षिये पुष्प, अक्षत, स्तुति विगेरेथी प्रनुनी पूजा करीने संगीत कर्युं. पढी गुरुए बतावेली विधिपूर्व पवित्र जगोपर यक्षकर्दमथी मंडल करीने तेमणे मोतीनो साथीउ पूर्यो. ते वखते त्यां रत्नाकर तथा रोहणाचल पर्वतनां जाणे चोरोज होय नहीं, तेवा मेरु पर्वतनां ककडाउ सरखा सुवर्णनां ढगलाउ हता. एवी रीते गुरुए बतावेला विधिमार्गमां रहीने चक्रीए पुंडरिक गिरिनी संघ सहित पूजा करी. पढी पृथ्वीपर पंचांग नमस्कार करीने तेमणे नीचे प्रमाणे तीर्थनी स्तुति करवा मांडी. जे तीर्थने पातालमां रहेनारा धरणेंद्र प्रमुख नागकुमारो सेवे ठे, एवा आ तीर्थप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने चमरेंद्र तथा वलींद्रादिक सर्व नुवनवासिउ सेवे ठे, एवा आ तीर्थराज प्रते नमस्कार थाउ? जेने किन्नरो किंपुरुषो, तथा किन्नरोनां इंद्रो सेवे ठे, एवा आ तीर्थराज प्रते नमस्कार थाउ? वली जे तीर्थने राक्षसोनां अधिपो तथा यक्षेश्वरो परिवार सहित सेवे ठे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने अणपन्नी पणपन्नी प्रमुख व्यतरेंद्रो सेवे ठे, एवा आ तीर्थप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने चंद्रसूर्य नामनां ज्योतिषनां इंद्रो, तथा बीजा खेचरो पण सेवे ठे, एवा आ तीर्थराज प्रते नमस्कार थाउ? वली जेने मनुष्य लोकमां रहेनारा वासुदेवो तथा चक्रीउ पण सेवे ठे. एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने इंद्रो. उपेंद्रो तथा सिद्धो अने विद्याधरनां स्वामीउ पण सेवे

छे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने ग्रैवेयक तथा अनुत्तर विमाननां देवो पण सेवे छे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउ? एवी रीते त्रणे लोकमां रहेनारा भुवनपतिउ, मनुष्यो, तथा देवो जेने नमस्कार करे छे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउ? वली अनंत, अक्षय, नित्य, तथा अनंत फलने देनारुं आ तीर्थ जय पामो? तथा ते प्रते नमस्कार थाउ? वली जेपर अनंता तीर्थंकरो सिद्ध थया छे, तथा थशे, तथा जे मुक्तिरूपी स्त्रीनुं क्रीडाग्रह छे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउ? एवी रीतनी आ पुंडरिक गिरिनी स्तुति जे माणस हमेशां भणे छे; ते माणस घेर बेठां पण यात्रानुं उत्तम फल मेलवे छे. एवी रीते चक्रीए श्री शत्रुंजय पर्वतनी स्तुति करीने गणसहित श्रीनाभ गणधर महाराजने नमस्कार कर्यो. नमता एवा चक्रीनी पीठपर गणधर महाराजनो हाथ, जाणे कर्मरूपी हाथीने मारवाने मेरुपर सिंह चड्यो होय नहीं, तेम शोभतो हतो. पछी धर्मध्यानमां तत्पर रहीने, तथा गुरुनां वचनरूपी अमृतथी सिंचायां थकां आनंद सहित चक्रीए दिवस व्यतीत कर्यो. पछी प्रभाते चक्रीए संघसहित चैत्यमां रहेला प्रभुने तथा गुरुने नमीने पुण्यकारी पारणुं कर्युं. पछी तेमणे त्यां पुंडरिक गिरिनी समीपमां वार्धकीरत्न मारफते विनिता नगरी सरखुं नगर वसाव्युं. त्यां मोटा मेहेलोनां त्रण क्रोड करखाउ, जाणे ते पर्वतने जोवा माटे निमेष रहित थएला नेत्रोनां समूहो होय नहीं, तेम शोभता हता. त्यां मेहेलोपर रहेली मणीमय आगासीउथी अमावास्याने दिवसे पण माणसोने हजारो चंद्रोनी भ्रांति थती हती. त्यां सोनानां मेहेलोनां शिखरोने जोइ जोइने, लोको मेरुने तो तेनां कचरानां ढगलासरखो मानवा लाग्या. वली त्यां समुद्रोमां जेम पाणीने तेम समस्त देशोनी वस्तुउने लोको जोता हता. वली त्यांना मोहोटा गढनी आकाशमां अडती शिखाउ क्षणवारसुधि, चालता एवा सूर्यनां घोडाउने पण विघ्नकारी थती हती. वली निकलती छे रत्ननी कांतिउ जेमांथी एवां द्वाररुपी मुखोयें करीने, शोभाथी जाणे देवनगरीनी पण हांसी करती होय नहीं. तेम ते नगरी शोभती हती. तेनी अंदर निर्मल कांतिवालुं श्री युगादीशप्रभुनुं मंदिर, जाणे भरतनो अक्षय यशनो कंद उंचो जतो होय नहीं, तेम शोभतुं हतुं; ते कंद व-

धिने शिखरोथी शाखावालो, धजाउंथी पांदडावालो, कलशोथी फलोवालो तथा मोक्षरूपी अद्भुत रसने उत्पन्न करनारो हतो. वली त्यां वावो, कुवा, तलावो, दीर्घीकाउं, पल्वलो, तथा बगीचाउं उंचे प्रकारे शोजता हता. एवी रीते सौराष्ट्र देशनी सीमामां आनंद आपनारुं ते आनंदपुर नामनुं नगर वसावीने, ते शक्तिसिंहने चक्रीए सोंप्युं. पछी तीर्थयात्रामां उत्सुक थयेला चक्री श्रीनाज गणधरपासे आव्या, त्यारे ते पण गणो सहित साथे चालवा लाग्या. पछी पुण्यनी सेना सरखो संघ पण उंचुं मुख राखी पर्वतने जोतो थको हर्षथी जरतजीनी पछवाडे चालवा लाग्यो. ते वखते पोतानां कसुंबी वस्त्रोथी जाणे प्राणीउंने राग देखाडतीउं होय नहीं, तेम स्त्रीउं धवलमंगलो गावा लागी. वली ते वखते चारे कोरे आकाशमां जंजा, निशान, कंसाल, ताल, वीणा, तथा मृदंगोनां अवाजो संजलावा लाग्या. ते वखते उंचां मुख करी पर्वतपर चडता संघनां लोको जाणे प्रगट रीते मुक्तिनां घरनी मनोहरताने जोता होय नहीं, तेम शोजता हता. चक्री उत्तर दिशाएथी चडता हता, अने बीजाउं कौतुकथी सर्व मार्गेथी ते पर चडता हता. सुधर्म गणधरनां महा तपस्वी चिल्लण नामनां शिष्य लोकोथी वींटाया थका पश्चिम मार्गेथी ते विमलाचलपर चडवा लाग्या. एवी रीते दश योजन चड्या बाद तृषातुर थएला श्रावको ते मुनिने कहेवा लाग्या के, अमोने प्राण जाय तेवी तृषा पीडा करे छे; अने तेथी प्रजुनां चरणकमलोने जोया विनांज अमारां प्राणो पाणीविनां फोकट जता रहेशे. एवी रीते तेउने पीडित जोइने मुनिए तेमने पाणी देखाड्युं. त्यारे तेउए कह्युं के, हे मुनिराज! आटलां पाणीथी अमारी तृषा जाय तेम नथी, माटे तपलब्धिथी एवुं करो के, जेथी अमो सघला सुखी थइयें. पछी संघना लोकनुं सानिध्य इछता ते मुनिए, तपलब्धिथी ते पाणीयें करीने मोटुं तलाव बनाव्युं. मंद मंद पवननी लेहेरोथी हालतां मोजांउए करीने मनोहर छे पाणी जेमां एवा ते तलावथी लोकोनुं मन विश्राम पाम्युं. ते पाणी पी पीने लोकोनां मनो अमृत रसनां पानथी पण अधिक आनंद पाम्यां. एवी रीते संघनां लोकनां उपरोधथी चिल्लण मुनिए तपनां प्रजावथी ते तलाव बनाव्युं; तेथी ते "चिल्लण" नामनुं तलाव कहेवावा लाग्युं. आ तीर्थमां प्रौढ तपनां प्रजावथी

मुनिए संघनां वाक्यथी सर्वने उपकार करनारुं ते तलाव बनाव्युं, माटे ते पवित्र जाणवुं. तेनां पाणीनां स्नानथी, पानथी, तथा जिननां अभिषेकथी पापनी शुद्धि थाय छे. ते तलावनां पाणीथी स्नान करीने, तथा जिनचरणोने पखालीने माणस एकावतारी थइ मोक्षमां जाय छे. हवे संघनो समूह पाणीथी तृप्त थइने, तथा तेनां वायुथी विश्रांत थइने सुखेथी प्रथम शिखरपर चडवा लाग्यो. हवे चक्रीए त्यां जतां थकां, वृक्षोथी पंथिउनां थाकने दूर करनारुं एक वन जोयुं. ते लक्ष्मीविलास नामनुं वन एक योजननां विस्तारवालुं, वावो तथा कुंडोथी शोभतुं, तथा नंदनवन सरखुं हतुं. उत्तर दिशारूपी स्त्रीनां मुखपर तिलक सरखा ते मनोहर वनने जोइने शक्तिसिंह चक्रीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! आ तमाल वृक्षोनी लीली श्रेणि अगाडी देखाय छे, ते जाणे पर्वतनी मेखलापर इंद्रनील मणिनी कांची (कंदोरो) होय नहीं तेम शोभे छे. वली आ वृक्षोनी पंक्ति, आ पुष्पोने गुण योग्य (दोरीमां परोववा लायक) जाणीनेज जेम, तेम पोतानां मस्तकोपर धारण करे छे. वली वर्षाकालनां मेघ सरखुं श्याम, तथा बगलीउ सरखी पुष्पोनी श्रेणिउथी मंडित थएलुं आ वन कोना तापने हरनारुं नथी ? वली आ वन श्वेत पुष्पोनां गुच्छाउथी, आकाशने सेंकडो चंद्रोवालुं करे छे; तथा तेमां रहेला भ्रमरो तेउना कलंकपणाने धारण करे छे. वली श्वेत पुष्पोनां समूहोथी, सर्व जगोए लीलुं एवुं आ उद्यान, पर्वतरूपी लक्ष्मीना मोतीउथी गुंथेला केशपाश (चोटला) सरखुं शोभे छे. वली अहींआ कल्पवृक्षो पंथिउ प्रते इच्छित दान आपीने पोतानां नामनी सफलता करे छे. वली आ बाजुए केलनां वृक्षो झरता पाणीवालां पोताना पांदडांउथी, सूर्यनां किरणोथी तप्त थएला प्राणीउने पवन नांखे छे. वली छेक मूलथी ते शाखाउ सुधि फलद्रूप थएलां आ फणसनां वृक्षो, जाणे लोकोने तीर्थसेवाथी उत्पन्न थएलां फलोनेज कहेतां होय नहीं, तेम लागे छे. चारे कोरेथी नागरवल्लीउथी वींटाएला सोपारीनां वृक्षो किन्नरोने शुं "लतावेष्टिक" नामनां नृत्यने शिखवी रह्यां छे ! ! ! वली अहीं अशोक, आंबा, चंपक, गुलाब, लवंग, चंग, नारंग विगेरे बीजां वृक्षो पण शोभी रह्यां छे. वली अहीं किन्नर, गांधर्व तथा विद्याधरोनी आ कुलीन स्त्रीउ, श्री युगादीश प्रभुनां गुणोने गाती थकी पोतानां पापोनो

नाश करे छे. वली तमाल, हिंताल, तथा तालोनी श्रेणिउथी व्याप्त थएला आ वनमां संघनां लोकोनुं मन क्षणवार विश्राम पामे छे. माटे नदीनां चपल मोजांउनां समूहथी व्याप्त थएला आ किनारापर संघ जले पोतानो पसिनो तथा थाक उतारे; तेम मधुपानमां आनंद पामता जमराउनां फंकारथी मनोहर लागता एवा आ पर्वतपर, क्षण वार सुधि हरिणाक्षी स्त्रीउ जले आपने पण आनंद आपे; वली हे राजन्! आ वखते सूर्य पण आकाशनां मध्य जागमां आवेल छे, माटे अहीं तापनी पीडाने नाश करनारो शितल पवन आप पण सेवो? वली हे स्वामी! चित्तने स्थिर करीने अहीं विश्राम करो? केम के, विश्राम पण पंथिउनी व्यथानो नाश करे छे. एवी रीतनां तेना वचनथी चक्रीए पण मनथी विचारिने वार्धकी मारफते हर्षथी त्यां आवास कर्यो.

त्यां केटलाको स्त्रीउ सहित पुष्पोनी श्रेणिउ लेवा लाग्या; तथा केटलाको वांदराउनी तुलना करीने आंबानां फलो तोडवा लाग्या. केटलाको तो हरिणाक्षी स्त्रीनां नयननां छेडाउ सरखा चंचल, तथा मार्गनो थाक उतारनारा, एवा नदीनां पाणीमां स्नान करवा लाग्या. केटलाको तो त्यां पुष्पोथी बिछानां करवा लाग्या, तथा केटलाको वननां मनोहर पणाने तुरत वर्णववा लाग्या. चंपा सरखा गौर अंगवाली, तथा हरिण सरखी आंखोवाली, केटलीक स्त्रीउ त्यां गोलाकार थइने रंग सहित रास रमवा लागी. केटलीक स्त्रीउ हींचका खाती थकी नजदीक उजेला पोतानां जरतारने, दिवसे पण पोतानां मुखथी तेजस्वी चंद्रनो ज्रम उपजाववा लागी. एवी रीते सघला लोको ज्यारे हर्षथी क्रीडा करवा लाग्या, त्यारे जरत राजा पण शक्तिसिंहनी साथे ते उद्यानमां गया. त्यांनी सघली वातोने जाणनार शक्तिसिंह पण चक्रीने नाम लेइ लेइने दरेक पगले ते वननी चारुता देखाडवा लाग्यो. त्यां चक्रीए मोतीनां चूर्ण सरखा पाणीथी जरेला, तथा आंखोने आनंद आपनारा एक कुंडने जोयो. ते कुंड शतपत्रादिक सोनेरी कमलोथी, तथा कलहंस पक्षिना शब्दोथी मनोहर लागतो हतो. हवे चक्रीए मंद गर्जारववाला मेघने पण जीती जाय एवी वाणीथी हर्षपूर्वक शक्तिसिंहने कह्युं के, हे पुत्र! तुं अहींनो जाणीतो छे, माटे आ कुंडनां प्रजावनी वार्तारूपी अमृ-

तनां सेचनथी मारा कर्णने पवित्र कर? एवी रीतनुं चक्रीनुं वचन सांभलीने शक्तिसिंह कहेवा लाग्यो के, हे चक्री! ज्यारे अहीं पिताजी (श्री युगादीश प्रभु) पधार्या हता, त्यारे हुं तेमने वांदवा गयो हतो; त्यां में प्रभुने पुछवाथी इंद्रे मने, ते ते पापोरूपी शत्रुओने नाश करवामां शस्त्र सरखी, तथा पवित्र करनारी आ पर्वतनी कथा कही; अने ते वखते तेणे मने आ कुंडनुं जे महात्म्य कह्युं छे, ते आप सांभलो? आ मोटा कुंडनुं नाम "सर्वतीर्थावतार" छे. आ तीर्थमां उत्सर्पिणी कालमां केवलनाणी प्रभुनां मंदिरमां सौधर्मेंद्र आव्या हता. तेमणे तीर्थंकर प्रभुनां स्नात्रमाटे आ कुंडमां गंगा, सिंधु, पद्मद्रह आदिक तीर्थोनां जलाशयो कर्यां. आ कुंडमां स्नान करवाथी सर्व तीर्थोनुं फल मले छे; तथा आना पाणीथी स्नपित करेला प्रभु मुक्ति आपे छे. वली जिननां चरणनां प्रक्षालनथी पवित्र थएला आ कुंडनां पाणीथी त्रण प्रकारनी विषनी भयंकर पीडा पण नाश पामे छे. वली आ जलनां स्नानथी कुष्टादिक सघली आधिव्याधिओ नाश पामे छे, तथा कांति, कीर्ति अने बुद्धि प्राप्त थाय छे. घणा कालथी तथा पडता पत्थरोनां समूहथी आ कुंड जीर्ण थएलो छे, तो पण तेनो प्रभाव तो हमणा वृद्धि पामेलो छे. एवी रीते शक्तिसिंहनां मुखथी ते कुंडनो प्रभाव जाणीने चक्री उत्तम भावसहित अत्यंत आनंद पाम्या. पछी चक्रीए वार्धकीने कहीने ते कुंडने दृढ कराव्यो, तथा तेथी उत्पन्न थएला पुण्यनां समूहोथी तेणे पोतानां भवपंजरने जर्जरित कर्युं!! पछी वैडुर्य, हीरा, माणिक्य, पुखराज विगेरेनी कांतिथी मंडित थएलो ते कुंड, विचित्र प्रकारनां पाणीनां मोजांओयुक्त शोभवा लाग्यो, तथा त्यारथी ते भारतकुंडनां नामथी प्रसिद्ध थयो. पछी ते त्रियामाने (रात्रिने) एक यामनी (पहोरनी) पेठे त्यां गालीने चक्रीए प्रस्थान करनारनी दूती सरखी भंभा वगडावी. पछी चक्री ते कुंडमां सुभद्रापटराणी सहित स्नान करीने, तथा मनोहर वस्त्रो पेहेरीने, पेहेला शिखरपर चड्या. ते वखते त्यां सौधर्मेंद्र पण भक्तिना रंगथी प्रेरायो थको, स्नेहथी तेने जोवानी इच्छाथी विमानमां बेसी आव्यो. पछी ते चक्री तथा इंद्र जाणे पोताना शरीरनुं ऐक्यपणुं करता होय नहीं, तेम त्यां आनंदथी भेट्या. पछी ते इंद्र तथा चक्रीए श्रीनाभ गु-

रुसहित सूर्यचंद्रनी पेठे मुख्य शिखरने हर्षथी स्पर्श कर्यो. पछी चक्रीए इंद्र सहित रायणने प्रदक्षिणा करी; त्यारे ते रायण पण पुष्करावर्त मेघनी पेठे तेमनापर तुरत क्षीर ऋरवा लागी. पछी चक्रीए तेनी नीचे रहेलां, तथा इंद्रे बनावेलां अने देखाडेलां श्री युगादीश प्रभुनां पगलांउने नमस्कार कर्यो. पछी तेमणे महान भक्तिथी ते पादुकापर यक्षकर्दमथी लेपन करीने, तेनुं गुलाब आदिक पुष्पोथी पूजन कर्युं. पछी ज्ञानथी उज्ज्वल एवा प्रभुनेज साक्षात मनमां चिंतवीने तेणे ते पगलांने नमस्कार कर्यो. पछी इंद्र आनंद सहित अमृतने पण दूर करनारी वाणीथी चंद्र सरखा चक्रीने कहेवा लाग्यो के, हे चक्री ! कालनां दोषथी प्रायें करीने हीन गुणोने भजनारा माणसो मूर्तिविनां आ पर्वतप्रते श्रद्धा करशे नहीं; वली तीर्थंकरोनां चरणोथी पवित्र थएलो आ पर्वतज तीर्थरूप छे; तो पण विशेष श्रद्धामाटे अहीं प्रभुनुं मंदिर भले थाय. वली जे जे काले जे जे तीर्थंकरोनी अहीं स्थिति थाय छे, ते ते काले ते ते तीर्थंकरोनी अहीं मूर्तिउ थाय छे. माटे आ वखते श्री ऋषभदेव प्रभु प्रथम तीर्थंकर विचरे छे, तेथी तमारां नगरनी पेठे अहीं पण तेमनी मूर्ति अने तेमनुं मंदिर बनावो ? वली जेम बाहुबलिए पोतानी तक्षशिला नगरीमां चोरासी मंडपनो प्रासाद बंधाव्यो छे, तेवो प्रासाद तमो पण अहीं बनावो ? एवी रीतनां इंद्रनां वचनथी विशेष थएली छे सुवासना जेनी, एवा चक्रीए वार्धकीने सोमयशानां कहेवा मुजब चैत्य बनाववानो हुकम कर्यो. त्यारे दिव्य शक्तिवाला वार्धकीए पण भरत महाराजनी आज्ञाथी मणि अने रत्नोए करीने "त्रैलोक्यविभ्रम" नामनो प्रासाद बनाव्यो. ते प्रासादमां पूर्वदिशा तरफ भुवनाभोगनां छत्र सरखा सिंहनाद प्रमुख एकविंश मंडपो शोभता हता; तेम दक्षिण दिशामां भद्रशाल प्रमुख एकवीश, तथा पश्चिम दिशामां मेघनाद प्रमुख एकवीश मंडपो, अने उत्तर दिशामां श्रीविलास प्रमुख एकवीश मंडपो शोभता हता; तथा ते सघलाउ माणिक्यनां किरणोथी आकाशने पण चित्रित करता हता. ते प्रासाद एक गाउ उंचो, अर्धो गाउ लांबो, तथा एक हजार धनुष्य पोहोलो हतो. वली त्यां चक्रीनां यशथी पूर्ण थएली दिशाउनां जाणे हाम्यो होय नहीं, तेवी मणिनां तोरणोनी श्रेणिउ चारे दि-

शाउंमां शोजती हती. वली तेमां लाखो गमे ऊरुखाउं, रत्नमय वेदी-काउं, जालीउं तथा कटेराउं शोजता हता. वली तेमां सेंकडो सूर्यनी कांतिना ढगला सरखी कांतिवाली, श्री युगादीश प्रजुनी रत्नमय चतु-र्मुखी मूर्ति शोजती हती. तेनी बन्ने बाजुउंए अत्यंत कांतिवाली श्री पुं-डरिक महाराजनी मूर्तिउं शोजती हती. वली त्यां चक्रीए कायोत्सर्गमां रहेला प्रजुनी मूर्ति पण करावी; तथा तेनी बन्ने बाजुउंए हाथमां खेंचेली तलवारवाली नमिविनमिनी मूर्तिउं पण करावी. वली त्रगडा गढमां र-हेला, केवलज्ञानी तथा धर्मतत्व कहेता एवा प्रजुनी, एवी रीतनी चतु-र्मुखी मूर्ति पण तेमणे करावी. वली तेमणे हाथ जोडेली, तथा प्रजुस-न्मुख दृष्टिवाली, पोतानी मूर्ति पण कारिगरपासे करावी. वली तेमणे ह-र्षथी श्री नाजिराजानी, तथा मरुदेवा मातानी, अने बीजा पूर्वजोनी पण प्रासादसहित मूर्तिउं करावी. वली ते चैत्यमां रत्न तथा मणिनी बना-वेली सुनंदा तथा सुमंगलानी मूर्तिउं पण शोजती हती; तेम त्यां सर्व-ज्ञानमय ब्राह्मीनी शुज मूर्ति, तथा सर्व संपदा देनारी निधानपर रहेली सुंदरीनी मूर्ति पण शोजती हती. वली त्यां पोतपोतानां वर्ण, लांछन, अने मानवाली जावि तीर्थंकरोनी मूर्तिउं पण नवघरमां रही थकी, शा-सन देवताउंसहित शोजती हती. वली त्यां जरत महाराजाए करावेली पोतानां बीजा जाइउंनी पण मणि अने रत्नोनी प्रासादसहित मूर्तिउं अत्यंत शोजती हती. एवी रीते विचित्र प्रकारनी चैत्योनी श्रेणि ते ती-र्थमां बनावीने, चक्रीए त्यां कारिगरो, चिताराउं, रखेवालो, तथा पूजा-रीउंने राख्या, तेम त्यां जिनपूजामाटे तेमणे ऊारी, थाल, कलश, छत्र, चामर, दीपक, आजूषण, आरतिप्रमुख उपकरणो मुक्यां. वली ते तीर्थ-मां हाथीनां आसनवालो, बन्ने जमणा हाथोमां वरदाम तथा अक्षमाला धरनारो, अने बन्ने डावा हाथोमां बीजोरुं तथा नागपाश धरनारो, तथा तपेला सुवर्ण सरखी उत्तम कांतिवालो गोमुख नामनो यक्ष पोतानी इछाथीज रक्षक थयो. वली सोनेरी कांतिवाली, गरुडनां आसनवाली, जमणा हाथोमां वरदाम, अक्षमाला, चक्री, तथा पाशने धरनारी, डावा हाथोमां धनुष्य, वज्र, चक्र तथा अंकुशने धरनारी, अने दक्ष एवी अ-प्रतिचक्रा नामनी शासनदेवी ते तीर्थमां रक्षक थइ.

हवे शुभ दिवसे बाहुबलि, श्रीनाभ, नमि, विनमि आदिक सूरिओ, तथा इंद्रो आदिक देवो पण त्यां एकठा थया. ते वखते इंद्रनां हुकमथी भक्तिवंत आभियोगिक देवो, गुरुए कहेलो पूजानो सामन तुरत लाव्या. पछी त्यां ते ऋषिओए शांतिस्नात्रसहित द्वादशांगोमां कहेली विधिपूर्वक चैत्योनी तथा प्रतिमाओनी प्रतिष्ठा करी; तथा संघसहित सूरिमंत्रथी पवित्र करेला वास अने अक्षतोने ध्वजदंडोपर तथा मूर्तिओपर तेओए नांख्या. ते वखते त्यां सर्व वाजित्रोनो मंगलिक ध्वनि सर्वना कर्णोने पवित्र करवा लाग्यो. एवी रीते चक्रीए करेलो प्रतिष्ठा महोत्सव त्यां थयो, तथा अधिष्टायक देवो पण त्यां प्रत्यक्ष थया. पछी चक्रीए त्यां उत्तम मंत्रना उच्चारपूर्वक सुवर्णनां कलशोथी जन्मोत्सवनी पेठे प्रभुनुं स्नात्र कर्युं. पछी तेमणे कर्पूर, अगर, कंकोल, कस्तुरी, चंदन आदिकथी प्रभुनी प्रतिमाने लेपन कर्युं; तथा साथे पोतानी कीर्तिथी जगतने पण लिप्त कर्युं; पछी चक्रीए ज्ञानी गुरुओने जमणी बाजुए बेसाड्या, तथा साधवीओने अंतःपुरनी स्त्रीओसहीत डावी बाजुए बेसाडी. पछी चंदन, मंदार, संतान, हरिचंदन, पारिजात, कल्पवृक्ष, मल्ली, बकुल, कमल, केतकी, मालती, जुइ, करवीर, शतपत्र, जासुद, तथा कल्हार प्रमुखनां, तथा विचित्र प्रकारनी सुगंधिनां उल्लासथी खेंचाएला भमराओए करेलुं छे स्पष्ट नृत्य ज्यां, एवां पुष्पोएं करीने, इंद्र तथा चक्री प्रमुखोए प्रभुनी पूजा करी. पछी सर्व जनोए अक्षत, फल, धूप, दीपक, नैवेद्य, जल विगेरेथी पूजा करी. पछी हाथमां आरती धारण करता, तथा स्फुरायमान मुखवाला शुभारंभी चक्री, दिवसे उगता सूर्यसरखा शोभवा लाग्या. पछी इंद्र प्रमुखोए भवतापने छेदनारी तिलकनी श्रेणिओ करी. सर्व (अज्ञानरूपी) अंधकारने नाश करनारी आरतिने जमणी बाजुथी फेरवता चक्रीपर पुष्पोनी वृष्टि पडवा लागी, अने तेथी ते अत्यंत शोभवा लाग्या. वली तेनां हाथमां रहेलो, तथा एक शिखावालो मंगलदीवो, जगतमां दीपकसमान एकज आ प्रभु छे, एम जाणे कहेतो होय नहीं, तेम शोभवा लाग्यो. ते वखते हर्षित थइने चक्रीए जे जे कार्य कर्युं, तेनुं फल तो चक्रीज जाणी शके तेम छे. पछी कर्मोनी साथेज शरीरने नमावीने चक्रीए श्रीयुगादीश प्रभुने नमस्कार कर्यो. पछी रोमांचरूपी

कंचुकने धारण करीने, तथा झरता हर्षाश्रुथी भींजाइने, अने पोताना हाथोने मस्तकपर जोडीने चक्री नीचे प्रमाणे स्तुति करवा लाग्या के, हे प्रभु! बुद्धिरूपी धनथी हीन थएलो हुं क्यां? अने गुणोना समुद्र-तुल्य आप क्यां? पण आपनी भक्तिथी वाचाल थएलो हुं आपनी स्तुति करुं छुं. हे प्रभु! तमो अनंत, तथा जगत्पूज्य छो, तेम अनादिरूपने भजनारा छो अने आपनां यथावस्थित स्वरूपने तो योगिउ पण जाणी शकता नथी. वली हे प्रभु! आपे अन्योथी सर्वथा दुर्जय तथा आत्मार्थनो नाश करनारा एवा रागादिक शत्रुउने तपरूपी हथीयारथी हण्या छे; वली बीजा नामधारी देवो तो रागादिकथी विडंबना पामेला छे; तेउ अंतरंग शत्रुउने नहीं मारतां बहारना शत्रुउने मारे छे. वली हे अनंत ज्ञाननां माहात्म्यवाला एवा चारित्रमां चतुर! तथा जगतमां प्रदीप समान; एवा हे नाभेय भगवन्! आपनाप्रते नमस्कार थाउ? वली हे प्रभु! आपे योगनां आठे अंगो एवी रीतें बनाव्यां छे के, तेउ आठे कर्मोनो नाश करे छे. वली श्रीशत्रुंजय पर्वतप्रते रत्नसरखा, तथा श्री नाभिराजानां कुलमां सूर्यसरखा, तथा स्वर्ग अने मोक्षनां व्यापारवाला एवा आपनी हुं स्तुति करुं छुं. वली हे प्रभु! रत्नथी जेम सुवर्ण, तथा तेजथी जेम सूर्य, तेम आपनाथी आ शत्रुंजय पर्वत अलंकृत थयो छे. वली हे प्रभु! हुं आपनी पासेथी स्वर्गसुख, के मोक्ष, के लक्ष्मी मागतो नथी; पण फक्त आपनां चरणकमलो मारा मनमां वसो? एवी रीते स्तुति करीने चक्रीए मुकुटथी पृथ्वीतलने स्पर्श करीने श्रीयुगादीश प्रभुने पंचांग नमस्कार कर्यो. पछी श्री प्रथम प्रभुनी माता, तथा प्रथम सिद्ध एवां मरुदेवी मातानी पूजा करीने चक्रीए तेमनी नीचे प्रमाणे स्तुति करवा मांडी के, आ जगतने शत्रुउथी पराभव पामतुं जोइने, दया लावी जेणीए, अभयदान देनार प्रथम प्रभुने पोतानी कुक्षिमां धारण कर्या, एवां मरुदेवी माताने हुं बहुवार नमस्कार करुं छुं. वली जेणीए अक्षय सुखवाला मोक्षमां वास करेलो छे. तथा चिद्रूपपणाथी जगतनो स्वभाव जाण्यो छे, तथा महा अतिशयवंत, एवां ते मरुदेवी माताने हुं त्रिविधें त्रिविधें नमस्कार करुं छुं. वली तेणीना समान परम योगने धरनारी कोइ पण स्त्री नथी; केम के, तेमणे हाथीना कुंभस्थलपर रहीने पण पोतानां

अंतरंग शत्रुउने हण्या; वली पुत्रपर बहु प्रेमवालांज होय नहीं जेम, तेम ते पोतानां पुत्रने थनारुं सुख जोवा माटे प्रथमथीज मोक्षमां गयां. वली हे माता! जगतमां भूषण समान, योगीश्वरी, तथा समस्त भावोने जाणनारां एवां जो तमो न होत, तो आ युगादीश प्रभु, जगत, बोधिलाभ, ज्ञान, मोक्ष, तथा (अंतरंग) वैरीउनो नाश क्यांथी होत? वली हे माता! आपनां चरणोनां नखोनां संगथी मारुं निबिड अज्ञानरूपी सर्व अंधकार नाश पामो? वली आप जगतनां प्रथम गुरुना कारणरूप छो, तेथी हुं आपनी स्तुति करुं छुं, तथा आपने नमुं छुं, अने चिंतवुं छुं. जगतनां इश्वरनी माता, योगिनी तथा जगतनी इश्वरी, अने देवोथी पण सेवाएलां एवां मरुदेवी माता माराप्रते मंगल करो? एवी रीते मरुदेवी मातानी स्तुति करीने चक्री ब्राह्मीनी मूर्तिने पूजीने तेनी स्तुति करवा लाग्या के, जे सर्व विश्वनी स्थितिरूप छे, तथा योगिउने पण ध्यान धरवा लायक छे, भवभयने हरनारी छे, माणसोने तारनारी छे, दिव्य शक्तिवाली छे, मनुष्य अने देवोथी पूजाएली छे, तथा जे मंत्ररूप स्वरूपवाली छे, एवी युगादीश प्रभुनी पुत्री श्री ब्राह्मी माता मने सुख आपो? वली डोलरसरखी निर्मल एवी जे ब्राह्मी माताने, उत्कृष्ट समाधिमां रहेला योगीउ पोतानां हृदयकमलमां धारण करीने स्मरण करता थका पापोनां समूहने तजीने परम तत्व जाणे छे, एवी निर्मल शीलने धरनारी ते ब्राह्मी माताने हुं नमस्कार करुं छुं. सुर, असुर अने मनुष्योने जाणवालायक, तथा श्री युगादीश प्रभुनी पुत्री, अने ब्रह्म शब्दने उत्पन्न करनारी ते ब्राह्मी माता विघ्नोनी शांतिमाटे थाउ? एवी रीते तेमनी स्तुति करीने, तथा तेमने नमीने, चक्री सुंदरीनां चैत्यमां जइ, तेने पूजीने स्तुति करवा लाग्या के, हे सुंदरी बेहेन! तमो आ पृथ्वीनां भूषणरूप लक्ष्मी छो, तथा शुभ लक्षणवालाउप्रते तमो नित्यरूपे छो, वली तमारे माटे प्राये करीने आ जगत तपो करे छे, तथा तमोने माने छे; वली आ जगतमां कांकरा, तथा हाडकारूप पदार्थो पण जे रत्न अने शंखरूप थाय छे, ते तमारी दृष्टिनां प्रभावथी थाय छे. वली हे भगवती! नीच वंशमां उत्पन्न थएलो माणस पण आपनां आश्रयथी कुलीन अने पंडितोने पण नेवनीक थाय छे. वली हे देवी! तमारा प्रसादथी आ

त्रणे जगत पण सघला लोकोने सेवनीक थाय छे. वली लक्ष्मीने लीधे लोकोना मनमां धर्मनो पण आदर थाय छे, माटे लोको तमारी सेवा करे छे. वली हे जगतनुं हित करनारी सुंदरी! तुंज बुद्धि, धृति तथा मति छे; तथा हे आदि देवनां कुलरूपी समुद्रप्रते लक्ष्मी समान देवी! हुं तारी स्तुति करुं छुं. एवी रीते भक्तिनां समूहथी उन्नत थया थका चक्रीए सुंदरीनी स्तुति करीने, तथा नमीने उत्कृष्ट रीते प्रभुनी पूजा करी. पछी तेमणे सुवर्ण, रूपुं, तथा वस्त्रोथी, गणधरोए प्रतिष्ठित करेला महाध्वजो सघला प्रासादोपर चडाव्या. पछी चक्रीए उत्तरासंग करीने, गुरुपासे आवी, तथा प्रदक्षिणा देइने, तेमनां चरणोनुं चंदनथी पूजन कर्युं. पछी श्रीनाभ गणधरे "सूरिमंत्रथी प्रतिष्ठित थएलुं, दृष्टिदोषने नाश करनारुं तथा गुरुनां हाथरूपी कमलोथी उत्पन्न थएलुं, तिलक तमोने मंगल आपो?" एवी रीते कहीने हर्षथी मुक्तिने वश करवामां औषधसरखुं तिलक भरत महाराजना कपालमां कर्युं. पछी चक्रीए हे क्षमाश्रमण! हुं आपने वांदवाने इछुं छुं, एम कहीने तेमनी अनुज्ञा मल्या बाद, तेमणे श्रीनाभ गणधरने नमस्कार कर्यो. त्यारे गुरुए पण सर्व लक्ष्मीउने वश करवामां औषधरूप, आपदारूपी सर्पप्रते गरुड समान, तथा संसारने तारनारो धर्मलाभ तेमने आप्यो. पछी चक्री हर्षपूर्वक तेमनां मुखरूपी चंद्रमांथी निकलती वाणीरूपी अमृतने पीवाने चकोरोनी पेठे तेमनी पासे बेठा. ते वखते ते चक्रीनां मुखरूपी चंद्रनां उदयथी गुरुनो ज्ञानरूपी समुद्र जाणे अंदरथी उभरायो होय नहीं, तेम देशनाना मिशथी बहार निकल्यो. जे माणसो आ तीर्थमां जिनने पूजे छे, तेउज धन्य, तथा कृतार्थ छे, अने तेउथीज आ पृथ्वी भूषित थएली छे. जे राज्यमां वेगवाला घोडा, मदोन्मत्त हाथीउ, सर्व संपदा, अनुरक्त सेवको, चामर सहित श्वेत छत्र, सिंहासन, उत्तम शय्या, शुद्ध राणीउ, संगीत, सुगंधि वस्तुउ वारांगनाउनां विलास, छत्रीस जातनां नाटको तथा तेउनां विनोदो, मले छे; ते राज्य जिनपूजाथी मले छे. जे माणस दहीं, दूध, घी, साकर, तथा चंदन, एवी रीते पंचामृतथी जिननी पूजा करे छे, ते देवरूप थाय छे. वली जे माणसो हमेशां प्रभुने पोताने हाथे पूजे छे. तेउ मोक्षमां जाय छे; दिवसमां एकवार पण जो जिननी पूजा करवामां आवे, तो अनेक भवोनुं उपा-

जैन करेलुं पाप पण नाश पामे छे. वली जे माणस प्रभुनी तीर्थोदकथी स्नात्र करीने वारवार कुसुमांजलि मुके छे, ते चारे गतिने भजनारो थतो नथी; (अर्थात् मोक्ष पामे छे.) वली जल, पुष्प, अक्षत, धूप, फल, नैवेद्य, दीपक, स्तुति, अने पत्रादिकथी पण भक्तिपूर्वक प्रभुने पूजवा. एवी रीते जिनाज्ञा पूर्वक जे माणस अष्टांगथी प्रभुनी पूजा करे छे, तेनी पासे आठे सिद्धिउं प्रगट थइने आवे छे. वली जे शुभ भाववाला माणसो साते क्षेत्रोमां उत्तम द्रव्य वावीने समय आव्ये तेने भावनारूपी पाणीथी सिंचे छे; तेउं आ चौद रज्जु प्रमाण लोकने भेदीने समाधिथी अनंत ज्ञान तथा अनंत सुखमय मोक्षने मेलवे छे. तेमां प्रथम मणि, रत्नादिक, सुवर्ण, रूपुं, पत्थर, अथवा काष्टनुं जिनमंदिर बंधाववुं; वली जेउं फक्त घासनां पण जिनालयो बंधावे छे, तेउं पण देवलोकमां अखंडित विमानोने मेलवे छे. वली तमारी पेठे जेउं उत्तम रत्न अने सुवर्ण आदिकथी जिनमंदिरो बंधावे छे, तेवा पुण्यशालीउंनां उत्तम फलने तो कोण जाणी शके तेम छे? जिनमंदिरमां जेटलां काष्टादिकनां परमाणुउं होय छे, तेटला लाख पल्योपम सुधि, तेनो बनावनार स्वर्गसुख भोगवे छे. वली नवुं जिनमंदिर बंधाववामां जेटलुं फल थाय छे, तेथी आठगणुं फल तेनो जिर्णोद्धार करवाथी विवेकीने थाय छे. वली शत्रुंजयादिक तीर्थोमां जेउं प्रासादो तथा प्रतिमाउं करावे छे, तेउंनां पुण्यने तो ज्ञानीज जाणी शके. माटे मणि, रत्न, सुवर्ण, रुपुं काष्ट, पत्थर अने माटीनां पण एक अंगुठानां प्रमाणथी मांडीने एकसोने सात अंगुठानां प्रमाणसुधिनां, जेउं शुद्ध भावथी जिनबिंबो करावे छे, तेउंने मुक्तिरूपी लक्ष्मी वश थाय छे. वली जे माणस एक आंगुलनां प्रमाणवालुं पण जिनबिंब बनावे छे, ते भवांतरमां एक छत्रवालुं (समस्तपृथ्वीनुं) राज्य मेलवे छे. वली जेम मेरुथी कोइ बीजो पर्वत मोटो नथी, तथा जेम कल्पवृक्षथी बीजुं कोइ वृक्ष श्रेष्ट नथी. तेम जिनबिंब कराववा समान बीजो कोइ धर्म नथी. जिनबिंबो बनावीने दुर्गतिथी कोने भय छे? केम के, जेउं सिंहपर चढेला छे, तेउंने शियाल क्यांथी पराभव करी शके तेम छे? जेउंये गुरुनी आज्ञा प्रमाणे जिनबिंबो कराव्यां छे, तेउंनां घरनां आंगणामां त्रणे लोकोनी संपदा दासीउं थइ रहे छे. वली जे माणस सूरिमंत्रथी अरिहंत प्रभुनी प्रतिष्ठा

करावे बे, ते अरिहंतपदवी पामे बे; केम के, वाव्याप्रमाणे फल निपजे बे. जेटला हजार वर्षोसुधि लोको जिननी पूजा करे बे, तेटला कालसुधि ते बिंबनां करनारने तेनां फलनो अंश मले बे. वली बिंबोनी प्रतिष्ठा करवाथी बन्ने लोकमां हितकारी एवुं जे फल प्राणीने थाय बे, ते तो केवलीज जाणी शके. वली (दरेक कार्यमां) करनारने, करावनारने, अनुमोदन करनारने तथा सहाय करनारने शुजाशुज बन्ने तुल्य फल थाय बे, एम श्री जिनेश्वर प्रजुए कहेलुं बे. वली जे देशमां अथवा जे नगरमां अरिहंत प्रजुनां बिंबनी प्रतिष्ठा थाय बे, त्यां रोग, डुकाल के, वैर होतां नथी. वली जे शुज चित्तवाली स्त्री जिनेश्वर प्रजुनां स्नात्र माटे पाणीथी जरेली गागर पोतानां मस्तकपर उपाडे बे, ते चक्रवर्तीनी पटराणी थश्ने, मोक्ष जाय बे. वली जीवविनानुं जेम शरीर, विद्याविनानो उत्तम पुत्र, आंखोविनानुं उत्तम मुख, पुत्र विनानुं उत्तम कुल, पाणी विनानुं तलाव, तथा सूर्य विनानुं जेम आकाश तेम प्रतिष्ठा विनानुं बिंब शोजतुं नथी. वली ज्ञानविना संसार ज्रमण थाय बे, अने ज्ञानथी मोक्षनो संगम थाय बे. सिद्धांतनां आराधनरूप ज्ञान, द्रव्यथी अने जावथी एम बे प्रकारनुं बे. ज्ञाननां पुस्तकोनी रक्षामाटे कवली, पाठां, रूमाल विगेरे आपवां; तेनीपासे, दीपक अने धूप करवो, तेपर वासक्षेप नाखवो, तेनी पासे संगीत करवुं, अष्टमंगल आलेखवां, तथा तेउनुं फल, पुष्प, अक्षत विगेरेथी पूजन करवुं. ए ज्ञाननुं द्रव्याराधन बे. ज्ञानने सांजलवुं, तेपर श्रद्धा राखवी, जणावतुं, तेम ते ज्ञाननां जाणनारनी जक्ति करवी, ते ज्ञाननुं जावाराधन बे. हे राजन्! एवी रीते करेली आगमनी पूजा जवरूपि जडतानो नाश करनारी, तथा केवलज्ञानने उत्पन्न करनारी बे. ज्ञाननी पूजा करवाथी माणसो चक्रीना तथा इंद्रादिकनां जवने मेलवीने मोक्ष जाय बे. चतुर्विध संघनी पूजा अने उपासना करवी; ते चारे क्षेत्रो लोकोत्तर सुख देनारां बे. जेने घेर संघ आवे बे, तेना हाथमां चिंतामणि रत्न, तेना आंगणामां कल्पवृक्ष, तथा तेनीपासे कामधेनु आवी जाणवी; तेम तेनुं कुल कलंकरहित जाणवुं. वली जेनां मस्तकने संघनां चरणोनी रज स्पर्श करे बे, ते पवित्र माणसने तीर्थ सेवानुं फल थाय बे. पापोनां समूहरूपी गर्मीने दूर करवामां मेघनी श्रेणि सरखो, दारिद्ररूपी रात्रिने नाश करवामां

सूर्यसरखो, तथा कर्मरूपी हाथीने मारवामां सिंहसरखो सनातन संघ जयवंतो वर्तो? जेणे फल, तांबुल, वस्त्र, जोजन, चंदन तथा पुष्पोथी श्री संघनी सेवा करी छे, तेने सर्व उत्तम फल मल्युं छे. एवी रीते हे चक्री! जैन राज्यमां रहेलां आ साते क्षेत्रो हमेशां फलदायक छे; अने तेउंमां वावेलुं धनरूपी वीज विघ्नरहित उदय पामे छे. एवी रीते मुनिना वचनरूपी अमृतने पीपीने पण जाणे अतृप्त थया होय नहीं, तेम मनमां आश्चर्य थइने ते चक्री मस्तक धुणाववा लाग्या. पछी गुरुनां चरणोने तथा वीजा मुनिउंने पण नमस्कार करीने, मुनिनी वाणीनुं स्मरण करता थका चक्री पोताने स्थानके आव्या. त्यां तेमणे अत्यंत रसवाली षट रसनी रसवती जमीने, आनंदित थइ क्षणवार उत्तम जद्रासन पर निद्रा करी. पछी चक्री सोमयशा, शक्तिसिंह, तथा सुषेण आदिकथी वींटाया थका इंद्रना आवासे आव्या. ते वखते इंद्र पण पोतानां आवास प्रते चक्रीने आवता जोइने आनंद पामतो थको पोतानां आसनथी उठ्यो. पछी महोदयवाला तेउं वन्ने एक आसनपर वेठा थका अत्यंत शोजवा लाग्या. पछी त्यां परस्पर केटलीक कथाउं कर्या वाद, इंद्र चक्रीने कहेवा लाग्या के, हे चक्री! श्री युगादीश प्रजु अमारे पूजवा योग्य छे, केम के, अमो तेउंनां चाकरो छीयें; अने तमो तेमना चरमशरीरी पुत्र छो; वली तमो संघपति तथा तीर्थनो उद्धार करनारा छो, तेथी सर्वथा प्रकारे पूजनिक छो; वली तमोए करेली आ पूजानां अनुवर्तनथी लोको पण तेम करशे; तेम वली जो हुं तेम करीश, तो वली विशेषथी तेनुं अनुकरण थशे; पछी चक्रीए पण तेम करवुं अंगीकार कर्याथी इंद्रे देवो सहित विधिपूर्वक कुसुमादिकथी पूजा करी; अरिहंत प्रजुनी आशिषथी, विविध प्रकारनां द्रव्योवाली पुष्पनी माला हर्षथी तेणे पोतानां कंठमां स्थापन करी. पछी देवोसहित क्षीरसमुद्र जइ त्यांथी कलशोमां उत्सवसहित जल जरी, पाछा आवी तीर्थंकरनां चरणोनुं तेणे हर्षथी स्नात्र कर्युं; तथा त्यां सुपात्रोने दान आप्युं. ते दिवसथी लोकोमां ते महान इंद्रोत्सव प्रसिद्ध थयो, केम के, जेम महान पुरुषो वर्ते छे, तेम लोको पण ते करे छे. एवी रीते जरत चक्रीए, तथा इंद्रे पूजा करी, त्यारथी, विविधोदयवाली वहुविध जिनपूजाउं प्रचलित थइ. पछी इंद्रनी

आज्ञाथी त्यां अप्सराउए, तथा हाहा हुहु विगेरे गांधर्वोए लोकोने हर्ष आपनारुं संगीत कर्युं. संगीत त्रणे लोकोने वश करनारुं, स्वर्गादिक सुख आपनारुं, तथा सर्व लोकोनां सर्व अर्थोने साधनारुं छे; संगीत सुखदुःखमां सरखुं छे; तथा ते द्राक्ष अने शेलडीना रसथी पण अधिक (मिठाशवालुं) छे, तेम जिन पूजामां ते संगीत पापने हरनारुं छे; वली तेणे सुवर्ण प्रते जाणे सुगंध लाववानी इच्छाथीज होय नहीं तेम, ते तीर्थमां विशेषें करीने मुनिउनी त्रिविधें पूजा करी. वलि त्यां तेणे सुवर्ण, रत्न, रूपुं, जल, अन्न तथा वस्त्रोथी, फरीने न आवे एवुं याचकोनुं दारिद्र दूर कर्युं. वली भरत राजाए ते तीर्थनी पूजा माटे ते सुराष्ट्र देश आपी दीधो; अने त्यारथी ते पृथ्वीमां "देवदेश" तरिके प्रसिद्ध थयो.

हवे एक दिवसे ते चक्री अने इंद्र एक आसनपर वेसीने परस्पर कथा रूपी अमृतरसने पीता हता. तेटलामां मोटा ह्रदोनां आवर्तोरूपी नाभिवाली, विकस्वर कमलरूपी मुखवाली, कांठाउ रूपी जघनथी मनोहर, रसवली, (पाणीवाली) अंदर रहेला बेटोरूपी स्तनोथी मनोहर लागती, हंसोरूपी वस्त्रवाली, लावण्यने धरनारी, वृक्षोनी घटाथी सूर्यने न जोती, शुभने धारण करनारी, पुण्यनी सोबतवाली, पूर्वाब्धिरूपी पतिना संगवाली, पोताना तरंगोथी नाचती, चकोररूपी आंखोवाली, स्वस्थ, तथा उत्तम पर्वतथी (राजाथी) उत्पन्न थएली एवी कुलस्त्री सरखी शत्रुंजयी नदीने भरत महाराजे आगल रहेली दीठी. चकोर, चातक, चक्रवाक, हंस, तथा सारसथी शोभीती थएली, मोजांउथी चपल कमलोवाली, भमराउना गायनोवाली, तथा बन्ने शिखरो वच्चे मर्यादानी पेठे रहेली, एवी ते शत्रुंजयी नदीने जोइने भरत राजाए इंद्रने पूछ्युं के हे इंद्र ! आ नदी कइ छे ? त्यारे इंद्रे पण कह्युं के, हे चक्री ! आ शत्रुंजयी नामनी नदी छे, अने ते शत्रुंजय पर्वतनां आश्रयथी गंगाथी पण अधिक फल देनारी छे. आ नदीमां रहेला ह्रदोनुं जो जुदुं जुदुं माहात्म्य कहेवामां आवे, तो खरेखर बृहस्पतिना पण सेंकडो वर्षो वीती जाय. पूर्वे केवलनाणी नामना तीर्थंकरनां स्नात्र माटे अहीं इशानेंद्रे गंगाने उतारी हती. ते नदी वैताढ्य पर्वतथी जमीननी अंदरज वहे छे, तथा आ शत्रुंजय पासे ते प्रगट थाय छे, अने तेथी तेनुं

"शत्रुंजयी" नाम पडेलुं छे. आ नदीनां जळनां स्पर्शथी कांति, कीर्ति, लक्ष्मी, बुद्धि, धृति, तथा समाधि थाय छे, अने सिद्धिओ वश थाय छे. वळी हंस, सारस, चक्रवाक आदिक जे पक्षिओ पण आ नदीना पाणीने स्पर्श करे छे, तेओने पापरूपी मेल चोंटतो नथी. वळी आ नदीनां पाणीथी सर्व महारोगो नाश पामे छे; वळी जे माणसो आ नदीना कांठापर उगेलां वृक्षोना फळो खाय छे, तथा छ माससुधि जेओ आनुं पाणी पीए छे, तेओ वात, पित्त, कुष्ट आदिक रोगोने क्रिडामात्रमां जीतीने सुवर्ण सरखी कांतिवाळा थाय छे; वळी आ नदीनां जळनां स्नानथी शरीरमांथी पापो पण चाल्या जाय छे, त्यारे औषधोथी साध्य एवा वातपित्तादिकनी तो वातज शी करवी? आ शत्रुंजयी नदी स्पर्शथी पण सर्व तीर्थोनां फळो देनारी, तथा सर्व पापोने हरनारी छे; वळी हे चक्री! जेनां पाणीनां स्पर्शथी शांतनु राजानां पुत्रो सुख पाम्या, एवा आ नदीना द्रहनुं तमो माहात्म्य सांभळो?

आ भरत खंडमां श्रीपुर नामनुं नगर छे, त्यां शत्रुओने नाश करनारो शांतनु नामे राजा हतो; तेनी सुशीला नामनी स्त्रीए एक दहाडो स्वप्नमां अति धूसर धूमकेतुने जोइने, ते वात पोताना स्वामीने तुरत कही. अनुक्रमे ते स्वप्नने अनुसारे तेणीने कुलक्षणो पुत्र थयो; अने तेज वखते राज्यलक्ष्मीना मुख्य अंगरूप हाथीओनुं सैन्य नाश पाम्युं. वळी फरीने पण तेणीने दुष्ट स्वप्नथी सूचित हीन पुत्र थयो, अने ते वखते घोडाओनुं सैन्य नाश पाम्युं. तेवीज रीते त्रीजो पुत्र थवाथी, जीवहिंसाथी जेम धर्म, तथा लोभथी जेम सर्व गुणो, तेम राजानी सर्व संपदा नाश पामी. चोथा पुत्रनी जन्मवार्ता सांभळतांज शत्रुओए सैन्य सहित आवीने ते श्रीपुर नगरने घेरो घाल्यो. त्यारे सघळो भंडार विगेरे क्षीण थवाथी ते शांतनु राजा पोतानी स्त्री सुशीलाने तथा पुत्रोने लेइने रात्रिए कंइक नासी गयो. तेनां नीळ, महानीळ, काळ, तथा महाकाळ नामना ते चारे पुत्रो साते व्यसनोमां लीन थया. जुगार, मांसभोजन, मदिरापान, वेश्यागमन, चोरी, शिकार, तथा परस्त्रीगमन, ए नामनां सात व्यसनो उत्तम जनोए कहेलां छे. जुगारथी बीजां व्यसनो पण थाय छे, माटे बन्ने लोकमां अहितकारी जुगारनो त्याग करवो. वळी

जे मांस, पोतानां शब्दथीज कहे ने के, "जेने तुरत नरकमां जवुं होय, ते मने भक्षण करे" माटे ते मांस भक्षणनो त्याग करवो. जुगारथी धन, यश, धर्म, बंधुवर्ग तथा कुलनो क्षय थाय ने, तथा तेथी दुःखनां समूहो देनारी नरक अने तिर्यंचनी गति मले ने. जे दुर्बुद्धिउ जीभनां स्वादथी मांस खाय ने, तेउने शीयाल, अने पिशाच सरखा नरकगामी जाणवा. जे मदिरापान अनर्थोनुं मूल, बुद्धि, कांति अने यशनो नाश करनारुं, तथा पोतानी माता अने पोतानी स्त्री वच्चेना अंतरने पण नहीं जणावनारुं ने, ते मदिरापान कोण अंगीकार करे? वली बन्ने लोकनो विघात करनारुं परस्त्रीगमन तजवुं; तेम पापरूप वेश्या प्रते जरा पण प्रीति करवी नहीं. जे चोरी आ लोकमां पण प्रत्यक्ष रीते वध, बंधनादिक दुःखो करनारी ने, तेम परलोकमां पण दुखदायी ने, एम धारी उत्तम बुद्धिवाने तेनो त्याग करवो. चोरीथी आ लोकमां पण कर्ण, नाक, आंख, हाथ, पग विगेरेने पीडा थाय ने, तथा परलोकमां चांडालकुलमां उत्पत्ति थाय ने. धर्म रूपी वृक्षनां मूलमां अग्नि सरखा, कीर्तिरूपी महेलपर मशीना लेप सरखा, एवा शिकारने सर्वज्ञ प्रभुए धिक्कारेल ने, माटे तेनी वार्ता पण सांभलवी नहीं. जे शिकारना व्यसनी माणसो प्राणीउने मारे ने, तेउ दुःख, दरिद्रता, तथा दुष्ट पीडानां भोगवनारा थाय ने. एवी रीतना साते व्यसनो सेवनारा ते चारे पुत्रो कुष्टी थया. कदरूपा, क्रूर, द्वेषी, तथा कुसंगमां पडेला ते पुत्रो, कुग्रहो जेम चंद्रने, तेम राजाने वींटीने रहेता हता. एवी रीते ते पुत्रो सहित ते राजा एक देशमांथी वीजा देशमां, तथा एक वनमांथी वीजा वनमां भमवा लाग्यो, पण कोइ जगोए सुख पाम्यो नहीं. हमेशां अत्यंत भोजन करतां नतां पण रोगथी ग्रस्त थएला ते पुत्रो राजाना मनमां एवी चिंता उत्पन्न करवा लाग्या के, दारिद्रपणामां पण वैरीउ विगेरेथी डरीने जे जीविताशा प्राणीउ करे ने, ते केवल क्लेशमाटेज थाय ने; माटे हवे तो आजे गमे तेम करीने पण आ स्त्री तथा पुत्रोने नेतरीने, तुरत हुं आपघात करीश. एम विचारिने ते कोइक मोटा पर्वतपर चड्यो; त्यां तेणे एक उंचुं जिनमंदिर जोयुं. प्राण प्रयाणना प्रस्थान समये जाणे ते भातुं लेवानी इच्छा करतो होय नहीं, तेम ते, कुटुंब सहित ते जिनमं-

दिरमां गयो. त्यां तेणे अद्भूत आकारवाला, तथा सर्व तेजोनां साररूप, अने जिननां चरणोने नमता एक पुरुषने जोयो. तेने जोवाथी अधिक जाववालो थएलो ते राजा, पोताना आत्माने जिननी साथे ऐक्य करतो थको तेमने नमस्कार करवा लाग्यो, (मनशुद्धिथी करेली अल्प जिनजक्ति पण परलोकनी पेठे आ लोकमां पण उत्तम सुख देनारी छे.) पछी ते पुरुषे ते राजाने कह्युं के, हे जद्राकृति! हुं नागकुमारोनो स्वामी धरणेंद्र छुं; तथा तारी जिनजक्तिथी हुं तारापर तुष्टमान थएलो छुं, माटे कंइ वर माग? तेनां वचनथी खुशी थएलो ते राजा तेने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, आपनुं दर्शन खरेखर मने संपदा देखाडनारुं छे. वली हे धरणेंद्र! हुं आपनी पासेथी वर तो पछी मागीश; पण मने प्रथम ते वात कहो के, मारा आ पुत्रोनो जन्म थते छते, अनुक्रमे मारी संपदानो नाश केम थयो? त्यारे धरणेंद्रे ज्ञानथी तेनां जवोने जाणीने कह्युं के, महा वनमां आ नील क्रय नामनो पूर्व जवे जील्ल हतो. क्रूर आशयवालो, तथा लोकोने मारनारो ते जिल्ल एक दहाडो यात्रिक लोकोने लुंटीने मार्गे पाछो वल्यो; त्यां ते धनुष्य चडावीने वनमां हरिणने शोधतो हतो, तेटलामां तेणे ध्यानमां रहेला एक मुनिने जोया. त्यारे तेणे मुनिने हरिण विषे पुछवाथी मुनि ज्यारे बोल्या नहीं, त्यारे ते जिल्ले ते मुनिनेज बाणथी मार्या; त्यारे मुनि पण "नमोऽर्हद्भ्यः" एम कहेता थका मृत्यु पाम्या; अने तेज दिवसे ते जिल्लने पण एक सिंहे मारी नांख्यो; त्यारे ते जिल्ल मरतां थकां चिंतववा लाग्यो के, अरे! में दुष्टे आ निरपराधि मुनिने मार्या, तेनुं खरेखर मने आ फल मल्युं. पछी ते जिल्ल त्यांथी मरीने मुनिहिंसानां पापथी सातमी नरके गयो, अने त्यां तेणे तेत्रीस सागरोपम सुधि अधिक अधिक दुःख सहन कर्युं. पछी बीजा पण सिंह, वाघ आदिकनां बहु जवो करीने पाछो ते नरकमां गयो; माटे हे राजन्! मुनिनी हिंसा महा जयंकर छे; तेम मुनिनी निंदा पण महा दुस्तर छे, अने मुनिजनी उपेक्षा पण महा पापोनी करनारी छे. हवे अंत समये तेणे मुनिहिंसानां पापनी जे गर्हणा करी हती, तेथी ते नरकमांथी उधरीने आ तारो नील नामनो पुत्र थयो छे; अने हजु पण तेनुं केटलुंक पाप बा-

की रह्युं छे; हवे आ तारो महानील पुत्र पूर्वे कंका नामनी नगरीना भीम राजानो स्वल्प धनवालो शूर नामनो क्षत्रीय सेवक हतो. एक दहाडो राजानो प्रधान बदलाइ जवाथी पोतानो गरास पोताने नहीं मलवाथी, दरिद्रपणाथी दुःखित थइ, पोताने घेर गयो. त्यां ते रसोइने सारी नरती करवा लाग्यो, त्यारे तेनी स्त्रीए तेने कह्युं के, हे प्राणेश! सारी वस्तुओ मारी पासे नथी, माटे हुं शुं करुं? स्त्रीनां ते वचनथी क्रोधायमान थइने तेणे तेणीने पछर मार्यो, त्यारे ते मुर्छा खाइ मृत्यु पामी. त्यारे तेनी पुत्रीए त्यां कोलाहल करवाथी, त्यां भमतो कोटवाल, ते सांभली आवी पहोंच्यो, पछी कोटवाल तेने बांधीने राजापासे लेइ गयो; त्यारे राजाए तेने शूलीए चडाववानो हुकम कर्यो. त्यां कोइ मुनि पासेथी पंच नमस्कार सांभलीने, तथा तेमां आदरयुक्त थइने, ते शूलिनी वेदना सहन करी, मृत्यु पामी ते नरके गयो. त्यां स्त्रीवधथी उत्पन्न थयेलुं कर्म भोगवीने, हे राजन्! नमस्कारनां स्मरणथी ते आ तारा पुत्रपणे उपज्यो छे. माटे शरणविनानी तथा हमेशां बीकण एवी स्त्रीने मारवी नहीं, केम के कुपित थएली स्त्री बन्ने लोकनां घातमाटे थाय छे. हवे आ तारो त्रीजो पुत्र पूर्वे कोइ महाकामी, तथा वेश्या आदिकनुं गमन करनारो शेठनो पुत्र हतो, ते हमेशां देवगुरुनी निंदा करनारो तथा धर्मनो नाश करनारो हतो, तेम द्रव्य अने यौवननां मदथी मातापितानी पण ते आज्ञा मानतो नहीं. देव, धर्म अने तत्वोनां कारणरूप सुगुरुज छे; माटे जेणे सुगुरुनी निंदा करेली छे, तेणे ते त्रणेनो नाश कर्यो छे. वली हे राजन्! जे देव, धर्म अने गुरुनी निंदा करे छे, ते चांडालोमां भव करी, खरेखर नरकमां जाय छे. देवनिंदा करनारने बोधिबिज, मोक्ष, स्वर्ग, उत्तमकुल, के शुद्ध द्रव्यनी प्राप्ति थती नथी. जिननी निंदाथी, मुंगापणुं, गुंगलापणुं, पित्त, कोढ आदिक रोगो थाय छे, तेम गुरुनिंदा करवाथी अपयश, अकालमृत्यु, दुःख, दुर्गंधिपणुं, तथा पाठां आदिक रोगो पण थाय छे. धर्मनी निंदा करनार माणस वारंवार नरक अने तिर्यंच योनिमां जाय छे, तथा तेने मनुष्य भव मली शकतो नथी. वली ते त्रणेनी निंदा करनार घोर पापी छे, अने तेना संगथी बीजाओ पण मलीन थाय छे. पछी ते पुत्रने एवो जाणीने

शेठे विचार्युं के, आ दुराचारी आपणा कुलने कलंक लगाडनारो छे, माटे तेने कचरानी पेठे घरमांथी कहाडी मेलवो; एम विचारि ते शेठे तेने क्रोधथी नगरमांथी कहाडी मेल्यो, त्यारे ते (टोलांथी) भ्रष्ट थएला हरिणनी पेठे वनमां भमवा लाग्यो. पछी ते लूताप्रमुख मुखनां रोगनी पीडाथी मृत्यु पामीने छठी नरके जइ आ तारो काल नामनो पुत्र थयो छे. वली आ तारो चोथो महाकाल नामनो पुत्र पूर्वभवे ब्राह्मणनो पुत्र हतो, तथा ते भिक्षा मागी आजीविका चलावनारो तथा दुःखीउ हतो. दुःखें भरी शकाय एवा उदरने भरवामाटे ते देशोदेशमां भमतो हतो; छेवटे ते कोइक जिननां पूजाराने घेर चाकरी रह्यो. एक दहाडो ते देवनां आभूषणो तथा मुनिनां उपकरणो चोरीने, एक वेश्याने दइ आव्यो, केम के ते, ते व्यसनमां अनुरक्त थयो हतो. देवद्रव्य ग्रहण करवाथी सात पेढीउनो दाह थाय छे; वली देवद्रव्यनां विनाशथी प्राणी सात वार अत्यंत दुःखदायी नरकमां जाय छे; तेम गुरुद्रव्य विषसहित भोजन सरखुं छे. देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्यथी जीवितनी जे आशा राखवी, ते धत्तुराथी तथा विषथी मिश्रित अन्ननां भोजन सरखुं छे. पछी छेवटे कुष्टना रोगथी पीडित थइने केटलेक दिवसे मृत्यु पामीने, नरकमां जइ आवी, ते चांडालकुलमां उत्पन्न थयो. अने त्यांथी मरीने आ तारो पुत्र थयो छे. एवी रीते तेउ मुनिहिंसाथी, स्त्रीहिंसाथी, देवगुरुनी निंदाथी, तथा देवद्रव्यनुं अने गुरुद्रव्यनुं भक्षण करवाथी, तारा कुलमां उत्पन्न थया छे; वली ते भिल्ल अंतकाले मुनिस्मरणथी, क्षत्री परमेष्टीनां स्मरणथी, देवगुरुनो निंदक सत्कुलनी उत्पत्तिथी, तथा चोर जिनदर्शनथी आ मनुष्यपणे उपन्या छे. वली तेउनां बाकी रहेलां पापथी तुं राज्यभ्रष्ट थयो छे, अने तेथी तुं हवे आपघातनी इछा कर नहीं. हवे तुं सुराष्ट्र देशमां जइ, शत्रुंजयगिरिपासे रहेली शत्रुंजया नदीने सेव? केम के, ते सर्व पापोने नाश करनारी छे. वली ते नदीनां कांठापर रहेलां वृक्षोनां फलोने खाजे, अने तारा पुत्रोने पण खवरावजे, तथा ते शत्रुंजी नदीनां जलथी श्री जिनेश्वरप्रभुनुं स्नात्र करजे. वली तेज नदीनां कांठापर प्राणीउनां सर्व पापोने हरनारुं, तथा पूर्वे सूर्ये बनावेलुं जिनमंदिर छे. वली ते पापोनी शांतिमाटे विधिपूर्वक त्रिकरणशुद्धिथी जिनपूजन करवुं, तथा

जीवोनी रक्षा करवी. वली त्यां रहीने शुद्ध मनथी, टाढतडका आदिकने सहन करीने छठ, अठम आदिक तप करजे. एम करतां थकां त्रण, चार, पांच अथवा छ मासमां ते तारा पुत्रो निरोगी थइने सुखी थशे. एवी रीते कुकर्मोथी मुकाइने देवसरखा शरीरवाला थइने तेउ पोतानुं राज्य भोगवशे, तथा छेवटे स्वर्गनुं राज्य पण भोगवशे. एवी रीतनां धरणेंद्रनां वचनो सांभलीने, ते राजाए स्त्री तथा पुत्रोसहित तेने नमस्कार कर्यो. पछी धरणेंद्रे तेने कह्युं के, हे राजन्! छ मास पछी ते नदीने किनारे तुं मारुं स्मरण करजे, जेथी हुं तारा शत्रुउने जीती तने तारुं राज्य अपावी देइश. एम कहीने धरणेंद्र गयो. पछी राजा पण त्यां प्रभुने नमीने, मनमां ते धरणेंद्रनुं वचन स्मरण करतो थको चालवा लाग्यो. पछी घणा देशोने उलंगीने ते सौराष्ट्र देशमां पहोंच्यो, तथा आश्चर्यसहित समताथी ते शत्रुंजयगिरिने जोवा लाग्यो. पछी त्यां ते शत्रुंजयी नदीने कांठे तृणनी कुटीर (झुंपडी) करीने कुटुंबसहित समताथी रह्यो. हवे त्यां तेउ सघला ते नदीना किनारापरनां वृक्षोनां फलो खाता थका, तथा हमेशां त्रिकाल जिनस्नात्र करता थका, तथा प्रभुने नमता थका रहेवा लाग्या. त्यां एक मासमांज तेणे पोतानां पुत्रोने सुवर्णसरखी कांतिवाला जोया, तो पण धरणेंद्रनी आज्ञाथी ते त्यां छ माससुधी रह्यो. पछी छ मासने अंते धरणेंद्रनुं स्मरण करवाथी, तेणे विमानमां बेसाडी तेनां राज्यपर तेने बेसाड्यो. पछी ते शांतनु राजा त्यां पुत्रोसहित जिनमंदिरमां रहेली प्रभुनी पूजा करवा लाग्यो. एवी रीते चोसठ लाख वर्षोसुधि सुखमां रहीने, तेणे स्त्री तथा पुत्रोसहित संयम लीधुं. पछी शत्रुंजयपर अनशन करीने, तेउ सघला सर्व कर्मबंधोनो क्षय थवाथी केवलज्ञान पामी मोक्षे गया. एवी रीते अनेक प्रभावोवाली आ शत्रुंजयी नदी तेने सेववाथी राज्यभ्रष्टने राज्य, सुखभ्रष्टने सुख, विद्याभ्रष्टने विद्या, तथा कांति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी अने स्वर्ग सुख पण क्रीडामात्रमांज आपे छे. वली हे चक्री! जेम सघला देवोमां श्री युगादीश प्रभु मुख्य छे, तथा सघला तीर्थोमां जेम आ शत्रुंजय तीर्थ मुख्य छे, तेम सर्व तीर्थभूत नदीउमां आ शत्रुंजयी नदी मुख्य छे, एम श्री जिनेश्वर प्रभुए कहेलुं छे. तेम आ उत्तर दिशामां मनोहर अने पवित्र जलोथी

ज्ञरेली, तथा संपूर्ण वैज्ञववाली आ "ऐंद्री" नदी देखाय छे. ते नदी इशानेंद्रनी स्पर्धाथी सौधर्मेंद्र जिनज्ञक्तिथी पद्मद्रहमांथी लावेला छे. जिनज्ञक्तिनी स्पर्धाथी आ नदी आणेली छे, माटे ते पण शत्रुंजयी सरखीज प्रज्ञाववाली, तथा डुष्ट दोषोने हरनारी छे. आ नदीनीज माटीना वनावेला कुंज्ञमां आनुंज पाणी ज्ञरीने जे माणस जिननां अंगपर नामे छे, तेने मुक्ति वश थाय छे. वली आ पूर्वदिशाने शणगार करनारी नदीने, जिनज्ञक्तिथी धरणेंद्र पातालनां मूलमांथी लाव्यो छे, ते नदी उत्तरदिशामांथी निकलीने सूर्योद्यानमां थइ दक्षिणमां जाय छे, ते नदीने जिनस्नात्रमाटे अहीं नागेंद्र लावेल छे, माटे ते सर्व पापोने हरनारी "नागेंद्री" नां नामथी प्रसिद्ध थएली छे. वली श्रीप्रथम प्रज्ञुनां स्नात्रमाटे सर्व सुरासुरोए मलीने, द्रहोथी शोज्ञिती आ यमलह्दा नदी घनावेली छे. जे माणसे आ नदीनां पाणीनां समूहोथी श्री जिनेश्वर प्रज्ञुनुं स्नात्र करेलुं छे, तेणे आ मनुष्यज्ञवरूपी वृक्षनां सर्व फलो मेलव्यां छे. हे चक्रींद्र! एवी रीते जिनस्नात्रमाटे बनावेली चौद मोटी नदीओ आ शत्रुंजयपासे शोज्ञे छे. ए सघली नदीओमांथी, तथा कुंडो, समुद्र अने द्रहोमांथी जल लेइने प्रज्ञुनुं स्नात्र करवुं, एवो संघपति श्रावकोनो हमेशनो आचार छे, तथा ते चक्रीनी अने इंद्रनी लक्ष्मी आपीने मोक्ष आपे छे. पवित्र जलवाली, कल्याण करनारी, नाना प्रकारना प्रज्ञावोथी ज्ञरेली, तथा सर्व तीर्थोनां अंशथी ज्ञूषित थयेली आ सघली नदीओने जे प्राणी स्पर्श करे छे, तेने उत्तम कीर्ति, डुःखनो नाश, तथा शुज्ञनो उदय थाय छे, तेम स्वर्गादिकनी संपदा तो तेनी हथेलीमांज आवे छे; तेम सघला निधानो तेनी समीपे आवे छे, तेना आंगणामां कामधेनुं आवे छे, त्रणे लोको तेने वश थाय छे, तथा ते प्राणी पवित्र थाय छे; वली तेने ज्ञूत, प्रेत के पिशाचादिको पराज्ञव करी शकता नथी, तेम कुष्टादिक डुष्ट दोषो पण तेने कोई पण वखते थता नथी; वली स्नान अने (जिननां) स्नात्रादिकथी जे प्राणी तेओनुं आराधन करे छे, तेने देवो तो चाकररूप थाय छे, तथा तेने घेर सर्व संपदाओ आवे छे. वली हे ज्ञरतेश्वर! आ जगोए चंद्र, सूर्य तथा व्यंतरेंद्रनां करेलां बीजां पण घणां जलाशयो छे. ते वचनो सांज्ञलीने हर्षित थएल

चक्रीए इंद्र सहित ते नदीउंमां स्नान कर्युं. वली ते नदीउंनां कांठापरनां पुष्पो, तथा कमलो लेईने, अने तेना पाणीथी कलशो भरीने तेणे प्रभुनुं पूजन कर्युं. पछी त्यां तेणे पूर्व तथा दक्षिण दिशामां इंद्रनी नगरी सरखां नगरो वसाव्यां; तथा वार्धकीने कहीने तेणे त्यां अनेक तलावो, तथा बगीचाउंथी शोभितुं श्री युगादीश प्रभुनुं मोटुं मंदिर बंधाव्युं. ज्यां चक्रीनां पुत्र ब्रह्मर्षि मुनिउंनां समूहोनी साथे सिद्ध थया, तेथी ते "ब्रह्मगिरि" नामनुं महान तीर्थ प्रसिद्ध थयुं. वली त्यां पण चक्रीए पापोनुं नाश करनारूं "सुरविश्राम" नामनुं श्री युगादीश प्रभुनुं मंदिर बंधाव्युं. पछी चक्री दुंदुभि तथा वाजांउंनां मंगलध्वनि पूर्वक गुरूउंने अगाडी करीने, इंद्र तथा राजाउं सहित, तथा सघलां पायदल अने संघनां लोको सहित जुदां जुदां शिखरोनी भूमिपर चैत्यप्रवाडी माटे चाल्या. आ शिखरपर कपर्दीयक्ष अधिष्ठाता थनार छे, माटे तेनां नामनां शिखरपर इंद्रे ते यक्षनी मूर्ति सहित प्रभुनुं मंदिर बनाव्युं. वली ते शिखरपर इंद्रनां वचनथी माहासुदि पुनेमने दिवसे चक्रीए श्री युगादीश प्रभुनी माता मरूदेवानी स्थापना करी; तेथी ते मरूदेवा नामनां शिखरपर लोको, नाम लीधाथी पण पापोने हरनारां मरूदेवा माताने पूजवा लाग्या. ते माहासुदी पुनेमने दिवसे जे माणसो प्रथम सिद्ध एवा श्री मरूदेवा मातानी पूजा करे छे, तेउं स्वर्गनुं राज्य पामी मोक्ष जाय छे. वली स्त्रीउं पण तेमनी पूजा करीने चक्री, तथा इंद्रनी पटराणीउं थई, पुत्रवाली तथा सौभाग्यवंती थईने अनुक्रमे मोक्षे जाय छे. पछी त्यांथी बे योजन छेटे एक योजननां प्रमाणवाला, अने तीर्यंचोने पण देवसुख आपनारां स्वर्ग नामनां शिखरने चक्रीए नमस्कार कर्यो. तथा त्यां पण तेमणे अधिष्टायक सहित, महान भक्तिथी श्री युगादीश प्रभुनुं मंदिर बंधाव्युं. आ उत्कृष्ट शिखरपर ज्ञाननां समुद्र सरखा बाहुबलि मुनिराजे मुनिरूप थएला पोतानां एक हजारने आठ पुत्रोने कह्युं के, आ तीर्थनां माहात्म्यथी तमोने पुंडरिकजीनी पेठे केवलज्ञान थई, कर्मोनां क्षयथी मोक्ष थाउं? माटे हे सुभ्रनो! अहीं रही तमो निर्यामणा करो? ते सांभली तेउं तेमनी साथे त्यांज समाधिथी रह्या; पछी तेउं सघला अनुक्रमे केवलज्ञान पामी मोक्षे गया,

तेथी ते बाहुबली नामना शिखरपर पण भरते प्रासाद कराव्यो. पछी चक्रीए इंद्रने प्रीतिथी पूछयुंके, हे इंद्र! आ सघलो पर्वत तीर्थमय छे, माटे आ मुनिउनो अग्निसंस्कार क्यां करवो.? त्यारे तेणे पण पोतानां ज्ञानथी जाणीने, जाणे सर्व लोकोनी प्रवृत्ति कराववा माटेज होय नहीं, तेम कह्युं के, हे चक्री! मरूदेवाथी मांडीने पुंडरिकजी सुधि सिद्ध थएलाउनां शरीरो में क्षीरसमुद्रमां पधराव्यां छे; केमके ते अमारो आचार छे. हवे आ तीर्थमां शत्रुंजयनुं शिखर मुख्य छे, केमके, ते सर्व तीर्थमय तथा युगादीश प्रभुनां चरणोथी सेवित थएलुं छे, तेम सर्व देवोनां समूहोथी ते शोभितुं थएलुं छे. माटे ते शिखरपर दाहादिक दुष्कार्य करवुं लायक नथी, केमके, तेथी तीर्थनो लोप तथा जिनाज्ञानुं खंडन थाय. माटे आ मुख्य तीर्थनी सर्व बाजुनी बे योजन भूमि छोडीने, स्वर्ग नामनां शिखरपर अग्निसंस्कार करवो. तथा त्यां तेउ सर्वनी पत्थरमय मूर्तिउ कराववी, केमके तेम करवाथी हवे पछी बीजाउ पण तेम करशे. एवी रीतनुं इंद्रनुं युक्तिवालुं वचन सांभलीने चक्रीए तेवी रीतनो तेमनो पुण्यनां समूह सरखो अग्निसंस्कार कर्यो; तथा तेज शिखरपर तेमणे पूर्व दिशारूपी स्त्रीनां मुखपर रत्ननां तिलक सरखुं प्रभुनुं मंदिर बनाव्युं. वली त्यां वार्धकी मारफते सोमयशाए पण पोतानां पितानुं, तथा बंधुउनां हर्षथी प्रासादो कराव्यां. पछी चक्रीए तालध्वजनां (तलाजानां) शिखरपर, हाथमां खड्ग, ढाल, शूल, तथा सर्पवाला तालध्वज देवनी स्थापना करी. पछी कदंब गिरिपर जईने चक्रीए श्रीनाभ गणधरजीने पूछयुं के, हे भगवन्! आ शिखरनो शुं प्रभाव छे.? त्यारे गणधर महाराज पण कहेवा लाग्या के, हे चक्री! तेनी कथा तमो सांभलो? गइ उत्सर्पिणीमां चोवीसमा संप्रति नामना तीर्थंकरना कदंब नामनां गणधर क्रोड मुनिउ सहित अहीं मोक्ष गएला छे, माटे ते "कदंबगिरि" कहेवाय छे. अहीं महा प्रभाविक ओषधिउ, रसकुंपिका, रत्ननी खाणो, तथा कल्पवृक्षो छे. दीवालीने दिवसे, शुभवारे, उत्तरायन संक्रांत होते छते. अहीं मंडल करवाथी देवो प्रत्यक्ष थाय छे. वली एवी कोइ पण ओषधिउ, के रसकुंपिकाउ, के सिद्धिउ आ पृथ्वीमां नथी, के जे आ पर्वतपर न होय. जे सौराष्ट्र देशमां सिद्धनां स्थानक

सरखो आ कदंबगिरि छे, त्यांना लोको ते दारिद्र्यथी पीडायज केम? वली जेनापर आ पर्वत तुष्टमान थएल छे, तेने कामधेनुं, कल्पवृक्षो, तथा चिंतामणि आदिक सर्वे तुष्टमान थएलां जाणवां. अहीं रात्रिए औषधिओ पोतानी कांतिरूपी दीपकोनां समूहोथी, निर्भाग्यनां मंदिरथी जेम दारिद्र्यनो तेम अंधकारनो नाश करे छे. वली अहीं रूचकाद्रिनी पेठेज हमेशां कल्पवृक्षो बहु वांछित अर्थोने आपे छे. वली वर्षा ऋतुमां वादलांओथी छवाएला सूर्यकिरणोनी पेठे हीन कालनां प्रसंगथी तेओ माणसोने गोचर थशे नहीं. वली मुख्य शिखरनी पेठे आ शिखर पण पापोने नाश करनारुं, तथा भव्य जीवोनो उपकार करनारुं होवाथी अत्यंत प्रख्याति पामशे. एवी रीतनो तेनो महिमा सांभलीने चक्रीए, ते अनेक वृक्षोवालां धर्मोद्यानमां, इंद्रनी सम्मति पूर्वक वार्धकी मारफते चोवीसमा भावि तीर्थंकर श्री वर्धमानस्वामीनुं मंदिर बनाव्युं. हवे ते कदंब गिरिथी पश्चिम दिशा तरफ शत्रुंजयी नदीने कांठे चक्रीए पोतानी सेनानो पडाव नांख्यो. त्यां केटलाक हाथी, घोडा, बलद विगेरे अविवेकी प्राणीओ पण रोगनी पीडावीनां तीर्थनां योगथी स्वर्गमां गया. पछी तेओ पण स्वर्गमांथी त्यां आवीने चक्रीने नमीने पोतानी स्वर्गप्राप्ति तुरत कहेवा लाग्या. तथा तेओए त्यां पोतानी मूर्तिओवाला प्रासादो बंधाव्या, अने त्यारथी ते "हस्तिसेना" (हस्तिगिरि) नामनो महान पर्वत प्रख्यात थयो. एवी रीते चक्रीए शत्रुंजय गिरिना सर्व शिखरोपर हर्षनां आवेशथी जिनालयो बंधाव्यां. वली मुख्य शिखरनी प्रदक्षिणा देइने चक्रीए पोताने स्थानके पाछा फरीने श्री युगादीश प्रभुने नमस्कार कर्यो. पछी चक्रीए मुख्य शिखरनी नीचे सुवर्ण गुफामां थएला, थनारा तथा विचरता तीर्थंकरोनी रत्नमय मूर्तिओ स्थापी.

हवे गिरनार प्रते जवानी तैयारी करता चक्रीने, नमि अने विनमि मुनिओए मधुर वचनोथी कह्युं के, हे नृपेश! अमो बे क्रोड मुनिओ साथे अहींज रहीशुं. केम के, अहींज अमोने मोक्ष थवानो छे. ते सांभलीने चक्रीये तेओने, तथा बीजा मुनिओने नमस्कार कर्यो. त्यारे तेओ तरफथी तेने धर्मलाभनी आशिष मली. एवी रीते ते नमि विनमि, ते मुनिओनी साथे फागणसुदी दशमीने दिवसे पुंडरिकजीनी पेठेज मोक्षे गया. माटे फागण-

सुदी दशमीने दिवसे जेओ विमलाचलनो स्पर्श करे छे, तेओ सघला पापोनो नाश करीने मोक्षने भजनारा थाय छे. पछी त्यां चक्रीए तथा देवोए तेमनो निर्वाणमहोत्सव कर्यो, तथा तेमनी त्यां रत्नमय मूर्तिओ स्थापीने बे मास पछी तेओ चालवा लाग्या. त्यां पश्चिम दिशापरनां चोथा शिखरपर राजाए तीर्थनी रक्षामाटे नंदी नामनां महा बलवान देवने स्थाप्यो; अने तेथी ते पर्वत पण नंदीना नामथीज प्रसिद्ध थयो, केम के ज्यां जे स्वामी होय, त्यां तेनुं नाम थाय छे. आ शिखरपर नमि राजानी वर्चादिक चोसठ व्रतधारी पुत्रीओ चैत्र वदी चौदशने दिवसे निशिथ समये एकी वखते स्वर्गे गइओ, तेथी ते "वर्च" नामनो पर्वत प्रसिद्ध थयो. त्यां रहेली तेओ श्री युगादीश प्रभुनां चरणकमलो सेवनाराओनां वांछितो पूरे छे, तथा विघ्नोने हरे छे. पछी सघला यात्रिको वारुणी दिशामां चालता थका, विस्तार पामेली शाखाओनां अग्र भागोथी रोकाएलो छे, सूर्यनां किरणोनो समूह ज्यां, एवा चंद्रोद्यानमां आव्या. त्यां लोकोए वृक्षोनी छायामां बेठेली किन्नरीओथी गवाता अरिहंत प्रभुनां गुणोनां झंकार शब्दो सांभल्या. वली त्यां वृक्षोनी छायाथी श्रमनो नाश करीने, लोको मनोहर स्वादिष्ट फलो खाता थका तथा निर्मल पाणी पीता थका रह्या. वली त्यां ब्राह्मी नदीनां द्रहोनां कल्लोलोथी लालीत थएला किनारापर सेवना लोकोने मनमां आनंद थयो. हवे त्यां सोमयशा कुमार पोताना सरखी उमरवाला कुमारोनी साथे ते वननी शोभाने जोवा गयो. "आ मनोहर छे. आ मनोहर छे" एम जोतो थको ते ब्राह्मी नदीना किनाराने जोवा लाग्यो. एम जोतां जोतां ते उद्यानमां गयो, त्यां तेणे जटाधारी, तथा अंगे भभुती चोलेला केटलाक जितेंद्रि तपस्वीओने जोया. मूर्तिथी शांत हृदयवाला तथा शरीरनां तेजथी अद्भुत वैभववाला ते योगीओने जोइने सोमयशाए तेमनो आचार पूछ्यो. त्यारे तेओ कहेवा लाग्या के, अमो वैताढ्यपर रहेनारा विद्याधरो छीए, तथा अज्ञानपणाथी करेली मुनिहत्यादिकनां पापोथी भीरु थएला छीए; अमोए वैराग्यथी तापसी दीक्षा लीधी हती; पण एक दहाडो कर्मयोगे अमोए श्री युगादीश प्रभुने वांद्या; अने तेमने पुछ्युं के, हे भगवन्! अमारो मोक्ष क्यारे थशे? त्यारे तेमणे कह्युं के, श्री चंद्रप्रभ तीर्थंकरनां तीर्थमां श-

त्रुंजय नजदीक तमारो मोक्ष थशे. ते सांभली अमो श्री चंद्रप्रभ प्रभु-
नी मूर्ति करावीने, आ मोक्ष स्थानकमां आवी हमेशां तेनी पूजा करीए
छीए. वली हे राजन्! अहीं ते आठमा तीर्थंकरनुं समवसरण थवानुं
छे, तेथी विशेषें करीने अमो अहीं रह्या छीए. ते सांभलीने सोमयशाए
हर्षित थइ, चक्री पासे आवी, ते वृतांत कह्यो, तेथी ते पण आनंदित
थया. पछी तेमणे त्यां चंद्रप्रभ प्रभुनुं समवसरण थनारुं जाणीने, वा-
र्धकी मारफते जिनप्रासाद सहित एक मोटुं नगर वसाव्युं. एवी रीते
त्यां तीर्थनी प्रतिष्ठा करीने, चक्री विशेष पुण्यनी इछाथी संघसहित रे-
वताचलप्रते चाल्या. पछी तेमणे सुवर्ण, रत्न, तथा माणिक्यनी कां-
तिथी आकाशने देदीप्यमान करता, तथा पृथ्वीरूपी स्त्रीना, इंद्रनील-
मणि साथे परोवेलां स्फटिक रत्नोवाला, अने मालतीनां पुष्पोवाला वे-
णिदंड (चोटला) सरखा, तथा स्फुरायमान थती वीजलीउंनी शिखा-
वाला श्याम मेघनी पेठे, वच्चे वच्चे सुवर्णनी रेखावाला, अने नीलमनी
शिलामय, एवा उंचा रेवताचलने जोयो. त्यां क्रिडा करता किन्नरोनां
बालकोए उंचा उछालेला रत्ननां कंडुको (दडाउं) दिवसे पण आका-
शमां ताराउंनी भ्रांति उपजावता हता. वली अहीं रात्रिए चंद्रकांत म-
णिउंनां शिखरोमांथी झरतां अमृत सरखां झरणो यत्नविनाज वननां
वृक्षोनुं पोषण करतां हतां. वली अहीं पचरंगी मणिउंनां किरणोवालां
विचित्र वृक्षो पवनथी प्रेरायां थकां, त्यां आवनाराउंने मयूरनां नृत्यनो
भ्रम उपजावतां हतां. वली कोइ जगोए तो ते पर्वत चारे बाजुउंथी नी-
लमनी शिलावालो, तथा मध्यमध्यमां स्फटिकनी शिलाउंवालो थयो
थको, स्फुरायमान ताराउं सहित आकाशवालो शोभतो हतो. वली
चारे बाजुउंथी वृक्षोथी वींटाएलां सुर्णनां शिखरवालो ते पर्वत पृथ्वी-
रूपी स्त्रीना रक्षामणि (राखडी) नी पेठे शोभतो हतो. वली त्यां र-
सकुंपिकाउं तो एमज बोल्या करे छे के, धर्म कोने साक्षिरूप छे? तथा
अमो कोना दारिद्रने लक्ष्मीथी हणीयें? वली ते पर्वत फल सहित के-
लनां वृक्षोथी, तथा आंबाउंथी तोरणोवालो, अने विद्याधरनी स्त्रीउंनां
गायनोथी जाणे महोत्सववालो होय नहीं, तेम लागे छे. वली ते पर्वत
दिवसे बलता सूर्यकांत मणिउंवालो, तथा रात्रिए औषधिउंनां तेज-

वालो, अने केलरूपी ध्वजाउंवालो जाणे अनलाधिपति (अग्निदेव) होय नहीं, तेवो लागे छे. वली पोतानां शिखरोनां अग्र नागोपर रहेलां मणिउंनां समूहोथी दिवसे पण ते आकाशने सेंकडो चंद्रोवालुं बनावे छे. वली शेषनागपर तथा चंद्रपर जेम चंदननुं लेपन, तेम अहीं स्फटिकनी बांधेली नेहेरोमां झरणाउंनुं जल शोने छे. वली ते नीचाण नूमिपर क्रीडा करता हाथीउंनां गर्जारवोथी, तथा हमेशां झरता झरणाउंनां शब्दोथी सर्व जगोए वाचाल थएलो देखाय छे. वली कस्तूरीआं मृगोनी कस्तूरीथी लेपन करातो, तथा चमरी गायोनां चामरोथी वींझातो ते पर्वत गिरिराज सरखो देखाय छे. वली अहीं अंदर पवननां नरावाथी वांसो वागते छते, नदीनां झरणोनां शब्दो तथा देवांगनानां गायनो संनलाते छते, मयूरो तेमां रक्त थइ नाचे छे. वली अहीं श्वास रोकीने स्थिर वृत्तिवाला मुनिउं गुफामां रही आत्मसंबंधि तेजने ध्यावे छे. वली हमेशां देवोथी, यक्षोथी, अप्सराउंनां समूहोथी, विद्याधरोथी तथा गांधर्वोथी आ पर्वत स्वार्थसिद्धने माटे हमेशां सेवाय छे. वली अहीं सूर्य तथा चंद्र पण क्षणवार पोतानां वाहनो थोनावीने तेनी स्तुति करता थका आनंद पामे छे. वली आ पर्वतपर रहेलां, लवंग, चारोली, नागरवल्ली, मालती, तमाल, कदंब, जांबु, आंबा, लींबडा, चंपक, चिंबिक, नालीएरी, ताडी, तिलक, लोदर, वड, चंपक, बकुल, अशोक, अश्वत्थ, पलाश, आंबली, पीपला, माधवी, केल, चंदन, कल्पवृक्ष, कणेर, बीजोरां, देवदार, गुलाब, अंकुश, जासुद, तथा कुरवक आदिक वृक्षो, छाया, फल, पत्र, तथा पुष्पोथी लोकोनां समूहोने आनंद आपे छे. एवी रीतना, रोहणाचल, वैताढ्य, तथा मेरुनी संपदाने हरनारा ते रेवताचलने जोइने चक्रीए उपवास सहित त्यां आवास कर्यो, पछी त्यां चक्रीए संघसहित हर्ष करीनें, गुरुनी आज्ञा प्रमाणे शत्रुंजयनी पेठे ते पर्वतनी पण पुजा करी. त्यां शक्तिसिंहे मनोहर रसथी अमृतने पण तुच्छकारनारी रसवती संघसहित चक्रीने जमाडी. ते रेवताचलने मोक्षनी पेठे दुर्गम जाणीने तेपर सुखें चडवामाटे केवली सिद्धांतथी जेम, तेम चक्रीए हजार यक्षो मारफते दान, शील, तप अने नावसरखी चार पावडीउं बनावी. वली त्यां ते ते पावडीउंनां मुखोपर चक्रीए यात्रालुउंनां सुखमाटे, वावो,

बगीचा, नदी, चैत्यो, विसामा विगेरे बनाव्या. ते पावडीउं मारफते, पोतानां मनोरथपर जेम तेम संघना लोको ते रेवताचलपर चड्या. त्यां हवे थनारा नेमिनाथ प्रभुनां त्रण कल्याणकोने जाणीने चक्रीए शिल्पी (वार्धकी) मारफते एक उंचुं जिनमंदिर बंधाव्युं. ते जिनमंदिरमां रेवताचलनां अमूल्य पचरंगी मणि अने रत्नोना किरणोथी यत्न विनां चित्रामण थइ रह्युं. ते सुरसुंदर नामनो प्रासाद दरेक दिशाउं प्रते अग्यार अग्यार मंडपोवालो, चार द्वारोवालो, तथा अत्यंत उंचो शोभतो हतो. वली ते जिनप्रासाद जालीउं, भरुखाउं, तथा तोरणोथी, अने सर्व ऋतुउंनां बगीचाउंथी मंडित थयो थको देदीप्यमान लागतो हतो. स्फटिकनां बनावेला ते प्रासादमां लीलमनी बनावेली श्रीनेमनाथ प्रभुनी मूर्ति नेत्रनां पांडुर भागमां रहेली कनीकी (कीकी) सरखी शोभती हती. जगतनां खेदने नाश करनारो ते जिनप्रासाद मुख्य शिखरनी नीचे पश्चिम दिशामां एक योजन दूर हतो. वली नाश करेल छे अज्ञानना समूह जेणे, एवो "स्वस्तिकावर्तिक" नामनो श्री आदिदेव प्रभुनो प्रासाद पण त्यांज चक्रीए कराव्यो. त्यां पण विमलाचलनी पेठेज सुवर्ण, रूपुं, माणिक्य, रत्न तथा धातुउंनी बनावेली घणी मूर्तिउं शोभती हती. पछी त्यां पण चक्रीए अरिहंत प्रभुनी भक्तिनां समूहथी, गणधरोए कहेली विधिपूर्वक विविध प्रकारनी भेटो सहित प्रतिष्ठा करी. हवे ते समये हर्षथी प्रेराएलो इंद्र पण पोतानां ऐरावण हाथीपर चडीने, नेमनाथ प्रभुने वांदवा माटे त्यां आव्यो. त्यां ऐरावणे पोतानो बलवान पग मुकीने, पृथ्वीने दबावी, अने तेथी त्यां कुंड थयो, तेनुं पाणी अरिहंत प्रभुनी पूजामां उपयोगी थयुं, अने ते कुंड गजपगलांना (हाथी पगलांनां) नामथी प्रसिद्ध थयो. तेनी अंदर त्रणे जगतनी पवित्र नदीउंनां प्रवाहो पड्या, तथा तेनी फेलाती दीव्य सुगंधिथी भमराउ त्यां गुंजारव करवा लाग्या. तेना पाणीनी आगल अमृत तो फोकट थयुं, साकर तो कांकरारूप थइ, अगर तो हलको थयो, तथा कस्तुरीने तो कोइ संभालवा पण लाग्युं नहीं; वली तेनां पाणी आगल चंदन तो तेनां एक टुकडा सरखुं थयुं, तथा सरस्वती अने सिंधु नदी तो रसविनानी थइ; तेम तेना पाणी आ-

गल गंगा अने क्षीरसमुद्रनुं पाणी पण कंइ हिसाबमां रह्युं नहीं. वली बीजां तीर्थोने जोवाथी, सांजलवाथी, स्पर्श करवाथी, तथा सेववाथी जे फल थाय छे, ते फल फक्त आ कुंडनुं पाणी जोवाथीज थाय छे. वली देवो जेने अमृतकुंडो कहे छे, ते तो फोकट कहे छे, केम के, आ कुंडज अजरामरपणुं आपे छे, पण बीजा कुंडो आपता नथी. ते कुंड दीव्य तीर्थोनां जलोथी जरेलो छे, तथा दोषोए करीने रहित छे, तेनां पाणीनां स्पर्शथी आधि तथा व्याधि नाश पामे छे. वली अहीं नागेंद्रे नेमनाथ प्रजुनी जक्तिथी पोतानां वाहन सर्प मारफते जे कुंड बनाव्यो, ते "नागझर" नामथी पृथ्वीमां प्रसिद्ध थयो, अने तेनुं पाणी पण घणुंज पवित्र थयुं. वली मयूरनां पगनां आक्रमणथी जे झरणुं वहेवा मांड्युं, ते "मयूरनिर्झर" नां नामथी पृथ्वीमां प्रसिद्ध थयुं; अने ते चमरेंद्रे प्रजुनी जक्तिथी पोतानां वाहन मयूर मारफते कराव्युं हतुं. वली अहीं रहेला चंद्रकुंड, सूर्यकुंड विगेरेनो प्रजाव पण वचनथी न वर्णव्यो जाय तेवो छे, केम के, तेनां पाणीनां स्पर्शथी पापो अने कुष्टो पण नाश पामे छे. वली अहीं अंबाकुंड नामनो जे महाप्रजाविक कुंड छे, तेनां पाणीनी सेवाथी हत्यादीक जयंकर पापो पण नाश पामे छे. वली अहीं बीजा देवोए पण घणा कुंडो बनाव्या छे, तेउनां प्रजावनी स्थिति तो तेज जाणे छे.

हवे अहीं देवताउ "हुं पेहेलां प्रजुने पूजुं, हुं पेहेलां प्रजुने पूजुं" एवी रीते परस्पर स्पर्धा करता थका, पोतानी शक्तिथी लावेलां पुष्पोथी तेउ नेमनाथ प्रजुने पूजवा लाग्या. पछी जरत महाराजे पण ते गजेंद्रपद कुंडमां स्नान करीने, तथा शुद्ध वस्त्रो पहेरीने नेमनाथ प्रजुनी पूजा करी. पछी तेमणे पूर्वेनी पेठेज अहीं पण प्रजुनी आरति उतारीने, जमणी बाजुथी मंगलदीवो पण उतार्यो. पछी हृदयमांथी उजराइ जती हर्षनी संपदाने जाणे बहार कहाडता होय नहीं, तेम चक्री प्रजुनां चरणतरफ दृष्टि राखीने नीचे प्रमाणे स्तुति करवा लाग्या. हे श्री शिवादेवीनां पुत्र ! अनंत गुणोरूपी रत्नोनां महासागर सरखा, संसारनो पार पहोंचवामां आधारजूत, तथा अपार संसारथी तारनारा एवा तमो जयवंता वर्तो ? हे कृपालु श्री नेमिनाथ प्रजु ! अज्ञानमां मग्न, तथा जवथी उद्विग्न थएला, एवा मने आपनां स्वाजाविक तेजथी मारो उद्धार करो?

वली हे देव ! आपें पूर्वे जे रागादिक शत्रुउने जीत्या छे, तेज शत्रुउ आपनां विरोधथी मने दुःख आपे छे. आपे तो सर्व नावोमां सामान्यपणारूप उदासीनपणुं धारेलुं छे, अने तेथी जो मारातरफ आप उपेक्षा करशो, तो आपनुं उत्तम स्वामिपणुं शीरीते रही शकशे ? आ संसाररूपी समुद्रनी अंदर मोहरूपी आवर्तमां (घुमरीमां) पडेलो हुं, आपनां ध्यानरूपी वहाणनो क्यारे आश्रय करीश ? वली हे जगत्प्रन्नु ! आ मारुं मदोद्धत, तथा कदाग्रहमां लीन थएलुं चित्त दुःखाय नहीं, तेवी आप कंइक मारापर कृपा करो. वली हे स्वामी ! तृष्णाथी चपल थएलुं, तथा कामदेवनां तापथी विव्हल थएलुं मारुं चित्त आपनां ध्यानरूपी अमृतनां सेवनथी शांति पामे छे. वली हे प्रन्नु ! आपनां समतानां साररूप मार्गमां जे माणस क्षणवार पण गमन करे छे, तेउ कोइ पण वखते क्रोधरूपी खराब मार्गे चडता नथी. हे स्वामी ! पार्थिव्यादिक स्फुरायमान थती आपनी पिंडस्थ धारणाने उत्कृष्ट ज्ञानवंत योगीउ ध्यावे छे. ज्यारे प्रन्नु लोकोने उपदेश आपे छे, ते वखतनुं प्रन्नुनुं जे ध्यान धरवुं तेने पदस्थध्यान कहीए. तथा रागद्वेषरहित, योगयुक्त, निराश्रय, स्फुरायमान घातिकर्मो विनानां करुणामां तत्पर, केवलज्ञानवाला आत्माने जे तन्मयपणाथी ध्यावे, ते मुनि रूपस्थ ध्यानने जाणनारो छे. नाना श्रुतविचारथी, ऐक्यश्रुतविचारमां, तथा तेथी सूक्ष्मक्रियामां, अने तेथी संमुछिन्नक्रियामां, एवी रीते आत्मसंवेदनथी चार प्रकारनां शुक्ल ध्यानप्रते चडीने योगी चिन्मयपणाने जुए छे. वली हे प्रन्नु ! पेहेलेथीज नाना प्रकारनां ध्यानोथी में आपनुं आराधन करेलुं छे, पण अनुक्रमे आत्मासाथे आत्माने मेलववानी मारी हवे इछा छे. वली हे देव ! तत्वनां जाणनाराउ आपने परमार्थथी निराकार, निराधार, निराहार, तथा निरंजन कहे छे. वली हे प्रन्नु ! तमारुं परम ब्रह्ममय तेज, सर्वव्यापी छतां पण मारा मोहरूपी अंधकारनो नाश केम करतुं नथी ? वली हे स्वामी ! ज्यारे लोको आपनां चिदानंदमय चरणकमलोने वांदे छे, त्यारेज तेमनो नवरूपी ग्रीष्मऋतुनो ताप नाश पामे छे. निद्रामां शून्य चित्तपणुं, तथा जाग्रत अवस्थामां अत्यंत कल्पनाउ थाय छे, पण ते बन्नेथी अलगा एवा तमो कोइ दूर रहेला चंद्र छो. वली हे प्रन्नु ! आप ध्येयरूप होते छते, ध्या-

ता ध्यानमां लय थाय छे, अने तेथी बीजा लोको आपना ध्यानमां विमुख रहे छे. वली तत्वनां जाणनाराउं, तथा कल्पनारहित चित्तवालाउं ध्येयादिक त्रणे भेदोने बिलकुल पण जाणी शकता नथी. जेनुं मन उदासीन अने पदातीत नथी, तेने ध्येय, ध्यान, अने ध्यातानी बुद्धि थाय. वली हे प्रभु! कर्मथी रहित, निःसंग, स्वरुपताने प्राप्त थएला, निरंजन तथा सदा आनंदमय आपज छो, एम हुं मानुं छुं. वली हे नाथ! आपने जाणनाराउं शत्रु अने मित्रमां, मूर्ख अने विद्वानमां, तथा सुख अने दुःखमां पण समभाववाला होय छे. वली हे प्रभु! जेथी आपनुं जाणपणुं न थाय, तेवा तप, ज्ञान, विनय, तथा जपनुं पण शुं प्रयोजन छे? वली हे स्वामी! जेथी मारां पापकार्योनो नाश थाय, तथा विषयोनी वासनारुप मारा संकल्पो उंछा थाय, एवो कंइंक उपाय आप कहो? वली हे प्रभु! उत्कृष्ट आनंदरुपी द्रहमां बुडेला एवा मने, आपनी कृपाथी वेद्यवेदकना भेदनीज एक शून्यता थाउं? वली हे स्वामी! हुं आपनी पासेथी कंइं धननी याचना करतो नथी, फक्त आपनी कृपाथी मारा मनमां परमात्मसंबंधि तेज स्फुरायमान थाउं? एवी रीतनां कर्णने अमृतसरखा आ स्तोत्रने जे पुण्यशाली हमेशां त्रिकाल भणे छे, ते आपना स्वरूपने जाणनारो थाय छे. हे स्वामी! ज्यांसुधि आ दुनियामां सूर्यचंद्र तपी रह्या छे, त्यांसुधि आपनुं आ स्तवन समृद्धि पामो? एवी रीते चक्रीए स्तुति करीने, नेमिनाथ प्रभुने, पोतानां कर्मोनी साथे शरीरने पण नमावीने, वंदना करी. पछी गुरुभक्तिथी पवित्र अंगवाला, ते चक्रीए, स्वर्ग संपदाना निदानरुप दान मागण लोकोने आप्युं. पछी तेणे परिवार सहित भोजन कर्युं, तथा क्षणवार निद्रा करी; "आ निद्रा तो तमोरुप (अज्ञानरुप) छे," एम विचारि, तेमणे निद्रानो त्याग कर्यो; अने तुरतज तेमना चित्तमां विवेकरुपी दीपक प्रकट थयो. वली ते समये पोतानां नेत्रकमलोने जरा मुकुलित थयेलां जाणीने, तेमणे तेउंने शुद्ध पाणी छांटी प्रफुलित कर्यां. पछी अंतरमां स्फुरायमान थता रंगनी वर्णिका जाणे देखाडता होय नहीं तेम, तेमणे मुखशोभामाटे तांबुल भक्षण कर्युं; पछी दानशालामां जइ तेमणे दरिद्रीउंने दान आप्युं. पछी तेमणे रत्नोनां निबिड रंगोथी आकाशपातालने पण चित्रित करती, एवी

आश्चर्यकारी ते पर्वतनी शोभा जोइ; त्यारे चक्री तेनुं वर्णन करवा लाग्या के, आ रेवताचलनी आगल मेरु तो बिलकुल आल्हाद करनारो नथी, तेम विंध्याचल तो वंध्यरूप छे, तेम हिमाचल पण फोकटज छे, केम के, तेउ आ पर्वतनी शोभाने पामता नथी. वली आ गिरि लक्ष्मीनो खरेखर क्रीडापर्वत छे; केम के, ते महासिद्धिनुं स्थानक छे, तथा अहीं रत्नो, रसकुंपीकाउ अने कल्पवृक्षो छे. वली आ पर्वत समवसरणनी शोभाने सर्व जगोएथी धारण करे छे, केम के, तेनुं आ मुख्य शिखर मध्यमां रहेला चैत्यवृक्ष सरखुं शोभे छे. वली तेनी चारे बाजुए चार द्वाररूप झरणावाला आ पर्वतो गढनी श्रेणिउने धारण करे छे; वली अहीं हमेशां जातिवैरवालां प्राणीउ पण पोतानुं वैर तजीने परस्पर मित्रनी पेठे रहे छे. वली आ पर्वतने जोवाथी मारुं मन आनंद पामे छे, अने तेथी हुं एम धारुं छुं के, ते विशेषें करीने अज्ञानथी मुकाएलुं थयुं छे. एटलुं कहीने चक्री मौन रहेते थके, शक्तिसिंह मस्तक नमावतो थको, तथा पडछंदाथी गुफाउने पण गजावतो थको, कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! श्री जिनेश्वर प्रभुए शत्रुंजय पर्वतनुं आ पांचमुं रेवताचलनुं शिखर केवलज्ञान आपनारुं कह्युं छे. आ पर्वतनी उंचाइ उत्सर्पिणीमां चडती चडती हती, तथा आ अवसर्पिणीमां घटती घटती छे, पण प्रायें करीने ते पर्वत शाश्वतो छे. आ आरामां तेनां कैलास, उज्जयंत, रेवत, स्वर्णपर्वत, गिरनार, तथा नंदभद्र नाम थयां छे. वली दीव्य औषधिउथी भरेलो आ पर्वत कोने अधिक प्रीति नथी उपजावतो? अहीं अनंता तीर्थंकरो आव्या छे, अने आवशे; अहीं रसकुंपिकाउ, दिव्य रत्नो, कल्पवृक्षो, तथा चित्रावेलीउ छे; अने तेथी ते वन्ने भवोमां सुख आपनारो छे. अहीं झरणाउनां पाणीथी सिंचाएलां उद्याननां वृक्षो आ तीर्थनी शिखामणथीज जेम तेम सर्वे ऋतुउमां फले छे. वली अहीं श्रीद, सिद्धगिरि, विद्याधर, अने देवगिरि नामनां चारे पर्वतो चारे बाजुए रह्या थका शोभे छे. मोक्षरूपी सुखने देनारा आ पर्वतने, ते सघला पर्वतो उत्तम स्वामिने जेम तेम सेवी रह्या छे. वली अहींथी पवित्र द्रहोवाली, तथा प्रभाविक नदीउ जिन स्नात्र माटे वहे छे. इशान दिशामां श्रीद अने सिद्धगिरि पर्वतनी वच्चे क्रीडा करता छे देवोनां समूहो जेमां एवी उदयंती नामनी प्रख्यात नदी वहे छे. वली दक्षिण दि-

शामां द्रहोथी शोभती प्रभाविक, तथा दुष्ट दोषोने नाश करनारी उज्जयंती नामनी नदी वहे छे, नैऋत्य दिशामां निर्मल पाणीवाली, तथा पवित्र करनारी सुवर्णरेखा नामनी नदी वहे छे. वली उत्तर दिशामां मोजांउथी चलित कमलोवाली लोला नदी, तीर्थना संगथी दीन माणसोनी दीनतानो नाश करे छे. एवी रीते आ पर्वतमांथी निकलती बीजी पण द्रहोथी शोभती घणी नदीउ, तथा घणां झरणो छे. वली अहीं पोतपोतानी सिद्धिनी वृद्धिमां तत्पर घणां विद्याधरो, देवो, किन्नरो, अप्सरानां समूहो, तथा यक्षो वसे छे. पछी चक्रीए शक्तिसिंहने पुछ्युं के, आ वायव्य दिशामां कयो पर्वत शोभी रह्यो छे? त्यारे शक्तिसिंह कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! वरट नामनां कोइ कुबुद्धि विद्याधरे राक्षसी विद्या साधीने अहीं वास कर्यो छे. ते क्रूर राक्षसथी अधिष्ठित थइने आ पर्वत तेनाज नामथी प्रसिद्ध थयो छे. भयंकर राक्षसोथी वींटाएलो तथा आकाशविद्याथी आकाशमां गमन करनारो ते दुष्ट, आज्ञा पण मानतो नथी; एवी रीते तेने देशमां उद्वेग करनारो जाणीने, चक्रीए क्रोधातुर थइ, तेने जीतवाने सुषेणने विमान मारफते जवानी आज्ञा आपी. त्यारे चक्रीनां हुकमने माथे चडावीने सेनापति विमान मार्गे त्यां पहोंच्यो, त्यारे तेने आवतो जोइ वरट राक्षस पण घणां राक्षसो सहित युद्ध करवाने सज्ज थयो. पछी त्यां सुषेणे क्षणवार ते राक्षसो साथे लडी, तथा जीतीने, ते वरट राक्षसने पोताना विमानमां नाखी लाव्यो; अने चक्रीनां चरण समीपे तेने लोटतो कर्यो. ते वखते तेने दीन, तथा म्लान मुखवालो, जोइने दया आववाथी शक्तिसिंहे तेने कह्युं के, हे असुर! तें जीवहिंसारूप जे कंदनुं आरोपण कर्युं छे, तेनां पुष्पसरखुं हजु आ थयुं छे, अने तेनुं फल तो हजु तने नरकमां मलशे. माटे हजु पण जो तुं जीवहिंसा तजीने मारी आज्ञा मानशे तो तने अभयदान आपी हुं छोडावुं. त्यारे राक्षसे कह्युं के, हे स्वामी! हुं आपनी आज्ञा मारा मस्तकपर चडावीश, तेम कहेवाथी शक्तिसिंहे चक्रीने कही तेने छोडाव्यो. पछी ते राक्षसे त्यां खुशी थइने युगादीश प्रभु तथा अरिष्टनेमि प्रभुनुं, एम बे जिनमंदिरो बंधाव्यां. वली ते शिखरनां तट पासे तेणे प्रभावथी शत्रुंजयीनी स्पर्धा करनारी तथा पूर्व दिशामां गमन करनारी एक शुभ नदी बनावी. जे मा-

पण त्यां श्री युगादीश प्रभुने, तथा श्री नेमिनाथ प्रभुने नमस्कार करे छे, तेनां इच्छितने ते शुभ मनवालो राक्षस आपे छे. वली त्यारथी ते तीर्थ "कामद" नामथी पण प्रसिद्ध थयुं, वली बीजी वस्तुओने नहीं इच्छता माणसोने ते अनोपम मोक्षसुख पण आपे छे. पछी चक्री ते राक्षसने त्यां स्थापीने पोते नेमिजिननी पूजा माटे मंदिरमां आव्या. पछी त्यां पांचमा देवलोकनो स्वामी ब्रह्मेंद्र क्रोडो देवोसहित भरते बनावेला ते नेमि प्रभुनां प्रासादमां आव्यो. त्यां नेमी प्रभुनी भक्तिथी भासुर थएला चक्रीने जोइने ते ब्रह्मेंद्र स्नेहथी तेने कहेवा लाग्यो के, हे श्री युगादीश प्रभुना पुत्र! तथा भरतखंडमां भूषण समान! चक्री अने चरम शरीरी, एवा तमो शाश्वती रीते जयवंता वर्तो? वली हे चक्री! जेम श्री ऋषभस्वामी प्रथम तीर्थंकर थया छे, तेम तमोए प्रथम संघपति थइने जिनशासनने दीपाव्युं छे. समस्त पृथ्वीने पूरतो एवो तमारो यशरूपी क्षीरसमुद्र पोतानां कल्लोलोथी अमोने पण तमारी प्रशंसा करवाने त्वरा करे छे. वली पवन जेम जगतनां उपकारी वरसादने प्रगट करे छे, तेम तमोये आ शत्रुंजय तीर्थने प्रकट कर्युं छे. वली आ रेवताचलपर तमोए जे आ नेमिनाथ प्रभुनुं नवुं मंदिर बंधाव्युं, तेथी तमो मने विशेषें करीने माननीक छो. वली गइ उत्सर्पिणीमां सागर नामना तीर्थकरनां मुखथी (ते वखतनां) ब्रह्मेंद्रे पोता संबंधि एम सांभल्युं हतुं के, अवसर्पिणीमां थनारा बावीसमा तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ प्रभुनां गणधरपदने पामीने तुं मोक्षे जइश; ते सांभली हर्षित थइ ते ब्रह्मेंद्रे पोतानां देवलोकमां श्री नेमिनाथ प्रभुनी मूर्ति करावी; अने त्यारथी तेनुं अमो पण पूजन करीए छीयें. वली आ पर्वतपर श्री नेमिनाथ प्रभुनां त्रण कल्याणको थवानां छे, तेथी कुलपरंपराथी अमो अहीं हमेशां आविए छीए. अमो सघला जैनी, तथा विशेषे श्री नेमिनाथ प्रभुनां सेवको छीयें; वली तमो अरिहंत प्रभुना पुत्र, तथा चक्री छो, तेथी आपना दर्शनथी अमोने मंगल थयुं. एवी रीते चक्री साथे वात करीने, तथा भक्तिथी नेमिनाथजीने नमीने, अने संघनुं पण आराधन करीने ते ब्रह्मेंद्र पोताने स्थानके गयो. हवे सौधर्मेंद्र पण भरतनी रजा लेइने, तेनां गुणोने तथा तीर्थने स्मरतो थको पोताने स्थानकें गयो. एवी रीते अहीं भरत चक्रीए तीर्थनो उद्धार करीने

तथा पूजीने, अने इंद्रोत्सवादिक कार्य करीने अत्यंत आनंद मेलव्यो. वली ते वखते चक्रीए याचको प्रते जे दान दीधुं, ते दान तो नवे निधानो विना बीजो कोइ पूरी शके नहीं. पठी एक मासने अंते देवो तथा मनुष्योथी वींटाएला चक्री, पोतानुं मन त्यां मुकीने ते परथी उतर्या. त्यारे शक्तिसिंहे अगाडी आवी, हाथ जोडी नमस्कार करीने विनयथी चक्रीने विनंति करी के, हे स्वामी ! आजे आपना आ दासनी विनंति अवधारीने आ गिरिदुर्गपूरने पवित्र करो ? एवी रीतनां तेना आग्रहथी चक्रीए नाना प्रकारनां लोकोथी ञरेला, तथा ऋद्धिथी स्वर्ग नगरसरखा ते शेहेरमां प्रवेश कर्यो. त्यां तेमणे जिनमंदिरमां श्री ऋषञ प्रञुनी सेवा करी, तथा ञत्रिजानी ञक्तिथी अठाइ महोत्सव पण कर्यो. पठी बहारना अने अंतरंगनां शत्रुउने एकी वखते जीतवाने उद्यमी थएला चक्री चतुरंगी सेनाथी वींटाया थका प्रस्थान करवा लाग्या. ते वखते हाथीउनी गर्जनाथी, घोडानां हेषारवोथी, रथोनां चित्कारोथी, तथा सुञटोनां सिंहनादोथी सघलुं जगत शब्दमय थयुं; तथा सैन्यनां ञारथी पर्वतो पण कंपवा लाग्या; एवी रीते मार्गे चालतां पण चक्री पाढुं वालीने मस्तक धुणावता थका जाणे स्तुति करता होय नहीं तेम ते रैवताचलने जोवा लाग्या, तथा विचारवा लाग्या के, सर्व जगोएथी सुवर्ण, रत्न, तथा रूपामय एवो आ पर्वत मेरु, रोहणाद्रि, तथा वैताढ्यनां सारथीज बनावेलो लागे ठे. वली आ पर्वतनां शिखरनां अग्रञागपर रहेलां कल्पवृक्षो लोकोने इछित दान आपे ठे, वली आ देशनुं सुराष्ट्र नाम खरेखर युक्तियुक्त ठे, केम के, अहीं शत्रुंजय, तथा गिरनार आदिक तीर्थो रहेलां ठे. वली अहींनां पर्वतो, नदीउ, वृक्षो, कुंडो, अने ञूमिउ सर्व तीर्थपणाने पामे ठे. वली आ सुराष्ट्र देश सघला देशोमां उत्तम देश ठे, तथा शत्रुंजय तीर्थ सर्व तीर्थोमां उत्तम तीर्थ ठे. वली ठखंड पृथ्वीमां पण, हमेशां सर्व ऋतुउथी शोञता सौराष्ट्र समान सर्व तीर्थमय कोइ पण देश नथी. सुराष्ट्र देशमां रहेनारा जे लोको परदेशमां रहेवानी इछा करे ठे, तेउ कल्पवृक्षोने धतुरो लेवानी इछा करे ठे. वली जे माणसो आ देशमां पण हत्यादिक दोषोथी मुक्त थता नथी, तेउ अन्य तीर्थोमां पण तपथी केम मुक्त थइ शके ? आ सुराष्ट्र देशमां दुकाल के पापोनो संचय होतो

नथी, खराब बुद्धि, के द्रोह पण होतो नथी, सघला लोको सरल स्वभावी होय छे. एवी रीते कहेता थका, शत्रुंजय गिरिनी प्रदक्षिणा देइने चक्री केटलेक दिवसे आनंदपुर नगरमां आव्या. त्यां चक्रीए शक्तिसिंहने बोलावी, पासे बेसाड्यो; त्यारे तेणे पण तेमने नमस्कार कर्यो, त्यारे चक्रीए पण तेनी पीठपर पोतानो हाथ स्थाप्यो; अने तेने कह्युं के, हे वत्स ! मारी आज्ञाथी तारे अहीं रही, राज्य पालतां थकां बन्ने तीर्थोनी रक्षा करवी. वली पवित्र, तथा तीर्थरूप एवा आ सुराष्ट्र देशनो तुं राजा छे, तेथी मारां रत्नोथी पण तुं अधिक धन्य, तथा बीजा राजाउने पूजवा लायक छे. जे माणस शत्रुंजयने सेवे छे, ते तातनेज सेवे छे, केम के, जे तीर्थ ताते अधिष्ठित करेलुं छे, ते तीर्थ तात तुल्यज छे. एम कहीने बन्ने तीर्थनी रक्षानी निशानी माटे चक्रीए तेने बे छत्रो आप्यां. पछी तेमणे हारादिक आभूषणोथी, हाथी, घोडा, रथ, रत्न, द्रव्य विगेरेथी तेनुं सन्मान करी तेने विसर्जन कर्यो. शक्तिसिंह पण पुण्यानुबंधि पुण्यने उपार्जन करतो थको, तथा जिननी पूजा करतो थको सुराष्ट्र देशनां लोकोने पालवा लाग्यो. पछी चक्रीए अर्बुदगिरिपर (आबुपर) जइने गुरुनी आज्ञाथी भूत, भविष्य तथा विचरता तीर्थंकरोनां प्रासादो बंधाव्यां. वली चक्रीए सर्व जगोए हर्षथी आवेला पोतानां भत्रिजाउने अत्यंत दानथी खुशी कर्या. एवी रीते अनवछिन प्रयाणोथी चालता थका चक्री मार्गमां ठेकाणे ठेकाणे सर्व तीर्थोने उत्सव सहित नमता हता. एवी रीतें दीनोनां समूहोनो उद्धार करता थका, मुनिउने पूजता थका, तथा तेउनी आशिष ग्रहण करता थका अनुक्रमे चक्री मगध देशमां आव्या. त्यां पण मगधनो पुत्र तथा चक्रीनो भत्रीजो मागध सर्व ऋद्धि सहित तेमनी सन्मुख आव्यो. त्यारे चक्रीए पण, सूर्य पोताना रथपर जेम अरुणने, तेम तेने पोतानी पासे हाथीपर चडाव्यो. पछी उलसायमान थता मंगलीक शब्दोवाला, तथा उछलती धजावाला, राजगृही नगरमां तेमणे प्रवेश कर्यो. पछी त्यां ते मागध कुमार तरफथी सत्कार तथा भोजनादिक ग्रहण करीने चक्री वैभार पर्वतपर तीर्थयात्रा माटे गया; तथा त्यां पण तेमणे शत्रुंजयनी पेठेज भावि तीर्थंकर श्री महावीर प्रभुनुं मंदिर वार्धकी मारफते बंधाव्युं. एवी रीते शत्रुंजय, गि-

रनार, सम्मेतशिखर, तथा वैन्नारपर तीर्थंकरोनां मंदिरो थयां. एवी रीते त्यां पण चक्रीए तीर्थ स्थापीने, पूजा, उत्सव, तथा दानादिक पूर्व पेठेज कर्युं. वैन्नार पर्वतनी यात्रा करनाराउंने चक्रीनी, तथा इंद्रनी लक्ष्मी दासी थइ तेउंनां घरनां आंगणाउंमां रहे छे, तेम तेउंने मोक्ष सुख पण दूर रहेतुं नथी. वैन्नार गिरिनुं तीर्थ करज आदिक अनर्थोने हरनारुं, नवरूपी समुद्रथी तारनारुं तथा बहु तीर्थनां फलो देनारुं छे. एवी रीते संघपतिने लायकनुं सर्व कार्य करीने चक्रीए मागधेशने विसर्जन कर्यो. पछी संघ सहित प्रयाण करता थका चक्री अनुक्रमे केटलेक दिवसे सम्मेतशिखरपर आव्या. त्यां पण चक्रीनी आज्ञाथी वार्धकीए वीश तीर्थंकरोनां प्रासादो बांध्यां तथा त्यां पण चक्रीए पूर्वनी पेठेज प्रनु अने गणधर विगेरेने पूजीने याचको प्रते इच्छित दान आप्युं. सर्व पापोने नाश करनारुं सम्मेर शिखर तीर्थ एकवार पूजवाथी पण मोक्षपद आपे छे. त्यां आठ दिवसो सुधि रहीने पवित्र दिवसे चक्री सेना सहित पोतानी नगरी तरफ जवा लाग्या; एवी रीते केटलेक दिवसे ते अयोध्या नजदीकनां नंदनवन सरखा उद्यानमां आव्या. पछी सूर्ययशा कुमार नरत महाराजने आवेला जाणीने हर्षथी वेग सहित त्यां आव्यो; तथा चक्रीनां चरणोने तेणे नमस्कार कर्यो, त्यारे चक्रीए पण तेने उठाडीने आनंदथी आलिंगन कर्युं. पछी त्यां तेमणे केटलाकोने स्मरणथी, तो केटलाकोने वचनथी, तो केटलाकोने दृष्टिथी एम नगरना लोकोने आनंदित कर्या. हवे नगरमां चंदन अने केसरना पाणीना छंटकावो थया, तथा पुष्पोनां समूहो पथराणा. दरेक घरे फलद्रूप केलोना स्तंनो खोडाया, तथा कल्पवृक्षोनां मनोहर पांनोनां तोरणो बंधायां. वली मेहेलोनां शिखरोपर, जाणे पोतानां स्वामी पासे निधानो आव्यां होय नहीं, तेम सुवर्णनां कलशो शोनता हता. अगासीउंपर रहेला चंद्रमंडल सरखा सूर्यकांत मणीउंनां आरिसाउंथी ते विनीता नगरी जाणे पोतानां स्वामिने हजारो आंखोथी जोती होय नहीं, तेम शोनती हती. वली ते समये आश्चर्यकारक चंद्रवा, मांचा, तथा फुवाराउंथी ते विनीता नगरी स्वर्गपुरी सरखी शोनती हती. पछी उत्साहवंत चक्री पूर्वाचल प्रते जेम सूर्य, तेम हस्तीरत्नपर चड्या. ते वखते देहधारी पुण्यना अं-

कुरा सरखुं, तथा पूर्णिमाना चंद्र सरखुं तेमना मस्तकपर छत्र शोजतुं हतुं. वली तेनां मुखरूपी चंद्रनी सेवा माटे जाणे बे चकोरोज प्राप्त थया होय नहीं, तेम तेने वींझातां गंगानां मोजां सरखां बे चामरो शोजतां हतां. हवे अगाडी चालता सुजटोथी जय जय शब्द उच्चारण कराते छते, गवैयाउं रागरागणीउं गाते छते, पाछल कुलस्त्रीउं धवलमंगल गाते छते, पुण्योथी जेम तेम गणधरोथी, संगत थएला, तथा सर्व शोजावाला देवालयनी पाछल चालता चक्रीए संघ, देव, अने असुरो सहित नगरीमां प्रवेश कर्यो. पछी नगरनां मुख्य चैत्योमां श्री युगादीश प्रजुने नमीने, तथा गुरुउंने पण वांदीने चक्री पोताने स्थानके गया. पछी देह प्रते जेम आत्मा, वादलांप्रते जेम चंद्र, मेघप्रते जेम पाणी, स्वर्गप्रते जेम इंद्र, दिवसप्रते जेम सूर्य, देवालय प्रते जेम देव, पुष्पप्रते जेम सुगंधि, तथा कुलीनप्रते जेम सद्गुणो तेम चक्री उत्सवयुक्त मेहेलमां दाखल थया. पछी यक्षो, राजाउं, विद्याधरो, तथा शेठ शाहुकार आदिको, मेहेलमां रहेला चंद्रकांत मणिनां किरणोथी स्फुरायमान मुखरूपी चंद्रनी कलावाला तथा हारमां रहेला मोतीउं रूपी ताराउंवाला ते चक्रीने हर्षथी पोतानां कल्याण माटे, देवोनां समूहो जेम इंद्रने तेम हमेशां नमस्कार करवा लाग्या.

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वर सूरिजीए बनावेला महा तीर्थ श्री शत्रुंजयनां महात्म्यमां श्री जरत चक्रीनी तीर्थयात्रा, तथा तीर्थोद्धारनां वर्णननो पांचमो सर्ग समाप्त थयो. श्रीरस्तु.

षष्टः सर्गः प्रारभ्यते.

अनंत, अप्रकट मूर्तिवाला, जगतनां सकल विद्यमान, जावी, तथा जूत अर्थोथी मुकाएला, सर्वज्ञ, सर्व जोनारा, सघला लोकोथी नमाएला, साधुउंनां समूहोथी स्तुति कराएला, अक्षय, कर्मोथी रहित, वचन मार्गने उलंगीने मोक्षमां रहेनारा, तथा पुण्यथी मली शके एवा श्री युगादीश प्रजु तमोने हमेशां मंगल आपो?

श्री वीरप्रजु इंद्रने कहे छे के, हे इंद्र! कर्णोने अमृत सरखुं, तथा मोक्ष प्राप्त करावनारुं तेज चक्रीनुं हजु तुं चरित्र सांजल?

हवे ते मायालु चक्रीए सोमयशा आदिक पुण्यशालीउने देश आदिकोनुं दान देइने केटलीक मेहेनते विसर्जन कर्या. पछी तेमणे सघला संघनां लोकोने भोजन आछादन आदिकथी सन्मान आपीने, सघली पृथ्वी पोताने वश करी.

हवे भगवान पण विहार करता थका अष्टापदप्रते आवीने समोसर्या; ते वात उद्यानपालक पासेथी सांभलीने चक्री तेमने वांदवा माटे त्यां आव्या. ते वखते प्रभुनां मुखथी दाननुं मोटुं फल सांभलीने, चक्रीए कह्युं के, हे भगवन्! आ साधुउ मारुं दान ग्रहण करे तो ठीक, त्यारे प्रभुए कह्युं के, हे राजन्! निरवद्य राजपिंड पण मुनिने लेवो कल्पे नहीं. त्यारे फरीने चक्रीए पुछ्युं के, हे स्वामी! महान सुपात्र तो आ मुनिउ छे, अने तेउने तो मारुं दान कल्पे नहीं, माटे शुं करवुं? त्यारे इंद्रे तेमने कह्युं के, हे चक्री! आ उत्तरगुणोने धरनारा साधर्मीकोने तुं दान दे? एवी रीतनुं वचन प्रभुए प्रतिषेध्युं नहीं, तेथी ते चक्री अयोध्यामां आवी हमेशां भक्तिथी साधर्मीकोने जमाडवा लाग्या. पछी लोको मुग्ध होवाथी ते भोजनशालामां संख्याबंध आववा लाग्या, त्यारे रसोइआउए राजाने जइ कह्युं के, हे स्वामी! आ समुदायमां अमोने श्रावक अश्रावकनी उलखाण रहेती नथी. ते सांभली चक्रीए काकिणी रत्नथी श्रावकोना कंठमां त्रण रत्नोनी एंधाणीरूप त्रण रेखाउ करी; तथा तेउने चक्रीए कह्युं के, तमारे प्रभातमां मारा मेहेलनां द्वारपासे कहेवुं के, "तमो जीताएला छो, भय छे, माटे हणो नहीं, हणो नहीं" एवी रीते तमारे हमेशां बोलवुं. हवे तेउनां ते वचनो सांभलीने चक्री हमेशां आनंद पामता हता. तथा ते त्रण रेखाउवाला श्रावको "माहन" नामथी पृथ्वीमां उलखावा लाग्या. पछी चक्रीए तेउने अरिहंत, मुनि, श्रावक अने धर्मनां गुणोनां स्वरूपवाला चार वेदो भणाव्या. एवी रीते प्रभुथी जेम धर्मनी प्रवृत्ति थइ, तेम चक्रीथी साधर्मीवात्सल्यनी प्रवृत्ति थइ. हवे श्रीऋषभदेव प्रभुये पृथ्वीपर विहार करतां थकां नीचे प्रमाणे चतुर्विध संघनी स्थापना करी. प्रभुनां परिवारमां एक लाख पचाशी हजारने छसो पचास मुनिउ, त्रण लाख साध्वीउ, तथा शुद्ध समकीती त्रण लाखने पचास हजार श्रावको हता; तथा पांच लाखने साडा चार हजार श्रावि-

काउं हती; एवी रीते त्रण लाख पूर्व दीक्षा पालीने प्रभु पोतानो मोक्षकाल जाणीने अष्टापद पर्वत प्रते आव्या. त्यां शुद्ध प्रदेशमां प्रभुए दश हजार मुनिउंनी साथे अनशन लीधुं. ते वखते उद्यानपालके, कंठ रुंधाइ जवाथी अप्रकट शब्दथी ते व्रतांत भरतजीने आवीने कह्यो; ते सांभली दुःखित थएला चक्री परिवार विनांज पगे चालीने त्यां जवा लाग्या, पाछल आवताउंने दूर मूकता, अश्रुउंने झरता, कांटा आदिकथी पण दुःख नही गणकारता, स्त्रीउं सहित शोकातुर थया थका ते तुरत अष्टापदपर चड्या. त्यां सर्व इंद्रिउंनां आश्रवोने रोकीने पर्यंकासने वेठेला, प्रभुने जोइ चक्रीए अश्रुजलथी भींजातां थकां तेमने नमस्कार कर्यो. ते वखते आसनो चलवाथी सघला इंद्रोए त्यां आवी प्रदक्षिणा देइ शोकातुर थइने प्रभुने नमस्कार कर्यो. आ अवसर्पिणीनां सुखम दुःखम आरानां नेव्यासी पखवाडीआं वाकी रह्यां त्यारे, महावदी तेरसने दिवहे, पहेले पहोरे, चंद्र अभिचित नक्षत्रमां आवते छते, पर्यंकासनपर रहेला, स्थूल मन, वचन अने कायानां योगथी मुकाएला, सूक्ष्म कायनां योगथी वादर योगने रुंधीने, प्रभु सूक्ष्मक्रिय नामनां त्रीजा शुक्ल ध्यानपर चड्या. पछी सूक्ष्म कायनां योगपर तथा पछी उछिन्नक्रिय नामनां चोथा शुक्ल ध्यानपर चडीने प्रभु मोक्षे गया. वली ते ध्यानांतरमां रहेला वाहुवलि आदिक मुनिउं पण प्रभुनी पेठेज क्षणवारमां मोक्ष पाम्या. ते वखते नारकीउंने पण सुख थयुं, तथा त्रणे जगतमां उद्योत थयो. अने एवी रीते प्रभुनुं निर्वाण कल्याणक थयुं. एवी रीते प्रभुनो मोक्ष जोइ, अत्यंत दुःखित थइ चक्री मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पड्या. पछी ते आक्रंद करवा लाग्या के, त्रणे जगतनां त्राणभूत प्रभु, वाहुवलि आदिक भाइउं, ब्राह्मीसुंदरी वेहेनो; पुंडरीक आदिक पुत्रो, तथा श्रेयांस आदिक भत्रिजाउं पण कर्मक्षय करीने मोक्षे गया, अने हुं हजु जीवितने प्रिय करीने वेठेलो छुं!! एवी रीते आक्रंद करता चक्रीने जोइ शोकथी इंद्र पण रुदन करवा लाग्या; ते जोइ वीजा देवो, अने तेमने जोइ चक्री पण रुदन करवा लाग्या. अने ते दिवसथी शोकरूपी गांठने दूर करनारो तथा नेत्रनुं शोधन करनारो रुदननो व्यवहार चालु थयो. पछी इंद्रे चक्रीने कह्युं के, हे चक्री! तमो त्रण जगतनां स्वामीनां पुत्र थइने, गो-

कथी प्रेराया थका धैर्य छोडीने वालकनी पेठे केम रडोछो ? जे प्रभु जगतनां आधारभूत, जगतनी स्थिति करनारा, तथा जगतथी नमवा लायक हता, ते प्रभुनो शामाटे शोक करवो जोइए ? अन्य कार्योविनाना, बंधन कर्मरहित, एवा मुमुक्षुउनो तो आ अक्षीण महोत्सव छे. हर्ष अने शोक स्वार्थनो नाश करनारा, तथा पातकरुप छे, माटे तेने तजीने फरीने तमो धैर्य धारण करो ? एवी रीते चक्रीने शांत करीने इंद्रे देवो मारफते गोशीर्ष चंदन विगेरे मगाव्युं. पछी त्यां देवोए प्रभुमाटे ऐंद्री दिशामां गोल चित्ता बनावी, तथा बीजा इक्ष्वाकुउनी दक्षिणदिशामां त्रिखुणी अने बीजाउनी चोखुणी चित्ता बनावी. पछी इक्ष्वाकुउनां तथा बीजा मुनिउनां शरीरो देवोए शिविकामां पधराव्यां. पछी वाजित्रो वागते छते, पुष्पो फेंकाते छते, तथा नृत्य अने गायन होते छते तेउए ते शरीरो चित्ताउमां पधराव्यां. पछी अग्नि अने वायु कुमारोए ते चित्ताउने सलगावी; तथा अस्थिशेष रह्यां, त्यारे मेघकुमारोए ते ठारी नांखी. पछी प्रभुनां अने बीजा मुनिउनां पण दांत, अस्थि विगेरे सर्व देवोए पोतपोतानी सभामां पूजवा माटे यथायोग्य ग्रहण कर्या. पछी त्यां केटलाक श्रावकोए ते अग्नि मागवाथी देवोए ते त्रणे कुंडनो अग्नि तेउने दीधो, अने त्यारथी तेउ अग्निहोत्री ब्राह्मणो कहेवावा लाग्या. केटलाक माणसोए भक्तिथी तेनी राखने लेइ नमस्कार कर्यो, अने तेथी तेउ भभुति चोलनारा तापसो थया. पछी ते देवो प्रभुने हृदयमां स्मरता थका पोताने स्थानके गया, तथा विघ्नोनी शांतिमाटे तेउ प्रभुना अस्थिउने पूजवा लाग्या. पछी चक्रीए प्रभुना अग्निदाहनी जगोए वार्धकी मारफते प्रभुनो प्रासाद कराव्यो. ते प्रासाद छगाउ उंचो, एक योजननां विस्तारवालो, अने तोरणसहित चार द्वारोवालो हतो. तेनी आगल स्वर्गमंडप सरखा मंडपो हता, तथा तेनी अंदर पीठिका, देवछंद, अने वेदिका पण हती. त्यां उत्तम पित्तिकावाली, आठ प्रतिहारोसहित, चोमुखी कमलना आसनपर बेठेली रत्नमय शाश्वती प्रतिमाउ हती. वली त्यां पोतपोतानां परिमाण तथा चिन्होवाली मणि अने रत्नोनी बनावेली चोवीसे तीर्थंकरोनी प्रतिमाउ शोभती हती. वली तेउ प्रत्येकपर त्रण छत्रो चामरो अने ध्वजा शोभतो हता, तथा तेनां अधिष्टायक यक्षो पण त्यां

हता. वली तेउनी आसपास कल्पवृक्षो, तलावो, वावो, मठो विगेरे हतां. वली चैत्योनी बहार प्रभुनो एक महोटो स्थुभ तेमणे कराव्यो, तथा बीजा भाइउनो पण मणिउनो स्थुभ बनाव्यो. त्यां दुर्जेय राक्षस सरखा लोखंडना पुरुषो शोभता हता, तथा भरतनी आज्ञाथी तेनां अधिष्टायक देवो पण थया. एवी रीते चक्रीए “सिंहनिषिद्ध” नामनुं मंदिर विधिपूर्वक बनावीने, मुनिउ मारफते तेनी प्रतिष्ठा पण करावी. पछी पवित्र थइ, श्वेत वस्त्रो पहेरी चक्रीए नैषेधिकी करीने, त्यां जइ त्रण प्रदक्षिणा दीधी. पछी पवित्र जलोथी चक्रीए प्रतिमाउने स्नान करावी, कोमल वस्त्रथी प्रमार्जन कर्युं, पछी यशथी जेम पृथ्वीने तेम चक्रीए चांदनीनां समूहसरखा चंदनथी तेपर लेपन कर्युं; तथा पछी तेमणे सुगंधि पुष्पोथी लेपन करीने, जाणे कस्तूरीनी वल्लरी करता होय नहीं, तेम तेमणे धूप कर्यो. पछी जरा पाछा हठीने तेणे मणिपीठपर शुद्ध तंडुलोथी अष्ट मंगलो आलेख्यां, तथा फलो मूक्यां. पछी सर्व बाजुथी जाणे संघनां (अज्ञानरुपी) अंधकारने हरता होय नहीं, तेम तेमणे मंगलदीपकसहित आरति करी. पछी हर्षाश्रुसहित उलसायमान भावथी स्तुति करवा लाग्या के, हे त्रण जगतना आधारभूत स्वामी! आप आ त्रणे जगतने तजीने जो के गया छो, तो पण ते त्रणे जगत आपनेज चित्तमां ध्यावे छे. वली आपनां ध्यानरुपी रज्जुनां आलंबनथी मारा सरखा दूर रहेनाराउ पण आपनी पासेज छे, माटे आप प्रथमथी केम चाल्या गया? वली हे प्रभु! आप जेम अमो निराधारोने तजीने गया छो, तेम हवे अमारां चित्तमांथी जशो नहीं. एवी रीते प्रभुनी स्तुति करीने, तथा बीजाउने पण भक्तिथी नमीने, चक्रीए विचार्युं के, आ पडता कालनां अल्प सत्ववाला लोकोथी आ प्रासादनी आसातना न थाय तो सारुं, एम विचारि तेमणे पर्वतनी मेखलाउ तोडीने दंड रत्नथी योजनयोजनने अंतरे आठ पावडीउ करी, अने तेथी ते पर्वत “अष्टापद” नां नामथी प्रसिद्ध थयो. पछी चक्री मनने ते पर्वतपर छोडीने दुःख पामता थका नीचे उतर्या. पछी पृथ्वीनां लोकोने दिलगिर करता थका चक्री विनीता नगरीमां आव्या. त्यां तेमने, गीत, नाटक, कवितारस, मनोहर क्रीडउ, वावो, नंदनवन, चंदन, मनोहर हार, भोजन, जल, आसन, शयन तथा

पान विगेरेमां चेन पड्युं नहीं; पण फक्त तेमनुं ध्यान प्रभुमांज लाग्युं; त्यारे मंत्रीओ तेमने समजाववा लाग्या के, हे स्वामी! जेमने मेरुउपरे देवोए स्नान कराव्युं, जे इक्ष्वाकुवंशमां थया, जेणे राजानो आचार देखाड्यो, तथा जेनाप्रते प्रजा संतुष्ट थइ, जेनाथी धर्म प्रगट थयो, जेमनुं उज्ज्वल चारित्र हतुं, तथा जे केवलज्ञानना धणी हता, एवा प्रभुप्रते शामाटे आपे शोक करवो जोइए? वली ते प्रभु स्तुति करवा लायक छे, माटे तेमनी भक्तिथी सेवा करो? तथा तेमां चित्त जोडो? वली ते मोक्षमां पधार्या छे, माटे ते प्रते मोह करो नहीं? ते सांभली केटलाक प्रयत्ने चक्रीए ते भयंकर शोकने तजीने पोतानुं चित्त राजकार्यमां जोड्युं. पछी ते कोइ वखते मेहेलमां, तो कोइ वखते सभामां, एवी रीते क्रीडा करता थका आनंद पामवा लाग्या; वली ते कोइ वखते स्त्रीओसहित वनहस्तीनी पेठे वनमां जलक्रीडा करता, तथा त्यां तलावमां जलक्रीडा करी आनंद पामता; वली कोइ वखते मनोहर स्त्रीओ साथे हींचोलेथी पण रमवा लाग्या, तथा पोतानां शरीरपर आभूषणो पण पहेरवा लाग्या. वली कोइ वखते सर्व अंगे पुष्पोनी मालाओसहित वनमां कामदेव सरखा शोभता हता. तेम कोइ वखते घोडा तथा रथ आदिकनी क्रीडा करता. वली कोइ वखते संगीतमां, काव्यरसमां, तथा नाटकमां मग्न थया थका सर्व रसनां आश्रयवाला ते थता. वली कोइ वखते ते स्त्रीओ साथे क्रीडा करता थका काम उपजावता हता. एवी रीते अनंत रसमां मग्न थया थका, पुण्ययुक्त सुखथी काल निर्गमन करवा लाग्या.

हवे एक दहाडो स्नान करीने, सर्व अंगपर आभूषणो पहेरीने ते आरिसाभुवनमां गया. त्यां रत्नना आरिसामां क्रीडाथी पोतानुं रुप जोवा लाग्या. एवी रीते जोतां थकां पोतानी एक अंगुली तेमणे हिमथी दग्ध थयेला चंद्रनी पेठे वींटीरहित जोइ, त्यारे विचारवा लाग्या के, जेम वींटीथी मारी आंगलीमां कृत्रिम शोभा हती, तेम मस्तक आदिकपर पण आभूषणोथीज शोभा छे. पछी तेमणे मस्तकपरथी मुकुटने, कानमांथी कुंडलोने, कंठमांथी कंठाने, हृदयपरथी हारने, तथा बन्ने हाथोथी बाजुबंधने दूर कर्या; तेमज वली वीरवलयो, तथा वींटीओ पण कहाडी नाखी. तथा शांत मनथी वैराग्यने भजवा लाग्या, पछी फागण

मासमां फलफुलविनानां थएलां वृक्षनी पेठे पोतानां शरीरने आभूषणो-रहित जोइने ते मनमां विचारवा लाग्या के, आ असार कायारुपी भींत आभूषणोरूपी रंगथी उपरथी चित्रेली छे, पण अनित्यतारुपी पाणीथी भींजाइने ते पडी जाय तेवी छे. वली रोगरुपी पवनथी चलायमान थतां पाकां पांदडांनी पेठे पतनस्वभाववालां आ शरीरनो मोह प्राणीउं तजी शकता नथी. वली शरीरने शोभावनारी आ चांवडीपर चंदन आदिकनुं लेपन कराय, तो पण ते पोतानुं गंदापणुं तो छोडती नथी. वली जे आ शरीरने माटे लोको अकार्योमां रक्त थइने पण पापो बांधे छे, ते शरीर तो कमलनीनां पत्र पर रहेला जलबिंदुनी पेठे चपल स्वभाववालुं छे. वली दुर्गंधवाली, तथा शृंगाररसथी गंदी थएली आ संसाररुपी खालमां डुक्करो जेम खाबोचीआमां तेम प्राणीउं निमज्जन कर्या करे छे. वली में साठ हजार वर्षोसुधि पृथ्वीपर भमीभमीने पण आ शरीरमाटे अकार्यो कर्यां, माटे मने धिक्कार छे ! ! वली धन्य छे, ते बाहुबलि आदिक अन्य बांधवोने, के जेउए आ असार संसार तजीने मोक्ष मेलव्यो छे. वली जे संसारमां राज्य, यौवन तथा लक्ष्मी चपल छे, तेवा आ संसारमां स्थिर शुं कहेवाय ? वली आ संसाररुपी कुवामां पडता प्राणीने माता, पिता, स्त्री, बांधवो, पुत्र, संपदा विगेरे कोइ पण रक्षण करवाने समर्थ नथी. माटे हे जगतनुं रक्षण करनारा तात ! जेम बीजा पुत्रोने आपे तार्या, तेम मने पण तारो ? वली तेमणे विचार्यु के, हवे ते उपालंभथी सर्युं. केम के हुं कुपुत्र होवाथी तेउए मारुं स्मरण कर्युं नथी. हुं नथी, मारे लक्ष्मी, शरीर, घर, तथा स्त्री विगेरे कंइ नथी, आनंदरूपी अमृत-समुद्रमां नावावालो हुं एकज छुं. एवी रीते उपाधिरहित शांत, तथा चिदानंदमय परमतत्वमां ते लीन थया. (रोद्रध्यानथी, असत्यथी, परद्रो-हथी, तथा कुकर्मथी जे उग्र पाप बांध्युं होय, ते भावनाथी शांत थाय छे.) पछी ते भरत योगीराजे देहरुपी मूषमां ध्यानरुपी अग्निथी मोक्ष माटे (सुवर्णमाटे) मनरुपी पाराने स्थिर कर्यो. एवी रीते क्षपकश्रेणिपर चडीने, उपशम क्रमना योगथी. भरतयोगीराज केवलज्ञान पाम्या. पछी इं-द्रना हुकमथी देवोए तेमने साधुनो वेष आप्यो, तथा चक्रीए पण सर्व विरतिरुप सामायिक अंगीकार कर्युं. ते वखते त्यां तेमनी साथे दश

हजार राजाउंए पण दीक्षा लीधी; अहो! आवा स्वामीनी सेवा परलोकमां पण सुखकारी निवडे छे!! पछी बीजाने नहीं वांदता एवा ते चक्री देव, असुर तथा माणसोथी वंदावा लाग्या.

हवे अहीं इंद्रे पृथ्वीनां भारमाटे सूर्ययशानो राज्याभिषेक कर्यो.

हवे भरतमुनिराजे केवलज्ञानथी मांडीने लाख पूर्वसुधि पृथ्वीपर परिवार सहित ग्राम, नगर विगेरेमां विहार करीने युगादीश प्रभुनी पेठेज धर्म देशनाथी भव्य लोकोने उपदेश कर्यो, पछी अष्टापदपर जइ तेमणे विधिपूर्वक चतुर्विध आहारना पच्चखाण कर्यां. ते वखते इंद्रोए प्रभुनी पेठेज प्रभुना ते पुत्रनो निर्वाण महोत्सव कर्यो, तथा त्यां मंदिरो पण बंधाव्यां. पछी एक मासने अंते चंद्र श्रवण नक्षत्रमां आवते छते, अनंत चतुष्टयसहित ते मोक्षे गया; तथा अनुक्रमे बीजा साधुउं पण त्यां मोक्षे गया. भरत महाराजे सीतोतेर लाख पूर्व कुमार अवस्थामां गाल्यां, तथा एक हजार वर्षसुधी मंडलीकपणे रह्या; छ लाख पूर्वमां एक हजार वर्ष उंछां चक्रवर्तीपणामां रह्या; तथा एक लाख पूर्व केवलज्ञानी रह्या. एवी रीते चोरासी लाख पूर्वनुं आयुष्य पुरुं करी ते मोक्षे गया. उत्तम भाववालो माणस अष्टापद उपरें आठे कर्मोनो नाश करी मोक्ष पामे छे. आठ प्रतिहार्यवाला प्रभुनी अष्टापदपर पूजा करवाथी आठे कर्मोनो नाश थाय छे.

हवे शोकातुर थएला सूर्ययशाए त्यां आवीने, भरतजीनो निर्वाण महोत्सव तथा प्रासादो कराव्यां. पछी मंत्रीउंए न्यायनां वचनोथी समजाव्या बाद शोक मुकीने सूर्ययशा राज्यनुं कार्य करवा लाग्या. पछी ते सूर्ययशा प्रतापथी शत्रुउंने जीतीने, पोताना चंद्र सरखा उज्ज्वल यशथी पृथ्वीप्रत्ये उदय करवा लाग्या. ते त्रण खंडनां स्वामी थया थका नीतिपूर्वक पोतानां अखंड शासनथी दुष्टोनो नाश करवा लाग्या. आकाशमां सूर्य अने चंद्र बन्नेनो जेवो प्रताप हतो, तेवोज एक आ सूर्ययशानो पृथ्वीपर प्रताप हतो. राज्यसमये इंद्रे दीधेलो प्रभुनो मुकुट सूर्ययशा पहेरता हता. तेनो प्रताप शत्रुउंना मेहेलोमां जइ तेउंनां यशरुपी पाणीने सुकावतो हतो. राधावेधथी प्राप्त थएली, कनकविद्याधरनी पुत्री, तथा सघली स्त्रीउंमां मुकुट समान तेमनी जयश्री नामनी राणी हती. वली

तेमने बीजी विद्याधरो अने राजाउंनी पुत्रीरुप बत्रीस हजार पवित्र राणीउं हती. ते चतुःपर्वीमां अने विशेषें करी आठम अने चौदसे पौषधप्रत्याख्यान आदिक तप करता. ते पर्वो तेमने जीवित सरखां प्यारां हतां, अने तेथी तेनी ते जीवनी पेठे रक्षा करता. जैनधर्म धारण करनारा बालक अने स्त्रीउं तथा वनना पशुउं पण ते दिवसे आहार करतां नथी.

हवे एक दहाडो सौधर्मा सन्नामां बेठेला इंद्र ज्ञानथी ते सूर्ययशानी धर्मपरनी दृढता जोइ आश्चर्य पाम्या; अने मस्तक धुणाव्युं, ते वखते जगतने वश करवामां प्रथम औषधरूप उर्वसी नामनी अप्सरा इंद्रने मस्तक धुणावता जोइ कहेवा लागी के, हे स्वामी ! आ वखते कोइ कवि काव्यो बोलता नथी, तेम कोइ गुरु मनोहर पदो पण बोलता नथी, तेम नरते कहेलुं नाटिक पण रंन्ना करती नथी, तेम बीजा हाहा हुहु आदिक गांधर्वो पण गायनो करता नथी, तेम बीजुं पण हर्षने उत्पन्न करनारुं आ समये अत्रे कंइ पण कारण नथी, त्यारे आपे आनंदथी मस्तक केम धुणाव्युं ? त्यारे इंद्र कहेवा लाग्या के, हे उर्वशी ! हमणा में पृथ्वीपर ज्ञाननो उपयोग दीधो, तो मने मालुम पड्युं के, आ समये श्री युगादीश प्रजुना पौत्र, अने नरत चक्रीना पुत्र, महा पराक्रमी सूर्ययशा अयोध्या नगरीमां राज्य चलावे छे. ते अष्टमी अने चतुर्दशी पर्वने दिवसे जे तप करे छे, ते तपथी तेने देवो पण चलावी शके तेम नथी. कदाच सूर्य पूर्व दिशा तजीने पश्चिममां उगे, अथवा पवनथी मेरु कंपायमान थाय, अथवा समुद्र मर्यादा मुके, अथवा कल्पवृक्ष निष्फल थाय, तो पण पोताना प्राण जतां सुधी पण ते जिननी आज्ञाने अने तेपरनां पोतानां निश्चयने तजे तेम नथी. ते सांनली पोतानां स्वामिने प्रत्युत्तर देवाने अशक्त होवाथी, मनमां जरा हसीने विचारवा लागी के, अहो ! आ स्वामीपणुं केवुं छे ? के आ इंद्र मनुष्यमां पण आवुं निश्चयपणुं कहे छे. सात धातुउंनां शरीरवालो, अन्नपर आजिविका चलावनारो एवो मनुष्य देवथी पण चलायमान न थाय, तेवी वातनी श्रद्धा पण कोने थाय ? वली मारा गायन रूपी रसथी कया माणसना विवेक आदिक गुणो रजना कणीआउंनी पेठे दवाइ जतां नथी ? माटे हवे पर्वतपरथी नदी जेम खडकने तेम ते सूर्ययशाने व्रतथी च

लावीने हुं मारा स्वामिना आ साहसिक वचनने जुठुं करी आपीश. एवी प्रतिज्ञा करीने ते उर्वसी, रंभा सहित हाथमां वीणा लेइने पृथ्वीपर आवी. पछी अयोध्यानी नजदीकनां बगीचामां रहेला श्री युगादीश प्रभुना मंदीरमां आवीने, मोहनीय रूप करीने तेउ गायन करवा लागी. ते गायनथी मूर्छित थएला वृक्षपरनां पक्षिउ पण क्षण वार सुधि पोताना आत्माने पण जाणवा न लाग्या. वली ते वखते चंदनघो, सर्प, नोलीआं विगेरे पण पोताना बिलोमांथी निकलीने चित्रितनी पेठे निश्चल थइ रह्या. वली ते समये मुखमां अर्ध चावेलां घांसवाला हरिणो पण, ते गायनथी मोहित थइने पुतलांनी पेठे स्थिर रह्या. हवे त्यां क्रीडा माटे रस्तेथी पाछा वलतां सूर्ययशाए ते गायन सांभल्युं. ते वखते हाथी, घोडा, पाला विगेरे पण ते गायनमां आसक्त थइ स्थिर थइ गया. एवी रीते पोतानां लश्करने पोतानां कार्यमां पण असमर्थ जोइने राजा मंत्रिने कहेवा लाग्या के, अहो! मोहरूपी समुद्रनी वेलाथी अटकाइ गएला आपणा सैनीकोनी पेठे पक्षिउ पण निश्चल थइ गयां छे, तेम बालको, स्त्रीउ, बिलवासीउ, हरिणो तथा वृक्षो विगेरे पण मुर्छित थइने निश्चल थइ गयां छे. माटे गायन, सुखना आधाररूप, तथा दुःखोने नाश करनारुं छे, तेम जेनी पासे गायन छे, ते पवित्र थयो थको जगतथी पण पुजाय छे. जे हरिण प्राणने साटे पण गायनने अंगीकार करे छे, ते मृगने चंद्र पण पोतानां खोलामां लीधेलो छे. गायनथी देवो संतुष्ट थाय छे, धर्म थाय छे, राजा पासेथी धन मले छे, तथा स्त्रीउ पण वश थाय छे. गुरुनां योगथी प्राप्त थएलुं गायन क्रीडामात्रमांज परमानंद सुख आपे छे. माटे हवे आपणे आ मंदिरमां जइ श्री युगादीश प्रभुने नमीयें, अने त्यां आ गायननो रस पण मेलवीशुं. एम कहीने राजा, मंत्री तथा सैनिको सहित, ते गायनथी मोहित थया थका ते जिनमंदिरमां गया. त्यां तेमणे मनोहर कांतिवाली, तथा गायनरूपी अमृतनी नदीउ सरखी, अने हाथमां वीणावाली बे कुमारिकाउने जोइ. कामदेवनी स्त्री सरखी, ते बन्ने कन्याउने जोइ, कामना बाणथी वींधाया थका राजा मनमां चिंतववा लाग्या के, शुं आ स्त्रीउनां कंठरूपी अमृतनां कुंडमांथी गायननी उत्पत्ति थइ छे? के त्रिश्वकर्माए गायनरूपी अ-

मृतथी आने बनावी छे? आवा निरुपम रूप तथा गायनवाली आ कन्याउने जोगवनार कोण पुण्यशाली थशे ? एम विचारि वारंवार तेउ तरफ दृष्टि करीने राजाए इष्ठित देनारा प्रजुनां चरणोने नमस्कार कर्यो. पछी राजाए बहार झरुखामां बेसीने मंत्रीने तेउनां कुलादिक जाणवाने आज्ञा आपी. पछी राजानी आज्ञाथी मंत्री तेमनी पासे आवीने अमृत सरखी वाणीथी कहेवा लाग्यो के, हे स्त्रीउ! तमो आ त्रणे लोकोमांथी कोण छो? तमारो स्वामी कोण छे? तथा तमो अहीं शा माटे आवीउ छो? ते सघलुं कहो? त्यारे तेउमांथी एक कहेवा लागी के, अमो बन्ने मणिचूड विद्याधरोनी दीकरीउ छीए. वली अमो बालपणाथीज आ कलाना अन्यासमां छीए. अमो यौवनवंती थइउं, त्यारे "अमोने कोने आपवी?" एवी अमारा पिताने चिंता थइ. पण अमारा योग्य पति नहीं मलवाथी अमो जगो जगोए अरिहंत प्रजुनां चैत्योने नमीए छीए; केम के आ मनुष्य जन्म फरीने क्यां मलवानो छे? वली जिनचरणोथी पवित्र थएली आ अयोध्या नगरी पण तीर्थरूप छे, तेथी आ जरतेश्वरे बनावेला चैत्यमां अमो श्री युगादीश प्रजुने नमीए छीए. त्यारे मंत्रीए कह्युं के आ सूर्ययशा साथे मने तमारो संगम उत्कृष्ट लागे छे. ते श्री युगादीश प्रजुना पौत्र, जरत चक्रीनां पुत्र, तथा महा कलावान, शांत, गुणी अने बलवान छे. वली खरेखर तमारापर श्री युगादीश प्रजु तुष्टमान थया छे, केम के, तमोने तुरत आ सूर्ययशा सरखा स्वामी मल्या. जेम चंद्रथी ज्योत्स्ना तथा रात्री शोजे छे, तेम तमो पण आ सूर्ययशाथी शोजशो. ते सांजली तेउए कह्युं के, अमो स्वाधिन पति शिवाय बीजाने वरशुं नहीं. पछी ते वात राजाए पण कबुल करवाथी त्यां युगादीश प्रजुनी समक्ष तेमनो विवाह महोत्सव थयो. पछी तेउना प्रीतिरसमां खेंचाएला राजा संसारने सारजूत मानवा लाग्या; एवी रीते धर्म, अने अर्थने बाधा करता थका, ते फक्त एक कामपुरुषार्थनेज साधवा लाग्या. एक दहाडो बन्ने संध्याउथी जेम दिवस, तेम ते सूर्ययशा ते बन्ने स्त्रीउ सहित झरुखामां गया. ते वखते नगरमां एवो पटह वागतो संजलायो के, "हे लोको! अष्टमीनुं पर्व आव्युं छे, माटे सावध थजो? ते उद्घोषणा पेली कपटस्त्रीउए पण सांजली. त्यारे रंजा जाणे

तेनुं कारण नज जाणती होय नहीं, तेम अवसर जाणीने राजाने पुछवा लागी के, आ शुं छे? त्यारे राजाए कह्युं के, तातजीए अष्टमी अने चतुर्दशी बन्ने मोटां पर्वो कहेलां छे. तेम बे अठ्ठाइ पर्वो, त्रण चतुर्मासी पर्वो, तथा एक वर्षनां पापोने नाश करनारुं, पर्यूषणा पर्व कहेलुं छे; वली पंचमीने दिवसे ज्ञानरूपी प्रथम रत्ननुं आराधन कराय छे. ते सघलां पर्वो जिननी आज्ञाथी महा प्रभाववालां, तथा पुण्यनां कारणो छे. जो अष्टमी तथा पाखीनी विराधना न करवामां आवे, तो हमेश करातुं पुण्य मोक्षसुख आपे छे. वली हे प्रिये! जीवो जे शुभाशुभ कर्मो बांधे छे, अने तेथी पूर्वभवनुं जे आयुष्य बंधाय छे, ते प्रायें पर्वने दिवसे बंधाय छे. पर्वने दिवसे स्नान, स्त्रीसेवन, क्लेश, जुगार, हास्य, मात्सर्य, क्रोधादि कषायो, प्रियोने विषे ममता, क्रीडा तथा प्रमाद सेववो नहीं; ते दिवसे तो परमेष्टीनुं स्मरण करी त्रिविधें त्रिविधें शुभ ध्यानमां रहेवुं. पर्वने दिवसे सामायिक, पौषध, तथा छठ, अठम प्रमुख तप अने जिननी पूजा करीने, प्राणी उत्तम संयमी थाय छे. वली ते दिवसे गुरुनां चरण समीपें परमेष्टीनी स्तुतिनुं स्मरण करतो थको, प्राणी निबिड आठे कर्मोनो नाश करीने पुण्य उपार्जन करे छे. वली हे स्त्री! मारी आज्ञाथी तेरस तथा सातेमने दिवसे लोकोने चेतावबामाटे आवी रीतनी पटहोद्घोषणा थाय छे. वली ते चतुर्दशी, तथा अष्टमी पर्व त्रणे लोकमां दुर्लभ छे, माटे तेनुं आराधन जे जिनभक्तिथी करे छे, ते मोक्षें जाय छे. ते सांभली प्रपंचमां चतुर एवी उर्वशी कपटथी कहेवा लागी के, हे नाथ! तपनां क्लेशादिकथी, तमो आ मनुष्यपणाने, रुपने, तथा अखंड राज्यने शा माटे विडंबना पमाडो छो? माटे जेम पाछलथी पश्चाताप न थाय तेम, इच्छित सुख भोगवो? फरी फरीने आ मनुष्य भव, राज्य, तथा आवा भोगो क्यां मलवाना छे? ते सांभली कानमां उकालेलुं सीसुं जेम पडे, तेम अंतःकरणमां दाझीने राजाए कह्युं के, अरे! अधम! तथा धर्म निंदाथी मलीन स्त्री! आ तारी वाणी विद्याधरनां कुलने बिलकुल उचित नथी. वली जेथी आ जिनपूजा तथा तप आदिक अंगीकार करातुं नथी, एवा आ तारा रूप, कुल, तथा डाह्यापणने पण धिक्कार छे!! वली आ मनुष्यपणुं, रूप, आरोग्यता तथा राज्य विगेरे तपथीज मले छे, माटे कुलीन अने कृतज्ञ माण-

स तेनुंज आराधन करे छे. वली धर्माराधनथी शरीरने विडंबना थती नथी, पण धर्म विना केवल विषयोथीज विडंबना थाय छे. माटे यथेच्छ रीते धर्मज करवो, केम के फरी फरीने मनुष्य भव मलतो नथी. वली आठम अने पाखीने दिवसे पक्षिउं, हरिणो, तथा सिंहादिको पण आहार करता नथी, तो हुं ते केमज करुं? माटे सर्व धर्मना कारण रूप पर्वनुं जेणे आराधन कर्युं नथी, तेउंनुं ज्ञान अने मनुष्यपणुं वृथाज छे. वली प्राण जाय तो पण श्री युगादीश प्रभुए कहेला पर्वने हुं तपविना वृथा गुमावीश नहीं. वली कदाच आ राज्य, तथा प्राण जाय तो पण भले, पण हुं ते पर्वथी भ्रष्ट थइश नहीं. एवी रीतनां राजानां क्रोधयुक्त वचनो सांभलीने उर्वसी कपटवचनो कहेवा लागी के, हे स्वामि! आपनां शरीरने क्लेश न थाय, तेटला माटे में आ प्रेमरसना आवेशथी कह्युं छे, तेथी आपे गुस्से थवुं नहीं. वली अमोए पिताना वाक्यने उलंघीने स्वछंदचारी राजाने वरी अमारो भव बगाड्यो. वली पूर्व कर्मना परिपाकथी अमो तमोने वरी, माटे संसारनुं सुख अने शील सघलुं एक पदमांज समायुं. स्वाधिन स्त्रीपुरुषनो योग विषयसुखनो आनंद आपे छे, नहींतर तो दिवस अने रात्रिना योगनी पेठे विडंबनारुपज छे. वली हे स्वामी! आपे श्री युगादीश प्रभुनी सन्मुखज मारुं कह्युं करवाने कबुल्युं छे; अने तेनी परीक्षा माटेज में आ आजे अल्प मागणी करी, तेमां अरेरे! आप तो गुस्सेज थइ गया!! वली हे नाथ! हुं तो शील अने सुख बन्नेथी भ्रष्ट थइ!! माटे हवे तो अग्निमां पडी हुं आपघात करीश. त्यारे राजा तेनुं प्रीतियुक्त वचन सांभली तेमां लीन थइ, तथा पोते आपेलां वचननुं स्मरण करी कहेवा लाग्या के, हे भामिनी! जे पर्व तातश्रीए कहेलुं तथा करेलुं छे, तेनो हुं पुत्र थइने तेनी विराधना केम करुं? वली हे स्त्री! सघलुं सुवर्ण, पृथ्वी, हाथी, घोडा, तथा भंडार विगेरे तुं ग्रहण कर? पण जेथी धर्मनो विघात थाय, तेवुं कार्य तुं मारी पासें कराव नहीं? त्यारे जरा हसीने ते अप्सरा कोमल वाणीथी कहेवा लागी के, हे राजन्! तमारुं ते कहेवुं तो सत्य छे; पण हे स्वामी! जे पापीए पोतानां वचननो विघात कर्यो छे. ते अपवित्र छे, तथा तेना भारथी आ पृथ्वी पण विषाद पामे छे. वली हे नाथ! जेनाथी

आटलुं अल्प कार्य पण थतुं नथी, ते राज्यादिक शीरीते आपी शकशे? वली आपने माटे में पितानुं (विद्याधरनुं) ऐश्वर्य पण तजी दीधुं, तो हवे आ तमारां राज्यनुं शुं प्रयोजन छे? हवे छेवटे कहुं छुं के, हे राजन्! जो तमारे पर्वनो जंग करवो न होय तो मारी समीप आ श्री युगादीश प्रजुनो प्रासाद तोडी पाडो? ते वाक्य सांजलतांज जाणे हृदयमां वज्र लाग्युं होय नहीं, तेम राजा मूर्छित थइने चैतन्यरहित पृथ्वीपर पड्या. तेज वखते मंत्रीनी आज्ञाथी आकुल थएला परिवारे राजाने चंदन आदिकथी चैतन्यसहित कर्या. पछी तेमणे ते स्त्रीने कह्युं के, अरे नीच! आ तारा वचनो तारुं नीच कुलपणुं प्रगट करे छे, तुं विद्याधरनी पुत्री नथी, पण कोइ चांडालनी पुत्री छे, खरेखर में रत्नना भ्रमथी काचनो टुकडो ग्रहण करेलो छे. जे प्रजु त्रण लोकनां नाथ, तथा त्रण लोकथी पूजित छे; तेनां पर्व, तथा प्रासादने जांगनारो शुं कोइ पण हयात छे? माटे हे स्त्री! तारा वचनथी बंधाएला एवा मने अनृणी करवाने धर्मनो लोपशिवाय बीजुं कंइक मागी ले? वली हे प्रिये! राज्य, घोडा, हाथी, रत्नो विगेरे सघलुं जले चाल्युं जाय, तो पण हुं प्राण जातां पण पर्वजंग करीश नहीं. ते सांजली ते अप्सराए कह्युं के, जो एम छे तो, तमो तमारा पुत्रनुं माथुं छेदीने मने आपो? त्यारे राजाए विचारिने कह्युं के हे सुलोचने! ते पुत्र माराथीज थएल छे, माटे मारुं माथुंज तुं ग्रहण कर? एम कहीने पोतानुं मस्तक छेदवामाटे तलवार लेइ जेवा ते प्रारंज करे छे, तेटलामांज तेणीए ते तलवारनी धारा बांधी लीधी; त्यारे राजाए विलखा थइने नवी नवी तलवारो लेवा मांडी; एवी रीते जरा पण पोतानां सत्वथी ते डरता नथी, तेटलामां तेउं पोतानां रुपो प्रगट करीने आदरथी जय जय शब्द करवा लागी; हे वृषजस्वामिना कुलप्रते चंद्रसरखा, तथा पराक्रमीउंमां अग्रेसर, अने चक्रीना पुत्र तमो जय पामो? अहो! तमारां सत्व, धैर्य, तथा मनना निश्चयने शाबाश छे! केम के, अमोए आत्मघात अंगीकार करीने पण धैर्य तज्युं नहीं!! देवसजामां इंद्र देवोनी समक्ष आपना सत्वमाहात्म्यनी प्रशंसा करी; पण अमोए तेपर श्रद्धा नहीं राखीने आपने, नदीउं जेम मेरुने, तेम डोलाववाने इच्छ्युं: पण उछलता समुद्रने जो रोकी शकाय, पवनने जो बांधी शकाय

तथा जो मेरुने चलावी शकाय, तोज आपना सत्वनो निर्णय थाय. वली हे जगत्प्रभु! तथा हे कुलोत्तंस! आपनाथीज आ पृथ्वी "रत्नने उत्पन्न करनारी" एवुं पोतानुं नाम धारण करे छे. एवी रीते तेउं जेटलामां स्तुति करे छे, तेटलामां हर्ष सहित पुष्पोनो वरसाद वरसावतो, तथा जय जय शब्द करतो इंद्र त्यां आवी पहोंच्यो. त्यां प्रतिज्ञाथी भ्रष्ट थएली ते उर्वशीने तेणे उपहास सहित जोइ, अने ते पण रोमांचित थइने इंद्र आगल सूर्ययशाना गुणो गावा लागी. पछी इंद्र पण राजाने मुकुट, कुंडल, बाजुबंध, तथा हार दइने देवोसहित पोताने स्थानके गयो. हवे अनीतिरुपी अंधकारनो नाश करनारा, तथा शत्रुरुपी ताराउंने अदृश्य करनारा, अने सत्यशाली एवा ते सूर्ययशा पृथ्वीने पालवा लाग्या. तेमणे पण भरतजीनी पेठेज पृथ्वीने जिनप्रासोदोथी मंडित करी, तथा संघयात्रा करीने पोतानो जन्म पवित्र कर्यो; वली प्रभुना चरणनी पेठेज तेमणे हमेशां चतुर्दशी, तथा अष्टमी पर्वनुं आराधन कर्युं. वली ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने धरनारा श्रावकोने उलखी उलखीने तेमने ते पोताने घेर भोजन करावता. भरते जेम काकिणी रत्नथी श्रावकोने अंकित कर्या हता, तेम सूर्ययशाए तेमने सुवर्णनी यज्ञोपवितथी अंकित कर्या हता. महायशा आदिक केटलाक राजाउंए रुपानी यज्ञोपवितथी, तथा पछी बीजाउंए रेशमनी दोरीथी, तथा सुतरनी दोरीथी अंकित कर्या. सूर्ययशा राजाने उत्तम चरित्रवाला, तथा महापराक्रमी महायशा प्रमुख सवा लाख पुत्रो हता. जेम वृषभस्वामीथी इक्ष्वाकुवंश चाल्यो हतो, तेम सूर्ययशाथी सूर्यवंश पृथ्वीपर चालवा लाग्यो. हवे ते सूर्ययशा पण भरतजीनी पेठे आरिसाभुवनमां पोतानुं रुप जोता थका, तथा संसारनी असारताने ध्यावता थका केवलज्ञान पाम्या. पछी ते सूर्ययशा मुनीश्वर पृथ्वीपर विहार करता थका लोकोने बोध देवा लाग्या, तथा पछी कर्मोने जीती मोक्षे गया. तेमना पछी महायशा, अतिबल, बलभद्र, बलवीर्य, कीर्तिवीर्य, जलवीर्य, तथा दंडवीर्य नामना अनुक्रमे राजाउं थया, तथा तेउं सघला श्रावकोनी पूर्वनी पेठेज पूजा करता हता; वली तेउं सघला अनुक्रमे आरिसाभुवनमांज पोताना रूपने जोइ, वैराग्यथी केवलज्ञान पामी मोक्षे गया. तेउं सघलाए भरतार्धनुं राज्य कर्युं, तथा इंद्रे आपेलो

प्रभुनो मुकुट पहेर्यो हतो, ते पढीना राजाओ ते मुकुट मोटो होवाथी धारण करी शक्या नहीं; केमके, हाथीनो भार हाथीज उपाडी शके छे, बीजा उपाडी शकता नथी. ते पढीना भरतना वंशना सघला राजाओ अजितप्रभुसुधि सर्वार्थसिद्धे तथा मोक्षे गया. तेओ सघला संघपतिओ, चैत्यो करनारा, तीर्थोनो उद्धार करनारा, तथा अखंड प्रतापवाला हता. वली श्री युगादीश प्रभुना धर्मथी तेओ सूर्ययशानी पेठे अंशमात्र पण चलायमान थया नहीं, तथा ते धर्म पण उत्कृष्ट वृद्धिने पाम्यो; एवी रीते क्रोडो शाखाओवालो, तथा लक्ष्मी अने कीर्तिना आधारभूत, निर्मल अने उत्तम चरित्रवाला संतानरूपी मोतीओनां निवासरुप, श्री युगादीश प्रभुनो वंश, त्रणे लोकोने आलंबनरूप यष्टि (लाकडी) सरखो थयो; एवो ते वंश लक्ष्मी अने सुखना विलासरूप आनंदमाटे थाओ?

एवी रीते आचार्य महाराज श्रीधनेश्वरसूरिए बनावेला श्री शत्रुंजय माहात्म्यमां श्री भरतेशनुं निर्वाण, अष्टापदनो उद्धार तथा श्री सूर्ययशानां चरित्रनां वर्णन नामनो छठ्ठो सर्ग संपूर्ण थयो. श्रीरस्तु.

सप्तमः सर्गः

हवे श्री वृषभस्वामिना द्रविड नामनां पुत्र हता, जेनां नामथी बहु धान्यने उत्पन्न करनारो द्रविड देश प्रसिद्ध थयो. तेमना विनीत, परस्पर स्नेहवाला, तथा यशस्वी द्राविड अने वालखिल्ल नामना बे पूत्रो हता. मिथिलानगरीनुं राज्य द्राविडने दइने द्रविड राजाए शुभ भावथी प्रभुपासे दीक्षा लीधी हती. "एक राज्यथी बन्ने पुत्रो प्रते वैरभाव न थाय तो सारुं" एम विचारि तेमणे वालखिल्लने एक लाख गामो आप्यां हतां. अनुक्रमे लक्ष्मी अने कीर्तिथी वालखिल्लने वृद्धि पामतो जोइ द्राविडने जरा अदेखाइ आवी. त्यारे वालखिल्ले पण पोताना भाइने क्रोधित थएलो जोइने, विचार्युं के, मारा भाइने मारा राज्यनो पण लोभ थयो, माटे ते दुःखदायी लोभने धिक्कार छे ! ! लोभी माणसो भूतथी पीडाएलानी पेठे पिता, माता, बंधु, मित्र, स्त्री, पुत्र, तथा गुरुनी पण अवज्ञा करे छे. एवी रीते बन्ने जणाओ परस्पर द्वेषी थया. वली दुर्जनोथी प्रेराया थका अविश्वासी थइने तेओ एक बीजानां छलो जोवा

लाग्या. हवे एक दहाडो द्राविड राजाये पोताना नाना नाइने दावानल सरखुं वचन कह्युं के, तारे तारां स्थानमां रहेवुं, तथा मारुं नगर तजवुं. एवी रीते मोटा नाइनुं वचन सांनली गुस्से थइने वालखील्ल शल्य सहित पोताने नगरे गयो. त्यां ते पोतानां पालाउने तथा गाम अने देशना घणा अधिपतिउने एकठा करी, अहंकारथी मोटा नाइपर द्वेष करवा लाग्यो. पठी द्राविडे पोताना नाइनो वृत्तांत जाणीने लडाइ माटे नंना वगडावी. हाथी, घोडा, रथ, तथा पालाउथी विंटाएलो द्राविड राजा पृथ्वीने पण संकोचित करतो थको चालवा लाग्यो. तेना प्रयाणथी पृथ्वी एवी तो कंपवा लागी के, हजुसुधि पण कोइ वखते ते कंप्या करे छे. तेना सैन्यना नारथी समुद्र क्षोनायमान थयो, अने ते अन्यासथी आजे पण ते उछल्या करे छे. वली तेना सैन्योथी उडेली रजे आकाश अने पृथ्वीने एवी रीते आछादित कर्यां के, निगोदना गोलाना नावने ते नजवा लाग्यां. वली ते वखते लगामथी खेंचाएला घोडाउ, गुरुए कहेला धर्मथी खेंआएला अहंकारी जडोनी पेठे, स्थानमां रहेवा न लाग्या. एवी रीते पृथ्वीने आक्रमण करतो समुद्रोने क्षोनावतो, तथा दिग्गजोने दुःख देतो ते सेना सहित चालवा लाग्यो. ते वखते वालखिल्ल पण तेने पोताना देशमां आवेलो जाणी वेगथी लश्करसहित सामो आव्यो. पठी गुरुनी इछाथी पांच योजननो अंतर करीने, बन्नेए सैन्यनो पडाव नांख्यो. ते वखते बन्ने राजाना प्रधान पुरुषोए राजाउने पुछयाविना सल्लाह माटे दूतो मोकल्या. पण साम, दाम, नेद आदिकना वाक्योथी बन्नेमां समजावट नहीं थवाथी रणसंग्राम माटे तेउ तैयार थया. पठी वालखिल्ले द्राविडना केटलाक राजा तथा लश्करीउने दान आदिकथी पोताना पक्षमां कर्या, केम के दान सर्वने वश करनारुं छे. ते दरेक सैन्यमां दश क्रोड पालाउ, तथा दश लाख रथो. तथा हाथीउ, अने पंदर लाख घोडाउ हता; पठी बन्ने सैन्योनुं त्रणे लोकने नय आपनारुं युद्ध थयुं. हवे युद्धने दिवसे कुलीन शूरवीरो रोमांच धारण करता थका एकठा थया; तथा पठी उदार, स्वामिना नक्त, करेल छे अनेक महा संग्राम जेउए एवा, शरीरनी अने घरनी दरकारविना यश अने रणमां उत्सुक, क्षणे क्षणे वाजित्रना नादथी उलसायमान वीर्यवाला, तथा पोतानां वलथी जगतने

पण तृण समान गणता, एवा ते लश्करीउं चालवा लाग्या. सात जगोएथी मदने झरता, सर्व लक्षणोथी लक्षित थएला, उलसायमान शुंडदंडवाला, तथा मोटेथी गर्जना करता, तथा तीक्ष्ण अग्र भागवाला दांतोरूपी मूशलोथी शत्रुउने मारवामां कुशल, तथा पाखरोवाला एवा हाथीउं पण योद्धाउं सहित अग्र भागमां आव्या. तेजी, विस्तारवाली गरदनोवाला, पोताना अंगने कंइक लागवाथी पण द्वेषथी चमकता, वायुसरखा वेगवाला, तथा दरेक अंगप्रते प्रगट लक्षणोवाला, घोडाउं पण वेगथी चालवा लाग्या. सीमंतिनीनी पेठे चक्रोनी नेमीउंथी पृथ्वीपर गर्जारव करता, तथा सुवर्णनी नाराचथी मुद्रित थएला, दोडता घोडाउंथी खेंचाता, जंगम घर सरखा, तथा बख्तर सहित महा योद्धाउंवाला रथो पण चालवा लाग्या. पछी बन्ने सैन्योमां लश्करीउंनां गुणो गाइ, तेमने शूर चडावता थका छडिदारो भमवा लाग्या; अने कहेवा लाग्या के, हे वीरो! तमोने अमारा मुखथी तमारा स्वामी कहेवरावे छे के, आजे तमो रणसंग्राममांथी जयलक्ष्मीने खेंची लावजो; वली तमो खरेखर अत्यंत पराक्रमवाला, गुणी, कुलीन, तथा जयलक्ष्मीवाला छो, एम हुं जाणुं छुं. ते सांभली केटलाएक वीरपुरुषो तो पोतानी मेलेज उत्सुक थइने, समुद्रनां क्षोभ सरखी गर्जना करवा लाग्या; वली केटलाकोए तो ब्रह्मांड पण फाटी जाय तेवो भुजास्फोट कर्यो; केटलाको तो कोपरूपी अग्निना खीलासरखा शस्त्रो आकाशमां उछालवा लाग्या; केटलाको तो बख्तरसहित घोडाउंपर, हाथीउंपर, रथोपर, तथा उंटोपर, चड्या. ते वखते धनुष्यधारीउं धनुष्यना टंकारो करता थका संचार करवा लाग्या. ते वखते पायदलनी सेना पण एवी मली गइ के, तेमां एक तल पण पृथ्वीपर पडी शके नहीं. वली त्यां अश्वो पण पोतानुं नाम सफल करीने रथोने अगाडी अगाडी धसाववा लाग्या. ते वखते प्राणीउंना घातथी क्रोधें करी लाल आंखोवाला पाखरवाला मदोन्मत्त हाथीउं, पांखोसहित पर्वतोज होय नहीं जेम तेम चालवा लाग्या. वली ते वखते रणनी इच्छावाला वीर पुरुषोनां हृदयमां उल्लसायमान करनारां रणवाजित्रो वागवा लाग्यां. ते वखते तेउंनां नादरूपी समुद्र एवो तो उछल्यो के, आकाश अने पृथ्वीरूपी पोतानी मर्यादाने ते उलंघी गयो. ते नादथी वीर पुरुषोने शूर चड्युं, वीकणो जय

पामवा लाग्या, तथा घोडाउं चपल थया. ते वाजित्रोना नादोथी, तथा लश्करनां पदघातोथी आकाश अने पाताल त्रुटुं त्रुटुं थइ रह्युं. घणा प्रकारे लालन थएली पृथ्वी, ते वखते रेणुपणाने प्राप्त थइ, तथा घोडाउंना फुंफाटाथी आकाशमां गइ, अने त्यां पण न मावाथी जगतनी आंखोने ते आछादित करवा लागी. पछी अग्रेसरी वीरो पोतपोतानां गोत्र, पदवी, तथा बलनुं वर्णन करता थका बाणोथी लडवा लाग्या; तथा तेवी रीते सघला सैनिको सर्व बलथी रणवाजित्र वागते छते लडवा लाग्या. ते वखते कोइक घोडेस्वार शत्रुने हाथीपर चडेलो जोइ, त्यां वेगथी घोडाने लेइ जइ, हाथीनां दांतोपर घोडाना पगो रखावीने, तलवार खेंची वीरवृक्षनां फल सरखुं शत्रुनुं माथुं कापवा लाग्यो; तलवारने धारण करनारो कोइक पालो बाणथी आकुल थइने आडी ढाल धरवा लाग्यो, तथा बोलतो थको, पांजरामां रहेला पोपटनी तुलना करवा लाग्यो. कोइक सुभट तो कमलनालनी पेठे बाणोने पण नहीं गणकारीने, पोताना स्वामीना देखतां शत्रुने मारतो हवो. हथीयार रहित थएला कोइक सुभटे तो हाथीना मुखमांथी दांतो खेंचीने, तेनाथी शत्रुने हणीने पोताना स्वामीनी कृपा मेलवी. कोइक तो पडता शत्रुना शरीरथी उडेला लोहीना बिंदुउंथी, पोताना शरीरपर जयलक्ष्मीए छांटेला छांटणाउंवालो देखावा लाग्यो. कोइ सुभटे तो शत्रुना मांसोथी, गीध, शीयाल, वेताल, शाकिनी, प्रेत अने राक्षसोने परिवार सहित भोजन कराव्युं. ते वखते त्यां स्थलपर पण, उछलता घोडाउं रूपी मोजांउंवालो तथा हाथीउं रूपी खरावाउं वालो रुधिरनो समुद्र थयो; एवी रीते सात मास सुधि ते रणसंग्राम थयो, अने तेमां बन्ने सैन्योना दश क्रोड माणसोनो क्षय थयो. ते वखते गर्जारवथी हाथीउंना मदोने उतारनारो, तथा काजल सरखो श्याम वर्षाकाल आव्यो. वरसाद थवाथी, जे शूरा सुभटो कदापि पण रणसंग्रामथी पाछा हठ्या न होता, तेउं पण पाछा हठ्या. मूशल सरखी मेघनी धाराथी पीडाएला सुभटो, त्राणरहित थवाथी, पोतानुं रक्षण करवा माटे ढालो तैयार करवा लाग्या. ते वखते राजानी आज्ञाथी बन्ने लश्करो हठीने उंच प्रदेशमां झुंपडाउं करी रह्या. ते समये समस्त पृथ्वीपरथी कचरो धोवाइ गयो, तथा त्यां फरीने घास आदिक

उगी निकल्युं. वरसाद रूपी पोतानो स्वामी आव्याथी पृथ्वीरूपी स्त्रीए रागथी रोमांचित थइने जाणे घासना मिशथी लीली साडी पेहेरी होय नहीं, तेम ते देखावा लागी. ते वखते वरसादे चालतां पाणीउंथी खाडा, खीणो, नदीउं, द्रहो, तलावो विगेरे भरी दीधां. वली ते वखते राग द्वेष रूपी शत्रुउं जेम धर्मने, तथा दुर्जनो जेम सज्जनने, तेम मछरो तथा डांसो सैन्यने उपद्रव करवा लाग्या, जेम जेम रात्रि साथे मेघ गर्जारव करवा लाग्यो, तेम तेम स्त्रीनां वियोगीउं प्रते कामदेव कोपवा लाग्यो. तेउंना मनमां सिंचाएलो पण कामरूपी अग्नि, तपेला तेलनी पेठे फुत्कारोथी जाज्वल्यमान थयो. ते वखते कोइक सुभट तो पोतानी वहाली स्त्रीने मनमां याद लावीने लोकोवच्चे पण रडवा लाग्यो, पण मेघनी अत्यंत गर्जनामां तेने कोइए बोलाव्यो नहीं. जे सुभटो तीक्ष्ण शस्त्रोना घाने पण कमलनाल सरखा लेखता हता, तेउं पण कामदेवना बाणोने आ समये सहन करी शक्या नहीं. वली ते समये कोइक सुभटे नीला कंचुकवाली (कमखावाली) तथा उंचां पयोधरवाली (स्तनवाळी) याने (आकाशने) जोइने, एवी रीतनां उंचां (अक्कड) स्तनवाली पोतानी स्त्रीने याद करवा लाग्यो. वली ते वखते कोइक सुभट तो स्वप्नमां आवेली पोतानी स्त्रीने, पगे पडीने, तथा आंखोमां आंसु लावीने विषयसुखमाटे समजाववा लाग्यो के, हे प्रिये! जेम जेम आ वरसाद गाजे छे. तेम तेम मारे विषे कामदेव स्फुरायमान थाय छे, तथा आ तोफानी पवन अग्निनी पेठे दुःसह थइने मारुं जीवित हरे छे, तथा हे भामिनी! आ वीजली रूपी खड्गथी काल मनें बीवरावे छे, आ जलो मारां अंगोने बाले छे, कामदेव, पोतानां बाणोथी मने घायाल करे छे: माटे हे चंडे! तुं निर्दय थइ थकी मारापर केम गुस्से थाय छे? वली ते समये कोइ वियोगी सुभट तो बपैयाना "पियु पियु" शब्दो सांभलीने पोतानी स्त्रीनां ते वचनो संभालवा लाग्यो. एवी रीते वरसाद गाजते छते नवला वियोगी सुभटो तेवी दशाने प्राप्त थया, माटे कर्मनी तेवी चेष्टाने धिक्कार छे!! पछी एटलामां पृथ्वीने कमलो मंडित करती, अने उत्तम माणसोना चित्तनी पेठे जळोने (जलोने) पण प्रसन्न (निर्मल) करती थकी शरद ऋतु आवी. ते वखते

सर्व बाजुए धान्यो फलरूप थइने उत्तम कर्मोनी पेठे सर्वेने आनंद आपतां हतां. अंदर प्रसन्न थएली, (मध्य भागमां निर्मल बनेली) उत्तम मार्गप्रते जनारी, तथा बन्ने कुलोथी उज्ज्वल (बन्ने कांठाउथी शोभिती) एवी नदीउ कुलीन स्त्रीउनी पेठे वहेवा लागी. वली ते समये चंदन, चंद्रना किरणो, मनोहर चिनाइ वस्त्र, गायोनुं दूध, तथा नदीउनुं पाणी कोने सुखदायक न होतुं? वली ते वखते वर्षा ऋतुमां सिंचाएलो कामदेव तेउनां शरीरोने बालवा लाग्यो. वली ते समये योगमार्गनी पेठे सघलो मार्ग शुद्ध थयो, तथा वीतरागनी दृष्टिउनी पेठे सर्व जगोए दिशाउ प्रसन्न (आनंददायक) थइ. ते वखते हाथीना मदसरखी सुगंधिवला सप्तछदोथी भमराउ मकरंद मेलववा लाग्या. वली ते समये जिन धर्मनी पेठे आकाश उंचे प्रकारे निर्मलपणाने पाम्युं; अने ते राजाउनुं मन कुवाना पाणीनी पेठे कलुषताने पाम्युं. एटलामां विमलबुद्धि नामनो मंत्री पोताना स्वामी द्राविड राजा पासे आवी नमीने कहेवा लाग्यो के हे स्वामी! अहीं नजदीकमांज श्रीविलास नामना वनमां केटलाक तापसो पापोनी शांतिमाटे तप तपे छे. तेउ जीर्ण वल्कलोने धारण करे छे, तथा कंदमूल अने फलो खाय छे, माटे जो आपनी आज्ञा होय, तो अमो तेउने वांदवा जइए. ते सांभलीने राजा पण उठीने सैन्य सहित तेमनी पासे गयो. पछी त्यां तेणे वल्कलने धारण करता, पर्यंक आसनपर रहेला, जपमाला फेरवता, ध्यानमां लीन थएला, गंगानी माटीथी सर्व अंगे लेपन कराएला, जटामंडलथी मंडित थएला, युगादीश प्रभुनां चरण रूपी कमलपर राखेल छे दृष्टिरूपी भ्रमर जेमणे एवा, तपस्वीउ तथा बीजा धर्मार्थी लोकोथी सेवाएला. तथा हाथरूपी पात्रमां आहार करनारा एवा तपस्वीने जोया. पछी तेमनुं सुवल्गु नाम जाणीने, राजाए भक्तिथी भरेलां मनथी तेमनुं नाम लेइ तेमने नमस्कार कर्यो. त्यारे ते मुनिए पण ध्यान मुकीने. तथा हाथो उंचा करीने. तेमने आशिष आपी. पछी राजा पण परिवार सहित तेमनी वाणी सांभलवानी इच्छाथी योग्य स्थानके त्यां बेठो. पछी सांभलेल छे. श्री युगादीश प्रभुपासेथी वचनो जेणे एवा ते तापसे धर्मने स्फुरायमान करनारां मध मरख्यां मिष्ट वचनो कहेवा मांड्यां. हे राजन्

चलाचल मोजांवाला आ संसाररूपी समुद्रमां, विषयरूपी घुमरीमां लीन थएला माणसो डुब्या करे छे. शुभ मार्गप्रते चालता प्राणीने दुःखदायक विषयो पिशाचोनी पेठे छले छे. वली आ संसारमां विषयोथी जीताएलो प्राणी स्वछंद रीते संचरतो थको आ लोक अने परलोकमां पण तीव्र दुखो सहन करे छे. माटे ते पांचे इंद्रिउना विष सरखा विषयोने तजवाथी प्राणी कल्याणने प्राप्त थाय छे. वली दुष्ट राक्षसो सरखा विषयो थोडा थोडा सुखमां प्राणीने ललचावीने वारंवार छले छे. कषायरूपी वेरीउ छलकपटमां हुशीयार थया थका प्राणीनां पूर्व संचित पुण्यने वेगथी जोतजोतामां हरी लीए छे. आत्मभावमां रहेला जीवने दूभावनारो क्रोधरूपी महायोद्धो प्रकृतिमां संचरतो थको कोइथी पण अटकावी शकातो नथी. शरीररूप घरमां लागेलो क्रोधरूपी अग्नि पुण्यरूपी सर्व धननो नाश करे छे. माटे ते सर्व कषायोमां मुख्य छे. दया, धर्मरूपी वृक्षनां बीजरूप छे, अने क्रोधथी तो पापबंधन थाय छे, माटे क्रोधातुरने दया, धर्म, ने शुभ गति थतां नथी. प्रमादथी पण जीवहिंसा करवाथी नीच गति मले छे, अने क्रोधथी करेली जीवहिंसा तो नरकना कारणरूप छे; माटे एकेंद्रियनी पण हिंसा पंडितोए तजवी, अने क्रोधथी द्वींद्रियादिकनी हिंसा तो नरकने देनारी छे. परनो द्रोह, धर्मरूपी वृक्षने छेदवामां कुहाडा सरखो, बोधिबीजने बालवामां दावानल सरखो, तथा नरकरूपी द्वारने उघाडवानी कुंची सरखो छे. मनथी स्मरण करेली हिंसा पण दुःखसमूहने देनारी छे, माटे ते कायादिकथी जो करवामां आवे, तो तो क्षणवारमांज नरकमां लेइ जाय छे. राज्यादिक सुखोमां लीन थइने जेउ मनुष्यादिकनी हिंसा करे छे, तेउ पोतानुंज (आत्मारूपी) घर बाले छे. माटे हे राजन्! आ नरक आपनारा राज्यमाटे, तुं बंधु साथे वेर करीने, शामाटे क्रोडो माणसोनो नाश करावे छे? वली आ शरीर अनित्य छे, लक्ष्मी पाणीना परपोटा सरखी छे, तथा प्राणो तृणाग्नि सरखा छे, तो तेउने माटे तुं पापाचरण कर नहीं? वली कोइ कार्य प्रसंगे अन्य वेरीसाथे तो वेर थइ जाय, पण भाइ साथे जे वेर करवुं छे, ते तो (पोतानी) एक आंखनो नाश करवा तुल्य छे. निर्गुणी, दरिद्री, लोभी, तथा दुःखदेनारो, एवो पण सहोदर भाइ तो पोतानां जीव सरखोज छे. आकरा तथा क्रोधी, एवा पण

भाइ साथे मित्राइ करवी श्रेष्ठ छे, केम के जेथी कमल विकस्वर न थाय, तेवो शीत चंद्र पण शुं कामनो छे ? वली जे दुष्टो राज्यादिक माटे क्रोधथी बंधुउने पण मारे छे, तेउ पोतेज पोतानां अंगोने भांगीने अति लोलताथी भक्षण करे छे. वली हे राजन् महा लोभरूपी पिशाचने वश थइने तें आ बीजा बाहु सरखा भाइ साथे शुं रणसंग्राम आदर्यो छे ? माटे आ रणसंग्रामथी तुं अटक ? के जेथी सैनिको सुख पामे, तथा दिग्गजो सर्पो सहित विश्रांति पामे. एवी रीतनी तापसना मुखनी वाणी सांभलीने दयाथी कोमल हृदयवालो थएलो राजा, धर्मनी स्थिति सरखी वाणी केहेवा लाग्यो के, हे मुनिराज ! श्री भरत महाराजा, सूर्ययशा, बाहुबलि आदिक प्रभुना पुत्रोए पण कारणने लेइने मांहोमांहें युद्ध करेलां छे; तथा तेउए ते युद्धमां हाथी, घोडा, मनुष्य, उंट वीगेरेने मारेलां छे, पण तेथी तेउ दूषित थया नथी, तेने हेतु शुं छे ? वली मारो भाइ क्रोधित थइ खोटे मार्गे प्रवर्तीने पोतानी मेलेज पोताना सगाउनो अनादर करीने संग्राम माटे तैयार थयो छे. तो पण मारी आज्ञामां रही, संग्रामथी विरक्त थइने भले ते पोतानुं राज्य भोगवे, अने हुं पण सैन्यसहित मारे स्थानके जइश. त्यारे ते तापसे तेनुं वचन सांभलीने आदरसहित धर्मनां सर्वस्वरूप वचन कह्युं के हे राजन् ! तें श्री भरतादिकनुं जे दृष्टांत आप्युं ते आ जगोए घटतुं नथी, तेनी कथा तुं सांभल ? एक भाइए तो मुनिने दान देवाथी चक्रीनी लक्ष्मी मेलवी हती, अने बीजाए मुनिनी वैयावच्चथी फलरूपे बाहुनुं बल मेलव्युं हतुं. अने बन्नेने संग्राम थवामां पण तेज कारण हतुं के, चक्रीनुं चक्र आयुधशालामां प्रवेश करतुं न होतुं, अने बाहुबलिने अहंकार हतो. वली तेउ बन्नेए देवोना केहेवाथी जगतने संहार करनारो रणसंग्राम तजीने द्वंद्वयुद्ध अंगीकार कर्युं हतुं. माटे हे राजन् ! भरते अने बाहुबलिए जे कार्य कर्युं, ते तुं याद कर ? अने तेमां तेउने दूषण शामाटे लगाडे छे ? वली श्री युगादीश प्रभुना ते बन्ने पुत्रो महा पराक्रमी तथा महा गुणवानो अने मनोहर चरित्रवाला हता, अने तेथी तेउ क्षणवारमांज केवलज्ञान पामी मोक्षे गया छे. वली ऋषभ प्रभुना पौत्र ज्यारे एवुं कार्य करे. त्यारे तारे तेनुं पण दृष्टांत देवुं जोइये, अन्यथा न देवुं जोइए. एवी रीतनी वाणी सांभलीने, जरा लज्जित थयेलो ते राजा,

धर्मना रागथी मस्तक नमावीने कहेवा लाग्यो के, हे मुनि ! में अज्ञानपणाथी ते फोकट दृष्टांत दीधां, केम के, क्यां पामर एवो काच? अने क्यां चिंतामणि रत्न? ते बन्नेने शुं तुल्य गणाय? माटे हे तापसराज! कार्यमां तत्पर एवा अमोने हवे आप कहो के, आ लोक अने परलोकमां सुख थाय, एवुं कयुं कार्य करवुं? त्यारे तापसे कह्युं के, हे राजन्! पापकार्यरूप आ रणसंग्रामथी तुं विराम पाम? तथा आ मारो जाइ, आ मारुं राज्य इत्यादि ममत्व जावनें तुं ठोडी दे? हमेशां पाठल लागेलुं एवुं मृत्यु ज्यांसुधि आवी पहोंच्युं नथी, त्यांसुधिज आ सघली अखंड संपदाउ तथा अखंड राज्य ठे. प्राणो क्षणिक ठे, तथा आ शरीर रोगनां घररूप, अने चपल ठे; तथा राज्य संध्याकालनां वादलां सरखुं ठे, माटे आत्महितने तुं चिंतव? वली आत्मा शरीरने माटे सघलां कार्यो करे ठे, पण पोता माटे कंइ पण करतो नथी; माटे विचक्षणे तो आ असार देहथी आत्मार्थ साधवो. विष्टा, मुत्र, मांस, चरबी, हाडकां विगेरेथी सहित, वहेता द्वारोवालुं, रोग अने मेलथी व्याकुल, अत्यंत चपल, तथा महा अपवित्र आ शरीर ठे, तो तेने माटे कयो बुद्धिवान माणस दुर्गति देनारुं पाप आचरे? वली आ असार तथा अनित्य शरीरथी ज्यारे शाश्वतो धर्म मली शके, त्यारे बुधिवानो ते शामाटे ग्रहण न करे? ते वाणी सांजलीने उत्कृष्ट वैराग्यने धारण करतो ते बुद्धिनां जंडार सरखो राजा, ते सुवल्गु मुनिनां चरणोने नमीने कहेवा लाग्यो के, हे करुणासागर! आपज मारा गुरु, देव, तथा जवसमुद्रथी तारनारा ठो, माटे हवे कृपा करी मने दीक्षा आपो? पठी मुनिना कहेवाथी राजा तुरत पोताना जाइनी क्षमा मागवाने हर्षथी तेना सैन्यमां गयो. एकला पोताना जाइने आवतो जाणीने वालखिल्ल पण तुरत पोताना आसनपरथी उजो थयो; तथा पृथ्वीपर लोटीने मोटा जाइने नम्यो, तथा जाणे दोषोनेज दूर करतो होय नहीं, तेम ते पोताना केशोथी तेमना धूलिवाला चरणोनुं प्रमार्जन करवा लाग्यो. अने कहेवा लाग्यो के, के हे जाइ! आप मने पुज्यनिक ठो. तथा पुर्व जवनां पुण्योथीज मारे घर पधार्या ठो, तो कृपा करीने आ राज्य ग्रहण करो? एवी रीतनी नाना जाइनी जक्तिथी खुशी थएलो, तथा मुनिना वचनने याद करतो ते द्राविड राजा पण पवित्र गुणोवाली

वाणी कहेवा लाग्यो. के हे भाइ! सद्बोधनी प्राप्तिथी, नरकरूपी वृक्षप्रते वरसाद सरखा आ मारां राज्यने पण मारे छोडवानी इच्छा छे, तो हवे तारुं राज्य ते शीरीते ग्रहण करुं? आ सप्तांग राज्य खरेखर सात नरकोज छे, अने आ चतुरंगी सेना, दुर्गतिरूप शय्यानो चोंतरो छे. सुगतिप्रते गमन करता प्राणीने वचमां रहेली आ राज्यलक्ष्मी छत्रना मिशथी तेनुं आच्छादन करे छे. (अर्थात् सुगतिमां जतां अटकावे छे.) वली चामरो तो तृष्णातुर राजानी देवपणानी इच्छाने हणीने तेने तिर्यंच गतिमां लेइ जाय छे. वली हाथीउ कानोथी, घोडा पुंछडांउथी, कृपाणो पोतानां कंपनथी, अने वारांगनाउ चामरोथी राज्यनुं चपलपणुंज जणावे छे. वली जे राज्यमां हमेशां बीक, द्रोह विगेरे छे, तेवा राज्यने धिक्कार छे. वली हे भाइ में तने कोपित कर्यो छे, तेथी हवे तने हुं खमाववा माटे आवेलो छुं; अने हुं तो आ राज्य छोडीने, दीक्षारूपी साम्राज्य ग्रहण करीश. एवी रीतनी पोताना मोटा भाइनी वाणी सांभलीने, वालखिल्ले कह्युं के, हे ज्येष्ट बंधु! पूर्वनी परेंज तमारो अनुचर थइने हुं पण तुरत दीक्षाज लेइश. एवी रीते ते बन्ने भाइउ प्रीति पूर्वक विचार करीने सैन्यो सहित व्रतनी इच्छाथी सुवल्गु मुनिनां चरण समीपे आव्या. पछी तेउये पोतानां राज्योपर मंत्रि सहित पुत्रोने स्थापीने दश क्रोड माणसोसहित दीक्षा लीधी. तेउ सघला जटाने धरनारा, कंदमूल अने फलोनुं भक्षण करनारा, गंगानी माटी शरीरपर चोलनारा, तथा सर्व वाचतोमां हितबुद्धिवालाउ थया; वली तेउ हमेशां मृगना वालको साथे रहीने (अर्थात जंगलमां वसीने) ध्यानमां आरूढ थइ, जपमालाथी श्री युगादीश प्रभुने जपता हता. वली तेउ परस्पर दोष रहित थइने धर्मकथाउ करता हता, तथा आर्जव गुणमां रहीने एवी रीते तेउये लाख वर्षो व्यतीत कर्या. एटलामां त्यां नमिमुनिना बे विद्याधर शिष्यो शुभ्र किरणोथी आकाशने दीपावता थका आकाशमांथी उतर्या. मूर्तिवंत धर्म अने शांतरससरखा ते बन्नेने जोइने, सघला मुमुक्षु तापसोए अत्यंत भक्तिथी तेउने नमस्कार कर्यो; तथा पुछ्युं के, आप क्यांथी अहीं पधार्या? तथा हवे कइ जगोने जइ पवित्र करशो? त्यारे मुनिउए धर्मलाभ देइने कह्युं के. अमो प्रभुनी सेवामाटे

पुंडरिक गिरिपर जइशुं. पछी ते तापसोए पुछयाथी ते मुनिउए तेउना उद्धार माटे शत्रुंजयनी कथा कहेवा मांडी. केम के तेवा माणसो जगतनुं हित इच्छनाराउ होय ठे. अनंत पुण्यनां आधाररूप, तथा संसाररूपी समुद्रमां वाहाण समान, एवो शाश्वतो श्री शत्रुंजय पर्वत सुराष्ट्र देशमां जयवंतो वर्ते ठे. ते शत्रुंजय पर अनंता अरिहंत, मुनिप्रमुख माणसो तीर्थनां योगथी मोक्षे गएला ठे, तथा हवे पण जशे. ते अद्भूत शत्रुंजय गिरि सिद्धलक्ष्मीनो क्रीडा करवानो पर्वत ठे, तथा त्यां गएला प्राणीउ तुरत मोक्षसुख मेलवे ठे. त्यां शाश्वता तथा मुक्तिना स्वामी श्री युगादीश प्रभु विराजे ठे, तेथी त्यां गएला माणसो मोक्षसुखनो स्वाद अनुभवे ठे. ते पर्वतरूपी किल्लामां रहेला प्राणीने अनंत भवोथी पाछल लागेला कुकर्म रुपी शत्रुउ पराभव करी शकता नथी. ते पर्वतपर सूर्योदयथी जेम अंधकारो, तथा सज्जनना संगथी जेम दुर्गुणो, तेम, हत्यादिक पापो पण क्षणवारमां नाश पामे ठे. एवी रीतनी शत्रुंजय गिरिनी कथा सांभलीने ते तापसो पण ते मुनिउनी पाछल त्यां जवा लाग्या. एवी रीते तेउ जीवयलाथी चालता हता, त्यां तेउए अगाडी किनारापर उगेला वृक्षोथी व्याप्त थएला एक उत्तम सरोवरने जोयुं. ग्रीष्म ऋतुना भयंकर सूर्यनां किरणोथी क्लिष्ट थएला, अने तेथी विस्तार पामती वृक्षोनी छायामां बेठेलां वनवासी पशुउथी ते सरोवर सेवाएलुं हतुं. वली ते निर्मल सरोवर प्रगट थती कमलोनां मकरंदनी सुगंधिथी, सर्व दिशाउमांथी अवेला भमराउथी पण सेवाएलुं हतुं. हवे ते तापसो पण पोताना तापनी शांति माटे त्यां जइ आनंदथी तेउनी छायामां विश्राम लेवा बेठा. त्यां तेउए किंचित घूर्णायमान आंखोवाला, शिथिल शरीरवाला, श्वासोश्वासथी नीचुं थएल छे पेट जेनुं एवा, खुल्ला मुखवाला, पीला पगोने हलावता, गंगानां नीर सरखी उज्वल कांतिवाला, हंसोथी वींटाएला, तथा मृत्युनी अणीपर रहेला एक हंसने जोयो. ते वखते माणसोना आववाथी, शत्रुंजयनां आश्चर्यथी जेम प्राणीउनां पापकर्मो, तेम बीजा हंसो त्यांथी तेने छोडीने चाल्या गया. हवे ते वखते एक दयालु मुनिए पात्रमां पाणी लावीने रसायननी पेठे ते हंसना मुखमां मेल्युं. ते जलथी ते हंसने ते सुख थयुं, के जे सुख तेने जाणे मोक्षसुखज देखाडतुं होय नहीं. तेम थयुं. " शरण र-

हित तथा आ दुखदायी संसाररूपी कांतारमां ज्रमता एवा तारा जीवने चार शरणाउं थाउं? वली जेजे ज्रवमां जे कोइ जीवने तें विराध्या होय, तेउं सघलाने तुं खमाव? तथा तेउं पण ताराप्रते क्षमा करे. वली तुं शत्रुंजय गिरिने तथा श्री युगादीश प्रज्रुने स्मर?" एम कहीने ते मुनीए तेने वारंवार नमस्कारो दीधा, ते नमस्कारथी पीडा रहित थइने, तथा पंच नमस्कारनुं स्मरण करतो थको ते हंस समाधिथी मृत्यु पामीने सुधर्मा देवलोकमां उत्तम देव थयो. हवे ते बे मुनिउंनां शुद्धोपदेशथी ते तापसोए पण त्यां मिथ्यात्वि क्रीया तजीने जिनव्रत अंगीकार कर्यु. तेउंनां जे केशो अगाउ जटाबंधथी वृद्धि पामता हता, तेउंनो मूलमांथी लोच करीने तेउं पृथ्वीपर लोटवा लाग्या; पठी तेउं तेमनी पासे मिथ्यात्वने आलोचीने व्रतधारी थया थका ज्रवसमुद्रमां दुर्लज्र एवा सम्यक्त्वने ज्रजवा लाग्या. पेहेलेथीज जेम जिनप्रते ज्रक्तिवाला हता, तेम व्रतमां पण ज्रक्तिवाला थइने, ते बन्ने मुनिउंनी आज्ञा लेइ शत्रुंजयप्रते जवा लाग्या. मार्गमां लोकोने बोध देता, पृथ्वीने पवित्र करता, तथा जीवयत्ना पूर्वक चालता थका तेउंए सिद्धगिरिराजने जोया. श्री युगादीश प्रज्रुरूपी मुकुटें करीने मंडित थएला, नवा गुंथेला अंबोडावाला उत्तम वहुनां मस्तकसरखा, चोतरफथी दीपको सरखा रत्नोनां किरणोवालां एकसोने आठ सुवर्णनां शिखरोथी शोज्रता, तथा पुण्यना राशि सरखा अने मोक्षनी वेदिकासरखा ते विमलाचलने जोइने ते मुनिउं अत्यंत आनंद पाम्या. ते गिरिराजनां दर्शनथी हर्षित थएला, तथा कर्मरूप व्याधिनां नाशथी हलवा थएला ते मुनिउं मोक्ष मेहेलना आंगणां सरखा ते पर्वतपर चडवा लाग्या. त्यां तेउं रायणने त्रण प्रदक्षिणा देइने हमेशां, मोगरा तथा कपुरसरखी उज्ज्वल कांतिवाला श्री ऋषज्रदेव प्रज्रुने नमता हता. वली तेउं उलसायमान ज्रक्तिथी प्रेराया थका पोतानी शक्ति मुजब, श्री युगादीश प्रज्रुना अनंता गुणोने हर्षथी गाता हता. हवे मासक्षपणने अंते ते बन्ने ज्ञानी एवा विद्याधर मुनिउं, ते दश क्रोड साधुउंने केहेवा लाग्या के हे साधुउं! तमोए आ संसारमां अशुज्र ध्यानना योगथी नरक देनारुं अनंतुं कर्म पेहेलेथीज उपार्जन करेलुं ठे, ते आ क्षेत्रनां प्रज्रावथी नाश पामशे, माटे तमारे अहीं रहेवुं, वली तमो अहीं अंते केव-

लज्ञान पामीने मोक्ष जशो. एम ते सर्वने कहीने ते चारण मुनिउ पोतानी कांतिथी पृथ्वी तथा आकाशने दीपावता थका आकाश मार्गे चाल्या गया. हवे ते द्राविड तथा वालखिल्लादिक तपस्वीउ, मासोपवास सहित त्यां जिनध्यानमां तत्पर थया थका रह्या. पछी सघलां मोहनां अंगो क्षीण थवाथी, निर्यामणा करीने, तथा मन, वचन अने कायानां योगथी सघला जंतुउने खमावीने, तथा दुष्ट एवा आठे कर्मोनां क्षयथी अंतर्मुहुर्तमांज केवल पामी ते दश क्रोड मुनिउ त्यां मोक्षे गया. ते वखते ते हंसना जीवे देवलोकमांथी आवीने मोटी ऋधिथी तेउनो उंचे प्रकारे निर्वाणमहोत्सव कर्यो. पछी ते देव जिनेश्वरो प्रते पोतानुं स्वरूप कहीने पवित्र थयो थको, ते तीर्थने हंसावतारनुं नाम आपीने, पोताने स्थानके गयो. एवी रीते ते दश क्रोड मुनिउ कार्तिक सुदि पुनेमने दिवसे चंद्र कृतिका नक्षत्रमां आवते छते त्यां शत्रुंजयपर मोक्षे गया. जेम पुंडरिकजी चैत्री पुनेमने दिवसे, तेम आ मुनिउ कार्तिकी पुनेमने दिवसे त्यां मोक्षे गया, माटे ते बन्ने पर्वो कहेलां छे. वली बीजी जगोए बीजे वखते यात्रा, तप, दान, तथा देवपूजनथी जे फल थाय छे, तेथी पण अधिक फल आ तीर्थमां कार्तिकी पुनेमे ते कार्यो करवाथी थाय छे. वली अहीं सो सागरोपम रहेवाथी पण जे कर्म क्षय थतुं नथी, ते कर्म कार्तिक मासमां मासक्षपण करवाथी क्षय थाय छे. वली विमलाचलपर कार्तिकी पुनेमनो एकज उपवास करवाथी, प्राणी, ब्रह्महत्या, स्त्रीहत्या, तथा बालहत्याना पापोथी मुक्त थाय छे. जे माणस अरिहंत प्रभुना ध्यानमां रहीने अहीं शत्रुंजयपर कार्तिकी पुनेम करे छे, ते सर्व सुखो भोगवीने मोक्ष मेलवे छे. जे माणसो वैसाक, कार्तिक, तथा चैत्र आदिक मासोमां पुर्णीमाने दिवसे संघसहित श्री पुंडरिकगिरिपर दान, तथा तप करे छे, तेउ मोक्ष सुखने भजनारा थाय छे. हवे ते द्राविड, तथा वालखिल्लनां पुत्रोए त्यां आवीने, एवी तो प्रासादनी पंक्तिउ बनावी, के जेथी पुण्यना समूहोथीज जेम, तेम ते सिद्धगिरि पर्वत अत्यंत शोभवा लाग्यो. एवी रीते ते तीर्थमां क्रोडो मुनिउए मोक्षसुख मेलव्युं छे. अने तेथी ते पवित्र तीर्थ त्रणे जगतोमां प्रख्यात थयलुं छे. श्री भरत महाराजनां मोक्षपछी क्रोड पूर्व गया बाद ते द्राविड अने वालखिल्ल प्रमुख साधुउ मोक्षे गया.

श्री वीरप्रभु इंद्रने कहे छे के, हे इंद्र ! एवी रीते आ अवसर्पिणीमां आ शत्रुंजय तीर्थनो प्रथम उद्धार श्री भरत चक्रीश्वरे कर्यो; हवे ते पछी बाकीना उद्धारोनी स्थिति तुं सांभल ?

श्री भरतमहाराजाना वंशमां अयोध्या नगरीमां, तेज अने यशनो स्वामी आठमो दंडवीर्य नामनो राजा थयो. ते त्रण खंड भरतनो अधिपति थयो थको तथा भरत महाराजनी पेठेज श्रावकोनुं पूजन करतो थको राज्य पालतो हतो. एक दहाडो ते प्रगट भक्तिवंत एवा शोल हजार राजाउ सहित उत्तम आसनपर बेठेलो हतो. भरत महाराज पछी छ क्रोड पूर्व गया बाद एक दिवसे इंद्र सभामां बेठो थको प्रभुना गुणोनुं स्मरण करवा लाग्यो. पछी ते तेमनी सेंकडो शाखावाला वंशनी स्तुति करवा लाग्यो; छेवटे तेणे पोतानां ज्ञानचक्षुथी, स्फुरायमान यशवाला, पोताना वीर्यथी चंद्र अने सूर्यना तेजने पण हरता, हजार आंखोवालानी पेठे पोताना चक्षुथी अनेकोने जोता, हजार हाथवालानी पेठे दिशाउमांथी सघली लक्ष्मीने खेंचता, हजार जीभवालानी पेठे सर्वने पोतानां कार्योमां जोडता, पोतानां मस्तकपर श्री युगादीश प्रभुना मुकुटने धारण करता, सर्व आभूषणोनां तेजोथी भासुर थएला, मूर्तिथीज महा पराक्रमी, न्याय अने धर्ममां तत्पर, युगादीश प्रभु प्रते दृढ भक्तिवाला, जगतने पालवामां शक्तिवंत, घणा राजाउथी सेवाता, चामरोथी वींझाता, धर्मनुं माहात्म्य ग्रहण करता, तथा सभामां सुवर्णना सिंहासनपर बेठेला दंडवीर्य राजाने जोया. त्यारे खुशीथी पोतानुं मस्तक धुणावीने, प्रभुना वंशमां भक्तिवालो ते इंद्र श्रावकनो वेष लेइने अयोध्यामां आव्यो. देवदुष्य सरखी त्रेवडा सूत्रनी यज्ञोपवीतथी हृदयमां भूषित थएला, एक वस्त्रवाला ब्रह्मव्रतथी पवित्र थयेला, बार व्रतधारी होवाथी बार तिलकोने धारण करता. तथा जरा पीली चोटलीमात्र केशवाला, भरतजीए बनावेला अर्हंत, मुनि, तथा श्रावक धर्मरूप, दूषण रहित चार वेदने ग्रहण करनारा, तथा पताका सरखा हाथथी शुद्ध जलें करी आचमन लेता एवा ते (इंद्ररूप) श्रावकने जोइ दंडवीर्य राजा तेमनापर आदरयुक्त मनवालो थयो. पछी राजाए तेने भोजन कराववा माटे रसोइआउने हुकम कर्यो. त्यारे ते पण इच्छा-

पथिकीनुं स्मरण करतो थको तेउनी साथे दानशालामां गयो. त्यां केटलाको वेदना अंगो भणता हता, केटलाको शांतिपाठ करता हता, केटलाको परमब्रह्मनो जाप जपता हता, केटलाको ध्यानमां तत्पर हता, केटलाको त्रिकाल देवपूजा माटे त्रिकरण शुद्धिथी जलें करी स्नान करता हता, केटलाको मुनिउने वांदीने दान देता हता, केटलाको तपरूपी अग्निमां कर्मरूपी काष्टोथी अहिंसानी आहूति करता हता, केटलाको आत्मारामनां भावरूपी पाणीथी स्नान करी पवित्र मनवाला थया हता; एवा ते श्रावकोने त्यां जोइने इंद्र अत्यंत आनंद पाम्यो. हे श्रावक! अमो तमोने वांदीए छीए, एम करीने उठेला एवा तेउनी साथे ते पवित्र पाणीथी आचमन करीने, भोजनशालामां दाखल थयो. हवे ते कपटथी श्रावक थएलो इंद्र क्रोडो श्रावकोने माटे पकावेलुं अन्न दिव्य प्रभावथी क्षणवारमां खाइ गयो; अने कहेवा लाग्यो के, अरे! रसोइआउ! मने क्षुधातुरने अन्न पीरसो? शा माटे तमो दंडवीर्य राजाना पुण्यने व्यर्थ करो छो? पछी ते वात रसोइआउए राजाने कहेवाथी, तेणे त्यां आवी, तेने भुख्यो, तथा शिथिल शरीरवालो जोयो. पछी ते कपटी श्रावके राजाने श्रद्धायुक्त श्रावक जाणीने दीनभाव देखाडी कठिन वचन कह्युं के, हे राजन्! तमोए आ जे रसोइआउने राख्या छे, ते श्रावकोने ठगनारा छे, केम के, मने एकने पण तेउ तृप्त करता नथी. वली आ पेटभरा तथा लालचु रसोइआउ आवी रीते हमेशां बीजा श्रावकोने पण ठगे छे. ते सांभली जरा क्रोधातुर थएला राजाए सो मूडा जेटलुं अन्न पोतानी नजरे पकावाव्युं. पछी ते कपटी श्रावक देवमायाथी, अग्नि जेम सर्व काष्टना समूहने तेम ते सघलुं राजाना देखतां खाइ गयो; तथा पछी ते राजाने कहेवा लाग्यो के, हे भरतना कुलमां भूषण समान महाराजा! शुं तमारे तमारा पूर्वजोनी कीर्ति वधारवी नथी? वली क्षुधातुर एवा मने एकने पण ज्यारे तमो संतोषी शकता नथी, त्यारे भरतजीना पुण्यने तमो कुलीन पुत्र शुं आवीज रीते वधारशो? वली जे माणस पोतानां पूर्वजोनां कुल, कीर्ति तथा पुण्यने वधारतो नथी, एवा मानाने क्लेश करावनारा पुत्रो शुं कामनां छे? वली ज्यारे तुं तारा पूर्वजो सरखुं कार्य नथी करी शकतो, त्यारे तेना सिंहासनपर

शा माटे बेसे छे? तथा मस्तकपर तेमनो मुकुट पण शा माटे धारण करे छे? वळी आ श्रावकोने भोजन कराववानां तारा कपटी डाकडमाकने छोडी दे? अने तारी शक्तिमुजब कर? फोकट माणसोने आ दानशालानां डोळथी शा माटे तुं ठगे छे? तेवी रीतनी तेनी निष्ठुर वाणी सांभळीने पण राजा गुस्से थयो नहीं, पण पोतानां पुण्यनी अपूर्णताने जाणीने उलटो ते पोताना आत्मानी निंदा करवा लाग्यो. पछी राजाना भावने जाणीने पवित्र वाणीवाळो मंत्री कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! आ कोइ देव कपटथी श्रावकनुं रूप लेइने अहीं आव्यो छे. वळी श्रावकना वेषमां जो तमारी भक्ति होय, तो ते आचरो? केमके तमारी भक्तिथी खुशी थइने कदाच ते पोतानुं स्वरूप प्रकट करशे. ते सांभळी राजाए तेनी सपीपे चंदन अने अगुरुनो धूप करी पवित्र वचन कह्युं के, हे देव! तमो श्रावकनो वेष लेइने मने प्रवित्र करवाने कोण आवेला छो? तथा मारापर कृपा करीने आप प्रगट थाओ? वळी हवे आपे मने खेद आपवो योग्य नथी, तथा हुं श्रावक वेषधारी मनुष्यने निश्चयथी नमुं छुं. वळी जिनमां, जिनधर्ममां, सुगुरुमां, तथा आपप्रते जो मारी खरेखरी भक्ति होय, तो आपनुं स्वरूप प्रगट करीने, मारुं पुण्य सफळ करो? एवी रीतनां तेनां भक्तियुक्त वचनो सांभळीने अंतःकरणमां खुशी थएला इंद्रे तेनी लोकोवच्चे वारंवार प्रशंसा करी. वळी तेना मनने खेदयुक्त जाणीने इंद्रे तुरत कपटी रूप छोडीने, पोतानुं मूळरूप धारण कर्युं. त्यारे तेने इंद्र जाणी दंडवीर्ये आश्चर्य सहित हर्षथी तेने नम्यो, तथा इंद्रे पण तेने हाथथी उंचकीने आलिंगन कर्युं, तथा तेने ते कहेवा लाग्यो के, हे चरमशरीरी महासत्त्व! तमोने धन्य छे, प्रभुना कुळमां उत्पन्न थएला तमोने जोइ, हुं श्री युगादीश प्रभुने याद करुं छुं. वळी आजे में सुधर्मा सभामां बेठां थकां प्रभुना तेवा गुणयुक्त वंशनुं स्मरण कर्युं; तेमां पूर्वजोए अंगीकार करेलुं कार्य करनार; तथा अधिक गुणवान तमो छो; तथा तमो कुलीन पुत्रथी प्रभुनो वंश आजे पण शोभी रह्यो छे. जे पुत्रो वंशनी स्थिति, गुणो, धर्म, कीर्ति तथा अखंड राज्यनी वृद्धि करे छे, तेज खरा पुत्रो छे. वळी हे राजन्! तमो भरतना कुळमां उत्पन्न थया. माटे तमारे पण तेना सरखुंज कार्य करवुं जोइये; अने

तेथी तमो शत्रुंजयनी यात्रा तथा तीर्थोद्धार करो ? वली हुं तमोने देवोसहित त्यां आवी ते कार्यमां मदद करीश; माटे आ स्वामीवत्सलनी पेठे ते कार्य माटे पण तमो त्वरा करो ? ते सांनली राजाए कह्युं के, हे इंद्र ! आपे मने ठीक ते चेताव्युं; अने तेथी आप मने तो नरत तुल्यज ठो. वली श्री युगादीश प्रजुना नक्त आप समान बीजा कोइने पण हुं जाणतो नथी, केम के, नरत महाराजना स्नेहथी आपे अहीं आवी मारापर कृपा करी. हवे हुं तो जाणे संघसहित हवडेज यात्रामाटे प्रयाण करुं छुं, अने हवे आपणो पाठो मेलाप पुंडरिक गिरिपर थशे. पठी खुशी थएला इंद्रे तेमने बाण सहित धनुष्य, दिव्य रथ, हार, तथा कुंडलो आप्यां. पठी इंद्र तो जगतमां उद्योत करता थका स्वर्गे गया, अने दंडवीर्य राजाए यात्राना प्रयाण माटे नंना वगडावी. ते नादथी, ते जाणे दूतथीज खेंचाया होय नहीं, तेम लोकोना समूहो वेगथी पोतपोताना वाहनो सहित त्यां एकठा थया. पठी शुन दिवसे स्नानथी पवित्र थइ, तथा पवित्र वस्त्रो पेहेरीने, अने जिनबिंबने नमीने राजाए लोको सहित प्रयाण कर्युं. घणां सैन्यथी पृथ्वीना विस्तारने हरतो, उडती रजोथी तेजस्वीउना तेजने हरतो, चार प्रकारनां धर्मनी वृद्धि माटे चतुर्विध संघ सहित, चतुरंगी सेना सहित, चार प्रकारनी बुद्धिवालो, चारे गतिउना नाश माटे चारे कषायोने तजतो, चार लोकपालोपर पांचमो लोकपाल, चार महाधरो, चार सामंतो, चार मंत्रीउ, तथा चार सेनापतिउथी वींटाइने मार्गे चालतो थको ते राजा शोनतो हतो. वली आगल रहेला देवालयमां विराजेला जिनबिंबना प्रनावथी कोइ पण क्षुद्र देवो तेमने परानव करी शक्या नहीं. एवी रीते घणां देशोने उलंगीने, तथा ते देशोनां राजाउ पासेथी नेटो लेइने केटलेक दिवसे ते काश्मीर देशमां आव्यो. पठी प्रनातमां जेवो ते राजा सैन्य सहित प्रयाणनी इछा करे ठे, तेटलामां बे पर्वतोए तेनो मार्ग रोक्यो. त्यारे अग्र सैनिके आवी ते वृतांत राजाने कह्यो. त्यारे राजा पण आश्चर्यथी तेमनी समीप आव्यो, त्यारे ते बन्ने पर्वतो प्रलयकालना पर्वतोनी पेठे परस्पर आफल्या. ते बन्नेना आफलवाथी तणखाउनो समूह एवो तो उठल्यो के, जाणे वज्र सरखो तेजस्वी ते वड-

वनलज होय नहीं, तेम देखावा लाग्यो. पछी तेमांथी त्रणे जगतोने बालवामां समर्थ, एवो अग्नि निकळ्यो, तथा ते उत्तम मुनि तरफथी आवेली तेजोलेश्यानी पेठे कोइथी पण सहन थइ शक्यो नहीं. ते जोइ सुमति प्रधान राजाने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! आ उपद्रव कोइ दुष्ट देवनो करेलो छे; आप तेने शांत करवा माटे पूजादिक कार्यो करो? के जेथी ते संतोष पामी पोतानुं स्वरूप प्रगट करशे. एवी रीतनां मंत्रिनां वचनथी राजाए पोते पवित्र पूजादिक कार्य कर्युं, केम के संत पुरुषो प्रायें करीने परने तुष्टमान करनारा होय छे. पछी ते शांति उपायोथी पण ते देव जरा पण संतुष्ट थयो नहीं, केम के वडवानलने जलथी सींच्याथी ते उलटो विशेष रीते बलवा लागे छे. पछी राजाए स्मरण करवाथीज इंद्रे आपेलुं शत्रुने नाश करनारुं धनुष्य आव्युं, तथा तेने पूजी तेणे ते हाथमां धारण कर्युं. ते धनुष्यनां तेजथी राजा बखतर पेहेरेलानी पेठे शोभवा लाग्यो. पछी राजाए तेने जरा खेंचीने तेनो टंकार कर्यो के, तुरत तेउ वज्रपातनी बीकथीज जेम, तेम दूर थया. पछी राजाये वज्रथी तथा देवोथी पण न वारी शकाय, तेवा ते बाणने धनुष्य साथे जोड्युं. ते वखते नजदीक रहेला लोको शंका करवा लाग्या के, शुं आ सूर्यने जीर्ण पत्रनी पेठे भेदी नाखशे? के कपासीउंनी पेठे ताराउंने उडाडी नाखशे? के आकडाना फुलनी पेठे चंद्रने फेंकी देशे? के कीर्ति नहीं मावाथी ब्राह्मांडने तोडी नाखशे? तेटलामां तेजस्वी आंखोवालो, भयंकर, विंध्याचलपर रहेला अग्निनी पेठे मस्तकपर पीला केशोवालो, गुफा सरखां नस्कोरांवालो, वायुथी वृक्षोने भांगतो, दांतोना पीसवाथी उत्पन्न थती अग्निनी ज्वालाथी भयंकर देखातो, तालवृक्ष सरखा उद्दंड बाहुवालो, शीला सरखा दृढ हृदयवालो, अंकुशसरखा नखोना समूहथी फाडेला छे, सिंहोने जेणे एवो, चपल क्रीडाथी नजदीक रहेला हाथी आदिकोने ग्रहण करतो, तथा मारुं रक्षण करो? मारुं रक्षण करो? एवां वचनो बोलतो एक वेताल प्रगट थयो. तेनां ते वचनथी राजा धनुष्य खेंचीने कल्पांतकालना सूर्यनी पेठे स्थिर रह्यो; तथा तेणे तेने कह्युं के, अरे नीच! तें आ मार्ग शामाटे रुंध्यो छे? तथा तारी पासे कोनुं बल छे? अने तुं कोण छे? ते सघलुं कहे? त्यारे ते वेताल कहेवा लाग्यो के, हे दयालु दंडवीर्य

राजा ! आ तमारा सेवकपर कोप नहीं करो ? वली हे राजन् ! जीर्ण वस्त्रथी जेम सूर्यने, तथा तृणथी जेम अग्निने, तेम में जे तमोने रोध्या छे तेनुं कारण तमो सांभलो? हुं प्रथम वियद्गति नामनो एक विद्याधरोनो स्वामी हतो; अने तमोए मने संग्राममां जीत्यो हतो. तेनी पीडाथी मरीने स्वल्प आयुष्यथी, घणा भवोमां भटकीने, कोइक पुण्यने योगे आ वनना पर्वतमां हुं वेताल थयो. पछी विभंगज्ञानथी ईक्ष्वाकु वंशमां भूषण समान एवा तमोने अहीं आवेला जाणीने तमारो मार्ग रोकीने हुं बेठो. गरुडना पक्षघातथी जेम नागपाशो तेम तमारा धनुष्यना टंकारथी आ पर्वतो फाटी गया; वली अगाउ हुं कोइ राक्षस, दानव, के मनुष्योथी पण जीतायो न होतो. पण हवे तो तमारां बलने सहन करवाने हुं शक्तिवान नहीं होवाथी आपनाथी हुं जीतायो छुं. अने हे स्वामी ! हवे हुं आपनी आज्ञाथी अहीं चाकारनी पेठे रहीश; पछी राजाए पण तेने त्यांज स्थाप्यो. पछी राजाए क्रोध रहित थइ, स्नान करी, तथा प्रभुने पूजीने, अने भोजन करीने परिवार सहित त्यांथी प्रयाण कर्युं. एवी रीते अखंड प्रयाणथी केटलेक दिवसे ते भरतजीनी पेठे शत्रुंजय नजदीक पहोंच्यो. पछी त्यां आनंदपूरमां भरतनी पेठेज तेमणे जिनपूजा, तीर्थपूजा, संघपूजा, आदिक सर्व कार्य कर्युं. पछी ते शत्रुंजयी, भरतकुंड, तथा बीजा कुंडोमांथी पण तीर्थोदक लेइने शत्रुंजय पर्वतपर चड्यो; तथा छेवटे मुख्य शिखरपर चडीने, तेणे तेने त्रण प्रदक्षिणा दीधी. त्यां भरत चक्रीए बनावेलां तेमनी कीर्तिरूपी वृक्षसरखां प्रभुनां प्रासादोने जोइने ते अत्यंत आनंद पाम्यो. हवे ते वखते अवधिज्ञानथी त्यां दंडवीर्य राजाने आवेला जाणीने इंद्र पण देवोनी साथे आव्यो; तथा तेणे मुख्य शिखरने, चैत्यने, रायणने, समवसरणने, तथा प्रभुनां पगलांने पूज्यां; पछी त्यां ते राजाए इंद्रे कहेली विधिपूर्वक, दारिद्ररूपी वृक्षने बालवामां दावानलसरखुं संघपूजा, उत्सव आदिक शुभ कार्य कर्युं. वली त्यां मुनिए कहेला ते गिरिना माहात्म्यने सांभलतां थकां तेणे त्रण अठाइ महोत्सव पूर्वक तीर्थोत्सव कर्यो. पछी त्यां प्रभुना मंदिरोने जीर्ण थएलां जोइने दुःखित थइ, इंद्रनी अनुमतिथी तेउनो तेणे उद्धार कर्यो. पछी तेणे स्वनामस्थपर पण उत्सवपूर्वक इंद्रनी अनुमतिथी मंदिरादिकोनो उ-

द्धार कर्यो. पछी तेमणे आबु, वैज्ञार, अष्टापद तथा सम्मेतशिखरपर पण संघ सहित यात्रा करीने उद्धार कर्यो. पछी तेणे पोतानां राज्यमां आवीने, त्यां पण क्रोडोगमे जिनमंदिरो कराव्यां, तथा तीर्थयात्रा करी. पछी एक दहाडो जरतनी पेठेज आरिसा जुवनमां पोतानां शरीरने जोता थका, अने संसारनी असारताने मनमां धारता थका ते दंडवीर्य राजा केवलज्ञाननी संपदा पाम्या. पछी व्रत पालता थका, अने परनो उपकार करता थका ते दंडवीर्य महामुनि मोक्षे गया. एवी रीते आ शत्रुंजय तीर्थनो बीजो उद्धार करीने जरतना वंशमां थएला दंडवीर्य राजा मोक्ष पाम्या.

एवी रीते बीजो उद्धार जाणवो.

हवे एक दहाडो ईशानेंद्र, ज्यां हमेशां केवली अरिहंत विचरे छे, एवां महाविदेह क्षेत्रमां जक्तिथी जिनेश्वरोने नमवा माटे गयो. त्यां सिंहासनपर बेठेला, तथा त्रण छत्रथी शोजता प्रजुने स्तवीने, तथा नमीने ते तेमनी पासे बेठो. पछी प्रजु लोकोने आनंदकारी देशना देवा लाग्या के, जेम जवोमां मनुष्य जव, तथा घरोमां दीपक तेम सघला द्वीपोमां जंबूद्वीप श्रेष्ठ छे. वली सर्व देशोमां सुराष्ट्र देश, तथा सर्व पर्वतोमां पुंडरिक गिरि उत्तम छे, केम के त्यां कीर्तनथी पण पापोने हरनारा श्री ऋषजदेव प्रजु बिराजे छे. वली ते जरतक्षेत्र, तथा त्यांना मनुष्योने पण धन्य छे, केम के त्यां रहेला शत्रुंजय तीर्थमां तेउ प्रजुने पूजे छे. वली हमेशां विमलाचल तीर्थने ध्याववाथी पापोनी शांति थाय छे, केम के, जो सूर्य नजदीक होय, तो शुं अंधकारनी प्रवृत्ति होय? क्रोडो जवोमां पण डुर्लज एवुं बोधिबीज शत्रुंजय तीर्थमां प्रजुनुं ध्यान धरवाथी ततक्षण प्राणीउने प्राप्त थाय छे. सर्व तत्वोमां जेम सम्यक्त्व तथा सर्व देवोमां जेम जिन, तेम सर्व तीर्थोमां उत्तम एवो शत्रुंजय गिरि डुर्लज छे. एवी रीतनी प्रजुनी देशना सांजलीने, ते तीर्थने जोवानी इछाथी ईशानेंद्र शत्रुंजय गिरिप्रते आव्यो. त्यां प्रजुने जोतां थकां, स्तवतां थकां, तथा जिनवाणीनुं समर्थन करतां थकां तेणे देवो सहित अठाइ महोत्सव कर्यो. वली त्यां जिनजक्तिनी पेठे, किंचित जीर्ण थएलां जिनमंदिरोनो तेणे दीव्य शक्तिथी उद्धार कर्यो. एवी रीते दंडवीर्य राजा पछी सो सा-

गरोपम गया बाद ईशानेंद्रनो करेलो पुंडरिक गिरिपर त्रीजो उद्धार थयो. एवी रीते त्रीजो उद्धार जाणवो.

हवे एक दहाडो चैत्री पुनमने दिवसे देवो श्री पुंडरिकगिरिप्रते ऋषभदेव प्रभुने नमवा माटे आव्या. ते वखते हस्तीसेन नामना नगरमां सुहस्तिनी नामनी देवी कालनां वशथी क्रोडो देवीओथी वींटायी थकी मिथ्यादृष्टि थइ हती. ते महा बलवान, तथा जैनधर्मनो द्वेष करनारी हती, अने तेणीए तालध्वज प्रमुख क्षेत्रदेवोने पोताने वश करी लीधा. ते देवी स्वेच्छाचारी थइने, परद्रोह, मद्य तथा मांसमां आसक्त थइ थकी पोतानां गर्वथी उद्धत थइने तीर्थने नुकशान करवा लागी. वली ते देवी देवोनां नहीं आववाथी, कपटथी, घणां बीजा पर्वतोने शत्रुंजय सरखा करीने लोकोने ठगती हती. हवे त्यां तेवा घणां पर्वतोने जोइ आश्चर्यथी एकबीजानां मुखो जोता थका ते देवो विचारवा लाग्या के, शुं आ पृथ्वीपर घणा शत्रुंजय पर्वतो छे? अथवा अमारी भक्तिथी तेणे घणां रूपो कर्यां छे.? अथवा एक पर्वतपर अमो सघलाने नहीं माता जोइने, आ प्रभाविक पर्वत हजारो रूपपणाने शुं प्राप्त थयो छे? एवी रीते चिंतातुर थएला देवोए अवधिज्ञाननो उपयोग दीधा विनाज ते सर्व जगोए स्नात्रपूजादिक कार्य कर्युं. पछी अठाइमहोत्सव करीने जेटलामां तेओ जवाने इच्छे छे, तेटमां तेओये विमलाचलपर एके शिखर जोयुं नहीं. त्यारे तेओए संभ्रांत थइ एवो तर्क बांध्यो के, आपणी कुभक्तिथी शुं आ विमलाचल अदृश्य थयो? वली जगतने पावन करनारा ते तीर्थने आपणे हमणाज अनेक प्रकारनुं जोयुं हतुं. अने हवे तो ते एक पण नजरे पडतुं नथी! पछी तेओए अवधिज्ञानथी ते देवीनुं कपट प्रगट रीते जोयुं. त्यारे सर्व देवोए क्रोधातुर थइ प्रलयकालनां सूर्यनी पेठे तेणीतरफ भयंकर कोपज्वाला मुकी. ते कोपज्वालाथी अत्यंत बलती थकी परिवार सहित आवीने ते देवी तेओने नमवा लागी, तथा दीनवाणी बोलवा लागी के, हे देवो! तमो अमारा स्वामी छो, अने अमो तमारी दासीओ छीयें, माटे तृण समान एवी अमोपर क्रोध करवो उचित नथी. अमोए अज्ञानताथी आ कार्य कर्युं छे. हवे पछी तेम नहीं करीयें, माटे अमारो आटलो अपराध आप क्षमा करो? त्यारे देवो कहेवा लाग्या के, अरे! दुष्ट!

अने तीर्थनो घात करनारी ! तुं अमारी पेठे बीजा लोकोने पण आवी रीते ठगे छे ! ! वली हे मांसभक्षणी ! तें आ तीर्थनी आसातना करी ! तने तीर्थनी रक्षा माटे राखेली हती, अने तें उलटो तीर्थनो नाश करवा मांड्यो ! वली तें भरतप्रते दासभाव राखीने आवुं अकार्य कर्युं ? माटे हमणाज तारो अमो नाश करीशुं. ते वचन सांभली भयभीत थएली ते हस्तिनी देवी प्रभुने शरणे गइ, केम के, तेम कर्याविनां भवथी जेम, तेम देवोनां क्रोधथी तेणीनो छुटकारो न होतो. पछी तेणीने श्री युगादीश प्रभुने शरणे गएली जोइने, देवो दूर उभा थका कहेवा लाग्या के, अरे दुष्ट ! आ तें शुं कर्युं ? त्यारे दांतोथी आंगलीउनां टेरवां चावती थकी ते देवी कहेवा लागी के, हे दयालु देवो ! तमो कृपा करी क्रोधने तजो ? वली हुं हवेथी कोइ पण दिवसे मनथी पण जो आवुं कार्य चिंतवुं, तो मने आ जगतथी नमाएला युगादीश प्रभुना चरणोना सोगंद छे; वली आ बाबतमां जगतनां भावोने जोनारा तमो साक्षीउ छो; तेथी हवे कृपा करीने मारा आ एक अपराध माटे तमो क्षमा करो ? एवी रीतनां दीन वचनोवाली एवी तेणीने देवोउ विसर्जन करी, केम के, उत्तम माणसो नमता अपराधीपर गुस्से थता नथी. पछी त्यारथी ते हस्तिनी देवी हस्तिसेन नगरमां रहीने संघनी भक्ति करती थकी तीर्थनी रक्षा करवा लागी.

हवे ते वखते चोथा देवलोकना माहेंद्र नामना भक्तिवान इंद्रे ते शत्रुंजयपर जरा जीर्ण थएलां प्रभुना मंदिरोने जोयां. त्यारे ते विचारवा लाग्यो के, अहो ! जगतने हितकारी एवा आ तीर्थमां आ शुं थयुं ? खरेखर ते आ देवीनुं चेष्टित छे. एम विचारि दीव्य शक्तिथी वार्धकी मारफते तेणे ते प्रासादो नवाजेवां समराव्यां. वली एवीज रीते तेणे बाहुबलि, तालध्वज, कदंबगिरि, तथा रेवताचल आदिक शिखरोपर पण उद्धार कर्यो. एवी रीते इशानेंद्रे करेला उद्धार पछी क्रोड सागरोपम गया बाद विमलाचलपर माहेंद्रनो करेलो चोथो उद्धार जाणवो.

एवी रीते चोथो उद्धार जाणवो.

हवे एक दहाडो महाविदेह क्षेत्रमां जिननो जन्मोत्सव करीने देवो आठमा नंदीश्वर द्वीपमां गया. त्यां आठ दिवसो सुधि जिनार्चन तथा महोत्सव करीने श्री ऋषभ प्रभुने नमवाने विमलाचलपर आव्या. त्यां

तेमणे भक्तिथी आठ दिवसो सुधि प्रभुनी पूजा करी, तथा पुण्यनां मंदिर सरखां ते जिनप्रासादोने किंचित जीर्ण थएलां जोयां. तेथी महा भक्तिवान ब्रह्मेंद्रे सर्व देवोनी अनुमोदना पूर्वक दिव्य शक्तिथी विमलाचलपर उद्धार कर्यो. एवी रीते माहेंद्रे करेला उद्धार पछी दश क्रोड सागरोपम गया बाद आ शत्रुंजयपर ब्रह्मेंद्रे करेलो पांचमो उद्धार थयो.

एवी रीते पांचमो उद्धार जाणवो.

हवे एक दहाडो चमरेंद्र आदिक भुवनेंद्रो स्वेच्छाथी तथा भक्तिथी नंदीश्वर द्वीपे गया. त्यां तीर्थयात्रा माटे निकलेला, तथा कामदेवने जीतनारा वे विद्याधर मुनिओ आव्या. ते मुनिओए ते देवोने, सांभलवाथी पण पवित्र करनारो श्री पुंडरिक गिरिनो महिमा कह्यो. एवी रीते ते मुनिओथी प्रेराएला ते देवो शत्रुंजय तीर्थप्रते तेओनी साथे आव्या. पछी त्यां तथा सर्व तीर्थोमां यात्रा, दान, पूजा तथा भक्तिथी मंदिरोनो उद्धार करीने, तेओ पोताने स्थानके गया. एवी रीते ब्रह्मेंद्रे करेला उद्धार पछी लाख क्रोड सागरोपम गया बाद विमलाचलपर भुवनेंद्रे करेलो छहो उद्धार थयो.

एवी रीते छहो उद्धार जाणवो.

वली वच्चे पण श्री शत्रुंजय पर्वतपर माणसो, तथा देवोनां करेला घणा पवित्र उद्धारो थया छे.

एवी रीते श्री भरतथी मांडीने सगर चक्री सुधिनां कल्याणना निधान सरखा, तथा तीर्थनो उद्धार करनारा, अने इंद्रोथी पण वखणाएला आशयवाला राजाओ थया; तथा तेओ अंतरंग छ शत्रुओने, जीतीने, ज्ञानी थया थका अनुक्रमे मोक्षे गया.

एवी रीते श्री वर्धमान प्रभुनां मुखरूपी कमलमांथी निकलेलां वचननां सारने मेलवीने इंद्रो निर्मल आनंद पाम्या, के जेथी तेमने जाणे मोक्षसुखज मल्युं होय नहीं तेवा तेओ थया.

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वर सूरिए बनावेला महातीर्थ श्री शत्रुंजयना महात्म्यमां द्राविड तथा वालखिल्लनुं चरित्र, तथा तीर्थोद्धारनां वर्णननो सातमो सर्ग संपूर्ण थयो. श्रीरस्तु.

अष्टमः सर्गः

जेमनुं चरित्र *चार मनोहर आश्चर्योथी आश्रित थएलुं छे, एवा श्रीमान् नाभि राजनां पुत्र (युगादीश प्रभु) वांछित अर्थने आपो ?

श्री वीर प्रभु इंद्रने कहे छे के, हे इंद्र ! तीर्थंकरना मनोहर चरित्रवाला बाकीनां उद्धारोनी स्थिति पण तुं सांभल ? कर्मरूपी शत्रुउथी नहीं जीताएला, तथा कामदेव रूपी शत्रुने जीतनारा, एवा अजितनाथ प्रभुने नमस्कार करीने, तेमनाज गुणोनुं हुं वर्णन करुं छुं.

जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां, शत्रुउ जेनी साथे लडी नथी शकता एवी, तथा पृथ्वीमां प्रख्यात, अने निर्भय अयोध्या नामनी नगरी छे. जे नगरीप्रते आवेला शत्रुउ मणिना कोटमां प्रतिबिंबित थएलां पोतानांज शरीरोने जोइ, सन्मुख आवेला शत्रुउनी बीकथी नाशी जता हता. वली ज्यां हमेशां अरिहंत प्रभुना मंदिरोमां वागता घंटाउनां मूर्तिवंत धर्मराजाउ सरखा नादोथी पापरूप राजा तो नाशीज जतो हतो. त्यां श्री ऋषभदेव प्रभुना वंशमां बीजा अजितनाथ प्रभु सुधिमां असंख्याता राजाउ मोक्षे गया, तथा एक सर्वार्थसिद्धे गया. अनुक्रमे ते वंशमां ते नगरीमां जिनध्यानथी शुद्ध बुद्धिवाला, शत्रुउने जीतनारा, महा प्रभाववाला, तथा गुणरूपी माणिक्यनां रोहणाचल सरखा जितशत्रु नामे राजा थया. तेणे शत्रुउनां, तथा याचकोनां ललाटपर रहेली कर्मनिर्मित अक्षरोनी पंक्तिउ लोपी हती. तेमने उत्तम गुणोवालो, तथा महा भक्तिवंत सुमित्र नामे नानो युवराज भाइ हतो. हवे ते जितशत्रु राजाने, मुखथी दासरूप करेल छे चंद्रने पण जेणीए, तथा विजयना आख्यानमां दृष्टांत सरखी विजया नामे राणी हती. शीलरूपी पर्वतपर चडेली, तथा असंख्य गुणोवाली ते राणी पतिना हृदयने पोता तरफ खेंचती हती. वली बन्ने पक्षोथी (पांखोथी) शुद्ध, तथा विवेकवाली ते राणी हंसीनी पेठे पतिनां निर्मल मनमां (मानस सरोवरमां) वास करीने रहेती हती. वली जगतने मित्र सरखा ते सुमित्र युवराजनी उत्तम च-

---

*(१) युगलीआंउनी नहीं शिखवेली पण विवेकनी लक्ष्मी. (२) श्रेयांस कुमारनी दाननी वासना. (३) चक्रीथी पण बाहुबलिनुं अधिक बल. (४) भोगो भोगवतां थकां पण भरत महाराजने थएलुं केवलज्ञान. ए चारे आश्चर्यो जाणवां.

रित्रोथी यशवाली यशोमती नामे स्त्री हती. ते गजगामिनी स्त्रीए पोतानां गुणोथी (दोरीउंथी) तारुण्यरूपी वनमां संचार करनारां, तथा कामतृष्णाथी व्याकुल थएलां पोतानां स्वामिना मनरूपी हरिणने बांधी लीधुं हतुं. हवे एक दहाडो चंद्रशालामां सुतेली, तथा थोडी जागती अने थोडी उंघती, एवी विजया राणीए पाछली रात्रिए, हाथी, सिंह, वृषन्न, लक्ष्मी, पुष्पमाला, चंद्र, सूर्य, ध्वजा, कलश, क्षीरसमुद्र, पद्मसरोवर, देवविमान, रत्नोनो राशि, तथा अग्नि, एवी रीते चौद स्वप्नोने पोतानां मुखमां प्रवेश करतां जोयां, अने तेथी ते अत्यंत आनंद तथा सुख पामी. वैसाक सुदी तेरसने दिवसे चंद्र रोहिणी नक्षत्रमां आवते छते न्नवनां क्षयथी अनुत्तर विमानथी चवीने, कोइक देव निशीथ समये समाधि पूर्वक तेणीनी कुक्षिमां आवी अवतर्यो; ते वखते जगतमां मोहोटो उद्योत थयो, तथा नारकिउने पण सुख थयुं. हवे सुमित्रनी स्त्री यशोमती पण रात्रीए तेज स्वप्नोने जोइ अत्यंत आनंद पामी. पछी प्रन्नाते ते बन्नेए हर्षथी पोतपोतानां स्वामिउने ते व्रतांत कह्यो, त्यारे तेउए पण स्वप्नवेत्ताउने ते संबंधि फल पुछ्युं. त्यारे ते स्वप्नवेत्ताउए पण विजया राणीथी जिननी उत्पत्ति, तथा यशोमतीथी चक्रीनी उत्पत्ति थवानी कही, त्यारे तेउए ते स्वप्नवेत्ताउने धनथी हर्ष करीने खुशी कर्या. हवे उत्तम गर्न्नना अनुन्नावथी, जीवोनी अनुकंपाथी, तथा स्वन्नावथी मंद गतिवाली अने उत्तम दोहलावाली तेउ बन्ने थइ. हवे नव मासो अने साडा आठ दिवसो संपूर्ण थया बाद महासुदी आठमने दिवसे चंद्र रोहीणी नक्षत्रमां आवते छते विजया राणीए निशीथ समये सोनेरी कांतिवाला, तथा हाथीना चिन्हवाला, अने जगतमां उद्योत करनारा पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते आसनो कंपवाथी छपन्न दिक्कुमारीउए आवीने न्नक्तिथी सर्व सूतिकर्म कर्युं. वली ते समये चोसठ इंद्रो पोताना आसनो कंपवाथी प्रन्नुनो जन्म जाणीने हर्षित थया थका शोन्ननिक विमानोथी, तथा उत्तम परिवारोथी, घणा द्वीपोने उलंगीने विनिता नगरीमां आव्या. पछी सौधर्मेंद्र जिनमाताने अवस्वापिनी निद्रा दइने, तथा तेमना पडखामां प्रन्नुनुं प्रतिबिंब मेलीने प्रन्नुने ग्रहण कर्या. पछी नंदनथी सौम्य करेला तथा कुंकुमरूप करेला हाथमां प्रन्नुने लइने इंद्र

क्षणवारमां मेरुप्रते पहोंच्यो. त्यां पांडुक वनमां अर्ध चंद्रना आकारवाली शाश्वती अने स्फटिकनी अतिपांडुकंबला नामनी शिला छे. त्यां पूर्वाचल जेम सूर्यने, तेम इंद्रे मनोहर सिंहासनपर बेसीने प्रभुने खोलामां लीधा. त्यां वली एक रूपथी इंद्रे छत्र, बे रूपथी चामर, तथा एक रूपथी वज्र धारण कर्युं. एवी रीते भक्तिवंत इंद्रे पांच रूपो धारीने बीजाउने स्नात्र माटे आज्ञा करी. पछी एक हजारने आठ माटीनां, सुवर्णनां, रूपनां, मणि अने रत्नोनां, सोना अने रूपानां, तथा मणि अने सोनानां, तीर्थोदकथी भरेला कलशोथी प्रभुने दरेके अभिषेक कर्यो. वली तेउए प्रभुने गोशीर्ष चंदनथी, दीव्य सुगंधिवाली वस्तुउथी, पुष्पोथी, फलोथी, तथा पत्रोथी भक्तिथी पूज्या. पछी उत्तम भाववालो सौधर्मेंद्र जरा हठीने तेमनी मनोहर स्तुति करवा लाग्यो के, हे त्रण लोकनां नायक! देवाधिदेव! भगवन्! तथा सर्व जनोमां उत्तम! अजितनाथ प्रभु तमो जय पामो? वली हे प्रभु श्री युगादीश प्रभु पछी पचीस लाख क्रोड पूर्व गया बाद मारां भाग्यथी आपनो जन्म थयो छे. वली आपना अवतारथी, मने (मलनारी) पूजा अने देशनाना श्रवणथी हुं मारा जन्मने पण सफल मानुं छुं. वली हे स्वामी आजे आ भरतखंड, हुं आदिक देवो, नागकुमारो तथा मनुष्यो पण पवित्र थया. वली आप भवरूपी समुद्रमां बुडता प्राणीउने तारनारा छो. वली हे कृपालु स्वामी! सुवामां, बेसवामां, चालवामां, ध्यानमां तथा सर्व कार्योमां आप मारा चित्तमां वसो? वली हे गुणोना आधारभूत, अनंत, अव्यक्त, तथा जगत्स्वामी एवा बीजा अरिहंत, तमो धर्मोपदेश देवा माटे अवतर्या छो. वली हे भगवन्! आपनी सेवा, स्तुति तथा ध्याननां पुण्यथी भवभवप्रते आपना चरणकमलो मारा मनमां रहेजो? एवी रीते पंचांग प्रणामपूर्वक प्रभुनी स्तुति करीने ते इंद्र प्रीतिथी तेमने पूर्वनी पेठे लेइने वारंवार जोवा लाग्यो. पछी ते पोताने धन्य मानतो थको देवोसहित तुरत हर्षथी जितशत्रु राजाने घेर आव्यो, पछी त्यां मातानी निद्राने, तथा प्रभुना प्रतिबिंबने खेंची लेइ, तथा प्रभुने पलंगपर मुकीने ते नंदीश्वर द्वीपे गयो. त्यां सघला देवो आठ दिवसोसुधि जिननो जन्मोत्सव करीने, प्रभुनुंज ध्यान धरता थका पोतपोताने स्थानके गया.

हवे तेज रात्रिए संपूर्ण दोहलावाली यशोमतीए पण संपूर्ण समये एक पवित्र पुत्रने जन्म आप्यो. पछी स्नात्रोत्सव समये नहीं जोएला प्रभुने जोवा माटे जाणे उत्सुक थयो होय नहीं, तेम सूर्य उदयाचलपर चड्यो. ते वखते सूर्यनां किरणोनी श्रेणि जिनवाणीनी पेठे जगतमां अंधकारने हणती थकी कमलोनो उदय करवा लागी. प्रभातमां राजाए पुत्रना जन्मनी वधामणी आपनारने बहु दान आपीने तेनुं जन्मनुं दारिद्र हर्षथी दूर कर्युं. वली ते वखते धनदे इंद्रनी आज्ञाथी आषाढ मासना मेघनी पेठे नगरमां सर्व जगोए सुवर्ण रत्न तथा वस्त्रोनी वृष्टि करी. ते वखते नगरमां ध्वजा, तोरणो, माणिक्यनां स्वस्तिको, पुष्पमालाउ विगेरेथी मोटो उत्सव थइ रह्यो. हवे वीजे दिवसे राजाए स्थिति प्रतिस्थिति करी, तथा त्रीजे दिवसे वन्ने पुत्रोने सूर्यचंद्रनुं दर्शन कराव्युं. बठे दिवसे उत्सवपूर्वक गोत्रीउनी अनुमतिथी राजाए पोताना पुत्रनुं अजित, तथा यशोमतीना पुत्रनुं सगर नाम पाड्युं. हवे श्रीअजितनाथ प्रभु इंद्रे मुकेली पांच धावोथी, ते जाणे पांच समितिउथीज होय नहीं तेम, लालन कराता थका वृद्धि पामवा लाग्या. पछी जगतना आलंबनरूप प्रभु लाकडी झालीने पृथ्वीपर धीमे धीमे चालवा लाग्या. ते वखते इंद्रनी आज्ञाथी देवो, मयूरो थइने, घोडा थइने, तथा हाथीउ थइने प्रभुने रमाडवा लाग्या. एवी रीते संसारथी विरक्त थएला पण प्रभु, मातपिताना तथा देवोना आनंद माटे वालोचित क्रीडा करवा लाग्या.

हवे सगरकुमार पण समय आव्याथी अत्यंत हर्षित थया थका मातपितानी खुशीमाटे गुरुपासेथी सर्व कलाउनो अभ्यास अनुक्रमे करवा लाग्या. सुवर्ण सरखी कांतिवाला, तथा उत्तम लक्षणोवाला तेउ वन्ने अनुक्रमे मध्यम वयने पाम्या. साडा चारसो धनुष्यनी उंचाइवाला तथा अतुल रूप अने लावण्यवाला तेउ वन्ने जगतने आनंद आपवा लाग्या. पोतानां भोगावली कर्मोने जाणता एवा प्रभु मातपिताना हर्ष माटे राजकन्याउ परण्या. केम के कर्मोनुं फल वलवान छे. वली सगरे पण मातपिताना हर्ष माटे घणी राजकन्यासाथे लग्न कर्युं. तेथी ते ताराउमां जेम चंद्र, तेम शोभवा लाग्या.

हवे प्रभुए देवोथी सेवाता थकां अढार लाख पूर्व कुमारपणामां

गाड्यां. पछी जितशत्रु राजाए पोताना वहाला पुत्रने अत्यंत गुणवान जाणीने, तेमनी इछा नहीं छतां पण पराणे राज्यपर स्थापन कर्या. सुमित्र युवराजे पण जितशत्रु राजानी अनुज्ञाथी पोताना स्थानके पोताना पुत्र सगरने स्थापन कर्यो. पछी जितशत्रु, सुमित्र, तथा बीजा राजाउए पण धर्मघोष गुरुपासेथी दीक्षा लीधी.

हवे सुरासुरोथी पण नहीं जीताता प्रभु देवोथी सेवाया थका राज्य पालवा लाग्या. ते वखते सगर युवराज पण राजानी (प्रभुनी) आज्ञाथी घणा देशोने साधीने जयवान थया थका पाछा आव्या. एवी रीते प्रभु ज्यारे राज्य करता हता त्यारे, देशमां ईतिउ के भय न होतो, तथा सुखम कालनी पेठे लोको हमेशां सुखीया हता. एवी रीते प्रभुए त्रेपन लाख पूर्व सुधि राज्य पालीने पोतानुं भोगावली कर्म खपाव्युं. हवे एक दहाडो उद्यानमां वसंत ऋतु आव्याथी प्रभु लोकोना उपरोधथी राणीउं सहित त्यां चालवा लाग्या. पछी कोकिलोनां कोलाहलोथी, तथा भमराउना ऊंकारोथी पोतानी शोभा देखाडता, तथा वृक्षोरूपी उंचां मस्तकोथी प्रभुने जोता, अने तेउनी शाखारूपी हाथोथी प्रभुने बोलावता एवा ते वनमां प्रभु पहोंच्या. विकस्वर थएला पुष्पोनी सुगंधवाला, तथा छायाथी ताप विनाना, एवा ते वनमां प्रभु लोकोनी साथे क्रीडा करवानी इछा करवा लाग्या. ते वखते कोइक स्त्री पगना अग्र भागपर उभीने वृक्षोपरथी फलो तोडवा लागी, त्यारे ते पोतानां स्तनोरूपी गुछाउथी शोभती थकी जंगम वेलडी सरखी देखावा लागी. वली ते वखते कोइक स्त्रीनुं समस्त शरीर तो वृक्षोथी ढवाएलुं हतुं, अने फक्त मुख देखातुं हतुं, तेथी लोकोने अन्य जातिनां वृक्षमां अन्य जातिनां पुष्पनी उत्पत्तिनी शंका थती हती. वली ते वखते कोइक स्त्री तो एवी रीतना क्रोधथी नखोयें करीने पुष्पोने छेदवा लागी के, मारी आ आंगलीउज कामदेवना पांच बाणो छे, आ पुष्पो तो कंइ हिसाबमां पण नथी. वली ते वखते कोइक स्त्री तो पोतानां स्तनोथी हाथीना कुंभस्थलोने जीतवाथी त्यांथी मलेलां मोतीउथीज होय नहीं जेम तेम मालतीना पुष्पोनी माला गुंथीने पोतानां स्तनोपर पेहेरवा लागी. वली ते समये त्यां कोइक स्त्री वसंत रागनी साथे पंचमस्वर गाती थकी (स्त्रीथी) विरही पुरुषोने कामाग्नि उ-

पजाववा लागी. वळी कोइक स्त्री तो कामदेवरूपी चक्रीनां चक्रोसरखां बकुलनां पुष्पोने मजाकथी पोतानां स्वामिपर फेंकवा लागी. वळी श्वेत वस्त्रोवाळी कोइक स्त्री तो ते समये पोतानां मुखरूपी चंद्रथी पुनेमनी रात्रिनी शोभाने धारण करती हती. ते वखते प्रभु पण सर्व अंगोपर पुष्पोनां आभूषणो पेहेरीने, तथा हाथमां पुष्पोनो दडो लेइने पुष्पनां बीछानापर बेठा. ते वखते स्त्रीओ प्रभुनी पासे नाचती थकी रासलीला करवा लागी. एवी रीते कामी लोको कामविलासमां आसक्त थए छते प्रभु अवधिज्ञानथी पोतानां पूर्व भवोनुं स्मरण करवा लाग्या, अने तेथी तेमणे अनुत्तर विमान आदिकनां सुखोने याद कर्यां. ते वखते साकर खानारो जेम लींबडानां स्वादथी, तेम प्रभु तुरत ते कामरसथी दूर थया; अने विचारवा लाग्या के, अहो (पूर्व भवोमां) तेवी रीतना सुखो भोगव्या छतां, हजु अहीं पण कामविलासमां मारुं मन चोटेलुं छे ! ! माटे ते कामना चेष्टितने धिक्कार छे ! ! प्राणी अज्ञानदशाथी अनंता भवोमां घणां सुखो भोगव्या छतां पण भवभवप्रते नवां नवां सुखोनेज इछे छे. वळी प्राणी अनंत सुखोने भोगवतां छतां पण ते तृप्ति पामतो नथी, अने दुःखनो तो एक लेशमात्र आव्याथी पण ते कंटाळी जाय छे. वळी पुण्यथी सुखो मळे छे, छतां पण ते पुण्यमां प्राणी आदरवाळो थतो नथी, अने जे प्रमादथी दुःख मळे छे, तेमां तो ते आदरवाळो थाय छे. वळी पापकार्यो करीने उत्तम फळनी प्राप्ति क्यांथी थाय ? केम के, लींबोडी वाव्याथी कंइ कल्पवृक्षनो अंकुरो ते उगे ? वळी आ संसाररूपी समुद्रमां बुद्धिवानो पण (मछीमारो पण) विषयरूपी मांसनां लोभथी मत्स्योनी पेठे दुःखरूपी जाळमां फसाइ पडे छे. स्वेछाचारी विषयरूपी बेरीओ आ भवरूपी चोटामां मूर्खोनां पुण्यरूपी चैतन्यने लुंटी लीए छे. वळी पुत्र, मित्र तथा स्त्री आदिकरूपी पाशोथी दरेक भवमां बंधाएलो मनुष्य पक्षिनी पेठे स्वेछाथी धर्मने विषे रमी शकतो नथी. वळी जे माणसो तुछ सुखना लोभथी पोतानुं पुण्य हारी जाय छे, तेओ अमृतनो पोताना पगो धोवामां उपयोग करवा जेवुं करे छे. हवे प्रभु जेटलामां एवी रीते चिंतवता हता, तेटलामां लोकांतिक देवो "जय जय" शब्द करता थका तेमनी पासे आव्या; तथा तेमने कहेवा लाग्या के, हे प्रभु ! आप

अज्ञानीनी पेठे मोहने धारण नहीं करो? पण तीर्थ प्रवर्तावो? एम कही ते विनयवंत देवो पोताने स्थानके गया. पछी तेज वखते प्रभु तुरत ते क्रीडादिकने विसर्जन करीने, कामधेनुने पण जीतता थका वार्षिकदान देवा लाग्या. एवी रीते हाथी, घोडा, रथो, रत्नो, माणिक्यो, तथा वस्त्रोनुं एक वर्ष दरम्यान प्रभुए जे दान आप्युं, तेनी संख्या तो ते प्रभुज जाणी शके, बीजो जाणी शके नहीं. प्रभुए सगर कुमारने चक्री थनारा जाणीने तेनी इच्छाविना पण बलात्कारे तेमने राज्यपर बेसाड्या.

हवे ते वखते आसनो चालवाथी सघला इंद्रो प्रभुनुं दीक्षाकल्याणक जाणीने आकाशने शोभावता थका पोतपोताना स्थानकोथी आव्या. पछी प्रभु पण स्नान करीने, तथा दीव्य वस्त्रो अने आभूषणो पेहेरीने, अने घरदेरासरमां रहेलां अरिहंत प्रभुना बिंबोने पूजीने इंद्र जेम पालक विमानमां तेम सुरासुरोए बनावेली सुप्रभा नामनी पालखीमां बेठा. पछी वृद्ध स्त्रीउंथी वधावाता, तथा तेउंना हाथोथी लुंछन कराता प्रभु हजारोथी वहन करातो ते पालखीमां बेठा थका वनमां गया. त्यां सहस्राम्र वनमां अशोक वृक्षनी नीचे तेउंए ते पालखी उतारी, त्यारे प्रभु पण उदयाचलथी जेम सूर्य, तेम तेमांथी तुरत नीचे उतर्या. हवे त्यां प्रभुए उतारेलां वस्त्र, आभरण, पुष्पमाला, तथा मोतीउंने इंद्रे पोताना वस्त्रना छेडामां ग्रहण कर्यां. पछी प्रभुए कुकर्मोथी उत्पन्न थएला क्लेशोने जेम, तेम पोताना केशोने पंचमुष्टिथी उखेडी नाख्या, तथा इंद्रे ते केशोने क्षीरसमुद्रमां पधराव्या. पछी इंद्रे संज्ञाथी घोंघाट बंध कराव्यो, एटले प्रभुए पण त्रिविधे त्रिविधे सामायिक अंगीकार कर्युं. एवी रीते प्रभुए एक हजार राजाउंनी साथे दीक्षा लीधी, अने इंद्रे पण प्रभुना स्कंधपर उज्ज्वल देवदुष्य वस्त्र धारण कर्युं. एवी रीते माहासुदी नवमीने दिवसे चंद्र रोहिणी नक्षत्रमां आवते छते, पाछले पोहोरे छठना तपपूर्वक प्रभुने चोथुं (मनःपर्यय) ज्ञान उत्पन्न थयुं. हवे मौनधारी प्रभु पण निःसंग थया थका पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या, तथा इंद्रादिक देवो नंदीश्वर द्वीपे गया. पछी बीजे दिवसे प्रभुए अयोध्यामां ब्रह्मदत्तने घेर दूधपाकथी कल्याणकारी पारणुं कर्युं. ते वखते तेना आंगणामां आकाशथी साडाबार क्रोड सोनैयानी, तथा पुष्पो अने

देवदूष्योनी वृष्टि थइ; तथा आकाशमां देवदुंदुभी वागवा लागी, चेलोत्क्षेप थयो, तथा देवो ब्रह्मदत्तनी प्रशंसा करता थका "जय जय" शब्द करवा लाग्या. "आ प्रभुए स्पर्श करेली भूमिने, तथा तेमना पगलांने कोइ स्पर्श न करे तो सारुं" एम विचारि ब्रह्मदत्ते त्यां धर्मचक्र बनाव्युं. पछी ते निर्मम प्रभु आर्य तथा अनार्य देशोमां विहार करता थका ध्यानरूपी अग्निथी पोताना घतिकर्मोने बालवा लाग्या. मोतीना हारमां अने सर्पमां, मणिमां अने ढेफामां, तृणमां अने स्त्रीमां, शत्रुमां अने पुत्रमां, सुवर्णमां अने काचमां, सुखमां अने दुःखमां, भवमां अने मोक्षमां, उज्जडमां अने वस्तीवाला भागमां, तथा दिवस, रात्रि अने संध्यामां पण प्रभु समदृष्टिवाला थया. वली ते प्रभु काचवानी पेठे गुप्तेंद्रिय, आकाशनी पेठे निर्लेप, पृथ्वीनी पेठे क्षमावंत, तथा सूर्यनी पेठे अद्भुत तेजवाला थया. एवी रीते ते प्रभु बार वर्षोसुधि सघला देशोमां विहार करीने फरीने अयोध्यामां आव्या. त्यां सहस्राम्र वनमां सप्तछद वृक्षनी नीचे ध्यानांतरने प्राप्त थइ, गोदोहिकासनमां रह्यां थकां, पोस सुदी बारसने दिवसे चंद्र रोहिणी नक्षत्रमां आवते छते, पाछले पहोरे, कर्मोना क्षयथी प्रभुने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं; अने तेथी चौदरज्जुप्रमाण लोकने, गतागतिने, तथा कर्मोना विपाकने ते हाथमां रहेला मणिनी पेठे जोवा लाग्या. हवे ते वखते आसनो कंपवाथी इंद्रो भक्तियें करीने, विमानोथी सूर्यबिंबनी स्पर्धा करता थका त्यां आवी पहोंच्या. पछी त्यां देवोए योजनना प्रमाणवालुं. सोना, रूपा, अने मणिना त्रण गढोवालुं तथा चार द्वारोवालुं समवसरण बनाव्युं.

हवे ते वखते सभामां आसनपर बेठेला सगर राजाने छडीदार नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! कोइक बे पुरुषो बारणे आवी उभा छे. पछी राजानी आज्ञाथी छडीदारे त्यां प्रवेश करावेला एवा ते पुरुषोमांथी एक राजाने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! हुं वधामणी आपुं छुं के, प्रभुने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं छे. पछी बीजो पुरुष पण नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! आप जय पामो ? हुं हर्षदायक वधामणी आपुं छुं के, आयुधशालामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं छे. ते सांभली सगर राजानुं मन हिंचोला खावा लाग्युं के, आ बन्ने

कार्यों मारे करवा लायक ढे, तो हवे प्रथम चक्रनो उत्सव करुं? के प्रभुना केवलज्ञाननो उत्सव करुं? पढी तेणे निश्चय कर्यो के, त्रणे लोकोने अन्नयदान देनारा आ प्रज्जु क्यां? अने जगतने जय करनारुं आ चक्र क्यां? एम विचारि ते तुरत आसनपरथी उठ्यो. पढी ते हाथी घोडा, रथो, पुत्रो, पालाउ, तथा व्यापारीउ अने बीजा लोकोथी वींटायो थको स्त्रीउ सहित वनमां गयो. त्यां ते प्रज्जुने त्रण प्रदक्षिणा देइने, स्तवीने, तथा नमीने तेमना मुखनी, नीचे प्रमाणे देशना सांजलवा लाग्यो. स्वर्ग अने मोक्षना कारणरूप धर्मनेज हमेशां सेववो, केम के धर्मविना दुःख; दौर्जाग्य, तथा जवन्रमण थाय ढे. उत्तम बुद्धिवालो माणस आ असार शरीरथी धर्मने गृहण करे ढे, वली बीजुं सघलुं मली शके, पण धर्म दुर्लज्ज ढे. पढी सगर राजाए अयोध्यामां जइ चक्रनो अठाइमहोत्सव कर्यो, केम के, क्षत्रीयोनो ते क्रम ढे.

हवे ते कृपालु प्रज्जु पण चतुर्विध संघने स्थापीने सर्व देवोथी नमस्कार करता थका विहार करवा लाग्या.

हवे ते सूर्य सरखुं चक्ररत्न आयुधशालामांथी वहार निकल्युं, त्यारे तेज दिवसे सगर चक्रीए पण प्रयाणनी तैयारी करी. पढी चोरासी लाख हाथी, रथो, तथा घोडाउ सहित अने ढन्नु क्रोड पालाउ सहित ते चक्री प्रथम पूर्व दिशा तरफ चाल्या. वली ते हथी, घोडो, ढत्र, दंड, मणि, काकिणी, वार्धकी, पुरोहित, गाथापति, तथा चर्म प्रमुख रत्नोने पण साथे लेइने लाख यक्षोथी अधिष्ठित थया थका चालवा लाग्या. पढी तेमणे पूर्वाब्धिमां मागध देवप्रते अठमनो तप करीने दश योजन जनारा बाणथी तेने बोलाव्यो. पढी तेनी पासेथी रत्नोविगेरे लेइने, तेने त्यां स्थाप्यो, अने पोते पारणुं करीने अठाइ महोत्सव कर्यो. पढी त्यांथी चक्रनी पाढल अविढिन्न प्रयाणथी चालतां थकां, दक्षिण समुद्रने कांठे जइ तेमणे सैन्यनो पडाव नांख्यो. त्यां वार्धकीए सैन्यमाटे आवासो, तथा एक पौषधशाला बनावी, अने तेमां चक्रीए पौषधव्रत लीधुं. पढी वरदाम देवने मनमां धारीने तेणे बाण मुक्युं, त्यारे ते पण चक्रीपासे तुरत आव्यो; पढी तेनी पासेथी मणि, स्वर्ण, मोती तथा रत्नादिक लेइने, तेने त्यां तेमणे स्थाप्यो. पढी पश्चिम दिशामां रहेला प्र-

प्रासेशने पण अठम तपथी आराधिने तेने त्यां स्थाप्यो. पछी तेमणे सिंधु तथा महासिंधुना अधिकारीने साधीने पण तेने त्यां स्थाप्यो. पछी उत्तर दिशामां आवी भरतजीनी पेठेज तेमणे वैताढ्याद्रिकुमारने पण वश कर्यो. पछी राजानी आज्ञाथी सेनापति सिंधुसागर, तथा वैताढ्यनी सीमाने साधीने त्यां पाछा आव्या. पछी तमिस्रा गुफानां द्वारोने दंडरत्नथी उघाडीने, तथा पुलथी निम्नगा अने उन्निम्नगा नदीने उलंगीने ते बहार निकल्या. त्यां महा क्रूर म्लेछोने जीतीने क्षुद्रहिमाद्रिना दक्षिण नितंबपर ते आव्या. त्यां रथपर त्रण ताडना करीने तेमणे बाण फेंक्युं, त्यारे ते बाण पण बहोतेर योजन जइने तेना स्वामिने बोलावी लाव्युं. तेनी पासेथी रत्नो लेइने तेने तेमणे त्यां स्थाप्यो, तथा पछी ऋषभकूट पर्वतपर जइने, तेमणे पोतानुं काकिणी रत्नथी नाम लख्युं. पछी वैताढ्यनी दक्षिण अने उत्तर श्रेणिना विद्याधर स्वामिउने, जीतीने, तेमने पण तेणे त्यां चाकरोनी पेठे स्थाप्या. पछी गंगाना किनारापर सैन्यने स्थापीने चक्रीनी आज्ञाथी सेनापतिए चर्मरत्नथी ते गंगाने उतरीने राजाउने जीत्या. पछी अठम तपथी चक्रीए गंगादेवीने वश करी; तथा पछी तेमणे तमिस्रानी पेठेज खंडप्रपात गुफानुं द्वार उघाड्युं. त्यां काकिणी रत्नथी योजन योजनने अंतरे तेमणे मांडलां कर्यां, तथा पछी पचाश योजननी ते गुफाने अने बन्ने नदीउने पण ते उलंगी गया. पछी ते गुफाना द्वारथी निकलीने, गंगाना पश्चिम किनारापर तेमणे अठमना तप करीने नवे निधानो मेलव्यां. त्यां चक्रीनी आज्ञाथी सेनापति गंगाना दक्षिण निष्कुटने लीलामात्रमांज साधीने पाछो चक्रीनी पासे आव्यो. एवी रीते पांत्रिस हजार वर्षो सुधि दिग्जय करीने, भरतनी पेठे ते चक्री चक्रनी पाछल चालता थका अयोध्यामां आव्या. पछी त्यां बत्रीस हजार राजाउए, यक्षोए, तथा बीजाउए पण ते चक्रीनो राज्याभिषेक कर्यो. एवी रीते भरतनी पेठे पचीस हजार यक्षोथी सेवाएला ते चक्रीए छखंड भरतने साध्यो.

हवे केवलज्ञानरूपी सूर्यवाला प्रभु विहार करता थका देशनारूपी किरणोथी भव्यरूपी कमलोने विकस्वर करता हता. पछी पुंडरिक गिरिने युगादीश प्रभुथी पवित्र थएलो जाणीने श्री अजितनाथ प्रभु ते

तरफ विहार करवा लाग्या. त्यां मार्गमां जगतनुं हित करनारा प्रजु सर्व जाषावाली वाणीथी सिंह, हरिण, जुंड, तथा सर्प विगेरेने पण बोध देता हता. पछी अनुक्रमे सुराष्ट्र देशमां रहेला, तथा सर्व जगोए श्री ऋषजदेव प्रजुना गुणोत्कीर्तनथी गर्वित थएला, अने रत्नोनां शिखरोथी शोजता एवा शत्रुंजयप्रते प्रजु आव्या. पछी त्यां प्रजु ध्यानमां रहेते छते कोइक मयूर बीजा मयूरोथी वींटायो थको त्यां आव्यो, तथा पोतानी कलाथी जक्तियें करीने प्रजुपर छत्र धरवा लाग्यो. त्यां प्रजुए ध्यान धर्या बाद ते मयूरोने बोध आप्यो. पछी प्रजु ते मयूरोसहित रायणप्रते आव्या, तथा त्यां देवोथी सेवाया थका ते त्रण दिवस रह्या. पछी प्रजातमां ते वृद्ध मयुरने मृत्युनी अणीपर जोइने, प्रजुए तेने अनशनपूर्वक संलेखना करावी. पछी प्रजु त्यांथी उतरीने दक्षिण पश्चिमदिशामां रहेला सुजद्र नामना शिखरपर आव्या. त्यां देवोए एकठा थइने प्रजु माटे समवसरण रच्युं, अने प्रजु पण त्यां सिंहासनपर बेठा.

हवे ते मयूर उत्तम ध्यानथी त्यां पोतानुं आयुष्य अनशन पूर्वक संपूर्ण करीने चोथे देवलोके गयो. त्यां अवधिज्ञानथी ते शत्रुंजय तीर्थने पोतानी देवगतिनुं कारण जाणीने, ते तीर्थने जोवा माटे तथा प्रजुने नमवा माटे वेगथी ते त्यां आव्यो. त्यारे प्रजुए तेने बोलाव्यो के, "हे मयूरदेव!" आवो? पछी ते पण कांतिथी पर्वतने शोजावतो थको प्रजुनी पासे बेठो. त्यारे सुधर्मेंद्रे प्रजुने पुछ्युं के हे स्वामी! आपे आ कोणने बोलाव्यो? त्यारे प्रजुए कह्युं के, ते आ पर्वतपर मयूरराजा हतो. तेणे मारा मुखथी देशना सांजलीने समतामां रही जीवहिंसानो त्याग कर्यो, तथा मारीज साथे आ पर्वतपर आवी तेणे अनशन कर्युं. वली आ तीर्थना प्रजावथी पोतानुं सघलुं पाप दूर करीने, तीर्यंच जवमांथी निकलीने ते चोथे देवलोकें गयो. वली ते एकावतारी थइने, व्रत लेइ, तथा केवलज्ञान पामी अवश्य मोक्षें जशे. ते सांजली ते देवे ते वृक्षनी नीचे पोतानी मयूरमूर्ति स्थापी, तथा आनंदसहित तेणे तीर्थपूजा करी. अने त्यारथी ते वृक्षनी नीचे रहेली तेनी पवित्र मूर्ति सर्व मनुष्योने बोधवा माटे पूजाय छे.

हवे श्री अजितनाथ प्रजु पण सिंहासनपर बेठा थका जगतना प्रा-

प्राणीओने बोध देवामाटे देशना देवा लाग्या के, सर्व प्राणीओमां समता, भक्ति पूर्वक संघपूजा, तथा शत्रुंजयनी सेवा, अल्प पुण्यवालाओने मलती नथी. सूक्ष्म, बादर आदिक सर्व प्राणीओमां पोतानी पेठेज जोवुं ते, तथा रागद्वेषविनानुं जे चित्त, ते समता कहेवाय. साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध संघ चार शाखावाला धर्मनी पेठे त्रणे जगतोथी पूजाय छे. वली हे देवो! जेने घेर पापोने हरनारो ते संघ आवे छे, ते पूजनीक थाय छे, तथा तेनुं घर पण तीर्थरूप थाय छे. हवे आ शत्रुंजय पर्वत पण शाश्वतो तथा भवरुपी समुद्रमां डुबता प्राणीओने द्वीप समान छे. वली जे प्राणीओ आ पर्वतप्रते आवे छे, तेओ कुकर्मोने प्राप्त थता नथी, केम के, तेओ पापना भारने नीचे मूकीनेज चडे छे. वली जे माणसे जिननी अने जिने कहेला धर्मनी आराधना करी छे, तथा आ पर्वतने सेव्यो छे, तेने दुर्गतिनी बीक तो क्यांथीज होय? वली आ पर्वत अने शीलनी सेवाथी उत्तम फल मले छे; वली शीलसेवाथी तो मोक्षनो संदेह पण होय, पण आ पर्वतनी सेवाथी तो ते मोक्ष प्रगट रीते मले छे. उत्तम बुद्धिवालो माणस आ तीर्थमां जेटलां शुभ कार्यो करे छे, ते सघलां आ भवमां तथा परभवमां पण तेना कर्मक्षय माटे थाय छे. आ तीर्थमां जे सिद्धो थया छे, तथा हवे पछी हमेशां जे सिद्धो थशे, तेने केवली जाणतां छतां पण एक जीभथी कहेवाने समर्थ नथी. आ तीर्थनां सर्व शिखरोमां जे महिमा रहेलो छे, तेने प्रभु पण क्रोडो वर्षसुधि पण कही शके तेम नथी. शीलरूपी बख्तरवाला आ पर्वतपर रहेला प्राणीओ क्षणमात्रमांज पोताना रागादिक शत्रुओनो नाश करे छे. निधान, रत्न, तथा रसकुंपिकाथी आश्रित थएला आ सुभद्रशिखरपर रहेला पुण्यशाली प्राणीओने बन्ने भवोमां सुख थाय छे. वली प्रथम प्रभुना आश्रयथी जेम शत्रुंजयनुं मुख्य शिखर पूजाय छे, तेम अमारा आश्रयथी आ सुभद्र शिखर पण उंचे प्रकारे पूजाशे. एवी रीते प्रभुनी देशना सांभलीने हर्षित थएला देवो त्यां अष्टाह्न महोत्सव करीने पोतपोताने स्थानके गया.

हवे ते समये आकाशने श्याम करती, तथा वायुथी उन्नति पामतां वादलांओनी घटाओ आवी. ते वखते वादलांरूपी सुभटो आकाशरूपी रणांगणमां मधुर गर्जना करता थका वीजलीरूपी खड्गथी पोताना शत्रु

ग्रीष्म साथे युद्ध करवा लाग्या. वळी ते वखते अमासनी रात्रिए जेम ताराउंनी श्रेणिउं, तेम आकाशमां शंखसरखी उज्वल वगलीउं देखावा लागी. वादलांउं प्रथमोदय वखते जे थोडी थोडी गर्जना करे छे, तेथी एम अनुमान थाय छे के, बलवान ग्रीष्म रुतुना जयमाटे तेउं अप्रगट रीते विचार चलावे छे. ते वखते छिद्ररहित वादलांउंरूपी वख्तरने पेहेरीने वायु, सेनापतिनी पेठे वारंवार अगाडीना जागमां स्फुरायमान थवा लाग्यो. वळी ते समये ग्रीष्मने वीजलीरूपी खड्गथी डुर्जय जाणीने, मेघोए तेने जीतनारुं इंद्रधनुष्य धारण कर्युं. वळी त्यां प्रथम तो ते वर्षा रुतुये ग्रीष्म रुतुना राजा सूर्यने वादलांउंथी एकदम आछादित कर्यो. पछी तेउंए पूर्वे ग्रीष्मप्रते आदरवाळी थएली पृथ्वीने बुटा बुटा तथा जाडा जलविंडुउंरूपी पत्थरोथी ताडना करवा मांडी. ते वखते आकाशरूपी स्त्री वगलीउंरूपी हारवाळी, वीजलीरूपी स्फुरायमान हास्यवाळी, अने पुष्ट स्तनोवाळी (वादलांउंवाळी) थइ थकी लोकोने प्रिय थइ पडी. ते वखते मेघरूपी स्वामी पोतानी पृथ्वीरूपी स्त्रीने जलधारारूपी हारो देवा लाग्यो, अने तेथी ते पण अत्यंत तृप्त थवा लागी. ते वखते जिनस्नात्र वखते जेम मेरु, तेम आ शत्रुंजय पर्वत दरेक मार्गोथी वहेता जलप्रवाहोथी व्यापी रह्यो. वळी ते वखते मेघरूपी पोतानो स्वामी उपर चडवाथी पृथ्वीरूपी नितंबिनी स्त्री (विस्तारवाला कटीना पाछलना जागवाळी स्त्री) उगेला (घासना) अंकुराउंरूपी रोमांचने धारण करती थकी, अत्यंत पसीनावाळी (पाणीउंनां प्रवाहोवाळी) थइ. एवी रीते वर्षा रुतुने आवेली जाणीने प्रजु ते मुनिउं सहित देवोथी वींटाया थका तेज सुनन्द शिखरपर रह्या. ते वखते केटलाक मुनिउं गुफाउंमां, केटलाको सिंहगुफाउंमां, तथा केटलाको सर्पना बिलना अग्रजागपर नियमो लेइने रह्या. त्यां इंद्रोए प्रजु माटे एक मंडप रच्यो, तेउं तेमां चतुर्मास रह्या. त्यां प्रजुनी सेवाथी केटलाक जीवो सम्यक्त्व पाम्या, केटलाको जद्रकजाव पाम्या, तथा केटलाकोए जीवहिंसा तजी. पछी वहु उन्नति पामेलो वरसाद पण (मंद थइ) वंध पड्यो, केम के जडना (जलना) संगथी हलकाइ थवी कंइं डुर्लज नथी ! पछी कादवोना समूहने सुकावती, आकाशने निर्मल करती, तथा कास आदिकनां पुष्पोने विकस्वर करती थकी शरद रुतु आवी. ते शा-

रद ऋतुमां नदी (नीचप्रते गमन करनारी स्त्री) जलोने पण (मूर्खोने पण) निर्मल करती करती थकी, तथा कमलोने पण (मलीन पुरुषोने पण) उल्लासायमान करती थकी सीद्धे मार्गे जवा लागी. वली ते वखते मलीन एवां पण वादलांउ जगतने जीवितदान (जलनुं दान) देवाथी निर्मलपणाने (श्वेतपणाने) पाम्या. माटे अहो! दाननो प्रभाव केवो छे!!

एटलामां हवे सुव्रत नामना आचार्य नादुरस्त होवाथी हाथमां भातपाणी लेइने मुनिउथी शोभता थका (शत्रुंजय नामना) प्रथम शिखरपर चडवा लाग्या. त्यां वच्चे कोइ खीणमां कोइक वृक्षनी नीचे विश्राम माटे ते बेठा; एटलामां कोइ तृषातुर कागडाए आवीने तेमनुं जलपात्र ढोली नाख्युं. ते समये जलविना सुकातुं छे, तालवुं जेमनुं, तथा भयंकर सूर्यनां किरणोथी व्याकुल थएला ते मुनि क्रोधयुक्त वचन बोलवा लाग्या के, अरे कागडा! अमारां प्राणनां रक्षणरूप जे आ पाणी तें ढोली नाख्युं, ते अकार्यथी तारी जातिनी आ तीर्थपर गति थशे नहीं. वली अहीं मारा तपना प्रभावथी सर्व मुनिउना संतोष माटे, जंतुविनानुं तथा प्रासुक पाणी हमेशां थशे, पछी तेज वखते सघला कागडाउ दीनताथी कोलाहल करता थका त्यांथी चाल्या गया, अने त्यारथी मांडीने आ सिद्धगिरिपर कागडानुं आगमन थतुं नथी; कदाच दुकालनो मार्यो कोइ कागडो जो अहीं आवी चडे, तो अहीं विघ्नोने नाश करनारुं शांतिकार्य करवुं. वली पूर्वे पण क्रोडो विघ्नोने नाश करनारुं शांतिकार्य जैनमुनिउयें अहीं श्री युगादीश प्रभुनी पासे तथा रायणपासे करेलुं छे. एवी रीते नैऋत्य दिशामां पर्वतनी खीणमां ते मुनिना तपबलथी थएलुं पाणी निरंतर सुखोने आपे छे. ते पाणीना स्पर्शथी रोग, शोक, आर्ति, वेताल तथा ग्रहादिकथी थतां दुःखो, अने पापो पण नाश पामे छे, तेमां संशय नथी.

हवे प्रभु पण मुख्य शिखरपर आवीने केटलाक मोक्षाभिलाषी मुनिउने कहेवा लाग्या के हे मुनिउ! तमो अहींज रहो? केम के, तमोने अहीं पुंडरिकजीनी पेठे कर्मोना घातथी केवलज्ञान थइ शुभ भावथी मोक्ष मलशे. एवी रीते ते मुनिउने कही प्रभु विहार करी गया, तथा ते मुनिउ पण त्यां केवलज्ञान पामी मोक्षे गया.

हवे अहीं सगरचक्री राजाउना समूहोथी सेवाता थका छ खंड भ-

रतने पालवा लाग्या. ते चक्रीने तारुण्यरूपी पुण्यथी संपूर्ण अंगवाला, तथा शस्त्रकला अने शास्त्रकलामां पारंगामी जह्नु आदिक साठ हजार पुत्रो हता. एक दहाडो तेउं सघला पोताना पूर्वजोनां तीर्थोने नमवा माटे पराणे पितानी आज्ञा मागी लश्कर तथा वाहनो सहित चाल्या. तेउंए चक्रीनी आज्ञाथी स्त्रीरत्नशिवाय तेर रत्नोने, यक्षोने, राजाउंने तथा मोटां लश्करने साथे लीधुं. पछी अनुक्रमे योजनना प्रयाणथी तेउं अष्टापद प्रते पहोंच्या. त्यां मणि अने रत्ननी कांतिना समूहथी आकाशने चित्रित करता, एवा ते अष्टापदने जोइने तेने तेउं पोताना पूर्वजोनी कीर्तिरूपी वृक्षना कंद तुल्य मानवा लाग्या. वली ते पर्वत कल्पवृक्ष, चंपक, अशोक, वड, पीपला, तमाल, गुलाव, आमली, आंवा तथा बकुल आदिक वृक्षोथी वींटाएलो हतो. पछी तेउं अत्यंत हर्षथी आठ पावडीआउं मारफते तेपर चड्या, तथा त्यां प्रभुना प्रासादोने त्रण प्रदक्षिणा करी. पछी तेमां दक्षिण द्वारथी प्रवेश करीने ते दिशामां चार, पश्चिममां आठ, उत्तरमां दश, तथा पूर्वमां वे एवी रीते चोवीसे प्रभुनी तेउंए त्रिकरण शुद्धिथी पुष्प, अक्षत, तथा स्तवनोयें करीने स्तुति करी. पछी तेउं प्रभुना ते अत्यंत उंचा प्रासादने जोइने अत्यंत प्रीतिथी मांहोंमांहें कहेवा लाग्या के, आ चार द्वारोवालो प्रासाद चारे गतिनो नाश करीने चार प्रकारना (दान, शील, तप अने भाव रूप) धर्मरूपी राजाने प्रवेश करवा माटे छे ! वली आ प्रासाद जाणे मुक्तिरुपी नगरनी भागोलने खेंची लेतो होय नहीं, तेम कलश, ध्वज अने तोरणोथी आकाशभागने स्पर्श करे छे. वली तेपरना रत्नो अमावास्यानी रात्रिना अंधकारने पण नाश करे छे, तेम पुण्योथी ते अंतरना (अज्ञान रूपी) अंधकारने पण खरेखर हरनारां छे. वली आ कल्याणथी (सुवर्णथी) वनावेलो छे, माटे ते कल्याण आपे छे, तथा ते उंचो छे, तेथी तेमने आश्रय करीने रहेला वीजाउंने पण ते उंची गतिमां चडावे छे. वली आ प्रासाद शुं भरतचक्रीना कीर्तिरूपी वृक्षनो कंद छे ? अथवा तेनी भक्तिना तद्रूपपणाने ते देखाडे छे ? वली शुं ते जगतना भ्रमणथी तप्त थएला लोकोना लोचनोने आनंद आपनारो चंद्र छे ? अथवा शुं मूर्तिवान धर्मज छे ? वली अहीं (इंद्रना) पालक विमानने पण विडं-

वना करनारा घणा पवित्र प्रासादो शोन्ने छे. पछी तेउं विचारवा लाग्या के, चारे दिशाउंमां, देवोथी पण न जीताय एवा आ द्वारपालो, तथा मनुष्योथी न चडी शकाय एवां आ आठ पावडीआं, हवे थनारा लोकोने लोन्नी जाणीने आ प्रासादोना रक्षण माटे नरत महाराजे खरेखर वनाव्यां छे. एम विचारि जह्नुकुमारे प्रीतिथी पोताना बांधवोने कह्युं के, केटलोक वखत गया बाद (आथी तो) आपणा पूर्वजोनुं धर्मस्थान नाश पामे तेम छे, केम के लोन्नीउंने (पावडीआंउंनो) आ सो जोजननो आंतरो कंइ दूर लागशे नहीं, माटे आनी रक्षामाटे आपणे एक (फरती) मजबूत खाइ वनावीए. पछी तेमाटे सर्वे एकमत थइने परिवार सहित खाइ खोदवा लाग्या. एवी रीते तेउंए पृथ्वीना दलजेटली अत्यंत उंडी खाइ खोदी, अने तेथी नागलोकमां धूलिनी वृष्टि थइ. एवी रीते नागेंद्रना मणिने मलीन करतो, तथा तेनी आंखोनुं आछादन करतो, धूलिनो समूह, तेना कोपनी वृद्धिनी विधिमां चूर्णनी पेठे पड्यो. ते वखते नागकुलोमां मोटो कोलाहल थयो, तथा तेना सर्वे स्वामीउं तेथी कोप पाम्या. पछी अत्यंत कोपायमान थएला नागेंद्रे अवधिज्ञानथी ते कार्यने करनारा चक्रीना पुत्रोने जाण्या. त्यारे क्रोध तजीने, तथा वेगथी त्यां आवीने प्रीतिथी साम वचनोथी तेउंने कहेवा लाग्यो के, हे वत्सो ! तमो नरत महाराजना कुलमां थएला चक्रीना वेविकी पुत्रो छे, तो तमोए आ शुं कार्य आरंन्युं छे ? तमारा आ प्रयासथी आजे नागलोकने घणी पीडा थइ छे, माटे हवे आपणा स्नेहनी खातर तमो आ कार्य तजी द्यो ? वली श्री युगादीश प्रन्नु अमारा स्वामी छे, अने अमो तेमना सेवक छीए, वली तमो पण तेमनाज कुलमां उत्पन्न थया छो. माटे आपणो स्नेह स्थिर रहे तो सारुं. एम कहीने नागेंद्र गया बाद, तेउं खाइमांथी निकलीने उन्नत थया थका परस्पर सलाह करवा लाग्या के, केटलोक काल गया बाद जल विनानी आ खाइ सुखेथी उलंघवा जेवी थशे, केम के, आ त्रण जगतमां लोन्नीउंने शुं असाध्य छे? एम विचारि जह्नुकुमारे दंडरत्नथी समुद्रमांथी गंगाने खेंचीने तेना पाणीथी खाइ नरी दीधी. तेथी नाग लोकना घरोपर कादव पड्यो, तेना नाश थयां, तेथी नागेंद्रने फरीने अत्यंत क्रोध चड्यो. अने तेथी

तेणे विचार्युं के, अरे! आ चक्रीना मूर्ख पुत्रोए राज्यथी गर्वित थइने अमारुं युक्तियुक्त वचन पण मान्युं नहीं, माटे धिक्कार छे ते गर्वने!! एम विचारि बीजा नागेशो सहित फणो चडावीने, क्रोधथी फुत्कार करतो त्यां ते आव्यो. तथा झेरनी शिखाउथी तेणे ते साठ हजार चक्रीना पुत्रोने एकी वखते बाली नांख्या. एवी रीते मोटो दाह निपजावीने ते पाछो पोताने स्थानके आव्यो, केम के, क्रोध शत्रुना नाशसुधिज होय छे. हवे तेवी रीतना विनाशथी वज्रपातनी पेठे सैन्यमां मोटो हाहाकार थइ रह्यो, तथा सर्व कोइ व्याकुल थया. एवी रीते ते वखते दैवना विपर्ययथी ते निर्नायक सैन्य सर्व उपायथी भ्रष्ट थइने दिङ्मूढ बनी गयुं. (आत्मा क्षणे क्षणे इछे छे कंइ, अने कर्म तेथी कंइनुं कंइ करी आपे छे.) एवी रीते दुःखरूपी सर्पना झेरथी ग्रस्त थएला नायक विनाना सैनिको किंचित आंसु लोइने विचारवा लाग्या के, आपणी दृष्टिएज नागेंद्रोए आ चक्रीना पुत्रोने एकी वखते हण्या, माटे आपणुं बल वृथा छे. वली राजाउ पोतानी रक्षामाटे सैन्यने राखे छे, अने ते सैन्य छतां पण आ चक्रीपुत्रो मृत्यु पाम्या!! वली आपणे हवे नगरमां जइ शरमना मार्या चक्रीने मुख शुं बतावशुं? वली त्यां जवाथी चक्री पण आपणने नाना प्रकारना उपायोथी मारी नांखशे. माटे हवे तो आपणे पण आपणा आ स्वामीउनो मार्ग लेवो, (अर्थात् बली मरवुं) केम के उत्तम सेवको स्वामिना मार्गनेज भजे छे. एम विचारि तेउए घोडा, रथ, हाथी विगेरेनी आसपास बार योजनी काष्ठोथी चित्ता खडकी. पछी तेउ जेटलामां बली मरवानी इछाथी अग्निने स्पर्श करवा मांडे छे, तेटलामां ते व्रतांत इंद्रे अवधिज्ञानथी जाण्यो. त्यारे ते दयालु इंद्र ब्राह्मणनो वेष लेइ तुरत त्यां आव्यो, अने तेउने कहेवा लाग्यो के, तमो मरो नहीं? मरो नहीं? ते धैर्यवालां वचनथी ते सघला सैनिको स्थिर रह्या, त्यारे तेमनी नजदीक जइने ते इंद्रब्राह्मण फरीने तेमने कहेवा लाग्यो के, हे भाइउ! तमो कोइ पराभवथी, के कंइ दुःखथी, के शोकथी के कंइ इष्टप्राप्ति माटे बली मरो छो? ते सांभली आदरथी तेउ कहेवा लाग्या के, हे परदुःखथी दुःखी एवा ब्राह्मण! अमारां दुःखनो तुं व्रतांत सांभल? पोतानाज चेष्टितथी भस्मरूप थएला आ सगरचक्रीना पुत्रोने तुं जो?

अमो वेगा ठतां पण ते अमारा स्वामिना पुत्रोनी आ दशा थइ, अने तेथी अमो लज्जित थइने अग्निमां प्रवेश करीए ठीए. त्यारे ते इंद्रब्राह्मण तेउने फरीने कहेवा लाग्यो के, तमो आ साहस, स्वामिनी ज्ञक्तिथी के ज्ञयथी, के दिलगिरिथी करो ठो? त्यारे तेउ कहेवा लाग्या के, अमारे मृत्युनी तो इछा नथी, पण तेमां चक्रीनी बीक कारणरूप ठे, केम के, ते अमोने जुदा जुदा उपायोथी हणशे. त्यारे इंद्रे पोतानुं रूप प्रगट करीने तेउने कह्युं के, आमां तमारो कंइ दोष मने जणातो नथी. माटे तमो हवे आपघात करो नहीं, हुं तमारुं चक्रीतरफनुं संकट दूर करीश, माटे हवे तमो प्रयाण करो? एवी रीते तेउने शांत करीने इंद्र अदृश्य थयो, पठी ते सैनिको पण शोक रहित थया थका धीरे धीरे अयोध्याप्रते चालवा लाग्या. ठेवटे ज्ञग्नपादनी पेठे प्रयाण करतां थकां अयोध्या नजदीक पहोंचीने, तेउए इंद्रनुं स्मरण कर्युं, त्यारे ते दयालु इंद्र पण त्यां आव्यो. पठी तेणे पांचसो वर्षना वुढा ब्राह्मणनुं रूप लीधुं, तथा एक मृत्यु पामेला बालकने लेइने ते राजापासे गयो. पठी त्यां राजाना द्वारपासे जइ पृथ्वी, कर्म विगेरेने निंदतो थको कठोर वाणीथी रडवा लाग्यो के, हे पृथ्वी! तुं सर्व सहन करनारी ठे, ठतां तुं कठिन ठे, केम के तुं रुषज्ञ प्रज्ञु तथा ज्ञरतादिकनी पाठल गइ नहीं. वली हे दिग्पालो! तमोने पण धिक्कार ठे, केम के तमो पण कालनी अपेक्षाएज पृथ्वीने पालो ठो, तथा सघला शुज्ञाशुज्ञ व्यापारना पण तमोज साक्षी ठो. वली हे दैव! तुं सर्वप्रते सुख करे ठे, अने माराप्रतेज पराङ्मुख थइने मने दुःख आपे ठे. वली मारी आ घडपणनी अवस्थामां तें मने पुत्रनी हानिनुं दुःख आप्युं, तो शुं मेंज एवुं कंइ तारुं वुरुं कर्युं हतुं? वली हे दैव! मारापर क्रोध करीने मारा आ बालकनुं हरण करीने मने तें मारवा जेवुंज कर्युं ठे. हे चक्री! आ कुदैवथी मारुं तथा पृथ्वीनुं रक्षण करो? तथा ज्ञरत महाराजनी स्थितिनुं स्मरण करीने तमो नगरमांथी पापने दूर करो? वली हे राजन्! आ दिक्पालो तो सुखशेलीआ ठे, तथा आ पृथ्वी चैतन्य रहित ठे, तेथी सर्वदेवमय एवा तमो मारुं केम रक्षण करता नथी? वली आ समये श्री अजितनाथ प्रज्ञु तो दीक्षा लेइ गया ठे, माटे रात्रिप्रते जेम सूर्य, तेम आ लोकने पालनार हवो तमोज ठो. एवी रीतना

तेनां वचनो सांजलीने राजाए खेदयुक्त थइ, तथा ते संबंधि पोतानोज दोष जाणी तेने बोलाव्यो. त्यां चक्रीने जोइ तेणे ते बालकने त्यां मुक्युं, तथा सजासदोने पण रोवरावतो थको ते अत्यंत रडवा लाग्यो. पछी चक्रीए पुछ्याथी तेणे कह्युं के, हेस्वामी ! मारो आ एकनो एक पुत्र मृत्यु पाम्यो, माटे मारा दुःखनी हुं केटलीक वात कहुं ? आजे आ मारो पुत्र संध्याकाले उंघतो हतो, त्यां तुरत महाक्रूर सर्पोए तेने डंख मार्यो. वली आमां सर्पोनो के मारो पण दोष नथी; पण देशनी साचवण नहीं राखता एवा तमारोज दोष छे. माटे हवे मंत्रयंत्रादिकथी आ मारा पुत्रने तमो साजो करो? नहींतर तमोने तेनो दोष आवशे, अने मारा कुलनो क्षय थशे. ते सांजली चक्रीए वैद्यो तथा मांत्रिकोने बोलाव्या, पछी तेउए ते बालकने मृत्यु पामेलो जाणीने कह्युं के हे राजन् ! आ बालकने बीजुं कोइ औषध लागु पडे तेम नथी, पण जे घरमां पूर्वे कोइ मृत्यु पाम्युं न होय, ते घरनी जो जस्म मले, तो आ जीवतो थाय. ते सांजली राजाए पोताना माणसोने तेवी जस्म लाववानो हुकम कर्यो, त्यारे इंद्र पण तेउनी साथे वैक्रिय शरीरथी घरोघर फरवा लाग्यो. पछी समस्त नगरमां जम्या, पण तेवी जस्म नहीं मलवाथी तेउ तथा ते इंद्रब्राह्मण पण दुःखित थयो थको राजापासे आव्यो. पछी राजाए कह्युं के हे विप्र ! मृत्यु रहित एवा मारा घरना रसोडामांथी तुं जस्म लाव ? त्यांथी जस्म लेतां थकां चक्रीनी माता यशोमतीने तेणे पुछ्याथी तेणीए कह्युं के, अहीं, चक्रिना पिता सुमित्रनुं मृत्यु थयुं छे. त्यारे राजापासे आवी तेणे ते व्रतांत जणाव्यो, त्यारे अवसर मलवाथी वैद्यो पण हर्षित थइने कहेवा लाग्या के, एवी रीतनी जस्म शिवायना बीजा औषधोथी आ बालकनो उपाय थइ शके तेम नथी, माटे ते मृत्यु पामशे, एमां अमारो अपराध नथी. ते सांजलीने ते इंद्रविप्र राजाना दयालु ह्रदयने स्मरतो थको अत्यंत रडवा लाग्यो. एटलामां चक्रीनुं सर्व लश्कर पण द्वारप्रते आव्युं, त्यारे चक्री ते दुःखी ब्राह्मणने साम वाक्यथी कहेवा लाग्या के, हे विप्र ! तुं शोक कर नहीं? संसारनी स्थिति एवीज छे. जेनो जन्म थयो, ते मृत्यु पामेज, अने तत्वथी जोइएं तो कंइ पण स्थिर नथी. वली जगतने पूजनिक तथा वज्र सरखी कायावाला अनंता जिनेश्वरो पण तेज मार्गे गएला छे. त्यारे बीजा प्राणी-

उंनी तो वातज शुं करवी? वली सात धातुउंथी बनेला आ शरीरमां क्षुधा, तृष्णा, टाढ, तडका आदिकथी पीडा थाय छे, माटे तेमां तो मूर्ख माणस स्थिरता माने. वली भाइ, पुत्र, स्त्री आदिक सर्वे स्वार्थ माटे आवे जाय छे, पण दुःख तो केवल आत्माज भोगवे छे. वली सर्व प्रकारे लाड लडावेलुं आ शरीर पण ज्यारे पोतानुं थतुं नथी, त्यारे माता, पिता, भाइ तथा पुत्रादिक तो केमज पोताना थाय? एवी रीते राजा बोलते छते इंद्र प्रत्यक्ष थइने कहेवा लाग्यो के हे राजन्! खरेखर तुं संसारनी स्थिति जाणे छे, वली तें जेम कह्युं तेम संसार खरेखर दुःखदायी छे, एवा पण आ संसारमां प्रमादांध माणसो जेम तेम प्रवर्ते छे!! आ जगत कर्मथी उत्पन्न थाय छे, तथा कर्मथीज नाश पामे छे, माटे एवा आ संसारमां बंधु, पुत्र तथा द्रव्यना लाभनी शुं स्पृहा करवी? वली हे चक्री! तेनो आ प्रत्यक्ष दाखलोज तुं जो? जेम पूर्वे तारा पूर्वजो मृत्यु पाम्या छे, तेमज तारा साठ हजार पुत्रो पण मृत्यु पाम्या छे. तेज वखते सर्व सैनिकोए पण सभामां आवी शोकातुर थया थकां, तथा छाती फोडतां थकां चक्रीने तेमना कुलनो क्षय जणाव्यो. ते सांभली विह्वल थएला चक्रीने इंद्रे व्यजनना (वींझणाना) पवनथी तथा गोशीर्ष चंदनथी शांत कर्यो. पछी केटलीक मेहेनते चैतन्य आव्या बाद चक्री पुत्रोने याद करी करीने शोकथी वारंवार मूर्छा पामवा लाग्यो. ते मुर्छाथी चक्रीनुं मरण धारीने इंद्र तेना कंठमां लागीने रडवा लाग्यो; तेउंना रुदनना नादथी जगतना सचराचर लोको पण शोकसागरमां निमग्न थया. पछी इंद्र चक्रीने कहेवा लाग्यो के, हे राजन्! तुं पण अन्यनी पेठे दुःखथी आम शामाटे मोह पामे छे? केम के, पोताना कर्मोथीज जीव अल्पायु तथा दीर्घायु थाय छे, माटे एवी अस्थिर वातमां चिंता शुं करवी? वली हवणांज तमो मने वैराग्यथी बोध देता हता, तो हवे तमो पोते केम मोहमां पडो छो? एवी रीते इंद्र वात करते छते द्वारपाले आवी राजाने विनंति करी के, हे स्वामी! द्वारमां बे पुरुषो आपने नमवा माटे उभेला छे. त्यारे राजाए भ्रुकुटीसंज्ञाथी तेमने प्रवेश कराववानुं कहेवाथी द्वारपाले तेउंने त्यां प्रवेश कराव्यो; पछी तेउंमांथी एके नमीने प्रभुना आ-[illegible] आपी. पछी बीजो माणस कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी!

आप जय पामो? आपना पुत्रोए अष्टापदप्रते लावेली गंगा, खाइ पुरीने पृथ्वीने प्लावन करवा लागी छे. तेना पूरथी आसपासनी जमीन समुद्रमां रहेला द्वीपसरखी थइ गइ छे. वली आ भरतखंडने द्वीप सरखो करी मेले एवुं लागे छे. माटे हे स्वामी! ते पाणीथी अमारुं आप रक्षण करो? नहींतर अमो अनाथो मृत्यु पामीशुं. एवी रीते जिननुं आगमन, पुत्रोनो नाश, तथा देशमां आवती रेलथी गभराएला चक्रीने इंद्रे कह्युं के हे राजन्! आ बाबतमां तमो तर्कवितर्क शुं करो छो? तमो पुत्रोनो शोक तजी द्यो? अने ते शोकने दूर करवामां वैद्य समान एवा प्रभुने भजो? तेम प्रभुना नमस्कारथी उत्पन्न थनारा पुण्यने शोकथी वृथा नहीं करो? वली जह्नुना पुत्र भगीरथने तमो रेलने रोकवा माटे हुकम करो? केम के ते नागकुलप्रते थएला पोताना पिताना दोषने दूर करशे. ते सांभली चक्रीए निश्वास मुकी तथा आंखोमां किंचित अश्रु लावी, भगीरथने बोलावी पोताना खोलामां बेसाड्यो. पछी तेना मुखपर चुंबन करीने चक्रीए तेने कह्युं के, हे वत्स! तुं जो? के आ भारतवंशपर केवी आफत आवी पडी छे? दावानलथी दग्ध थएल छे वृक्षो ज्यां एवा अरण्यमां बाकी रहेला एक अंकुरानी पेठे तुंज फक्त आपणा कुलमां बाकी रहेल छे. माटे हे वत्स! हवे तुं नागेंद्रनी सेवाथी लोकोना रक्षणमाटे दंडरत्नथी गंगाने पाछी तेना मुख्य प्रवाहमां लाव? एवी रीतनी चक्रीनी आज्ञा मस्तकपर चडावीने भगीरथ पृथ्वीने क्षोभावता थका तथा सैन्यनी रजोथी सूर्यने आच्छादित करता थका सैन्य सहित चालवा लाग्या.

पछी चक्री पण इंद्र तथा राणीउ सहित शोक दूर करवा माटे आदरसहित प्रभुने नमवा चाल्या. त्यां समवसरणमां बेठेला ज्ञानी प्रभुने तेउए त्रण प्रदक्षिणा देइ वंदन कर्युं; तथा पछी प्रभुनी स्तुति करी के, हे प्रभु! तमो जय पामो? अनंत दुःखोथी दुःखी थएला लोकोना शोकने दूर करनारा, तथा अंतरनी व्याधिने हरवामां प्रवीण एवा तमोप्रते नमस्कार थाउ? एवी रीते भक्तिथी स्तुति करीने तेउ योग्य स्थानके बेठा, त्यारे प्रभु पण क्लेशने हरनारी वाणी बोलवा लाग्या के, हे चक्री! आ संसार असार छे, राज्यसुख स्थिर नथी, पुत्र, मित्र, स्त्री आदिक दृढ बंधनो छे, शरीर, रोग अने शोकने करनारुं छे, विषयो झेर सरखा छे,

भोगो सर्पनी फणासरखा छे, तथा आ जीवित जलबिंदु सरखुं छे. वली क्षणमां जे मनोहर लागे छे, तेज बीजी क्षणे भयंकर लागे छे. माटे तत्वथी आ संसारमां कंइ पण स्थिर वस्तु नथी. वली आ संसाररूपी केदखानामां विद्वानो पण प्रमादथी कुटुंब, द्रव्य आदिक पाशोथी बंधाय छे. वली आ भवरूपी समुद्रमां विषयरूपी वंटोलीआथी चित्रावेलीनी पेठे कोइ विरलाज बाधा पामता नथी. एवी रीते प्रभुनी देशनानी वाणीरूपी अमृतने पीने, तथा दुःखरूपी विषने तजीने, चक्री हर्षथी प्रभुने कहेवा लाग्या के, हे स्वामी! आ समस्त जगत कर्मने आधिन छे, तो आ साठ हजार पुत्रोए एकी वखते एवुं कयुं कर्म बांध्युं हतुं? के जेथी तेउनुं एकी वखते मृत्यु थयुं? एवी रीते चक्रीए पुछवाथी ज्ञानथी दीठेल छे, चराचरनो स्वभाव जेणे एवा प्रभु, कर्मबंधनना कारणरूप एवा तेउना भवोनुं वर्णन करवा लाग्या के, कोइक पल्लीमां तेउ सघला चोरीथी आजीविका चलावनारा, तथा दुर्ध्यानमां रहेनारा भिल्लो हता. एक दहाडो भद्दिलपुरथी कोइक द्रव्यवान संघ शत्रुंजयप्रते जतो हतो, तेने तेउए जोयो. त्यारे ते लुंटाराउए ठराव कर्यो के, आजे संध्याकाले आपणे आ संघने लुंटवो. ते ठराव ते साठ हजार भिल्लोए कबुल राख्यो, त्यारे एक भद्रक स्वभावी कुंभार कहेवा लाग्यो के, आ तमारा विचारने धिक्कार छे!! केम के आपणी पासे सैन्य, धन विगेरे घणुं छे, छतां आ यात्रालुउने शामाटे आपणे लुंटवा जोइए? आपणने पूर्वभवना पापोथी आवो नठारो जन्म मलेलो छे, अने वली पण आ संघनी लुंटना पापथी आपणी कोण जाणे केवी गति थशे? वली आ यात्रालुउ पुण्यानुबंधि पुण्यथी आ जन्ममां पण महा धनेश्वरी थया छे, तथा आ तीर्थराजनी यात्राथी फरीने पण सुखीआ थशे. वली हे भाइउ! तमो मने सर्वथा कायर अने बीकण भले कहो? तोपण हुं ते कार्य माटे तमारी साथे आवीश नहीं, तेम तमोने ते माटे सलाह पण आपीश नहीं. एवी रीते बोलता ते कुंभारने तेउए केदखानामांथी जेम, तेम पोताना स्थानकथी बहार कहाडी मेल्यो. पछी ते लुंटाराउ एकठा थइने संघ, नजदीक आववाथी तेने लुंटी लीधो. ते भिल्लोना लुंटी पडवाथी, दुराचारथी जेम यशो, तथा चुगलीपणाथी जेम उत्तम गुणो, तेम संघना लोको दिशा दिशाउ प्रते नाशी गया.

एवी रीते ते दुर्बुद्धिउ संघने लुंटीने नारकीउंनी पेठे पाछा पोताने स्थानके आव्या. एटलामां ते जद्दिलपुरना राजाए ते वृतांत सांजलीने मोटी सेना सहित ते चोरोना स्थानकने घेरी लीधुं. ते समये ते राजाना सैन्यने मोटुं जोइने जयजीत थएला ते जिल्लो निगोदना जीवोनी पेठे किल्लामां जराइ रह्या. ते वखते तेउंना कुकर्मोथीज होय नहीं जेम, तेम वायुउंथी प्रेराएलो अग्नि ते स्थानमां लोकोने वालतो थको सलगी उठ्यो. ते अग्निने पाणीथी अटकाववतां उतां पण ते, क्रोध जेम पुण्यने, तथा दुर्जन जेम सज्जनना गुणोने, तेम ते नगरने बालवा लाग्यो. ते वखते ते अग्निथी बलता, तथा धुंवाडाथी व्याकुल थता एवा ते जिल्लोए कुंजिपाकनुं दुःख सहन कर्युं. वली ते वखते तेउ विचारवा लाग्या के, अमोए आ संघने उपद्रव कर्यो! माटे अमो पापीउंने धिक्कार ठे! वली ते अमारुं जयंकर कर्म अमोने फलीवुरू थयुं. वली ते वखते अमोने आ अकार्यथी अटकावनारो ते निर्लोजी कुंजारज पुण्यवान ठे, पण अमो दुष्टोए ते उत्तम माणसने कहाडी मेल्यो!! एवी रीतना ध्यानमां तत्पर रहेला ते सघलाउ कुटुंब सहित अग्निथी वलीने एकी वखते मृत्यु पाम्या; माटे हे राजन्! कर्मोनी गति एवीज ठे!! संघ, के जे अरिहंतोने पण पूजनीक ठे, तथा मोटामां मोटुं तीर्थ ठे, तेवा संघनी पण जे विराधना करे ठे, ते खरेखर नारकीज थाय ठे. माटे संघनी हमेशां आराधना करवी, पण तेनी विराधना तो बिलकुल करवीज नहीं, केम के संघना आराधनथी मुक्ति मले ठे, अने तेना विराधनथी नरक मले ठे. वली जे माणसो मार्गे चालता यात्रालुउंने पीडे ठे, तेउ कुटुंब सहित नाश पामीने नीचगतिमां जाय ठे. एवी रीते पश्चातापयुक्त पीडाथी मृत्यु पामीने तेउ नरके गया, तथा त्यांथी समुद्रमां मत्स्यो थया, अने त्यां पण एकी वखते मछीमारोथी जालमां बंधाया. त्यांथी तेउ शियालो थया, तथा पछी घणा जवो जमीने हमेशां शिकारमां तत्पर थया थका जिल्लो थया. त्यां एक दहाडो वनमां जमतां थकां तेउंए एक शांतस्वजावी मुनिने जोइ, तेमने शुज जावथी नमस्कार कर्यो. त्यारे ते ज्ञानी मुनिए तेमने धर्मोपदेश दीधो, तेथी तेउंए शंकासहित जद्रकपणुं मेलव्युं. वली तेउंने विशेष धर्म पमाडवा माटे ते ज्ञानी मु-

नि त्यां तेमनी नजदीक चतुर्मास रह्या. त्यां प्रथम मासे तेउए साते व्यसनोनो त्याग कर्यो, बीजे मासे अनंतकायना भक्षणनो, तथा त्रीजे मासे रात्रिभोजननो त्याग कर्यो. पछी चोथे मासे अनशन सहित विजली पडवाथी तेउ एकी वखते मृत्यु पामीने, हे चक्री ! आ तारा पुत्रो थया, माटे कर्म बलवान छे ! !

हवे जे कुंभारे संघनी लुंट कबुल राखी नहीं, तेने तेज भवे मोटी रिद्धिवालुं राज्य मळ्युं. पछी त्यांथी उत्तम उत्तम भवोमां जइने, ते आ महान उदयवालो जह्नुनो पुत्र भगीरथ थयो छे. वळी हे चक्री ! तेज कर्मथी आ तारा पुत्रो हमणा पण एकीज वखते मृत्यु पाम्या छे. माटे पंडिते मनथी पण संघनी अवज्ञा करवी नहीं, केम के ते अवज्ञा बोधिबीजप्रते अग्नितुल्य थइने कुगति आपे छे. वळी जे माणसो यात्रालु लोकोने वस्त्र, अन्न, पाणी विगेरेथी पूजे छे, तेउने तीर्थयात्रानुं महान फल मळे छे. वळी संघ छे ते प्रथम तीर्थ छे, माटे कल्याणनी इछावालाए तेने मार्गमां जती वेलाए हमेशां विशेषें करीने पूजवो. माटे हे चक्री ! हवे तमारे धर्मनें व्याघात करनारो ते संबंधिनो शोक बिलकुल करवो नहीं, केम के तेउ पोताना उपार्जन करेला कर्मोंथी उत्पन्न थया हता, अने तेज कर्मोंथी मृत्यु पाम्या. वळी हे चक्री ! तमोने राज्य, पुत्र तथा स्त्री आदिमां मोह, ते शुं लागी रह्यो छे ? माटे आत्मानुं हित करो ? केम के फरी फरीने मनुष्यभव क्यांथी मळशे ? एवी रीते प्रभुना मुखथी पुत्रोना भवोने जाणीने चक्री शोकनो त्याग करी हृदयमां परम वैराग्य पाम्या.

एटलामां पछी इंद्र चक्रीने कहेवा लाग्या के हे चक्री ! जेम तमोए भरतजीनी पेठे छखंड साध्या, तेम हवे तमो तेमनी पेठे संघपति पण थाउ ? ते सांभळी चक्री तीर्थयात्रा माटे आदर सहित थया, त्यारे प्रभुए पण तेमनापर संघपतिनो वासक्षेप कर्यो; पछी ते पोताने घेर गया. पछी इंद्र चक्रीने एक उत्तम जिनमंदिर आप्युं, तेमां श्री युगादीश प्रभुनुं रत्नमय बिंब शोभतुं हतुं, पछी स्नान करी, उत्तम वस्त्रो पहेरी भाव सहित चतुर्विध संघनी साथे उत्तम दिवसे तेमणे प्रयाण कर्युं. एवी रीते ते चक्री गणधरो, मुनिउ, श्रावको, श्राविकाउ, महाधरो, मंडलि-

को, चतुरंगी सेना, गांधर्वो, कौतुकी नृत्यकारो तथा चक्रसहित चालवा लाग्या. मार्गमां आवतां नगरोमां, गामोमां तथा तीर्थोमां प्रभुउने पूजता थका, मुनिउने नमता थका, तथा दान देता थका ते विमलाचलप्रते पहोंच्या. पछी त्यां आनंदपूरमां चक्रीए राजाउ सहित आदरथी प्रभुनी तथा संघनी पूजा करीने स्वामिवत्सलमहोत्सव कर्यो. वली तेमणे त्यां महोत्सवपूर्वक संघ सहित ते तीर्थने त्रण प्रदक्षिणा दीधी. पछी चौदे नदीउमांथी तीर्थोदक लेइने, ते संघसहित पर्वतपर सर्व जगोए मार्गने समरावता थका चडवा लाग्या. त्यां चक्री पूर्व मार्गेथी चड्या, तथा बीजाउ कुतुहल सहित पोतपोतानी शक्ति मुजब सर्व मार्गेथी चड्या. हवे ते वखते इंद्र पण त्यां आव्यो, अने तेउ बन्ने रायणना वृक्षनीचे एकठा मल्या.

हवे जह्नुनो पुत्र भगीरथ पण चक्रीना हुकमथी सैन्यसहित अष्टापदप्रते आव्यो. त्यां पोताना पिता तथा काकाउना दाहथी थएला भस्मना समूहने जोइ, दुःखथी सैन्यसहित ते क्षणवारमांज मूर्छा पाम्यो. पछी चेतना आव्याबाद शोकनो त्याग करी तेणे भक्ति तथा पूजा सहित नागेंद्रनुं आराधन कर्युं. तेनी अतिशय भक्तिथी तुष्टमान थएलो नागेंद्र पण चलकतां सुवर्णकुंडलथी शोभतो थको नागलोको सहित त्यां आव्यो. त्यारे भगीरथे पण सुगंधि वस्तुउ तथा पुष्पोथी, अने स्तुतिउथी तेनी पूजा करी, त्यारे हर्षित थएला नागेंद्रे भगीरथने कह्युं के, हे वत्स! में तेउने वार्या छतां पण तेउ मान्या नहीं, तेथी नागलोकना नाशनी बीकथी में तेउने भस्मरूप कर्या. वली हे वत्स! तेउए पण तेवुंज कर्म उपार्जन कर्यु हतुं! माटे हवे तुं मारी आज्ञाथी तेउनी मृत्युक्रिया कर? वली पृथ्वीपर रेल लावती एवी आ गंगाने पण तुं तेना मूलप्रवाहमांज जोडी दे? एवी रीते प्रीतिथी शिखामण देइने नागेंद्र पोताने स्थानके गयो. पछी भगीरथे पण ते पितृसंबंधि भस्मने नदीमां पधरावी; अने त्यारथी जगतमां पण पितृकार्यनो ते रिवाज दाखल थयो. एवी रीते पितृसंबंधि कार्य करीने कुमार्गे जनारी स्त्रीने जेम, तेम ते गंगाने तेणे दंडरत्नथी मूलमार्गप्रते वेहेती करी. वली लोकोना मुखथी चक्रीने शत्रुंजयप्रते गएला जाणीने ते पण उत्तरोत्तर प्रयाणथी ते तरफ

चालवा लाग्यो. पछी त्यां रायणतले जइ, तेणे चक्रीना तथा इंद्रना चरणोने नमस्कार कर्यो, त्यारे तेउए पण तेने आलिंगन कर्युं. पछी तेउए हर्षपूर्वक भक्तिथी त्यां भरतजीनी पेठेज श्री युगादीश प्रभुनुं स्नात्र, अने पूजादिक कार्य कर्युं. वली तेमणे त्यां गुरुना वचनपूर्वक मरुदेवाशिखरपर, बाहुबलिशिखरपर, तालध्वजपर, कदंबगिरिपर, तथा हस्तिसेन शिखरपर, इत्यादि सर्व शिखरोपर जिनपूजन करीने, मुनिउनी भक्ति, अन्नदान, आरात्रिक, महाध्वज, इंद्रोत्सव, तथा इंद्रपूजा करी; तेम त्यां छत्र, चामर, रथ, पृथ्वी, घोडा विगेरेनुं तीर्थदान कर्युं.

पछी भरतजीए बनावेला (अमूल्य) प्रासादोने जोइने धर्मने जगाडनारा सगर चक्रीने इंद्र स्नेहपूर्वक कह्युं के, हे चक्री ! तमारा पूर्वज भरत महाराजनुं आ शाश्वता तीर्थमां पुण्यना कारणरूप कार्य तमो जुउ ? वली आ पडता कालना माहात्म्यथी लोको निर्विवेकी, धर्मविनाना, तथा लोभांध थइने आ तीर्थमां आदर करशे नहीं. वली ते दुष्ट लोको मणि, रत्न अने सुवर्णना लोभथी कदाच आ प्रासादोनी तथा प्रतिमाउनी आसातना करशे. माटे हवे जह्नुनी पेठे तमो अत्रे कंइक पण रक्षणनो उपाय करो ? अने ते कार्यमां तमोने त्रणे जगतमांथी कोइ पण उपद्रव करी शके तेम नथी. ते सांभली चक्रीए विचार्युं के, सागरमां रहेली गंगाने ज्यारे मारा पुत्रो लाव्या, त्यारे हवे " हुं तो तेउनो पिता हुं " तेथी ते सागरनेज अहीं लावुं, तोज मारी प्रतिष्टा वधे, नहींतर तो मारुं मानहीनपणुं थाय. एवी रीतना आवेशथी, तथा इंद्रना हेतुयुक्त वचननुं समरण करीने, ते क्षणवारमांज यक्षो मारफते समुद्रने त्यां लाव्या. त्यारे टंकल, बर्बर, केश, चीन, भोट, सिंहल विगेरे विविध देशोने प्लावन करतो, मोटा मोटा पर्वतोने फाडतो, भयंकर रीते भुवनेंद्रोना भवनोने बुडाडतो, उछलता मगरादिक जलचरोथी आकुल थएलो, नासता एवा विविध प्रकारना देवोथी पण भयथी जोवातो, वेगथी अनेक जंतुउने उछालतो, मोटां मोजांउथी अपार गर्जना करतो, तथा पृथ्वीपर व्यापतो एवो ते समुद्र वेगथी शत्रुंजयप्रते आव्यो. पछी ते लवण समुद्रनो अधिष्टाता देव आदरथी हाथ जोडीने तथा चक्रीने नमीने नाम वचनथी कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! सेवकने शुं फरमान

छे? एटलामां जाणेल छे अवधिज्ञानथी जिनवाणी जेणे एवा इंद्रेज चक्रीने कह्युं के, हे चक्री! आ कार्यथी तमो अटको? केम के, सूर्यविना जेम दिवस, पुत्रविना जेम कुल, जीवविना जेम शरीर, विद्याविना जेम मनुष्य, दीपक विना जेम घर, आंखो विना जेम मुख, छायाविना जेम वृक्ष, दयाविना जेम धर्म, धर्मविना जेम जीव, तथा जलविना जेम जगत, तेम आ तीर्थविना सर्व सृष्टि निष्फल छे. वली अष्टापद तीर्थ निरुद्ध थयाथी आ शत्रुंजय तीर्थज लोकोने तारनार छे, तेथी आ तीर्थनो रोध थवाथी पृथ्वीपर बीजुं तारानारुं तीर्थ हुं कोइ जोतो नथी. वली ज्यारे तीर्थंकर महाराज, धर्म के जिनागम एमानुं कंइ पण नथी होतुं, त्यारे आ शत्रुंजय पर्वतज लोकोने वांछित आपनारो (तारनारो) छे. एवी रीतना इंद्रना वचनथी चक्रीए लवणाधिपने कह्युं के, हवे एक एंधाणी दाखल तुं अहीं समुद्रने रहेवा दे? एम कही तेने विसर्जन करी चक्रीए प्रीतिथी इंद्रने दुष्टोथी तीर्थनी रक्षामाटे प्रश्न कर्यो; त्यारे इंद्रे कह्युं के हे चक्री! तमो आ रत्ननी अने मणिनी मूर्तिउने ज्यां देवो पण न जइ शके एवी आ सुवर्णगुफामां मुको ? तथा सर्व तीर्थंकरोनी सुवर्णनी मूर्तिउ करावो? अने प्रासादो पण सुवर्ण अने रुपानाज बनावो ? पछी प्रभुथी पश्चिम दिशामां रहेली रसकुंपिकावाली, तथा कल्पवृक्षोथी भरेली सुवर्णगुफा इंद्रे चक्रीने बतावी; तेथी त्यां जइ तेमणे, प्रभुनी ते मूर्तिउने राखी, अने हमेशां तेमनी पूजा माटे यक्षोने आज्ञा करी. पछी चक्रीए इंद्रनी साथे रहीने त्यां रुपाना तथा पाषाणोना प्रासादो बंधाव्यां, अने तेमां सुवर्णनी मूर्तिउ पधरावी. पछी तेमणे सुभद्रशिखरपर बीजा तीर्थंकर श्रीअजितनाथ प्रभुनुं भावथी रुपानुं मंदिर बंधाव्युं. त्यां ज्ञानी घणधरो, श्रावको, तथा देवोए पूजापूर्वक प्रतिष्ठामहोत्सव कर्यो. एवी रीते शत्रुंजयनो उद्धार करीने चक्री देवो तथा मनुष्यो सहित रेवताचल प्रते चाल्या. त्यां चंद्रप्रभासमां श्री चंद्रप्रभ जिनेश्वरने नमस्कार करीने विमानोमारफते ते रेवताचलपर गया. त्यां आदरपूर्वक तीर्थने प्रदक्षिणा देइने, तथा गजेंद्रपदकुंडमांथी पाणी लेइने जिनालयमां गया. त्यां पण पूर्वनी परेंज तेमणे प्रभुनि पूजा, स्तुति विगेरे कर्युं, तथा पछी भावथी सुपात्रोप्रते उचित दान आप्युं. पछी श्रीद, सिद्धगिरि, विद्याधर गिरि,

देवगिरि, अंबिकागिरि, उमागिरि, शंभुगिरि विगेरे त्यांना सर्व शिखरोपर गुरुसहित तेमणे प्रभुनी पूजा करी, केम के ते गुरुनी आज्ञाने आधिन हता. पछी पाछा वलतां आबु, वैभार विगेरे तीर्थोमां प्रभुने तथा साधुओने नमीने चक्री अयोध्यामां आव्या.

एटलामां त्यां पोताना चरणोथी पृथ्वीने पवित्र करता थका श्री अजितनाथ प्रभु पण जाणे ते चक्रीना पुण्यथीज खेंचाइने होय नहीं, तेम त्यां आव्या. प्रभुना आगमननी वधामणी आपनारने घणुं धन देइने, घणा कालथी उत्कंठित थएला चक्री प्रभुने वांदवा माटे गया. पछी त्यां भक्तिथी रोमांचित थइने, तथा प्रभुने नमीने चक्री प्रभुना मुखरुपी चंद्रथी निकलता वचनरुपी अमृतने पीवा माटे तेमनी पासे बेठा. त्यारे प्रभु पण तेमने बोध आपवा माटे क्रोधरुपी सर्पना झेरने (नाश करवाने) गरुड सरखी तथा धर्मकार्यना प्रभाववाली वाणी कहेवा लाग्या के, आ भवरुपी समुद्रमां मोती, परवालां तथा रत्नोनी पेठे राज्य, पुत्र, स्त्री, बंधु, नगर, मेहेल, धन, तथा देवादिकनी ऋद्धि तो सुलभ छे, पण चिंतामणि रत्ननी पेठे सर्व अर्थोने साधनारुं चारित्र दुर्लभ छे. एक दिवस चारित्र पालवाथी पण मनुष्य निश्चयें करीने कर्मोना समूहने क्षीण करीने मोक्षमां जाय छे. एवी रीते चारित्रना मनोहर प्रभावने सांभलीने वैराग्ययुक्त थएला सगर चक्री भावथी प्रभुने नमता थका पोताने चारित्र आपवा माटे प्रार्थना करवा लाग्या. पछी चक्रीए पोतानी पाटे गुणवान, तथा राज्यने योग्य एवा भगीरथने स्थापीने, प्रभुपासेथी इंद्रे करेला महोत्सवपूर्वक चारित्र लीधुं. त्यारे प्रभुए तेमनी प्रशंसा करी के, हे चक्री ! तमो धन्य तथा पुण्यशाली छो, तथा तमारी माताने अने कुलने पण धन्य छे, केम के तमोए आ संसाररुपी समुद्रमां दुःखदायक जलचरो सरखा कर्मोने भेदनारुं, तथा दुष्कर एवुं क्षांति आदिक दशविध गुणोवालुं चारित्र लीधुं छे. पछी प्रभुनी भक्तिमां तत्पर थइने ते सगर महामुनि पण विहार करवा लाग्या.

श्री अजितनाथ प्रभुना सिंहसेन आदिक जिननी पेठे सत्यवादी पंचाणु गणधरो हता. वली तेमने एक लाख साधुओ तथा त्रण लाख ने त्रणसो साध्वीओ हती; तेम बे लाखने एक हजार उत्तम श्रावको हता; तथा

पांच लाख अठाणु हजारने चारसो श्राविकाउं हती. एवी रीते प्रभुना परिवारमां चतुर्विध संघनी स्थापना थइ; वली शासननी रक्षा माटे महायक्ष तथा अजिता नामनी यक्षिणी अधिष्ठाता थइ. एवी रीते प्रभु अढारलाख पूर्व कुमारपणामां रह्या; त्रेपन लाख पूर्व तेमणे राज्य पाल्युं; बार वर्ष छद्मस्थ रह्या; तथा एक लाख पूर्व दीक्षा पाली; एवी रीते अजित प्रभुनुं आयुष्य बहोतेर लाख पूर्वनुं हतुं.

हवे प्रभु अनुक्रमे विहार करता थका एक हजार मुनिउं साथे सम्मेतशिखरपर आव्या, तथा त्यां तेमणे अनशन ग्रहण कर्युं. पछी एक मासने अंते चैत्र सुदी पांचमने दिवसे, चंद्र रोहिणी नक्षत्रमां आवते छते, प्रभु ते मुनिउं सहित मोक्षे गया. ते वखते आसनो चलायमान थवाथी इंद्रादिक देवोए त्यां आवीने प्रभुनो निर्वाणमहोत्सव कर्यो.

हवे सगर महामुनि पण प्रभुनी पेठे जगतने प्रतिबोध देता थका घातिकर्मोना क्षयथी केवलज्ञान पाम्या. एवी रीते ते पण प्रभुनी पेठेज बहोतेर लाख वर्षोनुं आयुष्य पालीने सम्मेतशिखरपर मोक्षे गया. एवी रीते बीजा तीर्थंकर श्री अजितनाथ प्रभुना बोधथी तथा इंद्रना उपदेशथी सगर चक्रीश्वरे भरतजीनी पेठेज संघ सहित शत्रुंजय पर्वतपर सातमो उद्धार कर्यो, तथा तेथी घातिकर्मोनो नाश करीने ते मोक्षमां गया.

एवी रीते सातमो उद्धार जाणवो.

हवे एक दहाडो चोथा तीर्थंकर श्री अभिनंदन प्रभु देवोथी स्तुति कराता थका, तथा पोताना चरणोथी पृथ्वीने पवित्र करता थका शत्रुंजय पर्वत प्रते आव्या. त्यां रायणनी तले देवोए बहु भक्तिथी प्रभु माटे समवसरण रच्युं. त्यां सिंहासनपर बेठेला, तथा त्रण छत्रोथी शोभता एवा प्रभु सर्वभाषामय वाणीथी कहेवा लाग्या के, आ शत्रुंजय पर्वत अंतरंग शत्रुउंने नाश करनारो, सर्व पापोने हरनारो, तथा मुक्तिरुपी स्त्रीना क्रीडागृह सरखो शोभे छे. अहीं सुवर्ण कलश सरखा, कल्याणना करनारा, तथा सुवर्ण सरखी कांतिवाला श्री युगादीश प्रभु सनातन रहेला छे. वली सर्व तीर्थंकरो मोक्षमां गया बाद, तथा केवलज्ञाननो क्षय थयाबाद आ तीर्थज सर्वने कल्याणकारी थशे. जे प्राणीउं अ-

हीं प्रजुने चिंतवता थका तेमने पूजे ठे, तेउ पुण्योपार्जन करीने तुरतज मोक्षमां जाय ठे. वली जेउ अहीं प्रासादो तथा प्रतिमा बनावीने दीनोप्रते दान आपे ठे, तेउ तुरत बन्ने जवोमां सुखी थाय ठे. ते सांजलीने अत्यंत जक्तिवंत थएला व्यंतरेंद्रोए त्यांनां प्रासादोनो उत्साहथी उद्धार कर्यो. एवी रीते आ शत्रुंजय तीर्थपर अमूल्य पुण्यना समूह सरखो व्यंतरेंद्रोनो करेलो आठमो उद्धार थयो.

एवी रीते आठमो उद्धार जाणवो.

श्री वीरप्रजु इंद्रने कहे ठे के, हे इंद्र ! मनोहर चंद्र सरखी कांतिवाला आठमा तीर्थंकर श्री चंद्रप्रजुनुं व्रतांत हुं कहुं ठुं. आ जंबूद्वीपना जरत क्षेत्रमां चंद्रानना नामनुं मनोहर नगर ठे; त्यां प्रजाप्रते रागवालो, शत्रुउने जीतनारो. तथा मोटी सेनावालो महासेन नामे राजा हतो. ते राजाने कलंक रहित चंद्र सरखा शीलने धरनारी, निर्दोष तथा परिवारपर प्रीति राखनारी लक्ष्मणा नामनी राणी हती. एक दहाडो ते आधिव्याधिथी रहीत थइ थकी सुखेथी शय्यामां सूति हती, त्यारे पाठली रात्रिए तेणीए चौद महास्वप्नोने जोयां. चैत्र वदी पांचमने दिवसे, तथा चंद्र अनुराधा नक्षत्रमां आवते ठते वैजयंत विमानथी चवीने प्रजु तेमनी कुक्षिमां अवतर्या. पठी समय संपूर्ण थयेथी पोसवदी बारसने दिवसे चंद्र अनुराधा नक्षत्रमां आवते ठते तेणीए पुत्ररत्नने जन्म आप्यो. पठी उपन्न दिक्कुमारीउ तथा सुरेंद्रोथी थयेल ठे जन्मोत्सव जेमनो एवा प्रजु अप्सराउथी लालन कराता थका यौवन पाम्या. चंद्रना चिन्हवाला, तथा दोढसो धनुष्यनी उंचाइवाला ते प्रजु लोकोने आनंदकारक थया. पठी परण्याबाद प्रजु पितानुं राज्य पालवा लाग्या, एवी रीते तेमणे साडाठलाख पूर्वसुधि राज्य पाल्युं; पठी पोशवदी तेरसने दिवसे चंद्र अनुराधा नक्षत्रमां आवते ठते प्रजुए एक हजार राजा साथे दीक्षा लीधी. पठी त्रण मास गया बाद फागण सुदी सातेमे चंद्र अनुराधा नक्षत्रमां आवते ठते प्रजुने केवलज्ञान थयुं. ते वखते अवधिज्ञानथी जाणीने चार निकायना देवो प्रजुनो केवलज्ञाननो महोत्सव करवामाटे तुरत त्यां आव्या. त्यां समवसरणमां प्रजुनी देशना सांजलीने तेउ सघला हर्षथी पोतपोताने स्थानके गया. पठी अतिशयो सहित प्रजु विहार क-

रता थका सर्व अरिहंतोथी परिशीलित थएला शत्रुंजय पर्वतप्रते आव्या. त्यां रायणने प्रदक्षिणा देइने मुनिओ सहित वाणीरुपी पवित्र जलने वर्षता थका प्रभु समोसर्या. त्यां ते तीर्थना महान महिमाने कहीने, तथा तेने प्रदक्षिणा देइने प्रभु चंद्रोद्यानमां आव्या. त्यां सगर चक्रीए लावेला समुद्रना कांठापासे ब्राह्मी नदीने तीरे प्रभु समोसर्या. त्यां देवोए समवसरण करवाथी लोकोना समूहो त्यां आवीने, तथा प्रभुने नमीने तेमनी पासे बेठा. ते वखते त्यां शशिप्रभा नामनी नगरीनो शशिशेखर नामनो राजा पोतानी चंद्रप्रभा नामनी राणी सहित तुरत आव्यो. पछी चंद्रयशा नामना पुत्र सहित प्रभुने नमिने ते राजा, प्रभुनी वाणीरुपी अमृतनी श्रेणिने पीवा माटे त्यां बेठो. त्यारे प्रभु पण कहेवा लाग्या के, आ अस्थिर संसारमां श्री शत्रुंजयपर अरिहंत प्रभुनुं जे ध्यान धरवुं, तेज एक सारभूत छे. वली देवोमां जेम जिनेश्वर, ध्यानोमां जेम शुक्लध्यान, तथा व्रतोमां जेम ब्रह्मचर्य व्रत, तेम सर्व तीर्थोमां आ मुख्य तीर्थ छे. वली सर्व धर्मोमां चारित्र मुख्य छे, केम के ते विना मुक्तिरुपी स्त्री प्राणीने वरती नथी. एवी रीतनी प्रभुना मुखनी वाणी सांभलीने चंद्रशेखर राजाए राणी सहित चारित्र लीधुं.

हवे प्रभुना कायोत्सर्गनी जगोए समुद्र किनारे धरणेंद्रे चंद्रकांत मणिना बिंबवालुं प्रभुनुं मंदिर बनाव्युं. पछी प्रभु पण तीर्थप्रते तत्पर थया थका रैवताचलादिक शिखरोमां विहार करवा लाग्या. पछी त्यांथी विहार करीने जगतने तीर्थमय करता थका, हजार मुनि साथे प्रभु सम्मेतशिखरप्रते आव्या. त्यां श्रावणवदी सातेमे, चंद्र श्रवण नक्षत्रमां आवते छते प्रभु निष्कंप थया थका रह्या. एवी रीते साडा सात लाख पूर्वनुं आयुष्य संपूर्ण करीने प्रभु अनशनमां रह्या थका मोक्षे गया. पछी त्यां सघला इंद्रो प्रभुनो निर्वाणमहोत्सव करीने पोतपोताने स्थानके गया.

हवे ते चंद्रशेखर महा मुनि पण विहार करता थका प्रभुना चरणोथी पवित्र थएली चंद्रप्रभा नगरीमां गया. त्यां तेमने आवेला जाणीने तेनो पुत्र चंद्रयशा पण वेगथी त्यां पांचसो राजाओ सहित आव्यो. तथा तेणे चंद्रशेखर मुनिने नमस्कार कर्यो, त्यारे ते मुनि पण

धर्मलाजनी आशिषपूर्वक तेने कहेवा लाग्या के, अहीं चंद्रप्रज्ञ प्रजु आव्या हता, तेथी आ चंद्रप्रजास नामनुं तीर्थ पृथ्वीमां प्रख्यात थशे. वली अहीं समुद्रना किनारापर ज्यां प्रजु प्रतिमाथी रह्या हता, त्यांथी लवणसमुद्रना अधिष्टायक देवे समुद्रने दूर कर्यो हतो. वली अहीं धरणेंद्रे प्रजुनुं मंदिर बनावेल छे, जेथी ते तीर्थ वधारे पवित्र छे, तेम त्यांनो समुद्र पण पवित्र छे. वली अहीं पूर्वे चंद्रोद्यानती समीपे श्री युगादीश प्रजु आव्या हता, ते वखते तेमना पौत्र शशीकीर्तिए पोताना जावथी चंद्रप्रजुनुं मंदिर नगर सहित बनाव्युं हतुं, तेथी ते तीर्थ अतुल्य तथा पवित्र छे. वली अहीं ज्यां योजनप्रमाण जूमिमां प्रजुनुं समवसरण थयुं हतुं, ते जगाए मनुष्यने देवगति थाय छे. वली जिनना चरणथी पवित्र थएली ते जूमिपर मडदांउमां दुर्गंध, तथा कीडा पडशे नहीं. वली अहीं जे माणसो सावद्यनो त्याग करीने जिनना ध्यानमां तत्पर रही तप तपे छे, तेउने मुक्तिरूपी स्त्री दूर नथी. वली अहीं सगर चक्री तीर्थनी रक्षा माटे समुद्रने लाव्या छे, अने ते समुद्रनुं पाणी आठमा प्रजुना स्नात्र माटे उपयोगी होवाथी पवित्र छे. वली अहीं रहेली ब्राह्मी नदीने ब्रह्मेंद्र जिनस्नात्र माटे लावेला छे, तेथी ते सर्वथा प्रकारे पवित्र छे. वली अहीं घणा तीर्थोनो संगम होवाथी सर्व पापोने नाश करनारुं आ उत्तम तीर्थ छे. अहीं शुज जावथी चार शाखावालो धर्म आराधवाथी, ते सेंकडो शाखाउवालो थइने विस्तार पामशे. एवी रीते सर्वनो उपकार करनारा ते मुनि उपदेश दइने बीजी जगोए विहार करी गया. पछी त्यां चंद्रयशाए चंद्रप्रज्ञ प्रजुनुं हर्षथी मणिमय मंदिर बनाव्युं. वली त्यां तेणे पोताना पिता चंद्रशेखरनी मणिमय मूर्ति बनावी, केम के उत्तम पुत्रनी पितातरफ एवीज जक्ति होय छे. वली त्यां तेणे गुरुनी आज्ञापूर्वक केटलाक दिवसो सुधि विविध प्रकारनुं दान दीधुं. वली त्यां तेणे केटलांक मंदिरोने जीर्ण थएलां जोइने आदरथी तेमनो उद्धार कर्यो. वली तेणे पुंडरिकगिरि, रैवताचल, आबु तथा वाहुबलि विगेरे गिरनारपर पण जक्तिथी उद्धार कर्यो. एवी रीते तीर्थोनो उद्धार करीने, तेम घणा धर्मने चंद्रयशा राजाए शुज गुरुनी पासे मुक्तिश्रीनी सखी सरखी दीक्षा लीधी. पछी लाख पूर्वो सुधि दीक्षा पालीने, तथा आठे

कर्मोनो क्षय थवाथी केवलज्ञान पामी अंते जे ते मोक्षमां गया, ते सघलो प्रभाव आ तीर्थनो जाणवो.

एवी रीते नवमो उद्धार जाणवो.

मलीन चंद्रने तजीने हरिणे जे प्रभुना चरण कमलने सेव्युं छे, एवा देवोथी सेवाएला शांतिनाथ प्रभु संघप्रते शांति करनारा थाउं? भरत क्षेत्रना गजपुर नामे नगरमां जगतनी सर्व सेनाने जीतनारो विश्वसेन नामे राजा हतो. तेने शीलनी लीलाथी उज्वल थएली अचिरा नामे राणी हती; एकदा समये तेणीए पाछली रात्रिए चौद महास्वप्नो जोयां. हवे श्री शांतिनाथ प्रभुनो जीव सर्वार्थसिद्धथी चवीने भादरवा मासनी सुद सातेमने दिवसे चंद्र भरणी नक्षत्रमां आवते छते तेनी कुक्षीमां आवी अवतर्यो. स्वप्नना दर्शनथी अरिहंत अथवा चक्रीना जन्मनो निश्चय करती थकी रत्नगर्भानी (पृथ्वीनी) पेठे ते अचिरा माता शुभ दोहदवालां थया थकां गर्भने धारण करवा लाग्या. पछी संपूर्ण समये जेठ सुदी तेरसे चंद्र भरणी नक्षत्रमां आवते छते तेणीए पुत्ररत्नने जन्म आप्यो. त्यारे छपन्न दुकुमारिउए तथा इंद्रादिक देवोए हर्षथी प्रभुनो जन्मोत्सव कर्यो. पछी स्वर्णकांतिवाला ते प्रभुए यौवन अवस्थाए पितानी आज्ञाथी राज्यभारने अंगीकार कर्यो. चक्ररत्नना अनुसारे छ खंड पृथ्वीने जीतीने, इंद्र जेम देवलोकना राज्यने तेम ते पोतानुं राज्य चलाववा लाग्या. पछी जेठ सुदी चौदसने दिवसे चंद्र भरणी नक्षत्रमां आवते छते प्रभुए इंद्रना महोत्सव पूर्वक एक हजार राजाउ सहित दीक्षा लीधी. पछी छद्मस्थपणामांज सघला देशोमां विहार करीने एक दिवसे प्रभु गजपुर नजदीकना उद्यानमां आवी ध्यानमां रह्या. त्यां पोससुदी नवमीने दिवसे कर्मोना क्षयथी लोकालोकने प्रकाशनारुं प्रभुने निर्मल केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी ते ते अतिशयोथी युक्त थएला तथा देवोथी सेवाएला प्रभु शत्रुंजय नजदीक सिंहोद्यानमां आव्या.

हवे प्रतिष्ठान नामे नगरमां एक मिथ्यात्वी ब्राह्मण हतो, ते दुष्टबुद्धि यज्ञकार्यमां आसक्त थयो हतो. एक दहाडो वश करेला लोकोना समूहथी वींटाएला ते ब्राह्मणना यज्ञवाडामां कोइक मुनि आव्या, त्यां (यज्ञमां थती) हिंसाने जोइने हृदयमां दुःखीत थएला ते मुनि उंचे

खरेखर कहेवा लाग्या के, शुद्ध सिद्धांतोने दूषित करनारा एवा आ लोकोने धिक्कार छे! पूर्वे श्री भरत महाराजे धर्मयुक्त वेदोने बनाव्या हता, ते वेदोने आ ग्रासांध लोको दूषित करे छे. एवी रीतना ते मुनिना वचनथी क्रोधातुर थएलो ते दुष्ट ब्राह्मण हथियार लेइने तेमने मारवाने दोड्यो; पण वचमां उभा करेला यज्ञस्तंभमां अथडावाथी तेणे तुरत पोताना अपराधि प्राणोनो त्याग कर्यो. एवी रीते आर्तध्यानथी मृत्यु पामीने ते ब्राह्मणनो जीव ते सिंहोद्यानमां सिंह थयो, एवी रीते मुनिदर्शनना पुण्यथी तेने ते उत्तम तीर्थ मल्युं. हवे ते सिंह त्यां वनवासी प्राणीउने त्रास आपतो थको भमवा लाग्यो; त्यां एक दहाडो तेणे श्री शांतिनाथ प्रभुने जोया, तेथी शीतोपचारथी जेम ज्वर, तथा साम वाक्यथी जेम दुर्जन तेम ते अत्यंत क्रोधातुर थयो; तथा पुंछडांथी पृथ्वीने आस्फालन करतो थको, अने क्रोधथी लाल आंखोवालो थयो थको ते पंजो उगामीने प्रभु तरफ दोड्यो. पण सिंहथी जेम हरिण तेम ते प्रभुथी भय पामीने सात धनुष्य दूर हठ्यो. एवी रीते वारंवार प्रभु तरफ दोडतो तथा पाछो हठतो थको ते मनमां विचारवा लाग्यो के, मारी आडे तो कंइ वस्तु आवती नथी, अने हुं फाल पण मारी शकतो नथी. माटे खरेखर आ शांतशरीरी कोइ असामान्य महात्मा छे; एम विचारतो थको, तथा प्रभु तरफ वारंवार जोतो थको ते पोताना पूर्व भवोने याद करवा लाग्यो. एवी रीते तेने क्रोधथी शांत थएलो जाणीने प्रभु तेने कहेवा लाग्या; केम के ज्यांसुधि तपेलुं तेल होय, त्यांसुधि तेमां पाणी नाखवाथी ते भयंकर भडको लेइ उठे छे. प्रभुए तेने कह्युं के, हे सिंह! तुं तारा ब्राह्मणना पूर्व भवने याद कर? त्यां तेवी रीतना दुष्कार्यथी तुं आ तीर्यचरूपे थयो छुं. वली आ तीर्थराजनुं समीपपणुं पामीने पण हवे तुं क्रोधातुर थइने नरक आपनारी हिंसा शामाटे करे छे? वली ते समये हितोपदेश देनारा मुनिप्रते पण तें जे क्रोध कर्यो, तो तने मृत्यु आदिक आवुं फल भोगववुं पड्युं छे. माटे हवे जीवहिंसा तजीने, तुं दयाने अंगीकार कर? तथा धर्मने भजतो थको भेद पाम्या विना तीर्थने आराध? एवी रीते धर्मवचनोथी तेने प्रतिबोधिने प्रभु आगल चाल्या. त्यारे ते सिंह पण शांत चित्तवालो थयो

थको प्रभुनी पाछल चालवा लाग्यो. पछी प्रभु शत्रुंजयपर चड्या, तथा पाछल आवता ते सिंहने तेमणे कह्युं के, तुं हवे प्राणीउंप्रते समता धारीने अहींज रहेजे? केम के अहींज तने आ क्षेत्रना प्रभावथी देवगति मलशे, तथा पछी एकावतारी थइ तुं मोक्षे जइश, एवी रीतनी प्रभुनी आज्ञामां तत्पर रहीने ते सिंह प्रभुनुं ध्यान धरतो थको मुनिनी पेठे दयाने तथा शांत मनने धारण करीने त्यां रह्यो. पछी त्यां शुभध्यानथी मृत्यु पामीने ते उत्तम देवगतिमां गयो; माटे तीर्थनो प्रभाव कदापि पण निष्फल जतो नथी

हवे श्री शांतिनाथ प्रभु पण देवोना समूहोथी वींटाया थका अजितप्रभुनी पेठेज मरुदेवा शिखरपर चार माससुधि रह्या. त्यां गांधर्वों, विद्याधरो, देवो, भुवनपतिउं तथा मनुष्यो प्रीतिपूर्वक प्रभुने हमेशां पूजता हता. एवी रीते त्यां चतुर्मास रहीने प्रभु सूर्यनी पेठे जगतने बोध आपवामाटे त्यांथी विहार करी गया. हवे प्रभुथी पवित्र थएला ते शिखरपर ते सिंहदेवे स्वर्गमांथी आवीने मूर्ति सहित श्रीशांतिनाथ प्रभुनुं मंदिर बंधाव्युं. वली पोतानी देवगतिना कारणरूप एवा ते शिखरपर ते देवे बीजा पण प्रभुना मूर्तिउं सहित प्रासादो बंधाव्यां. एवी रीते सिंहदेवथी तथा तेना अनुचर एवा बीजा देवोथी अधिष्ठित थएलुं ते शिखर शांतिजिननी भक्तिथी सर्वना इच्छितोने आपे छे. ते शिखरनी समीप इशान खुणामां पांचसो धनुष्य दूर यक्ष छे, ते चिंतामणि रत्न आपे छे. त्यां कल्पवृक्षोपर रहेला क्रोडो अधिष्टायक देवो शांतिनाथ प्रभुनुं आराधन करनाराउंने सर्व इच्छित वस्तु आपे छे. वली त्यां पुण्यशालीउंने अरिहंत प्रभुना आश्रयथी संशयरहित पारलौकिक सिद्धि मले छे. एवी रीते सर्व शिखरोपर विहार करीने, प्रभु पोताना चरणन्यासोथी पृथ्वीने पवित्र करता थका अनुक्रमे गजपुर नगरमां आव्या. त्यां शांतिनाथ प्रभुना चक्रधर नामना पुत्र प्रभुने आवेला जाणीने, तुरत परिवार सहित तेमने नमवा माटे आव्या. पछी त्यां सर्व सभासदो प्रभुने नमीने तथा स्तवीने बेठा बाद प्रभु पण पोताना मुखकमलमांथी मकरंद सरखी देशना देवा लाग्या के, शील, शत्रुंजय पर्वत, समता, जिननी सेवा, संघ, तथा संघाधिपपणुं ते सर्व मोक्ष आपनारां छे. एवी रीतनी प्रभुनी देशना सांभलीने उत्तम

बुद्धिवाला चक्रधर राजा उठीने कहेवा लाग्या के, हे प्रभु! मने आप संघाधिपपणुं आपो? त्यारे प्रभुए पण देवोए लावेलो वासक्षेप तेमना मस्तकपर नाख्यो. एवी रीते प्रभुनी ते आशिष लेइने, तथा इंद्रे दीधेला चैत्यने लेइने राजाए संघने निमंत्रण कर्युं. पछी कुलस्त्रीओए करेल छे मंगल जेनुं एवा ते चक्रधर राजा सैन्यना भारथी जगतनें चलायमान करता थका संघसहित चालवा लाग्या. पछी अनवछिन्न प्रयाणथी, गामोगाम प्रते जिनोने तथा मुनिओने नमता थका ते सुराष्ट्र देशमां आवीने तीर्थ समीपे आव्या. त्यां एक दहाडो राजा ज्यारे देवालयमां बेठा हता त्यारे, पोतानी कांतिथी आकाशने तेजस्वी करतो थको कोइक विद्याधर आव्यो. तेने जोइ चक्रधर राजा आसनपरथी जरा उठ्या, तथा, तेने उत्तम आसनपर बेसाड्यो, पछी ते विद्याधर हाथ जोडीने राजाने कहेवा लाग्यो के, हे राजन्! तमो अरिहंत प्रभुना पुत्र, तथा इक्ष्वाकु वंशमां मुकुट समान छो. हुं खेटपुरना राजा मणिप्रिय विद्याधरनो कलाप्रिय नामे पुत्र छुं, तथा शत्रुओथी छलें करीने पराभव पामेलो छुं. हवे गोत्रदेवीनी आज्ञाथी आपनाथी ते मारा शत्रुओनो क्षय जाणीने, आपने बोलाववा माटे हुं अहीं आव्यो छुं, तेथी हे प्रभु! आप मारापर कृपा करो? पछी चक्रधर राजानी आज्ञाथी ते विद्याधरे पोतानी अत्यंत शक्तिथी विमाननी रचना करी. पछी शत्रुने नाश करनार चक्रधर राजा पण विमानमां बेसीने क्षणवारमांज ते विद्याधर सहित खेटपुरमां आव्या. एवी रीते चक्रधरना त्यां आववाथी, तेना तेजने सहन नहीं करवाथी जलकांत मणिमांथी झरता पाणीनी पेठे शत्रुओ दूर चाल्या गया. एवी रीते शत्रुनो समूह नाशी गया बाद ते कलाप्रिय विद्याधर चक्रधर राजाने आदरसहित कहेवा लाग्यो के, हे प्रभु! पोतानी मेलेज आपप्रते रक्त थयली मारी बेहेनने आप परणो? जो के तेथी पण हुं आपनो बदलो तो लेशमात्र पण वाली शकतो नथी. एम कहीने तेणे पोतानी गुणमाला नामनी बेहेन चक्रधरने आपी. तेना संगमथी चक्रधर कौमुदी सहित चंद्रनी पेठे शोभवा लाग्या. वली तेना रूपथी मोहित थयली बीजी विद्याधरनी कन्याओने पण नरकी त्यां परण्या; केम के भाग्यवंतोनुं भाग्य सर्व जगाए अद्भुत होय छे. पछी चक्रधर राजाने तीर्थपर जवानी इ-

छवाला जाणीने ते विद्याधर तेमने स्त्रीउं सहित विमानमां बेसाडी त्यां लेइ जवा लाग्यो. मार्गमां विमान चालते छते ते विद्याधरे तेमने खुशी करवा माटे स्त्रीउं सहित नृत्य कर्युं. ते विमानना झरुखामां बेसी चक्रधर राजा जगतनी रचना जोता थका, एक मनोहर उद्यानने जोइ विद्याधरने कहेवा लाग्या के, हे कलाप्रिय! पुष्पोनी सुगंधिथी हर्षित थएल छे जमराउंना समूह ज्यां, तथा आंबानी मांजरोथी आनंदित थएल छे कोयलो ज्यां, एवा आ उद्यानने तुं जो? आ उद्यानमां मारुं चित्त क्रीडा करवाने इछे छे, माटे तुं पण अहीं आनंदथी आ विमानने उतार? एवी रीतना राजाना प्रिय वचनने सांजलीने कलाप्रिये पण तेमनुं वचन सफल करवा माटे आकाशमांथी त्यां विमान उतार्युं. वृक्षोथी छवाएला तथा आंखोप्रते अमृतना वरसाद सरखा ते उद्यानमां चक्रधर राजा स्त्रीउं सहित क्रीडा करवाने इछता हवा. त्यां तेमणे वृक्षोने जोतां थकां तथा पुष्पो अने फलोने एकठा करतां थकां अगाडी अमृतना कुंडसरखुं एक तलाव जोयुं. घणा अने निर्मल मोजांउंथी वींटाएला कमलोना चलायमान थतां पत्रोथी जमराउंने उडाडी मेलता ते तलावने जोइ राजाए विद्याधरने कह्युं के, पालपर उगेलां वृक्षोनां पत्रोथी शांत करेल छे पंथीउंनो श्रम जेणे, तथा गर्मीना तापने हरनार, पृथ्वीरूपी स्त्रीना कंकण सरखुं, तथा चपल कल्लोलोथी चलित थएला कमलोपर खेली रह्या छे हंसो ज्यां, एवुं आ तलाव अत्यंत शोजे छे. वली चपल कमलोपर अहीं जमराउं लीलाथी नृत्य करी रह्या छे, तथा मयूरो टउकार करी रह्या छे, तथा चक्रवाक पक्षी पोतानी स्त्री सहित अहीं आनंद मेलवे छे. माटे हे विद्याधर! अहीं मारुं मन अत्यंत आनंद पामे छे, अने तेथी आ सरोवरनी प्रदक्षिणा देइने तेनी आसपासनी वस्तुउं आपणे जोइयें. एम कहीने ते विद्याधर सहित राजा तेनी आसपास फरवा लाग्या, त्यां तेमणे वृक्षोनी डालीउंमां आछादित थएलुं एक चैत्य जोयुं. ते चैत्यमां श्री युगादीश प्रजुनुं मणिनुं बिंब जोइने हर्षित थया थका स्त्रीउं सहित प्रजुने पुष्प, अक्षत, स्तवन आदिकथी पूजीने ते राजा प्रासादनी महान शोजा जोवा लाग्या. पछी जेटलामां ते बहार आवे छे, तेटलामां तेउंए विचित्र रूपवाली एक वांदरीने झरूखामां बेठेली जोइ. तेणीने जोइ

" अहो ! आतो सुंदर वांदरी छे " एम कही जेवो चक्रधर राजाए तेणीने स्पर्श कर्यो, के तुरतज तेणीने दिव्यरूप धरनारी स्त्री तरिके जोइ, तथा तेथी ते अत्यंत आश्चर्य पाम्या. पछी ते राजा जेटलामां कंइंक बोलवा जाय छे, तेटलामां तेणीना रखेवाल बे विद्याधरो त्यां आवीने हर्षथी राजाने कहेवा लाग्या के, हे स्वामी ! आना रूपना विपर्ययथी तमो आश्चर्य थशो नहीं ? आनी आश्चर्यकारक कथा सांजलवा माटे तमो अहीं बेसो ? पछी राजा त्यां बेठा बाद तेउमांथी एक विद्याधर कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! अमो वैताढ्यनी उत्तरश्रेणिमां रहीए छीए. आ मारी मूर्तिवंत एवा शृंगार रसने जीवाडनारी शृंगारसुंदरी नामनी पुत्री अनुक्रमे यौवन अवस्थाने पामी. एक दहाडो देहधारी वसंतश्री सरखी आ मारी पुत्री सखीउसहित क्रीडामाटे उद्यानमां गइ हती. त्यां स्वेछाथी पुष्पो, फलो, पत्रो विगेरे लेती थकी ते बीजा उद्यानमां गइ, तथा त्यांथी पण फलादिक लेवा लागी. त्यारे ते वनमी चक्रेश्वरी नामनी अधिष्टायक देवीए पोताना चापल्यपणाथी तेणीने श्राप आप्यो के तुं वांदरी थइ जा ? पछी तेणीए तेने नमस्कार करवाथी तथा आजीजी करवाथी ते देवी खुशी थइ, केम के उत्तमो प्रायें करी अत्यंत क्रोधी होता नथी. पछी ते देवीए तेणीने कह्युं के, शांतिनाथ प्रभुना पुत्र चक्रधर राजाना करस्पर्शथी तुं पाछी स्त्रीरूपे थइश; तथा हे सुलोचने ! तारा हाथने पण ते ग्रहण करशे, (अर्थात तने परणशे.) एम कहीने ते देवी अंतर्ध्यान थइ. हवे त्यारथी ते वांदरीरुप थइने आ वनमां रही छे, अने भाग्यना योगथी आजे आपनुं पण आगमन थयुं. माटे हे स्वामी ! जेम आपे तेने मनुष्यदान आपीने पोतानी करी लीधी छे. तेम हवे तेणीने आप कामदेवरूपी समुद्रथी पण उधारी कहाडो ?

एवी रीतनी तेउनी प्रार्थनाथी कलाप्रिय विद्याधरे श्री युगादीश प्रभुनी साखीए तेउनो विवाह कर्यो. पछी त्यां कलाप्रिये तथा ते बन्ने विद्याधरोए तेमने केटलीक कलाउ आपी, तथा देवीउए पण प्रत्यक्ष थइने तेमने वरदान आप्यां. एवी रीते परणीने ते चक्रधर राजाए त्यां वनमां भमतां थकां नदीना किनारापर तपस्या करता एवा केटलाक जटाधारीउनो आश्रम जोयो. त्यां लक्षणोथी तेने राजा जाणीने ते तपसीउए, उठीने तेमनो अर्घपाद्यादिकथी आदरसत्कार कर्यो. पछी रा-

जाए बहु आदरमानथी तेउने पुछ्युं के तमो कोण गे? तथा अहीं शा माटे एकठा थया गो? तथा तमो कोनुं ध्यान धरो गो? त्यारे तेउए कह्युं के, हे राजन्! अमो कछवंशी कंदमूल जक्षण करनारा जटाधारी तापसो गीए; वली अमो श्री युगादीश प्रजुने नमीए गीए, वल्कलो पेहेरीए गीए, ब्रह्मचर्य पालीए गीए, तथा जूमिपर शयन करीए गीए. ते सांजलीने चक्रधर राजा तेमने कहेवा लाग्या के, अरे! तमो तो मिथ्यात्वथी मोहित थया थका शुद्ध धर्मथी ठगाया गो! केम के, ज्यारे तमो निःसंग थइ ब्रह्मचारी थया थका तपजपमां तत्पर रही श्री युगादीश प्रजुने जजो गो, त्यारे अजक्ष्य वस्तुना जोजनमां शा माटे रक्त थया गो? जेथी मिथ्यादृष्टिउ अज्ञानी रहेला गे, एवी गुप्त नसोवाली, जांगवाथी जेना सरखा जाग थाय तेवी, तथा पल्लवरूप वनस्पति अजक्ष्य कहेली गे. जे वनस्पतिमां तीक्ष्ण सोइना मुखपर रहे एटला जागमां पण अनंता जीवो उपजे गे, तथा विनाश पामे गे, ते अनंतकायो कहेवाय गे. वली कीडाउथी व्याप्त थएलां एवां उडुंबर, वड, पीपला, काकोडुंबर, तथा अश्वत्थ, नामना वृक्षना फलो पण खावां नहीं. वली मध, मांस, माखण तथा मद्य ए चार महा विगयोनो त्याग करवो. वली हिम, फेर, करा, सर्व ऋतुनां नवां फलो, रात्रिजोजन, बोरानुं आथणुं, वृंताक (रींगणां) अजाण्या फलफुलो, फुंगाएल जोजन, बहुवीजां फलो, तथा काचा गोरससाथे द्विदलनुं जोजन, एटलानो पण त्याग करवो. एवी रीते प्रजुए बावीस वस्तुउ अजक्ष्य कहेली गे, माटे तेने तज्याविना तमो श्री युगादीश प्रजुने शी रीते पूजी शको गो? वली ते अजक्ष्यना जोजनथी हीन जाति, अज्ञानता, रोग, तथा दरिद्रपणुं मले, अने मृत्युबाद नरकगति मले गे. एवी रीतना प्रजुना वचनने जाणीने जे सुबुद्धि माणस ते अजक्ष्योनो त्याग करे, ते अनंत सुख जोगवीने पापरहित थइ मोक्षमां जाय गे. एवी रीतना चक्रधर राजाना वचनोने सांजलीने ते तापसो वैराग्ययुक्त थइ कहेवा लाग्या के, हे राजन्! आपे अमोने शुद्ध मार्ग बताव्यो. वली हे महाराज! आंधलाउए जेम चिंतामणि रत्नने, तेम अमारां जीवितनो आटलो काल अमोए मिथ्यात्वपणाथी फोकट गुमाव्यो. त्यारे चक्रधर राजाए तेमने कह्युं के, हे महानुजावो! हवे तमो खेद

नहीं करो? पण मारी साथे श्री ऋषभदेव प्रभुने वांदवामाटे चालो? तेम कहीने अति आदरथी राजा विमानमां चडीने लोकोनी दृष्टिने कौतुक आपता थका ज्यां संघ हतो त्यां आव्या. स्त्रीउंसहित तेमने आवेला जाणीने संघना लोको पण हर्षथी धवलध्वनि पूर्वक वाजित्रो वगाडवा लाग्या. हवे ते तापसो पण राजाए देखाडेला मार्गे चालता थका अनुक्रमे त्यां आव्या, तथा राजाए तेमने सन्मान आपवाथी तेउ अत्यंत हर्षित थया. पठी अनुक्रमे तीर्थपूजा तथा संघपूजा करीने इंद्रना उत्सवपूर्वक ते राजा पुंडरिक गिरिपर चड्या. पठी त्यां तेमणे विधिपूर्वक पूजा, आरात्रिक, दान, तथा इंद्रोत्सवप्रमुख सर्व कार्य कर्युं. एटलामां ते सिंहसूर प्रत्यक्ष थइने राजाने कहेवा लाग्यो के आपना पिताजीनी कृपाथी हुं तिर्यंच भवने तजीने आवी रीतनी ऋद्धिवालो जे देव थयो छुं, ते सर्व प्रभाव प्रभुनो तथा आ तीर्थनो ठे. वली श्री मरुदेवा नामना शिखरपर आपना पिताजी श्री शांतिनाथ प्रभुनुं मंदिर ठे, माटे त्यां जइ हर्षथी तेमनी तमो पूजा करो? पठी तेना वचनथी चक्रधर राजाए त्यां जइ श्री शांतिनाथ प्रभुने बहु भक्तिथी पूज्या, तथा त्यां पण पूर्वनी पेठेज तेमणे सर्व कार्य कर्युं.

हवे ते तपस्वीउ पण त्यां श्री ऋषभप्रभुने जोइ पोताना जन्मने कृतार्थ मानता थका आनंद पाम्या. पठी ते तापसो उत्तर दिशामां स्वर्गगिरिपर एक योजननी नीचाण भूमिमां केवली महाराजनी आज्ञाथी रह्या. त्यां घातिकर्मोना क्षयथी तेउने केवलज्ञान थयुं, तथा पठी प्रत्याख्यानमां तत्पर रह्यां थकां तेउने मोक्ष मल्यो. हवे जे जगोए इंद्रे करेल ठे, संस्कार जेउनो एवा ते तापसो ज्यां सिद्ध थया, ते स्थान तापसगिरिना नामथी प्रसिद्ध थयुं. पठी ते चक्रधर राजा आनंदथी ते मुक्तिप्रद मरुवा तीर्थने जोता हता, त्यारे इंद्रे तेने कह्युं के, हे चक्रधर राजन्! तमारा पूर्वजोनुं आ तीर्थ कालना माहात्म्यथी जीर्ण थएलुं ठे, माटे तेनो उद्धार करवो तमोने योग्य ठे. ते सांभली चक्रधर राजाए त्यांना सघला प्रासादोनो उद्धार कर्यो, अने तेथी पोताना भवपंजरने पण तेमणे जीर्ण कर्युं! पठी इंद्रे चक्रधर राजाने "तमो आ तीर्थना जीर्णोद्धार करनारा ठो." एम कहीने तेनी स्तुति करीने तेणे तेमने पु-

षपोथी वधाव्या. पछी पोताना पूर्वजोनी पेठे ते चक्रधर राजाए पुंडरिक गिरिना सर्व शिखरोपर प्रासादोनो उद्धार कर्यो. पछी चंद्रप्रनासक्षेत्रमां समुद्रपासे रहेला चंद्रप्रन प्रनुना मंदिरमां तेमणे अठाइ महोत्सव कर्यो. पछी ते संघना लोकोसहित संपदाना घर सरखा रैवताचलपर चड्या. त्यां कामदेवने जीतनारा श्री नेमिनाथ नामना नावितीर्थंकर महाराजने संघना लोकोए हर्षथी स्तवनोयें करीने पूज्या. त्यां पण चक्रधर राजाए प्रासादोनो जीर्णोद्धार कर्यो, तथा बीजा पण केटलाक नवीन प्रासादो बंधाव्या. पछी ते तीर्थनी प्रदक्षिणा देइने राजा संघसहित नंदिवर्धन शिखरपर चड्या. त्यां पण तेमणे पूजा, दान, स्वामिवत्सल आदिक करीने विधिपूर्वक जीर्णोद्धार कर्यो. पछी एवी रीते सम्मेतशिखर आदिक तीर्थोमां पण नक्तिथी यात्रा तथा जीर्णोद्धार करीने अनुक्रमे चक्रधर राजा उत्सवपूर्वक हस्तिनापुरप्रते आव्या. त्यां तेमणे पूर्वनीपरेंज त्रणखंड नरतनुं राज्य पालवा मांड्युं.

एटलामां हवे इंद्रोथी पूजाएला श्री शांतिनाथ प्रनु पण केटलाक मुनिउंसहित सम्मेतशिखरपर आव्या. त्यां लाख वर्षोनुं पोतानुं आयुष्य पूर्ण थतुं जाणीने तेमणे नवसो मुनिउंसहित अनशन ग्रहण कर्युं. पछी अनुक्रमे चैत्रवदी तेरसने दिवसे पाछले पहोरे प्रनु ते मुनिउंसहित मोक्षे गया. त्यां सर्व देवोए पूर्वनी पेठेज तेमनो निर्वाण महोत्सव कर्यो, तथा त्यां तेमनुं मणिमय मंदिर बंधाव्युं. एवी रीते प्रनुना निर्वाणने सांनलीने वैराग्ययुक्त थइ चक्रधर राजाए गुरु समीपे मनोहर चारित्र लीधुं. पछी दश हजार वर्षोसुधि खड्गधारा सरखुं चारित्र पालीने ते चक्रधर मुनि महाराजे केवलज्ञान मेलव्युं. एवी रीते केवलज्ञानरूपी सूर्यना किरणोथी समस्त जगतने हाथमां रहेला मणीनी पेठे जोता थका, तथा नव्यरूपी कमलना वनने विकस्वर करता थका, अने ध्यानथी बाहारना अने अंतरंगना सर्व अंधकारनो नाश करता थका ते श्री चक्रधर महामुनिराज सम्मेतशिखरपर रह्या थका, मोक्षनगरप्रते गया.

एवी रीते दशमो उद्धार जाणवो.

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिए बनावेला महा तीर्थ श्री शत्रुंजयना माहात्म्यमां श्री अजितस्वामी, सगर चक्री, श्री शांतिप्रनु,

उनां मारथी चलाचल थइ रह्युं छे; माटे हवे जेटलामां आ वहाणना टुकडे टुकडा न थइ जाय, तथा ज्यांसुधि आ वहाणमां रहेला लोकोनो नाश न थाय, तेटलामां आ समुद्रमां झंपापात करी हुं मारा प्राणोनो त्याग करुं. एम विचारि जेवामां ते वहाणना कटेरापर आवे छे, तेटलामां श्रवणने प्रिय लागे एवी अदृश्य रीते आकाशवाणी थइ के, "हे रत्नसार! तुं समुद्रमां झंपापात करवारूप साहसने नहीं करतो, तारी आ दशा में ज करी छे; आ समुद्रनी अंदर कल्पवृक्षना पाटीआंउथी वींटाएली, हवे थनारा श्री पार्श्वप्रभुनी निर्मल प्रतिमा छे. ते महा प्रभाविक प्रतिमानुं पूर्वे लाख वर्षोसुधि धरणेंद्रे पूजन करेलुं छे, तथा पछी छसो वर्षोसुधि कुबेरे पूजन कर्युं छे. पछी तेनी पासेथी प्रार्थना करीने वरुणे ते लीधी, तथा तेणे उत्तम भक्तिथी सात लाख वर्षोसुधि तेनुं पूजन कर्युं. हवडे ते अजय राजाना भाग्यथी अहीं आवेली छे, माटे ते प्रतिमाने लइने तुं ते इक्ष्वाकुवंशीने आपजे? ते हमणा सघली दिशाउने जीतीने द्वीप नामना नगरमां आव्यो छे, माटे ते भाग्यवंत राजाने तुं ते प्रतिमा आपजे? ते प्रतिमाना दर्शनथीज तेना रोगो तथा दुःकर्मो दूर जशे; ते प्रतिमानी अधिष्टायक एवी हुं प्रभाववाली पद्मावती नामनी देवी छुं. एवी रीतनी आकाशवाणी सांभलीने ते महाबुद्धिवान रत्नसारे तुरत ते प्रतिमाने बहार कहाडवा माटे खलासीउने समुद्रमां उतार्या. पछी जीव जेम धर्मने पामीने समाधिथी देवलोकमां जाय छे, तेम ते खलासीउ ते प्रतिमाना संपुटने लइने तुरत वहाणमां आव्या. तेज वखते हलदरना रंगनी पेठे. दुर्जननी मित्राइनी पेठे, तथा कमलपर रहेला जलबिंदुनी पेठे मेघनो घटाटोप जोतजोतामां नाश पाम्यो. वली ते वखते प्राणीउने आनंद आपतो, तथा तेउनी चिंताने दूर करतो उत्तम वायु पण वावा लाग्यो. ते वखते जिनना आगमनी पेठे अंतरमां निबिड (उंडांउंडां) रहस्यवालो, तथा उपरथी शांत, एवो गंभीर समुद्र पण तोफानरहित थइ उपशांत थयो. पछी ते वहाण पण शुभ वायुना योगथी द्वीपनगरप्रते आव्युं, त्यारे एक माणसे वेगथी जइ अजयपालने वधामणी आपी. त्यारे ते अजयपाल पण पार्श्वप्रभुने आवता सांभलीने, विकस्वर नयनवालो थयो थको, [illegible] तुरत त्यां सन्मुख आव्यो. पछी त्यां राजाना नयनरूपी

पद्मने विकस्वर करवामां सूर्य सरखी ते पार्श्वप्रभुनी प्रतिमाना संपुटने लोकोए उत्सव सहीत वहाणमांथी बहार कहाडी. पछी वाजित्रो वागते छते, केटलाको हर्षथी नाचते छते, तथा भाट लोको बिरुदावली बोलते छते, महादान देवाते छते, ध्वजोथी शणगारेला, तथा कपूर अने अगरना धूपोथी सुवासित करेला एवा ते नगरमां राजाए ते प्रतिमाना संपुटने प्रवेश कराव्यो. पछी ते संपुटने राजाए सिंहासनपर स्थापन करीने, तथा तेनी पूजा करीने, भक्तिथी खोल्युं. त्यारे शेषनागनी फणाउपर रहेला रत्नोना किरणोथी नाश करेल छे अंधकारनो समूह जेमणे एवा, त्रण छत्रोथी शोभता, पद्मासन वारीने रहेला, बन्ने पडखे चामरोवाला, धरणेंद्रे धारि राखेला सिंहासनपर बेठेला, नखना किरणोना समूहथी शोभता, कृत्रिम तथा अकृत्रिम एवा अरिष्टने दूर करवामां समर्थ, श्रीवत्सथी लांछित थएला साथलवाला, प्रभाविक, सर्व प्रकारना आभूषणोना समूहथी शृंगारयुक्त थएलुं छे शरीर जेमनुं एवा, तथा कल्पवृक्षना पुष्पोनी सुगंधिथी वासित करेल छे सर्व जगत जेमणे एवा, अने मध्यम लोकना नाथ, एवा श्री पार्श्वनाथ प्रभुने ते संपुटनी अंदर तेमणे जोया. पछी ते राजाए पंचांगथी पृथ्वीपीठने स्पर्श करीने, हर्षसहित पुण्यना समूहथी प्राप्त थाय एवा ते प्रभुने नमस्कार कर्यो. वली तेज समये तेना सर्व रोगोरूपी सर्पो दूर थया, तथा तेथी ते अत्यंत आनंद पाम्यो. पछी भक्तिथी ते मूर्तिने पूजीने तथा उत्सव सहित घेरे आवीने तेणे प्रीतिथी रत्नसारनी साथे भोजन कर्युं. पछी ते रात्रीए ज्यारे ते अजयपाल राजा सुखेथी निद्रा करता हता, त्यारे तेना ते सर्व व्याधिओ तेनी पासे आवी हर्षथी तेने कहेवा लाग्या के, हे राजन्! तें पूर्व भवमां जे मुनिने दुभाव्या हता, तेना फलतरिके अमोए तने घणा उपायोथी पीडित करेल छे, ते सघलुं तारे सहन करवुं. हवे आ पार्श्वप्रभुना दर्शनथी अमो तमारा अंगथी दूर गया छीए; तोपण हजु ते कर्म छ माससुधि किंचित भोगववानुं रह्युं छे. अने तेथी शाखापुर नामना नगरमां एक सूर नामनो पशुपाल छे, तेने त्यां वक्षस्थलमां, पुंछडामां, तथा मुखपर सफेद धावांवाली एक बकरी छे. तेना शरीरमां पूर्वार्जित कर्मोथी अमो रह्या छीयें, माटे ते छ मास सुधि तुं ते बकरीनुं तृणादिकथी पो-

पण करजे? तारा देहपरना चंदनादिक लेपनने उखेडीने, तथा तेमां जलने मिश्रित करीने तुं तेने देजे, के जेथी अमो आनंदित थइशुं. पछी छ मासने अंते सुवर्णसरखी कांतिवालो थइने आ पार्श्वप्रभुनी कृपाथी तुं घणा कालसुधि तारुं राज्य पालीश. एम कहीने ते रोगो अलक्ष्य रीते चाल्या गया, पछी राजाए पण जाग्या बाद पोताना शरीरने निरोगी जोयुं. पछी तेणे नगरनी अंदर सर्व माणसोने आनंदित करीने मोटो उत्सव कर्यो. पछी त्यां तेणे पोताना नामथी अजय नामनुं गाम वसावीने पार्श्वप्रभुनुं मंदिर बंधाव्युं. वली त्यां तेणे ते मंदिरना खरचमाटे दश ग्रामो आप्यां, तथा पुजारीउने पण राख्या. वली त्यां त्रणे काल ते तेनी पूजा करवा लाग्यो, अने तेना प्रभावथी तेना कल्याणनी वृद्धि थवा लागी. पछी ते वकरीने त्यां लावीने तेणे रोगोए कहेली विधि पूर्वक धान्य आदिकथी तेणीनुं पोषण कर्युं.

हवे एटलामां सौराष्ट्र देशनो कुलीन राजा वज्रपाणि पोताना गिरिदुर्गपुरथी त्यां आवीने ते अजय राजाने मल्यो. त्यारे अजय राजाए पण अत्यंत प्रीतिथी तेने घणा देशोना दानपूर्वक ते बन्ने तीर्थोनो रक्षक नीम्यो. पछी ते वज्रपाणीए प्रेरणा कर्याथी अजय राजाए गिरनारपर श्री नेमिनाथ प्रभुने नमस्कार कर्यो. पछी तेणे फरीने पोताना अजयपूरमां आवीने रोगोने नाश करनारा श्री पार्श्वनाथ प्रभुने नमस्कार कर्यो. हवे एटलामां कोइक ज्ञानी मुनि त्यां प्रभुने नमवामाटे आव्या, त्यारे तेने नमस्कार करीने राजाए तेनुं मनोहर माहात्म्य पुछ्युं. त्यारे ते मुनिए पण कह्युं के, हे राजन्! आ मूर्तिना प्रभावनी तो वातज शुं करवी? वली जेनो प्रत्यक्ष प्रभाव होय तेमां, कयो पंडित माणस संदेह करे? वली आ प्रभुनी प्रतिमाना दर्शनमात्रथीज तारा घणा कालना रोगो पण अंगथी नाश पाम्या छे; अने तेनी पेठेज सर्व कुष्टो, नेत्रना, मुखना, तथा उदरसंबंधि सघला रोगो पण तेना दर्शनथी नाश पामे छे. वली तेमना स्मरणथी पण शाकिनी, भूत, वेताल, राक्षस तथा यक्षना कुमरत करेला उपद्रवो पण नाश पामे छे. वली आ तीर्थमां ते प्रभुनी सेवा करनाराओना कालज्वर, विषनी पीडा, उन्माद, तथा सन्निपात विगेरे रोगो पण नाश पामे छे, वली अहीं ते प्रभुना ध्यानथी विद्या, लक्ष्मी,

सुख, पुत्र, स्त्री आदिकनी अभिलाषा करनाराउंना सर्व इच्छितो सिद्ध थशे. वली जे बिंबने एकसो वर्षो थयां होय, ते बिंब तीर्थज कहेवाय छे; अने आ बिंब तो लाखो वर्षोसुधी स्वर्ग तथा समुद्रमां देवोथी पूजाएलुं छे; माटे आ बिंबना दर्शनथीज पापोनी शांति थाय छे, तथा अहीं दीधेलुं दान अधिक फलने आपे छे. एवी रीते ते तीर्थनो महिमा कहीने ते मुनि आकाशमार्गे चाल्या गया. पछी ते अजय राजा त्यां छमाससुधि रह्यो, तथा पछी वज्रपाणीथी नमाता थकां तेणे सिद्धगिरिपर जइ प्रभुने पूज्या. पछी त्यां स्नात्रपूजा, इंद्रोत्सव, ध्वजारोपण आदिक कृत्योकरी पोताना राज्यमां गयो, तथा केटलांक धर्मकार्यो करी ते व्रत लेइने स्वर्गे गयो. तेनो पृथ्वी नामनी राणीथी उत्पन्न थएलो अनंतरथ नामे राजा थयो. तथा तेनो पुत्र दशरथ नामे राजा थयो. तेने देहधारी लक्ष्मी सरखी कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा तथा सुप्रभा नामनी चार राणीउं हती. हवे एक दहाडो हाथी, सिंह, चंद्र तथा सूर्यना स्वप्नथी सूचित थएला रामचंद्र नामना बलदेव पुत्रने कौशल्याए जन्म आप्यो. तथा हाथी, सिंह, चंद्र, समुद्र, लक्ष्मी, अग्निशिखा, अने सूर्यना स्वप्नथी सूचित थएला लक्ष्मण नामना वासुदेव पुत्रने सुमित्राए जन्म आप्यो. वली उत्तम स्वप्नपूर्वक कैकेयीए भरत नामना पुत्रने, तथा सुप्रभाए शत्रुघ्न नामना पुत्रने जन्म आप्यो. विद्या तथा विनयथी युक्त, अने उत्तम आशयोवाला एवा ते चारे पुत्रोथी, दान, शील, तप अने भावथी जेम धर्म, तेम दशरथ राजा शोभता हता. हवे त्यां जेम बलदेव अने वासुदेवने परस्पर प्रीति हती, तेम शत्रुघ्न अने भरतने पण परस्पर प्रीति हती.

हवे ते वखते मिथिला नामनी नगरीमां हरिवंशना वासवकेतु नामना राजानी विपुला नामनी राणीथी उत्पन्न थएलो जनक नामे राजा हतो. तेनी विदेहा नामनी स्त्रीए उत्तम स्वप्नपूर्वक महातेजस्वी पुत्र अने पुत्रीने (जोडलांने) जन्म आप्यो. ते वखते सौधर्म देवलोकमां रहेनारा पिंगल नामना देवे पूर्वजन्मना वैरथी ते जोडलामांथी पुत्रने हरी लीधो. पछी दया आववाथी तेणे कुंडल आदिकथी ते बालकने शणगारीने वैताढ्यना वनमां छोडी दीधो. तेटलामां रथनूपुर नगरना चंद्रगति नामना विद्याधर राजाए ते पुत्रने लेइने हर्षथी पोतानी पुष्पवती नामनी

राणीने सोंप्यो. पछी तेणे नगरमां उद्घोषणा करावी के, "आजे राजाने पुत्र थयो छे;" पछी तेनी अत्यंत कांति होवाथी तेनुं "भामंडल" नाम पाड्युं. पछी ते भामंडल त्यां चंद्रगतिथी तथा पुष्पवतीथी लालन करातो थको कल्पवृक्षनी पेठे वृद्धि पामवा लाग्यो.

हवे अहीं जनक राजाए पुत्रनी भाळ नहीं मळवाथी अनुक्रमे शोक रहित थइने पुत्रीनुं "सीता" नाम पाड्युं. पछी तेणीने संपूर्ण यौवनवाळी, तथा परणवाने लायक जाणीने जनक राजा वरनी चिंतारूपी समुद्रमां स्वयंवररूपी नावें करीने बुड्यो; (अर्थात् स्वयंवरमंडप रच्यो.) हवे एटलामां मातंग, रंग आदिक म्लेछो, दैत्यो जेम धर्मस्थानकने तेम जनक राजानी पृथ्वीने उपद्रव करवा लाग्या. त्यारे ते व्रतांत जनक राजाए मित्राइना दावाथी दशरथने जणाव्यो, त्यारे पोताना पिताने अटकावीने रामचंद्रजी पोते रणसंग्राममाटे गया. एवी रीते रामचंद्रजी ज्यारे युद्ध करवामाटे आव्या, त्यारे ते म्लेछ राजाउ नाशी गया, केम के सूर्यना किरणोआगळ अंधकारना समूहो रही शकता नथी. पछी ते जनक राजा खुशी थइने रामचंद्रजीने पोताना नगरमां लाव्या, तथा हर्षथी तेमने सीताने आपवाने तेणे इच्छ्युं.

एटलामां त्यां आवेला पीळा केशवाळा अने भयंकर एवा नारदने जोइने सीता भय पामीने तुरत नाशी गइ. ते वखते कोलाहल करती तथा क्रोधातुर थएली दासीउए ते नारदने गळेथी पकडीने घरमांथी कहाडी मेल्यो. तेथी नारद गुस्से थइने, सीतानुं चित्र चीत्रीने, ते चित्र चंद्रगतिना पुत्र भामंडलने देखाड्युं. त्यारे ते भामंडल पण तेणीने पोतानी बेहेन नहीं जाणीने कामातुर थयो थको, छीछरा पाणीमां जेम मत्स्य तेम उद्विग्न थयो. पछी चंद्रगतिए पुत्रना उद्वेगना कारणने जाणीने तुरत तेणे जनकने बोलाव्यो; तथा पछी तेनी पासे तेणे प्रीतिथी सीतानी मागणी करी; त्यारे जनके कह्युं के, में ते रामचंद्रजीने आपेली छे. त्यारे चंद्रगतिए कह्युं के, जो के हुं ते सीतानुं हरण करवाने पण समर्थ छुं, तोपण मारी पासे बे देवाधिष्ठीत धनुष्यो छे, तेपर जे बाण चडावे ते सीताने परणे, ते वात कबुल करीने जनक पोतानी नगरीमां आव्यो. ते बंने धनुष्यो मंडपमां मुक्यां हवे ते वखते त्यां केटलाक रा-

जाउं तथा विद्याधरो पण आवी पहोंच्या. वली ते समये त्यां चंद्रगति पण नामंडलसहित आव्यो; तथा दशरथ राजा पण पोताना राम आदिक चार पुत्रो तथा बीजा राजाउंसहित त्यां आव्यो. पठी त्यां जनक राजाए सर्व राजाउंनो आदरसत्कार कर्यो. तेमां पण राम आदिकोनो विशेष प्रकारे कर्यो. हवे शुज्ञ दिवसे सर्व राजाउं मंडपमां योग्य स्थानके बेठा बाद सीता पण मनोहर वेषने धारण करीने वाहनमां वेसीने त्यां आवी. पठी ते बलवान राजकुमारो तथा विद्याधरो ते धनुष्यो ग्रहण करवाने असमर्थ थवाथी नीचां मुखो करीने रह्या. पठी रामचंद्रजीए खुरशीपरथी उतरीने क्रीडा मात्रमांज ते धनुष्य लीधुं, तथा तेनी दोरीनो ज्ञयंकर टंकार कर्यो. ते समये सीताए पुष्पोना वरसादसहित रामचंद्रजीना कंठमां वरमाला नाखी, अने लोकोए पण मोटो हर्षनाद कर्यो. पठी बीजा धनुष्यने लक्ष्मणे पण नमाव्युं, तेथी विद्याधरोए तेने पोतानी अढार कन्याउं परणावी. पठी शुज्ञ दिवसे राम अने सीतानो विवाह थयो; बाद ज्ञरते पण कनक राजानी पुत्री ज्ञद्रासाथे लग्न कर्युं. पठी दशरथ राजा पोताना चारे पुत्रोसहित पोतानी नगरीप्रते गया; अने बीजा राजाउं पण जनकनी रजा लेइने उत्सवसहित पोतपोताने स्थानके गया. हवे त्यां दशरथ राजा ते पुत्रोसहित सागररूपी वस्त्रवाली पृथ्वीने पालवा लाग्या. हवे एक दहाडो दशरथ राजाए कंचुकी (नाकर) मारफते जिनस्नात्रनुं नमण सुमित्रा पटराणीने मोकलाव्युं. अने बीजी राणीउंने पण तेणे हर्षसहित दासीउं मारफते ते मोकल्युं; त्यारे ते दासीउं तरुण होवाथी ते राणीउंने ते नमण तुरत पहोंच्युं, अने तेउंए पण ते नमणने नमस्कार कर्यो. हवे ते कंचुकी वृद्ध होवाथी सुमित्राने ते नमण तुरत पहोंच्युं नहीं, तेथी पोताना मानज्ञंगथी ते गलेफांसो खावा लागी. पठी राजाए विचार्युं के, सुमित्राने नमण नहीं पहोंचवाथी ते गुस्से थइ लागे ठे, एम विचारि तेने मनाववामाटे ते गया. त्यां तेणीने गलेफांसो खावानी तैयारी करती जोइने दशरथ राजाए कह्युं के, अरे चंडे ! आ तें शुं करवा मांड्युं ठे? एम कहेतां थकां राजाए ते पाश ज्ञोडीने तेणीने पोताना खोलामां वेसाडी. तेज वखते नमणसहित आवेला कंचुकीने राजाए कह्युं के, तने केम वखत लाग्यो ? त्यारे तेणे पण

तेना जवाबमां पोतानुं वृद्धपणुं सूचव्युं. पछी झरती लालोथी भयंकर मुखवाला, श्वेत केशोवाला, मंद मंद चालनारा, तथा कंपता एवा ते कंचुकीने जोइने राजाए विचार्युं के, खंडेररूप थएला घरनी पेठे, तथा अरधां मूलमांथी उखडेलां वृक्षनी पेठे असाध्य एवा आ शरीरनुं रक्षण करवामाटे कोइ पण समर्थ नथी. माटे हवे ज्यांसुधि मारुं आ शरीर पण घडपणथी जर्जरित थयुं नथी, त्यांसुधिमां हुं पण मारा आत्मसाधनमाटे प्रयत्न करीश. एम विचारि दशरथ राजा फरीने सभामां आव्या; त्यां केटलाक दिवसो बाद एक दहाडो तेउ मुनिने वांदवामाटे गया. पछी ते मुनिने नमिने राजा जेटलामां तेमनीपासे बेठा, तेटलामां भामंडल विद्याधर पण भमतो थको त्यां आव्यो. त्यां ते मुनिए सुखना कारणरूप एवा धर्मनो उपदेश देइने पुंडरिक गिरिनुं निर्मल माहात्म्य पण कह्युं. पछी मुनिना कहेवाथी सीताने पोतानी बेहेन जाणीने, भामंडले तेणीने नमस्कार कर्यो. त्यारे तेणीए पण तेने आशिष आपी. पछी दशरथ राजा पोताना जन्मने सफल करवा माटे तीर्थप्रते चाल्या. चार पुत्रो तथा मंडलिको सहित मार्गमां पांच प्रकारनुं दान देता थका ते पुण्यने उपार्जन करवा लाग्या. वली मार्गमां आवतां दरेक गाम, नगर अने स्थानको प्रते ते जिनपूजनमां तत्पर रहेता. पछी अनुक्रमे शत्रुंजयप्रते आवीने तेमणे प्रभुने नमस्कार कर्यो, तथा केटलाक प्रासादो पण त्यां बंधाव्यां. वली तेमणे भक्तिथी गुरुने पूजीने विधिपूर्वक दान दीधुं, तथा पछी ते संघसहित त्यांथी नीचे उतर्या. पछी चंद्रप्रभास नगरमां सीताए पोते करावेला जिनमंदिरमां तेणीए चंद्रप्रभ प्रभुनी स्थापना करी. एवी रीते त्यां तेणीए प्रतिमानी प्रतिष्ठा करीने तेनुं पूजन कर्युं, तथा गुरुने प्रतिलाभीने ते तीर्थमां प्रभावना करी. पछी दशरथ राजाए रैवताचलपर जइने, तथा त्यां नेमिनाथ प्रभुने पूजीने सुपात्रदानपूर्वक तीर्थोद्धार कर्यो. पछी भरत पर्वतप्रते जवाने उत्सुक थएली कैकेयी पतिनी आज्ञा लेइने राम आदिक पुत्रोसहित त्यां गइ. त्यां भरते बनावेला नेमिनाथ प्रभुना चैत्यमां तेणीए भक्तिथी महोत्सव कर्यो, तथा याचकोने पण दान आप्युं. पछी त्यां ते प्रासादने जीर्ण थएलुं जोइ, तेणीए तेनो उद्धार कर्यो, तथा तेमां एर्वती श्री नेमिनाथ प्रभुनी मूर्ति पण स्थापी. वली त्यां तेणीए महातीर्थ

संबंधि सघलुं कार्य कर्युं; तथा ते पापोनो नाश करनारुं तीर्थ तेणीना नामथी प्रसिद्ध थयुं. वली ढंक नगरमां कौशल्याए ऋषभदेव प्रभुनुं मंदिर बनावीने, गुरुपासे तेमां प्रतिमानी प्रतिष्ठा करावी. वली प्रभाववाली एवी सुप्रभाए पण वल्लभीपुरमां प्रतिष्ठामहोत्सवपूर्वक श्री शांतिनाथ प्रभुनुं उंचुं मंदिर बंधाव्युं. वली रामे कांपिल्यपुरमां तथा लक्ष्मणे वामनपुरमां (वणथलीमां) श्री ऋषभदेव प्रभुना प्रासादो कराव्यां. वली त्यां बीजा कुमारोए, सामंतोए, मंडलीकोए, तथा भामंडले पण जिनेश्वर प्रभुना मंदिरो बंधाव्यां. एवी रीते सर्व तीर्थोमां यात्रा करीने दशरथ राजा फरीने पाछा पोतानी उत्सवयुक्त नगरीमां हर्षथी पधार्या.

हवे संसारथी उद्विग्न थएला राजाए सभामां आवीने राज्य माटे पोताना पुत्रोने बोलाव्या; त्यारे तेउए पण त्यां आवीने नमस्कार कर्यो. हवे ते समये कपटनी पेटी सरखी कैकेयीए अवसर जाणीने भक्तिपूर्वक राजा पासेथी पूर्वे आपेलां बे वरदानो माग्यां के, हे स्वामी ! मारां ते वरदानोथी मारा पुत्रने राज्य आपो ? तथा लक्ष्मण सहित राम चौद वर्षो सुधि वनवासमां रहे. अकाले वज्रपात सरखां ते वचनोने सांभलीने राजाने मूर्छा आवी; पछी संज्ञा आव्या बाद तेनुं मन अत्यंत उद्वेग पामवा लाग्युं. पछी ते वृतांतनुं रामने जाणपणुं थवाथी, तेज वखते पिताने नमस्कार करीने लक्ष्मण अने सीता सहित लोकोथी अनुमोदन कराता थका ते वनवास माटे चाल्या. पछी मस्तकविना जेम शरीर, नाशिकाविना जेम मुखनी शोभा, कीकीविना जेम आंख, पांदडांविना जेम वेलडी, जलविना जेम तलाव, देवमूर्तिविना जेम मंदिर, विद्याविना जेम लक्ष्मी, सिंहविना जेम गुफा, सूर्यविना जेम आकाश तथा चंद्रविना जेम रात्री तेम रामविना अयोध्या शोभारहित थइ. पछी दशरथ राजाए भरतने राज्यपर बेसाडीने शुभ मनथी सत्यभूति नामना मुनि पासे दीक्षा लीधी.

हवे वनने तथा गंभीर नदीने उलंगीने रामचंद्र विगेरे एक वडना वृक्षनीचे बेठा, त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के, आ देश कोइना भयथी हमणाज उज्जड थएलो लागे छे, केम के अहींनां वृक्षो रसवालां तथा खलांउ धान्यथी भरेलां छे. एटलामां कोइक माणस त्यां आवी चड्यो, त्यारे रामे तेने ते देशना उज्जड थवानुं मनोहर वाणीथी कारण पुछ्युं. त्यारे

ते माणसे कह्युं के, अहीं सिंहकर्ण नामे राजा हतो, ते पोताना नियममां रहीने जिनशिवाय देवने, के सुगुरु शिवाय गुरुने मानतो नहीं. तेना ते नियमने सांजलीने सिंहोदर राजाए क्रोधथी तेने कहाडी मेल्यो. त्यारे ते पण जयथी नाशीने कंइंक दूर चाल्यो गयो. एवी रीते देशना उज्जडपणानुं कारण सांजलीने रामचंद्रजीए लक्ष्मण मारफते ते जैनीने त्यां आदरथी स्थाप्यो. पठी एक दहाडो रामचंद्रजी कंइंक बहार गया हता, त्यारे आकाशमांथी बे उत्तम विद्याधर मुनिउं त्यां उतर्या, त्यारे सीताए जक्तिपूर्वक तेमने प्रतिलाज्या. त्यां देवोए आदरपूर्वक गंधोदकनी वृष्टि करी, तेनी सुगंध लेवा माटे त्यां तुरत जाटायु पक्षीआव्यो. पठी त्यां ते बे मुनिउं पासेथी उत्तम धर्मोपदेशने सांजलीने ते जटायुने जातिस्मरण ज्ञान थवाथी, ते सीतापासे रह्यो. पठी ते मुनिउं पण शाश्वता जिनोने नमवा माटे आकाशमार्गे चाल्या गया.

हवे ज्यारे राक्षसद्वीपमां लंका नगरीमां, अजितनाथ प्रजु विहार करता हता, त्यारे त्यां राक्षसवंशमां धनवाहन नामे राजा हतो. राक्षसोना इंद्र एवा जीम नामना राजाए पोताना ते मोटा पुत्रने राक्षसी विद्या आपी हती, त्यारथी ते राक्षसवंश थयो हतो. तेनो पुत्र महारक्ष जिनोना चरणप्रते ज्रमरतुल्य हतो, तथा तेनो पुत्र देवरक्ष दीक्षा लेइने मोक्षे गयो. एवी रीते ते राक्षसवंशमां घणा राजाउं थइ गया बाद श्रेयांसप्रजुना तीर्थमां त्यां कीर्तिधवल नामे राक्षसोनो राजा थयो. तेणे वैताढ्यपरथी श्रीकंठ नामना विद्याधरने प्रीतिथी बोलावीने वानरद्वीपमां वसाव्यो. ते द्वीप त्रणसो योजनना मानवालो हतो, तथा त्यां किष्किंध नामे पर्वत, अने किष्किंधा नामनी नवी राजधानीनी नगरी थइ. पठी ते लोको वानरद्वीपवासीना नामथी प्रसिद्ध थया. तथा त्यां अनुक्रमे तेउंए वांदरापणाना अंगने करनारी विद्या साधी. हवे ते श्रीकंठनो पुत्र वज्रकंठ, तथा एवी रीते घणा राजाउं थया बाद श्री मुनिसुव्रतस्वामिना तीर्थमां घनोदधि नामे राजा थयो. वली ते वखते लंका नगरीमां तडित्केश नामे राजा हतो; तथा तेउं बन्ने वच्चे घणो स्नेह हतो. ते समये किष्किंधा नगरीमां घनोदधिनो पुत्र किष्किंधि हतो, अने लंकामां तडित्केश पठी सुकेश नामे राजा थयो. पठी विद्याधरना नायक अशनिवेगे जितेला एवा लंका अने किष्किंधाना राजाउं पातास-

लंकामां गया. त्यां पाताललंकामां सुकेशराजानी इंद्राणी नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थएला माली, सुमाली, अने माल्यवान नामना त्रण पुत्रो हता. किष्किंधी राजाने श्रीमाला नामनी राणीथी आदित्यरज तथा रुक्षरज नामना बे प्रतापी पुत्रो थया हता. हवे किष्किंधि राजा मेरुपर शाश्वती जिनप्रतिमाने नमीने मधुपर्वतपर किष्किंध नामनुं नगर वसावीने रह्यो. हवे सुकेशना क्रोधायमान थएला एवा ते त्रणे पुत्रोए लंकामां आवीने वैरथी अशनिवेगना चाकरने मार्यो. पछी किष्किंधा नगरीमां माली राजा थयो, तेने अने आदित्यरजने परस्पर प्रीति थइ. हवे अशनिवेगना पुत्र सहस्रार नामना राजाने चित्रसुंदरी नामनी स्त्रीथी इंद्र नामे पुत्र थयो. तेणे इंद्रनी पेठे पोताना लोकपालोने स्थाप्या; तथा फरीने पातललंकामां वानरोने तथा राक्षसोने स्थाप्या. हवे त्यां रहेता सुमालीने रत्नश्रवा नामे विद्याने धरनारो पुत्र थयो; तेनी कैकसी नामे स्त्री हती. तेनो मदोद्धत पुत्र दशमुख नामे हतो; तथा कंठमां स्थापन करेला नव रत्नना हारमां पडतां प्रतिबिंबोथी तेनुं ते नाम सत्यार्थने सूचवतुं हतुं. वली तेवीज रीते ते कैकसीए अनुक्रमे कुंभकर्ण, सुर्पणखा, तथा विभीषण नामना अपत्योने पण जन्म आप्यो. पछी माताना मुखथी पोताना तेवी रीतना पराभवने सांभलीने तेउ त्रणे विद्यासाधनमाटे भीमारण्यमां आव्या. त्यां दशग्रीवने (रावणने) एक हजार विद्याउ सिद्ध थइ; कुंभकर्णने पांच तथा बीभीषणने चार विद्याउ सिद्ध थइ. हेमवती नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थएली मंदोदरी नामनी विद्याधरनी कन्याने रावण परण्यो हतो. वली ते बीजी छ हजार विद्याधरोनी कन्याउने पण परण्यो हतो, तेम तेना गुणोथी रंजित थएली बीजी पण केटलीक कन्याउने ते परण्यो हतो. कुंभकर्ण पण महोदर राजानी तडिन्माला नामनी कन्याने परण्यो हतो. वली विभीषण पण पितानी आज्ञाथी हर्षपूर्वक वीर नामना विद्याधरनी पंकजश्री नामनी पुत्रीने परण्यो हतो. हवे मंदोदरी राणीए अनुक्रमे शुभ लग्नमां इंद्रजित तथा मेघवंत नामना बे पुत्रोने जन्म आप्यो. हवे रावण इंद्र विद्याधरना सेवक वैश्रवणने जीतीने पुष्पकविमान सहित लंकामां आव्यो. पछी इंद्रना सेवक यमने जीतीने तथा नरकोने भांगीने तेणे पोताना मित्र आदित्यरजने किष्किंधा नगरी आपी.

वली तेणे नवुं राक्षसपुर वसावीने रक्षसरजने आप्युं; हवे आदित्यरजनो पुत्र बलवान वाली नामे थयो. वली तेने सुग्रीव नामनो अद्भूत पराक्रमी पुत्र हतो; तेनी नानी कन्या श्रीप्रभा नामे हती. रक्षसरजने पृथ्वीमां प्रख्यात एवा हरिकांता स्त्रीथी नल अने नील नामना वे पुत्रो थया. हवे आदित्यरजे पोताना राज्यपर वालीने, तथा सुग्रीवने युवराजपर वेसाडीने पोते दीक्षा लीधी. आदित्यरजना पुत्र खरदूषणे चंद्रोदर राजाने जीतीने, तथा सुर्पणखाने हरीने पातललंका लेइ लीधी. मंदोदरीना कहेवाथी रावणे क्रोधरहित थइने खरदूपणने वेहेननो स्वामी करीने राज्यपर वेसाड्यो; हवे चंद्रोदरना मृत्युबाद तेनी स्त्री अनुराधाए वनमां रहीने विराध नामना गुणवान पुत्रने जन्म आप्यो; एक दहाडो रावणे वानरपति वालीने बलवान जाणीने, सहन नहीं करवाथी तेने दूत मारफते वोलाव्यो. अरिहंत प्रभुविना वीजाने नहीं नमता एवा ते वालीने जाणीने रावणे तेनी साथे लडाइ करी. तेमां वालीए रावणने चंद्रहास खड्गसहित जीतीने केद कर्यो; तथा चारे समुद्रप्रते फेरव्यो. पछी रावणने छोडीने वालीए वैराग्यथी पोताना राज्यपर सुग्रीवने वेसाडी दीक्षा लीधी. पछी सुग्रीवे श्रीप्रभाने रावणने आपी, तथा चंद्ररश्मि नामना वालीना पुत्रने तेणे योवराज्यपर वेसाड्यो. हवे एक दहाडो रावण रत्नवतीने परणवाने वैताढ्यप्रते चाल्यो, तेटलामां तेनुं विमान अष्टापदपर स्खलित थयुं. ते स्खलित थवाना कारणरूप प्रतिमामां रहेला निश्चल वालिने तेणे जोयो. त्यारे तेणे विचार्युं के, हजु पण आ माराप्रते क्रोधयुक्त थइने कपटथी साधुपणुं लइने वेठो छे, माटे हवे तो आ पर्वतसहित तेने हुं लवणसमुद्रमांज फेंकी दउं. एम विचारि ते पृथ्वीने फाडीने पर्वतनी नीचे गयो, तथा त्यां तेणे पोतानी हजार विद्यानुं स्मरण कर्युं. पछी तेणे ते पर्वतने अधर उपाड्यो, त्यारे तेपरना शिखरो तडतडाट शब्दो करवा लाग्यां, तथा सर्पोने कणकणाट करतां थकां वेहेवा लाग्यां; त्यारे वालीए विचार्युं के, अरे! आ दुष्ट! मारापर मत्सर लावीने शुं आ तीर्थनो नाश करशे? माटे हवे तो हुं निःसंग छतां पण तेने शिक्षामाटे मारुं जरा पराक्रम बतावुं. एम विचारि ते वाली मुनीश्वरे पोताना पगना डावा पगना अंगुठाथी अष्टापदने जरा दवाव्यो. त्यारे रावण त्यां दवाइने मधिर व-

मतो थयो, तथा दीननी पेठे वराडा मारी रडवा लाग्यो. एवी रीते तेना दीन स्वरने सांभळीने दयालु वालीए ते कार्य तजी दीधुं; केम के तेनुं कार्य क्रोधथी नहीं, पण तेने शिक्षामाटे हतुं. पछी रावण पर्वतनीचेथी नीकळीने, तथा वालीने खमावीने प्रभुने पूजवामाटे भरते बनावेलां चैत्यमां गयो. त्यां पोतानी स्त्रीसहित तेणे भक्तिथी आठ प्रकारे प्रभुने पूज्या; तथा (तार तुटवाथी) पोतानी नसने पण तेमां जोडीने तेणे वीणासहित त्यां नृत्य कर्युं. ते वखते त्यां धरणेंद्र आव्या, तथा, तेनी (रावणनी) भक्तिथी संतुष्ट थइने तेने वरदान मागवानुं कह्युं. त्यारे रावणे कह्युं के, मारी अरिहंत प्रभुमांज भक्ति रहो ? एम कहेवाथी ते धरणेंद्र तेने "अमोघशक्ति" तथा केटलीक विद्याउ आपीने पोताने स्थानके गयो. पछी रावण पण त्यां तीर्थंकरोने नमीने नित्यालोक नामना नगरमां गयो. तथा त्यांथी रत्नावलीने परणीने ते लंकामां आव्यो. वाली मुनिराज पण घातिकर्मोना क्षयथी केवलज्ञान पामी सुरासुरोथी सेवाता थका मोक्षे गया. साहसगतिथी मागणी कराती, एवी ज्वलनशिख विद्याधरनी तारा नामनी मनोहर कन्याने सुग्रीव परण्यो. तेणीनी साथे भोगविलास भोगवतां थकां सुग्रीवने अंगद अने जयानंद नामना बे उत्तम पुत्रो थया. पछी ते साहसगति ताराथी ठगायाबाद हिमवंत पर्वतपर जइने तेणीने हृदयमां स्मरतो थको विद्या साधवा लाग्यो. हवे रावण पण खरदूषण आदिक विद्याधरो तथा सुग्रीवसहित इंद्र विद्याधरोने जीतवाने चाल्यो. त्यां रेवा नदीना कांठापर ते प्रभुने रत्नपीठपर स्थापीने भक्तिथी तेना पाणी तथा कमलथी पूजवा लाग्यो; पछी त्यां ते ध्यानमां लीन थया बाद अकस्मात नदीमां पूर आववाथी ते जिनपूजा विखराइ गइ. ते जोइ रावण क्रोधायमान थयो; त्यां कोइक विद्याधरे आवीने तेने कह्युं के, हे स्वामी ! आ जलनो प्रवाह माहिष्मतीना स्वामी सहस्रांशुए छोड्यो छे. तेणे पहेलां पाणीने अटकावी राख्युं हतुं, तथा पछी छुटुं कर्युं छे; अने ते आत्मरक्षक राजाउ तथा स्त्रीउसहित अहीं नजदीकमांज छे. ते सांभळी रावणे क्रोधथी तेने जीतवामाटे राक्षसोने मोकल्या, त्यारे तेउ उपद्रव पामीने रावणपासे पाछा आव्या. पछी रावण पोते त्यां जइ तेने जीतीने पोताना कोलाहलयुक्त शिबिरमां

लाव्यो. पठी ते हर्षित थइने जेटलामां सन्नामां आवी बेठो, तेटलामां आकाशमार्गेथी त्यां कोइक मुनि आव्या, त्यारे रावणे तेनी पूजा करी. पठी ते शतबाहु मुनिए कह्युं के, आ मारा पुत्र ठे, ते सांनली रावणे तुरत ते सहस्रांशुने ठोडी मेल्यो, त्यारे तेणे पण दीक्षा लीधी. पठी ते दयालु रावणे नारदना वचनथी मरुत राजाना यज्ञनी हिंसाने निवारण करी. पठी रावणनी आज्ञाथी कुंनकर्णादिको डुर्लंघ्य नगरमां रहेला इंद्र विद्याधरना नलकुवर नामना दिक्पालने जीतवा गया. त्यां नलकूबरे आशाली विद्याथी पोताना नगरनी आसपास सो जोजनो अग्निमय किल्लो कर्यो. ते तरफ नजर मांडवाने पण अशक्त थएला एवा ते कुंनकर्णादिकोए रावणपासे आवी ते व्रतांत तेमने जणाव्यो. एटलामां रावणप्रते अनुरागवाली थएली उपरंना नामनी नलकुबरनी स्त्रीए तेनी (रावणनी) पासे आवीने ते आशाली विद्या तेने आपी. पठी ते विद्याथी रावणे ते अग्निगढने दूर करीने, डुर्लंघपुर हाथ कर्युं, तथा त्यां तेने सुदर्शन चक्र प्राप्त थयुं. पठी त्यां ते नलकूबरने ते नगरनो तेणे स्वामी स्थाप्यो, तथा तेनी स्त्रीने “ परस्त्री ” जाणी, नोगव्याविना तेणे तेने पाठी सोंपी. पठी रावणे पोताना सैन्यथी वैताढ्यपर रहेला रथनूपुर नगरने घेरो घाल्यो, त्यारे ते नगरनो स्वामी इंद्र विद्याधर पण क्रोधथी तेनीसाथे लडवाने आव्यो. त्यारे रावणे तेने कह्युं के, आ सैन्यने फोकट शामाटे आपणे हणावीए. आपण बन्नेने वैर होवाथी, आपण बन्नेज लडीयें. पठी बन्ने हाथीपर चडीने विद्यायुक्त हथीआरोने वरसावी लडता थका पर्वतोने कंपाववा लाग्या, तथा देवोने पण जय आपवा लाग्या. पठी ठलने जाणनार रावण पोताना हाथीपरथी कुदीने तेना हाथीपर गयो, तथा तेने बांधी लावीने ते पाठो पोताना हाथीपर आव्यो. ते वखते राक्षसोना सैन्यमां जयजय शब्द थइ रह्यो, तथा विद्याधरना सैनिकोनां मुखो नीचां थयां. पठी त्यांथी ते रावण पाठो लंकामां आव्यो, अने त्यां पक्षिने जेम पांजरामां, तेम तेणे इंद्रने केदखानामां नांख्यो. पठी लोकपालोसहित सहस्रार राजाए नमीने तेनी पासेथी पुत्रनिक्षा मागी. त्यां विनयथी आनंद पामेला रावणे कह्युं के, जो ते मारी नगरीने तृण काष्ठादिकथी रहित करीने जल अने सुगंधी सींचे तो हुं तेने ठोडुं. त्यारे ते वात

सहस्त्रारे पण कबुल करीने तेने छोडाव्यो. पछी इंद्र रथनुपूरमां आवीने वैराग्यथी दीक्षा लीधी, तथा घणो काल तप करी, कर्मोना क्षयथी मोक्षे गयो. हवे एक दहाडो गुरुना मुखथी रावणे, नहीं इच्छती एवी परस्त्रीथी पोताना मरणने जाणीने गुरुना वाक्यनो निषेध कर्यो.

हवे आदित्य नगरमां प्रल्हादनो केतुमती नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थएलो पवनंजय नामनो विद्याधर पुत्र हतो. ते माहेंद्र नगरना अधिपति माहेंद्र राजानी हृत्सुंदरी नामनी राणीथी उत्पन्न थएली अंजनसुंदरी नामनी कन्याने परण्यो हतो. पवनंजयने कोइए तेणिना विषे कंइ खोटुं समजाव्याथी ते तेने बोलावतो नहीं, पण ते तो महासती हती, तेथी दुःखें करीने ते पोतानो काल निर्गमन करती हती. एटलामां समुद्रना स्वामि वरुणने जीतवा जता एवा राक्षसराजाए प्रल्हाद राजाने बोलाववा माटे दूतने मोकल्यो. त्यारे पवनंजय विनयथी पिताने नमीने, तथा तेमनी आज्ञा लेइने, ते माताने नमवा माटे गयो; त्यां तेणे पोतानी स्त्री अंजनसुंदरीने पण जोइ. त्यां नमती एवी पण पोतानी स्त्रीनी अवज्ञा करीने ते सैन्यसहित आकाशमार्गे चालतो थको एक तलावपर पहोंच्यो. त्यां रात्रिए (स्वामिना) वियोगथी पीडित थएली चक्रवाकीने जोइने, तेवी रीतनी पोतानी निर्दोष स्त्रीने ते पण संभालवा लाग्यो. पछी त्यां रात्रिए प्रहसित मित्रनी साथे तुरत अंजनाना आवासप्रते आव्यो, तथा त्यां तेणीने शोकातुर दीठी. पछी त्यां पवनंजये तेणीने मधुर वाक्योथी शांत करीने तेनी साथे भोगविलास कर्यो; पछी ज्यारे प्रभाते ते जवा लाग्यो, त्यारे अंजनासतीए तेने कह्युं के, हे स्वामी! जो आथी हवे हुं गर्भवंती थउं, तो आपे ते बाबतनी मारी संभाल करवी. त्यारे पवनंजये तेणीने एंधाणीमाटे वींटी आपीने कह्युं के, तारे डरवुं नहीं; एम कहीने ते तुरत पोताना शिबिरमां गयो. हवे अंजनानो गर्भ प्रगट रीते देखावाथी तेनी सासु केतुमतीए आक्षेपथी तेणीने कह्युं के, अरे पापिणी! आ तें वन्ने कुलने कलंक आपनारुं शुं कार्य कर्युं? पति देशांतरमां वेठो छे, अने तुं गर्भिणी ते क्यांथी थइ? त्यारे ते अंजना सतीए रडतां थकां, वींटी देखाडीने सासुने गुप्त रीते पतिना मेलापनो वृत्तांत कह्यो. तोपण ते क्रोधातुर थएली केतुमतीए सीपाइओसहित तेणीने रथमां नांखीने माहेंद्रपुर

मोकलावी आपी. त्यारे तेना पिताए पण तेणीने दोषयुक्त जाणीने वसंततिलका नामनी दासी सहित तेज वखते घरमांथी कहाडी मेली. पछी राजाना हुकमथी तेणीने कोइ पण गाममां आश्रय नहीं मलवाथी ते वनमां गइ, त्यां एक चारणमुनिने जोइने तेणीए हर्षथी तेमने नमस्कार कर्यो. पछी त्यां वसंततिलकाए सर्व वृत्तांत मुनिने कहीने तेणीनो सघलो कर्मविपाक पूछ्यो. त्यारे मुनिए कह्युं के, लांतक नामना देवलोकथी चवेलो जीव आ अंजनासुंदरीनो पुत्र थशे, तथा ते विद्याधर थइने मोक्षे जशे. हवे पूर्वे कनकरथ राजानी लक्ष्मीवती अने कनकोदरी नामे बे राणीओ हती, तेमां लक्ष्मीवती जैनधर्म पालनारी हती. एक दहाडो ते कनकोदरीए लक्ष्मीवतीनी जिनप्रतिमा लीधी. तथा तेणीने ते अवज्ञा करवा लागी, पण पछी साधवीओना कहेवाथी ते तेनी आराधना करवा लागी. छेवटे धर्मना बोधथी ते कनकोदरी देवी थइ. तथा त्यांथी चवीने ते आ तारी अंजना नामे सखी थइ छे, तेणीए पूर्वे जिनप्रतिमानी आसातना करी हती, तेथी आवी रीते ते दुःखी थइ छे. पछी ते मुनिए अंजनासुंदरीने कह्युं के, हवे ते तारुं कर्म घणुं खरुं भोगवाइ चुक्युं छे, माटे हवे तुं जैनधर्म अंगीकार कर? अने अत्यंत सुख माटे ते कर्मरूपी वेरीओने तुं हण? पछी गंधर्वोना स्वामी मणिचूडनी आज्ञाथी गुफामां वसतां थकां तेणीए एक अद्भुत पुत्रने जन्म आप्यो. त्यां तेणीने दीन मुखवाली अने रडती जोइने प्रतिसूर्य नामनो विद्याधर पोतानी बेहेन करीने विमानमां बेसाडी चालवा लाग्यो. विमान वेगथी चालतुं हतुं. तेथी ते बालक माताना खोलामांथी एक पर्वतपर पडी गयो. त्यारे तेना शरीरना भारथी ते पर्वत चूर्ण थइ गयो. पछी ते प्रतिसूर्य विद्याधरे तुरत ते अखंड बालकने पृथ्वीपरथी लावीने अंजना बेहेनने सोंप्यो. पछी ते प्रतिसूर्य तेणीने पोताना हनुरुह नामना नगरमां लावीने आनंदथी तेना मनोवांछित पूरवा लाग्यो. आ बालक जनमतांज हनुरुहमां आव्यो छे, एम जाणीने ते विद्याधर मामाए तेनुं हनुमान नाम पाड्युं; अने पछी ते अनुक्रमे वृद्धि पामवा लाग्यो.

हवे पवनंजय पण वरुणनी साथे संधि करीने, तथा रावणनी कृपा मेलवीने पोताना नगरमां आव्यो. त्यां पोतानी स्त्रीनो वृत्तांत जाणीने, खे-

दयुक्त थयो थको ते पोताना ससराने घेर आव्यो, त्यां पण तेणीने नहीं जोवाथी ते वनवनप्रते जमवा लाग्यो. त्यां पण तेणीने नहीं जोवाथी शून्य मनवाळा थयां थकां तेणे पोताना आपघातनो विचार प्रहसित मित्र मारफते नमस्कार पूर्वक पिताने कहेवराव्यो. त्यारे प्रल्हाद पण पवनंजय तथा अंजनाने शोधवा माटे विद्याधरो सहित वेगथी पृथ्वीपर जमवा लाग्यो. हवे पवनंजय (स्त्रीना) वियोगडुःखने सहन नहीं करी शकवाथी जेटलामां अग्निमां प्रवेश करतो हतो, तेटलामां तेने प्रल्हादे जोयो. त्यारे प्रल्हादे तेने कह्युं के, हे पुत्र! तुं आ अविचार्युं कार्य नहीं कर? अने नीतिमार्गने अंगीकार कर? ते एम कहे छे, तेटलामां तेणे मोकलेला विद्याधरो त्यां अंजनासहित आव्या. पछी आनंदित थएला ते सघलाउ प्रतिसूर्यना उपरोधथी महोत्सवपूर्वक हनुरुप नगरमां आव्या. पछी तेउ सर्वे आनंदथी पोतपोताने स्थानके गया, तथा पवनंजय अने अंजनासुंदरी पुत्र सहीत त्यांज रह्या. हवे लोकोने हर्ष आपनारो हनुमान पण सर्व कलाउ मेलवीने यौवन अवस्थाने पाम्यो. हवे वरुण साथेना संग्राममां हनुमाननुं अद्भूत बल जोइने रावणनी तेनापर मेहेरबानी थइ. पछी ते वरुणनी पुत्री सत्यवतीने, तथा खरदूषणनी पुत्री अनंगकुसुमाने अने बीजी पण घणी स्त्रीउने परण्यो. पछी रावण सूर्यप्रमुख विद्याधरोने जीतीने, तथा इंद्रनी पेठे तेमने पण चाकररुप करीने सुखेथी राज्य पालवा लाग्यो.

हवे दंडका अरण्यमां ज्यारे रामचंद्रजी रह्या हता, त्यारे लक्ष्मणे पण त्यां क्रीडाथी जमतां थकां वनमां एक खड्ग जोयुं, त्यारे पोताना क्षत्रीयपणाथी ते खड्ग लेइने तेणे वांसनी जालीमां मार्युं; तेटलामां त्यां पोतानी पासे, तेथी कोइना छेदाएला मस्तकने तेणे जोयुं; ते जोइ ते खेदथी विचारवा लाग्यो के, अरे! में कोइ निरपराधी मनुष्यने मार्यो!! पछी तेने लेइने रामपासे आवी ते व्रतांत तेमने कह्यो; त्यारे रामे कह्युं के हे वत्स! आ तें ठीक कर्युं नहीं. आ चंद्रहास नामनुं खड्ग छे, अने जे माणस ताराथी हणायो, ते आनुं साधन करनारो छे, माटे अहीं नजदीकमांज तेनो कोइ उत्तरसाधक पण होवो जोइए.

हवे एटलामां सुर्पणखा पोताना पुत्रने विद्यासिद्ध जाणती थकी पु-

जाना उपकरणो लेइने त्यां आवी; पण त्यां तो तेणे पोताना पुत्रनुं मस्तक छेदाएलुं जोयुं; त्यारे ते रावणनी बेहेन सुर्पणखा विलाप करवा लागी के; अरे पुत्र शंबुक! आवी रीते कालथी वैरीरूप थएला एवा कया माणसे तने यमने मंदिरे पहोंचतो कर्यो? पछी त्यां पडेला पगलांने अनुसारे ते जवा लागी, तो त्यां तेणे कामदेव सरखा रूपवंत रामचंद्रजीने जोया. त्यारे तेना रूपथी मोहित थइने वैरभावने वीसरी जइने, तथा शोक तजीने भोगविलास माटे ते रामचंद्रजीने प्रार्थना करवा लागी, माटे धिक्कार छे, तेवी स्त्रीओने!! पछी रामचंद्रजीए तेणीने कह्युं के हुं तो स्त्री सहित छुं, माटे तुं लक्ष्मणपासे जा? त्यारे लक्ष्मणे पण "भाइनी स्त्री" जाणीने तेणीने तजी दीधी. एवी रीते बन्ने जगोएथी भ्रष्ट थएली ते दुष्ट सुर्पणखा त्यांथी पोताना स्वामीपासे गइ, अने माथुं कुटीने तेणीए पुत्रना मृत्युनो वृतांत कह्यो. त्यारे चौद हजार सुभट विद्याधरो सहित खरदूषणादिक रामपासे लडवाने आव्या. त्यारे रामचंद्रजीए लक्ष्मणने कह्युं के, हे वत्स! हुं आ शत्रुओने मारी आवुं त्यांसुधि तुं अहीं रहे? अने आ प्रभाववंती सीतानुं तुं रक्षण करजे? त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के, हे ज्येष्टबंधु! आप अहीं रहो? अने हुं एक लीलामात्रमांज तेमने हणीने आवीश, माटे मने आप युद्धमाटे आज्ञा आपो? त्यारेवली रामचंद्रजीए कह्युं के, हे वत्स! ज्यारे त्यां तने वैरीतरफथी कंइ पण संकट आवे त्यारे तुं मने सिंहनादथी खबर करजे? एटले हुं तुरत आवी शत्रुओनो नाश करीश. पछी लक्ष्मण पण रामनी ते आज्ञाने मस्तकपर चडावीने तथा तेने नमीने, धनुष्यना टंकारोथी तथा भुजास्फोटोथी शत्रुओने त्रास पमाडतो थको त्यां गयो. एवी रीते वैरीरूपी हाथीओप्रते सिंह सरखा लक्ष्मणने क्रोधायमान थएलो जोइने दुष्ट एवी चंद्रनखा रावणपासे पोताना भरतारनी मदद माटे गइ, अने कहेवा लागी के हे भाइ! दंडकारण्यमां कोइ बे देवसरखा पुरुषो आवेला छे, तेओए तपमां रहेला तमारा भाणेजने मारी नांख्यो छे, तेथी मारां वचनथी तमारो जमाइ तेमने मारवा गयो छे, अने त्यां ते लक्ष्मणनी साथे युद्ध करे छे, वली तेनो मोटो भाइ रामचंद्रजी लक्ष्मणना तथा पोताना बलथी, अने पोतानी स्त्री सीताना रूपथी जगतने तो तृण समानज गणे छे, ते सीताना रूपथी गौरी तो

दूर थएली छे, रंभा तो हणाइ गइ छे, इंद्राणी तो मषीरूप थइ छे, मेनका तो पोताना पुण्योनेज निंदे छे, मृगी तो प्रशंसाविनानी थइ छे, तिलोत्तमा तो तल समानज थइ छे, सावित्री तो लज्जायुक्त थइ छे, लक्ष्मी तो हलकी थइ छे, प्रीति अप्रीतिने उत्पन्न करनारी थइ छे, तथा रति तो दुःखना भाजनरूप थइ छे, माटे खरेखर ते सघली स्त्रीओना रूपोने हरीनेज तेणीने बनावेली लागे छे, तेथी हे भाइ! ते सीता तमोनेज योग्य छे. वली ज्यांसुधि ते सीता तमारा हाथमां आवी नथी, त्यांसुधि तमारुं आ राज्य, दीव्य रूपवाली स्त्रीओ, अद्भुत लक्ष्मी, तथा बल, ते सघलुं हुं कंइ हिसाबमां लेखती नथी. ते सांभलीने सीतामां आसक्त थएलो ते रावण तेज समये पुष्पक विमानमां बेसीने, रामथी पवित्र थएला ते दंडकारण्यमां गयो. त्यां रामरूपी गरुडना तेजथी सर्प सरखा ते रावणनुं अभिमानरूपी झेर उतरी गयुं, त्यारे ते मनमां विचारवा लाग्यो के, आ सीता तो त्रणे जगतमां अद्भूत एवी ब्रह्मानी कोइ अलौकिक सृष्टिरूप छे, अने आ राम दुष्टोने शिक्षा करवाने समर्थ छे, माटे हवे शुं करवुं? एम विचारतां थकां तेणे अवलोकिनी वीद्यानुं स्मरण कर्युं; त्यारे ते विद्या पण तेनी पासे हाजर थइ, त्यारे रावणे तेणीने सीताना हरणनो उपाय पुछवाथी ते कहेवा लागी के, समुद्रने हाथेथी तरवो, अग्निमां पडवुं, तथा सिंहना मुखमां हाथ नाखवो, ते सघलुं सेहेलुं छे, पण आ कार्य तेथी पण दुष्कर छे. पण आ राम, लक्ष्मणनो सिंहनाद सांभलीने संकेत प्रमाणे त्यां जशे, अने पछी तुं सुखेथी सीताने लेइ शकशे, माटे तुं कहे तो तारे माटे हुं ते कार्य करुं. त्यारे रावणे तेम करवानुं कहेवाथी तेणीए लक्ष्मणना सिंहनाद सरखो शब्द कर्यो, त्यारे रामचंद्रजी पण ते संकेत प्रमाणे त्यां दोड्या. एटलामां ते अधम रावण पण, तेना जोवाथी डरती एवी सीताने हरीने चालवा लाग्यो. त्यारे ते सीता पण वारंवार पोकार करवा लागी के हे तात! हे स्वामी! हे भाइ! आ भयंकर माणसथी तमो मारुं रक्षण करो? एवी रीतनी सीतानी दीन वाणी सांभलीने क्रोधातुर थएलो जटायु पक्षी, तेणीने धीरज आपीने पोताना नखोथी रावणनुं मुख चीरवा लाग्यो. त्यारे क्रोधायमान थएला रावणे तलवारथी ते जटायुने मारी नांख्यो, अने तेथी वधारे भयभीत थएली सीता भामं-

लने याद करवा लागी के, हे नामंडल ! तुं मारुं रक्षण कर? ते सांजली नामंडलनो अनुयायि रत्नजटी नामनो वीद्याधर तेणीने सीता जाणीने रावण तरफ दोड्यो, त्यारे पाछल दोडता आवता ते रत्नजटीने रावणे पोतानी विद्याउथी तेनी विद्याउने हणीने पृथ्वीपर पाडी नांख्यो. पछी विघ्नरहीत पोताने स्थानके जइने, तेणे पोताने नहीं इछती एवी ते सीताने खेचरीउनी तपासनीचे रमणोद्यानमां राखी.

हवे एटलामां रामचंद्रजीने त्यां आवेला जोइ, शत्रुउने छोडी लक्ष्मण तेमने कहेवा लाग्या के हे ज्येष्टबंधु ! सीताने एकली छोडीने तमो अहीं केम आव्या ? त्यारे रामचंद्रजीए कह्युं के, तमारा सिंहनादथी हुं अहीं आव्यो छुं. त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के, में कंइ सिंहनाद कर्यो नथी, माटे खरेखर आपणने कोइए ठग्या छे. माटे हवे जेटलामां हुं शत्रुउने हणीने त्यां आवुं, तेटलामां तमो त्यां जइ सीतानुं रक्षण करो ? ते सांजली राम पण उतावलथी त्यां चाल्या. त्यां आवतांज सीताने नहीं जोवाथी तुरत ते मुर्छा खाइ पड्या; तथा पछी वनना वायुथी संज्ञा आव्या बाद बहुज रडवा लाग्या. पछी अहीं तहीं जमता एवा रामे, मृत्युनी अणीपर रहेला जटायुने नवकारमंत्र संजलावी देवलोकमां पहोंचाड्यो.

एटलामां सुजटोसहित खरदूषणने हणीने लक्ष्मण विराध नामना मित्रसहित रामनीपासे आव्यो. त्यां रामचंद्रजीने आंखोमां अश्रुसहित तथा उदास थएला जोइने लक्ष्मणे कह्युं के, हे ज्येष्टबंधु ! हुं शत्रुउने जीतीने नमोने नमवामाटे आव्यो छुं; तो आप आम उदास केम छो ? तथा ते पुज्य एवां सीताजी क्यां छे ? त्यारे रामे सीताहरणनो व्रतांत कह्यो; त्यारे लक्ष्मणे पण कह्युं के, खरेखर ते कार्य माटेज कोइ कपटीए सिंहनाद कर्यो. माटे हे जाइ ! हवे तमो कायरपणुं तजो ? अने आपणे तेनी शोध करीयें; पछी रामचंद्रजी लक्ष्मण सहित त्यां जमवा लाग्या. पछी रामचंद्रजीए पाताललंकामां खरदूषणना पुत्रने जीतीने विराधने गादीपर बेसाड्यो.

हवे किष्किंधा नगरीमांथी सुग्रीव ज्यारे क्रीडा करवामाटे बहार गयो हतो, त्यारे साहसगति नामनो विद्याधर त्यां आव्यो. तेणे सुग्रीवनी तारा नामनी स्त्रीपर आसक्त थवाथी, प्रतारिणी नामनी विद्याथी

सुग्रीव सरखुं रूप कर्युं; अने जेटलामां ते अंतःपुरमां जवा लाग्यो, एटलामां खरो सुग्रीव पण तेमां प्रवेश करवा लाग्यो. त्यारे द्वारपालोए तेने रोक्यो. त्यारे वालीनो पुत्र चंद्ररश्मी तेउं बन्नेने तुल्य जोइने माताना रक्षणमाटे, ते जूठा सुग्रीवने पण अटकावतो हवो. एटलामां तेउं बन्नेना लश्करनुं चौद अक्षौहिणी जेटलुं सैन्य त्यां एकठुं थयुं. ते महायुद्धमां बन्ने लश्करोनां घणां सुजटो मार्या गया, पछी ते खरो सुग्रीव हारी जवाथी नगरनी बहार जइ चिंतववा लाग्यो के, ते महापराक्रमी वाली खरेखर पुण्यशाली थयो; केम के ते दीक्षा लेइने मोक्षे गयो. वली तेना बलवान पुत्र चंद्ररश्मीने पण धन्य छे, के जेणे बन्नेना अंतरने नहीं जाणवाथी ते जूठा सुग्रीवने पण रोकी राख्यो छे. वली मारा मित्र खरदूषणने पण बलवान् रामे मार्यो छे, माटे विराधपर उपकार करनारा ते रामपासे हुं पण जउं. एम विचारि दूत मारफते विराधने ते वात जणावीने, तेनी (विराधनी) मारफते तेणे शरणाजूत एवा लक्ष्मणसहित रामने नमस्कार कर्यो. पछी दयालु एवा राम पण किष्किंधामां जइने, ते जूठा सुग्रीवने रणसंग्राममाटे बोलावता हवा. पछी त्यां बन्नेने तुल्य रूपवाला जोइने, तेउंनी परीक्षामाटे रामे वज्रावर्त धनुष्यनो टंकार कर्यो, ते टंकारनादथी जूठा सुग्रीवनी "वेषप्रवर्तिनी" विद्या नाशी गइ. त्यारे रामे ते जूठा सुग्रीवने एकज बाणथी मारी नांख्यो. पछी त्यां ते खरा सुग्रीवनो सर्व परिवार एकठो थयो, अने रामे पण तेने फरीने तेना राज्यपर स्थाप्यो. पछी अवसरने जाणनारा विराध, तथा जामंडल पण त्यां परिवार अने लश्कर सहित आवी पहोंच्या. पछी त्यां सुग्रीवे हनुमान, नील, निषधना पुत्रो, विगेरे राजाउंने एकठा कर्या. पछी त्यां ते विनयी कपीश्वरे रामनी आज्ञाथी सीतानी तलासमाटे महाबलवान हनुमानने मोकल्यो.

अहीं रावण पण नहीं इछती एवी परस्त्रीसाथे विलास करवा राजी नहोतो, तेथी ते सीताने हमेशां पोतानी स्त्रीउं मारफते समजावतो. वली ते रावणने बिजीषणादिक मित्रोए घणो समजाव्यो, तो पण तेणे सीताप्रतेनो राग तज्यो नहीं. केमके जवितव्यता अन्यथा थती नथी.

हवे अहीं हनुमान आकाशमार्गे चालतो थको माहेंद्रपर्वतपर, पो-

तानी माताना पिताना नगरने जोइ विचारवा लाग्यो के, आणे मारी निरपराधी माताने कहाडी मेली हती, माटे तेने हुं कंइक मारुं बल बतावुं. एम विचारि क्रोधथी तेणे सिंहनाद कर्यो, त्यारे माहेंद्र पण क्रोधथी निकलीने तेनी सामे लडवाने आव्यो. पछी त्यां घणो वखत लडीने, तथा तेने जीतीने तेणे तेने नमस्कार कर्यो, तथा पछी पोतानी ओलखाण आपीने, तथा पोताना स्वामिना कार्यनुं वृतांत कहीने ते त्यांथी चाली निकल्यो. पछी ते त्यांथी बीभिषणने घेर गयो. पछी तेना वचनथी बिभीषण रावणने समजाववा गयो. अने हनुमान सीताथी पवित्र थएला वनमां गयो. त्यां राक्षसीओथी वींटाएली, मलीन वस्त्रने धरनारी, म्लान मुखवाली, तथा क्षुधाथी क्षीण थएली, अने रामनुं नाम जपती, एवी सीताने जोइने तेणे विचार्युं के, खरेखर आ सीता जगतने पवित्र करनारी महासती छे, माटे आने अर्थे राम जे खेद पामे छे, ते युक्तज छे. पछी ते हनुमाने अदृश्य रहीने रामे आपेली वींटी तेणीना खोलामां नांखी, ते वींटीने जोइने सीता हर्षथी गलगली थइ गइ. ते वखते (तेणीनी चोकीमां राखेली) त्रीजटाए तेणीने हर्षयुक्त जाणीने, ते वीना रावणने जइ कही, त्यारे रावणे दूतकार्यमां चतुर एवी मंदोदरीने सीताने समजाववामाटे तेणीनी पासे मोकलावी. त्यारे सीताए तेणीने धिक्कारी कहाडी. पछी हनुमाने वृक्षपरथी उतरी सीताने नमस्कार कर्यो, अने ते तेणीने कहेवा लाग्यो के, हे माता! रावणनो नाश करनार आपना स्वामी लक्ष्मणसहित कुशल छे, तेमनो हुं पवन अने अंजनानो पुत्र हनुमान नामे दूत छुं. ते राम अने लक्ष्मण दंडकारण्यमां रहेला छे, तथा तेमनी आज्ञाथी हुं अहीं आवेलो छुं. ते सांभली सीताए अत्यंत हर्षित थइने तेने आशिष आपी. पछी त्यां हनुमानना उपरोधथी, तथा रामचंद्रजीना कुशलवर्तानना हर्षथी तेणीए एकवीस रात्रिदिवसोने अंते पारणुं कर्युं. पछी हनुमान एंधाण तरीके सीतानो चूडामणि लइने देवरमण उद्यानमां आव्यो, तथा त्यांना वृक्षोने भांगवा लाग्यो. वली त्यांना उद्यानपालकोने पण तेणे मार्या. त्यारे रावणना पुत्र इंद्रजीते त्यां आवीने तेने नागपाशोथी बांध्यो, अने पछी ते तेने रावणपासे लइ गयो. त्यां रावणना दुर्वाक्यथी तेणे तुरत नागपाशोने तोडीने, पाटु मारी रा-

वणना मुकुटने चूर्ण करी नांख्यो. पछी तुरत त्यांथी उडीने तेणे रावणनी नगरीमां भांगफोड करी. तथा पछी तुरत रामपासे जइने तेणे सीतानो ते चूडामणि आप्यो. ते चूडामणिने साक्षात सीतानी पेठेज मानीने रामे तेने आलिंगन कर्युं, तथा हनुमानपर तेणे अत्यंत प्रीतिभाव प्रकट कर्यो. पछी रामनी आज्ञाथी सुग्रीवादिकोए रणसंग्राममाटे वाजित्रो वगडाव्यां. पछी त्यां सर्व विद्याधरो, राम, लक्ष्मण, तथा सुग्रीवादिकोसहित विमानोथी आकाशने आछादित करता थका चालवा लाग्या. पछी त्यांथी सुवेल पर्वतपर सुवेल नामना राजाने जीतीने, उपलंकामां हंसरथने तेणे जीत्यो. पछी ज्यारे ते लंकानी नजदीक आव्या, त्यारे ते नगरीमां हाहाकार थयो, अने रावणे पण रणसंग्राम माटे वाजित्रो वगडाव्यां. पछी त्यां रामने आवेला जाणीने डाह्यो तथा गुणोए करीने ज्येष्ट एवो ते विभीषण नामनो रावणनो नानो भाइ, रावणने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, हे भाइ! जोके तुं विचार कर्याविना परस्त्रीने हरी लावेल छे, तोपण हवे अहीं पहोंचेला रामने तुं ते तुरत पाछी आपी दे? वळी आ एक परस्त्रीना माटे तारे राज्यनो शामाटे विनाश करवो जोइए छीए? अने वळी ते पापथी तारो परभव पण दुर्गतिरूप थशे. वळी आ समुद्रपर तेमणे पुल बांध्यो, एवी रीतना तेना बलथी पण जो तने खातरी थती न होय, तोपण ते रामना सेवक एवा हनुमाने सभामां जे कार्य कर्युं हतुं, तेने तुं याद कर? वळी जे रामनी आवी क्षमा छे, तथा जेनो आवो उत्कृष्ट न्याय छे, एवा राम हमेशां विजयवान छे. एवी रीते वैरीनी प्रशंसा करवाथी रावणे ते विभीषणने नगरमांथी कहाडी मेल्यो, त्यारे तेपण रामपासे गयो. त्यां विभीषणनी पाछळ साथे आवेला राक्षसोना तथा विद्याधरोना त्रीस अक्षौहिणी जेटला सुभटोने रामे प्रीतिपूर्वक बोलाव्या. पछी रामचंद्रजीए विभीषणने लंकानुं राज्य आपवुं ठरावीने, रावणनी नगरीने लश्करथी घेरो घाल्यो. तेज वखते महा बलवान, तथा भुजास्फोटो करता थका रावणना क्रोडो गमे सुभटो बहार आव्या. त्यां बन्ने सैन्यो वच्चे शिला, वृक्ष विगेरेरूप हथीयारोथी घणा कालसुधि जबरुं युद्ध मच्युं. त्यां रणसंग्रामरूपी तीर्थमां सुभटोने बाणपाषाणनां घसावाथी उत्पन्न थएलो अग्नि, वृक्षोने बालतो थको अग्नि-

संस्काररूप थयो. एवी रीते परस्पर जयनी इच्छाथी युद्ध होते छते जयश्री हींचोला खावा लागी. रामचंद्रजीना सैन्यमां जरा भंगाण पडतांज तेमना भ्रुकुटीना संकेतथी प्रेराएला राजाउं एकदम रणसंग्राममां धस्या. एवी रीते राक्षसोना सैन्यमां भंगाण पडतांज रथमां बेठेला हस्त प्रहस्तक नामना बे वीरो हाथमां धनुष्योने लेइने लडवा लाग्या. ते वखते रामना सैन्यमांथी पण नल अने नील नामना बे मोटा वानरनायको तेनी सामा लडवाने लाग्या, तेउंना रथोना शब्दोने जाणे सहन करती न होय नहीं जेम तेम पृथ्वी अरराट शब्द करवा लागी. एटलामां नले हस्तने तथा नीले प्रहस्तने मार्यो, अने तेउंपर आकाशमांथी पुष्पवृष्टि थइ. एवी रीते हस्तप्रहस्तना मरावाथी रावणना सैन्यमांथी मारीच, सिंहजघन, स्वयंभू, सरण, शुक, चंद्र, अर्क, उद्दाम, बीभत्स, कामाक्ष, मकर, ज्वर, गंभीरसिंह, विगेरे सुभटो धसी आव्या. ते वखते मदन, अंकुर, संताप, प्रथित, आक्रोशनंदन, दुरित, अनघपुष्प, अग्निविघ्न तथा प्रीतिकर आदिक सुभटो रामना सैन्यमांथी पण तेमनी सामा धस्या, अने ते राक्षसोने मार्या. ते वखते सूर्य पण अस्त थयो, अने बन्ने सैन्यो पण पोतपोताने स्थानके गयां. पछी प्रभातमां रावणनी भ्रुकुटीथी प्रेराएला राक्षसयोद्धाउं रामना सैन्यप्रते धस्या. त्यारे तेनी सामे रामना सुभटो पण धसी आव्या. तेउं सघला हाथमां रहेली खड्गलताने नटीनी पेठे नचावता थका, बाणोथी आकाशने आछादित करता थका, सिंहनादोथी दीशाउंने ध्वनियुक्त करता थका, पगना धबकाराउंथी पृथ्वीने कंपावता थका, तथा पर्वतोने पण दारण करता थका, समुद्रने उछळावता थका, अने वृक्षोने भांगता थका परस्पर एक बीजाने हणवा लाग्या, ते वखते रावणना हुंकारथी प्रेराएला राक्षसो, समुद्रना मोजाउं जेम कांठापरना वृक्षोने तेम वानरसुभटोने तोडी पाडवा लाग्या. ते वखते उखेला सुग्रीवने वारीने हनुमान क्रोधातुर थइने राक्षसोप्रते धस्यो. ते वखते माली धनुष्य लेइने क्रोधथी हनुमाननी सामे आव्यो. तेउं बन्ने महासुभटो प्रलयकाळना सूर्यनी पेठे, एकबीजाना शस्त्रोने छेदता थका, जगतने दुःखेभय थया. एटलामां हाथनाआक्रीथी श्रीशैले मालीने हार्याधारसिन कर्यो, त्यारे वज्रोदर नामनो राक्षस त्यां धस्यो

आव्यो. त्यारे हनुमानें सिंहनादोथी दीशाउने बेहेरी करतां थकां तेने बाणोथी आछादित कर्यो. त्यारे लोको कहेवा लाग्या के, अहो! आ बन्ने वीरो एक सरखा छे. ते वाणी सहन नहीं करीने हनुमाने ते वज्रोदरने मारी नांख्यो. एवी रीते वज्रोदरना घातथी क्रोधायमान थएलो जंबुमाली नामनो रावणनो पुत्र हनुमानपर धसी गयो; त्यारे ते पण तेनी सन्मुख आव्यो. पछी हनुमाने तेने माथामां गदा मारवाथी ते जंबूमाली मुर्छा खाइ पड्यो, त्यारे राक्षसना सैन्यमांथी महोदर प्रमुख सुभटो हनुमान तरफ धस्या. त्यारे हनुमाने केटलाक राक्षसोने तो मुखमां लीधा, केटलाकोने हाथमां लीधा, केटलाकोने हृदयमां लीधा, तथा केटलाकोने बगलमां घाल्या, अने केटलाकोने बाणथी हण्या. एवी रीतना राक्षसोना मर्दनने सहन नहीं करीने, भयंकर मुखवालो कुंभकर्ण हाथमां त्रिशूल लेइने वृक्षोने भांगतो थको दोड्यो. चारे कोरेथी वानरसुभटोने तेने मारतो जोइने सुग्रीव राजा, कुमद, अंगद तथा माहेंद्र सहित तेनी सन्मुख धस्यो. वली ते वखते भामंडल प्रमुख पण रामना योद्धाउ शस्त्रोनो वरसाद वरसाववा लाग्या; पछी सुग्रीवे गदाएं करीने शत्रुना रथने भांग्यो. ते वखते क्रोधातुर थएला कुंभकर्णे पण हाथमां मुद्गर लेइने सुग्रीवना रथने जीर्ण घडानी पेठे भांगी नाख्यो. पछी सुग्रीवना शस्त्रथी पीडित थएलो कुंभकर्ण मूर्छित थइने पृथ्वीपर पड्यो. एवी रीते भाइनी मुर्छाथी रावण अत्यंत क्रोधायमान थयो. त्यारे इंद्रजित तेने रोकीने पोते कपिसैन्यने उपद्रव करवा लाग्यो. पछी तेनी सामे सुग्रीव क्रोधथी धस्यो, अने भामंडल तेना नाना भाइ मेघवाहनप्रते धस्यो. एवी रीते ते चारे वीरो परस्पर युद्ध करता थका पृथ्वी, समुद्र, अने पर्वतोने पण क्षोभाववा लाग्या. एटलामां इंद्रजित अने मेघवाहने सुग्रीव अने भामंडलने नागपाशोथी बांध्या. वली तेज वखते कुंभकर्णे पण चैतन्य आववाथी हनुमानने गदाथी मारीने पोतानी कांखमां घाल्यो. एटलामां अंगद सुभट कुंभकर्णप्रते धस्यो, ते वखते हनुमान जोर करीने कुंभकर्णनी कांखमांथी छुटी गयो. हवे बिभीषण रामने नमीने रथमां बेसी भामंडल तथा सुग्रीवने छोडाववा माटे धस्यो. ते समये इंद्रजित तथा मेघवाहने विचार्युं के, पितातुल्य एवा आ बि-

भीषण साथे आपणे युद्ध करवुं लायक नहीं, एम विचारि तेउं नाशी गया. एटलामां पूर्वे आपेलुं छे वरदान जेणे एवो गरुडदेव, रामना स्मरणथी अवधिज्ञाने करीने त्यां आव्यो, तथा तेणे रामने सिंहनिनदा नामनी विद्या, तथा मुशल आप्यां, अने लक्ष्मणने गारूडी विद्या, संग्राममां शत्रुने हणनारी विद्युद्वदना गदा, तथा बीजां शस्त्रो पण आप्यां. तथा पछी ते अंतर्ध्यान थइ गयो. हवे त्यां लक्ष्मणना वाहनरूप थएला गरुडने जोइने सुग्रीव अने भामंडलना नागपाशो दूर नाशी गया. ते वखते रामना सैन्यमां जय जय शब्द थवा लाग्यो, अने राक्षसोनुं सैन्य मलीन मुखवालुं थयुं; तथा सूर्य पण ते समये अस्त पाम्यो. वली प्रभातमां ज्यारे राक्षसो रामनुं सैन्य भागवा मांड्या, त्यारे सुग्रीवादिक महावीरोए राक्षसोने मार्या. एवी रीते राक्षसोना भंगथी क्रोध पामेला रावण, इंद्रजित, तथा कुंभकर्ण आदिक सर्वे एकी समये धस्या. तेउनी सामे धसी जता रामने निवारीने, बिभीषण धस्यो, तथा रावणने अटकावीने प्रीतिथी तेने समजाववा लाग्यो के, हे बंधु! हजु पण तुं मारुं कयुं मान? अने सीताने छोडी दे? केम के नहींतर आ राम, यमनी पेठे तारा कुलनो अंत लावशे. त्यारे रावणे तेने कह्युं के, अरे! तुं मने शा माटे डगावे छे? एम कहीने ते बन्ने वीरो धनुष्योना टंकारो करीने शस्त्रोथी महायुद्ध करवा लाग्या. ते वखते रामे कुंभकर्णने, लक्ष्मणे इंद्रजीतने, नीले सिंहजघनने, दुर्मदे घटोदरने, शंभुए, दुर्बुद्धि एवा स्वयंभुने, नले अगमोदयने, स्कंदे चंद्रणखने, तथा चंद्रोदरना पुत्रे विघ्नने रोक्यो. एवी रीते ते योद्धाउ लडते छते इंद्रजिते लक्ष्मणपर क्रोधथी तामसशस्त्र फेंक्युं; त्यारे लक्ष्मण तपनास्त्रथी ते शस्त्रने छेदीने, तथा इंद्रजितने नागपाशोथी बांधीने तेने पोताना शिबिरमां लाव्यो. पछी रामे पण कुंभकर्णने नागपाशोथी बांधीने पोताना शिबिरमां मोकलाव्यो. तथा रामना योद्धाउए बीजा राक्षसोने पण बांध्या. ते जोइ क्रोधायमान थएला रावणे बिभीषणपर तेने मारवा माटे त्रिशूल फेंक्युं, पण ते त्रिशूलने लक्ष्मणे बाणोथी छेदी नांख्युं. त्यारे रावणे धरणेंद्रे आपेली अमोघविजया नामनी शक्तिने, हेलने, कौतुकथी आकाशमां फेरवी. ते वखते लक्ष्मण रामना अभिप्रायथी, आवीने तुरत बिभीषण पासे **आवीने**

रावणने अत्यंत आक्षेप करवा लाग्यो. त्यारे रावणे लक्ष्मणने गरुडपर बेठेला जोइने, कोपथी लाल आंखो करी; तथा पछी तेणे ते वज्र सरखी शक्ति तेनापर मुकी. त्यारे ते शक्ति सघलां शस्त्रोने अवगणीने लक्ष्मणनी छातीपर पडी; अने तेथी लक्ष्मण मूर्छा खाइने पृथ्वीपर पड्या, अने तेना शिबिरमां पण शोक पथराइ गयो. तेथी क्रोधायमान थएला रामचंद्रजीए सिंह जेम हाथी साथे, तेम सिंहना रथमां बेठेला रावण साथे युद्ध करवा मांड्युं; पछी त्यां रामचंद्रजीए रावणना पांच रथोने भांगी नाख्या; त्यारबाद रामना तेजने नहीं सहन करवाथी रावण पोताना नगर तरफ गयो. पछी सूर्य अस्त थये छते राम, लक्ष्मण पासे आव्या, तथा तेने तेवी रीतना जोइने मूर्छा पाम्या, तथा पछी संज्ञा आव्याबाद ते कहेवा लाग्या के, हे भाइ! वैरीओना समूहने मार्या विना, मने सीता अपाव्याविना, बीभीषणने पोते आपेलुं राज्य आप्या विना, तथा शत्रुओथी वींटाएला आ रामने एकाकी छोडीने, तुं चाल्यो नहीं जा? अथवा तेमां तारो कंइ पण दोष नथी, पण मारोज दोष छे, केम के हजु हुं अहीं जीवतो बेठो छुं. हे सुग्रीव! तुं मने सानिध्य कर? हे हनुमान! तुं अगाडी था? हे चंद्ररश्मि! तुं उत्साही था? तथा हे भामंडल! तुं उद्यमी था? अरे अत्यारे मारो कोइ एवो संबंधि नथी, के आ मारा नाना भाइने सज्ज करे!! एवी रीते कल्पांत करीने शुन्य थया थका राम मूर्छित थया. त्यारे बिभीषणे कह्युं के, हे प्रभु! तमो धीरज राखो? केम के शक्तिथी हणाएलो प्राणी रात्रिसुधि जीवी शके छे, माटे तेने वास्ते उद्यम करो? पछी रामनी आज्ञाथी सुग्रीवादिकोए लक्ष्मणनी आसपास विद्याना बलथी चार द्वारोवाला सात किल्लाओ बनाव्या. वली ते समये स्वामिना दुःखथी दुखित थएला सुग्रीव, अंगद, अंशु, तथा भामंडल आदिक विद्याधरो ते किल्लाओने घेरीने त्यां रह्या.

हवे ते समये भामंडलनो हितेछु मित्रभानु नामनो महान विद्याधर त्यां आवीने भक्तिथी रामने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! अयोध्याथी बार योजनने छेटे द्रोण राजाथी रक्षित थएलुं कौतुकमंगल नामनुं एक मनोहर नगर छे. त्यां कैकेयीना भाइनी विशल्या नामे पुत्री छे, तेणीना हाथना स्पर्शथी आ लक्ष्मणजीनुं शल्य दूर थशे. अने ते पण जो सूर्योदय पहे-

सांज अहीं आवी पहोंचे, तोज आ लक्ष्मण सज्ज थइने शत्रुउने हणी शके. ते सांजली रामचंद्रजीए तुरत प्रीतिपूर्वक अंगद, जामंडल तथा हनुमाननें जरतपासे मोकल्या. त्यारे तेउए पण तुरत विमानमारफतें अयोध्यामां जइ सीताहरणपूर्वक सर्व वृतांत जरतने कही संजलाव्यो. त्यारे स्वामीना कार्योंमां तत्पर थएला जरत राजाए पण तेउने साथे लेइ तुरत द्रोणपासे आवी विशल्यानी मागणी करी. त्यारे द्रोण राजाए तो वीजी हजार कन्याउ सहित विशल्याने आपी; पठी तेउ जरतने अयोध्यामां ठोडी विशल्या सहित रामचंद्रजी पासे तुरत आव्या. पठी त्यां ते विशल्याना हाथना स्पर्शथी ते शक्ति लक्ष्मणने तजीने तुरत आकाशमां उडवा लागी; तेज वखते हनुमाने तुरत तेणीने पकडी लीधी. त्यारे ते शक्ति हनुमाननें कहेवा लागी के, देवतारूप एवी हुं (रावणप्रतेना) दासपणायें करीने अहीं आवी हती, पण विशल्याना पूर्व जवना तपना प्रजावथी हवे हुं चाली जउं. माटे तुं मने ठोडी दे? पठी हनुमाने तेणीने तजी देवाथी ते शक्ति पोताना अपराधथी जाणे डरती होय नहीं जेम, तेम उडीने आकाशमां चाली गइ. पठी प्रजुजीना स्नात्रना पाणीथी फरीने लक्ष्मणने सींच्या, अने तेना घा रुझाइ जवाथी तुरत निद्रामांथी जेम तेम ते उठीने बेठा थया. पठी रामचंद्रजीए तेने आलिंगन कर्युं, तथा सघलो वृतांत निवेदन करीने एक हजार कन्याउसहित विशल्यानो तेनी साथे विवाह कर्यो. पठी तेणीना स्नानना पाणीथी बीजा सुजटोना घा पण साजा थया; तथा पठी सर्वे विद्याधरोए मलीने त्यां हर्षथी महोत्सव कर्यो. पठी रावणे चरोना (गुप्त रखेला माणसोना) मुखथी लक्ष्मणने जीवता थएला जाणीने बहुरूपी विद्यानुं साधन करवानो विचार कर्यो. पठी तेणे सोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथ प्रजुनी अष्टप्रकारी पुजा करीने ते विद्यानुं साधन करवा मांड्युं. पठी मंदोदरीनी आज्ञाथी नगरना सर्व लोको आठ दिवसो सुधि जैनधर्ममां रक्त थया. पठी ते विद्या सिद्ध थवाथी रावण राक्षसोनी मोटी सैन्यसहित प्रजातमां समरांगणप्रते आव्यो. पठी त्यां बन्ने सैन्योनुं महा ज्यंकर युद्ध थयुं; तथा तेमां कोटीगमे सुजटो मराया; अने तेथी त्यांने चालवानी जगा पण रही नहीं. ते समये महा बलवान [illegible] राक्षसोने मारीने, अंगदादि राजाउने नासता करवा लाग्या.

तेथी आकुल थइने रावणे तुरत ते विद्याथी पोतानां भयंकर एवां घणां रूपो कर्यां. त्यारे लक्ष्मण पृथ्वीपर, आकाशमां, पछाडी, आगल, तथा पडखामां विविध प्रकारनां शस्त्रोनो वरसाद वरसावनारा अनेक रावणोने जोवा लाग्या. पछी एक एवा पण ते गरुडपर बेठेला बलवान लक्ष्मणे अनेक सरखा थइने बाणोनी धाराओथी, पतंगीआने जेम मेघ, तेम तेओने हण्या. बाणोनी ते धाराओथी व्याकुल थएला रावणे चक्रनुं स्मरण कर्युं; त्यारे अर्धचक्रीना जीवित सरखुं जाज्वल्यमान चक्र पण तुरत तेनी पासे आव्युं. त्यारे क्रोधथी लाल आंखोवाला थएला ते रावणे ते चक्रने भमाडीने लक्ष्मणपर फेंक्युं, त्यारे ते चक्र लक्ष्मणने प्रदक्षिणा देइने तेना (लक्ष्मणना) हाथमां आवी रह्युं. त्यारे लक्ष्मणे पण तेज चक्रथी, इंद्र जेम वज्रथी पर्वतने, तेम रावणना वक्षःस्थलपर ताडना करी. ते ताडनथी जेठ वदी अगीयारसने दिवसे पाछले पहोरे रावण मरीने चोथी नरके गयो. ते वखते देवताओए पण जय जय शब्द करीने प्रीतिथी लक्ष्मणजीपर पुष्पोनी वृष्टि करी. पछी भयथी दिङ्मूढ थएला राक्षसोने बिभीषणे स्नेहथी शांत कर्या; केम के स्वजातिनुं रक्षण करवुं ते उत्तम कार्य छे. पछी रामचंद्रजीए कुंभकर्ण, इंद्रजित तथा मेघवाहन आदिक राक्षसोने छोडी मेल्या, त्यारे तेओए पण रावणनुं प्रेतकार्य कर्युं. पछी ते समये कुंभकर्णे, इंद्रजिते, मेघनादे तथा मंदोदरीए अप्रमेयबल नामना ऋषिनी पासे दीक्षा लीधी. पछी निर्दोष एवी महासती सीताने लेइने रामचंद्रजीए बिभीषणे बतावेला मार्गे थइने उत्सवपूर्वक लंकामां प्रवेश कर्यो. पछी त्यां रामचंद्रजीए ते लंकानुं राज्य बिभीषणने सोंप्युं; तथा त्यां छ वर्षो रह्या बाद ते माताना चरणोने नमवा माटे उत्सुक थया.

एटलामां विंध्यस्थलीमां इंद्रजित तथा मेघवाहन मोक्षे गया; अने तेथी ते तीर्थनुं "मेघरथ" नाम पड्युं. वली नर्मदाने कांठे कुंभकर्ण मोक्षे गया, अने ते तीर्थनुं "पृथुरक्षित" नाम पड्युं.

पछी उत्तम दिवसे रामचंद्रजी, सीता अने लक्ष्मणसहित सुग्रीवादिकनी अनुमतिपूर्वक पुष्पक विमानमां बेसीने, पृथ्वीपरनां नगरो तथा आश्चर्योने उंचे प्रकारे जोता थका, अनुक्रमे उंची धजाओथी शोभिती थएली, एवी अयोध्या नगरीप्रते आव्या. ते वखते भरत राजा पण शत्रुघ्नाइ

सहित हाथीपर बेसी महान उत्सवपूर्वक सामे आव्या, तथा तेमणे रामचंद्रजीना चरणोने नमस्कार कर्यो. पछी त्यां रामचंद्रजीए तथा लक्ष्मणजीए पण बंधुओने आलिंगन कर्युं, तथा त्यारबाद वृद्ध स्त्रीओथी वधावाता एवा ते रामचंद्रजीए नगरीमां प्रवेश कर्यो. पछी त्यां रामचंद्रजीए लक्ष्मण सहित पोतानी सर्व माताओने नमस्कार कर्यो. पछी भरत राजाए जाणे थापणतरिके राख्युं होय नहीं, तेम ते राज्य रामचंद्रजीने सोंप्युं, तथा पोते सेवकनी पेठे तेमनी सेवा करवा लाग्यो. पछी एक दहाडो भरत राजाए देशभूषण नामना मुनिपासेथी पोताना पूर्व भवोने सांभलीने आग्रहसहित दीक्षा लीधी. पछी शत्रुंजय गिरिनो महिमा सांभलीने एक हजार मुनिओ सहित ते मार्गमां यत्नापूर्वक चालता थका त्यां जवा लाग्या. पछी त्यां जइ श्री ऋषभदेव प्रभुने नमीने, ते तीर्थनो प्रभाव अंतरमां ते ध्यावना लाग्या. पछी सघलां कर्मो क्षीण थवाथी केवलज्ञान पामीने भरतमुनि ते मुनिओसहित मोक्षे गया. पछी त्यां रामचंद्रजीए तथा लक्ष्मणजीए शत्रुंजयादिक तीर्थोनो उद्धार कर्यो, तथा त्यां ध्वजादिक चढाव्यां. पछी अग्निप्रवेशना निदर्शनथी सीतानो अपवाद दूर थयो, तथा त्यारबाद ते सीता पण दीक्षा लेइ, तप तपीने अच्युतेंद्ररूप थइ. श्रीशैल पण पोतानुं राज्य पुत्रने सोंपी, वैराग्यथी दीक्षा लेइ, तथा घणो काल ते पालीने मोक्षे गया. पछी भाइना स्नेहनी परीक्षामाटे आवेला देवोनी वाणीथी रामना (कल्पित) मोक्षने सांभली, शोकशल्यथी लक्ष्मण पण मृत्यु पाम्या. ते सांभली वैराग्ययुक्त थएला रामना लवण अने अंकुश नामना पुत्रो दीक्षा लेइ अनुक्रमे मोक्षे गया. पछी जटायुदेवना प्रतिबोधथी रामचंद्रजीए लक्ष्मणजीनुं मृतकार्य करी, अनंगदेवने राज्य सोंप्युं. तथा पछी तेमणे शत्रुघ्न सुग्रीव, तथा बिभीषण प्रमुख सोल हजार राजाओसहित दीक्षा लीधी. पछी नाना प्रकारना अभिग्रहवाला एवा रामचंद्रजी महामुनि विहार करता थका कोटिशिलाप्रते जइने ध्यानथी केवलज्ञान पाम्या. पछी पुंडरिकगिरि आदिक तीर्थोमां विहार करीने तथा घणा प्रकार जिनार्चीने, पंदर हजार वर्षोनुं आयुष्य पूर्ण करी रामचंद्रजी मुनि महाराज मोक्षे गया. पछी भरतादिक मुनि महाराजाओ

ते समयमां श्री शत्रुंजयपर मोक्षे गया छे, माटे ते तीर्थने जेम बने तेम अधिक रीतें सेववुं; केम के, ते मोक्षना अव्याबाध कारणरूप छे.

एवी रीते श्रीवीर प्रभु लोकोना समूहरूपी क्षेत्रोमां आनंद करनारा, तथा श्री शत्रुंजय तीर्थना महिमारूपी उल्लसायमान पुण्यना समूह सरखा वाणीना समूहने वरसीने, तेना उद्गममाटे, पुष्करावर्तमेघ, कमल, तथा शंख सरखी उत्तम कीर्तिने आपनारुं अध्ययन मुखथी कहेता हवा.

एवी रीते आचार्य महाराज श्रीधनेश्वरसूरिजीए बनावेला महा तीर्थ श्री शत्रुंजयना माहात्म्यमां श्रीराम आदिक महापुरुषोना चरित्रना वर्णननो नवमो सर्ग समाप्त थयो.

एवी रीते आ शत्रुंजय माहात्म्यना प्रथम खंडनुं संस्कृतपरथी शुद्ध गुजराती भाषांतर जामनगर निवासी पंडित श्रावक हीरालाल वि. हंसराजे करेलुं छे; तेमां प्रमादथी के मतिदोषथी जे कंइ उत्सूत्र के विपरीत लखायुं होय,ते "मिच्छामि दुक्कडं"तथा ते सुज्ञ जनोए सुधारीने वांचवुं.केम के,

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः
हसंति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

अर्थः– मार्गे जतां थकां प्राणीने प्रमादथी स्खलना तो क्यांक थयाज करे छे, पण ते वखते दुर्जनोज त्यां हांसी करे छे, पण सज्जनो तो तेने सारी रीते उघाडीने वेगो करे छे.

हवे भाषांतरकर्ता समाप्तिमंगल माटे पोताना गुरु श्री चारित्रविजयजी महाराजनी स्तुति करे छे.

लब्ध्वा यदीयचरणांबुजतारसारं, स्वादच्छटाधरितदिव्यसुधासमूहम् ॥
संसारकाननतटेऽटतालिनेव, पीतो मया प्रवरबोध रसप्रवाहः ॥ १ ॥
वंदे ममगुरुंतंच,चारित्रविजयाभिधम्,परोपकारिणांधुर्य,दत्तानंदकदंबकम्॥२

हीनपुण्या न पश्यंति, रागांधास्तत्त्वसंस्थितिम् ॥
लाभेऽलाभफलं चैव, लभंते ते नराधमाः ॥ १ ॥

समाप्तोऽयं श्री शत्रुंजयमाहात्म्यस्य प्रथमः खंडः गुरुश्रीमच्चारित्रविजयसुप्रसादात् ॥

जाहेर खबर.

सर्वे जैनबंधुओने मालुम थाय जे अमारा तरफथी हालमां नीचेना नवा अपूर्व जैनी ग्रंथो, गुजराती भाषांतर साथे छपावीने पाकां पुंठांथी बांधी बहार पाडवामां आव्यां छे.

योगशास्त्र.–(कर्त्ता श्री हेमचंद्राचार्य) किम्मत रु. ३–४–०

सामुद्रिक शास्त्र.–(कर्त्ता श्री भद्रबाहुस्वामि) किम्मत रु. १–०–०

शुकनशास्त्र.–(कर्त्ता श्री जिनदत्तसूरि) किम्मत रु. ०–६–०

प्रतिष्ठाकल्प. (कर्त्ता श्री सकलचंद्रजी) किम्मत रु. ०–६–०

जलजात्रादिविधि.–(कर्त्ता श्री रत्नशेखर सूरि) किम्मत रु. ०–६–०

अष्टकजी.–(कर्त्ता श्री हरिभद्रसूरि, टीकाकार श्री जिनेश्वरसूरि) किम्मत रु. १–१२–०

कल्पसूत्र.–(सुखबोधिका टीकानुं गुजराती भाषांतर चित्रोसहित) ३–०–०

धर्म सर्व स्वाधिकार. (कर्त्ता श्री जयशेखरसूरि) तथा कस्तुरिप्रकरण. (कर्त्ता श्री हेमविमलगणि) किम्मत रु.०–८–०

शत्रुंजय माहात्म्य खंड पहेलो (कर्त्ता श्रीधनेश्वरसूरि) कि. रु. २–४–०

नीचेनां पुस्तको गुजराती भाषांतरसहित तैयार थाय छे, अने थोडाज वखतमां छपाइ बहार पडशे.

वैराग्यकल्पलता. (कर्त्ता श्री यशोविजयजी उपाध्याय)

हिंगुलप्रकरण. (कर्त्ता श्रीविनयसागरोपाध्यायजी)

जैनकुमारसंभव महाकाव्य. (कर्त्ता श्री जयशेखरसूरि)

भद्रबाहु संहिता.(जैननो अपूर्व ज्योतिषग्रंथ)(कर्त्ता श्रीभद्रबाहुस्वामि)

प्रभाविक चरित्र (जैनधर्ममां थयेला महान पुरुषोनां चरित्र)

शत्रुंजय माहात्म्य. खंड बीजो. (कर्त्ता श्री धनेश्वरसूरि)

मेघमालाविचार. (कर्त्ता श्रीविजयप्रभसूरि)

शा. भीमसिंह माणेक.

ठे. मुंबइ. मांडवीबंदर. शाकगली.